नीति प्रकास

श्रीमान फतेलालजी श्रीचन्दजी गोलेछा
जयपुर वालों की ओर से भेंट ॥

संपादक

नारायणसिंह भाटी

* श्री आचार्य विनयचन्द्र ज्ञान भण्डार *
ज य पु र

प्रकाशक
राजस्थानी शोध - संस्थान
चौपासनी - जोधपुर

*

परम्परा—भाग ९-१०

*

मूल्य—६ रुपये

*

मुद्रक
हरिप्रसाद पारीक
साधना प्रेस, जोधपुर

विषय-सूची

मेरे विचार से हमारी भाषाओं के लिए यह भी वांछनीय है कि वे प्राचीन उच्च कोटि के ग्रंथ और आधुनिक पुस्तकें दोनों के अनुवादों के जरिये विदेशी साहित्यों के साथ सम्पर्क साधें। इससे दूसरे देशो की सास्कृतिक, साहित्यिक और सामाजिक प्रवृत्तियों के साथ हमारा सम्बन्ध रहेगा और ताजे विचारो के आने से हमारी अपनी भाषाओं की ताकत बढेगी।

— जवाहरलाल नेहरू
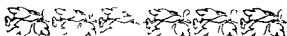
सम्पादकीय

राजस्थानी साहित्य मे अनुवादों की परम्परा लगभग १४वी शताब्दी में प्रारंभ हो गई थी। सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि प्राचीन भाषाओं मे रचित ग्रंथों को समझना जब कठिन हो गया तो उन भाषाओ के विद्वानो ने आवश्यकता और रुचि के अनुसार समय-समय पर उपयोगी ग्रथों के अनुवाद तथा टीकाएँ आदि प्रचलित भाषा मे प्रस्तुत की। प्रारंभ मे अधिकाश अनुवाद जैन आचार्यों के मिलते हैं क्योंकि धर्म-प्रचार की दृष्टि से प्राचीन धर्म-ग्रथो मे प्रतिपादित सिद्धांतों तथा उपदेशों को जन-साधारण के लिए उपलब्ध करना उनका उद्देश्य था। इसके पश्चात तो समय के साथ-साथ कई तरह के ग्रथ राजस्थानी गद्य-पद्य मे अनुवादित होते गये और आज सैकडो अनुवाद तथा टीकाओ के ग्रथ हस्तलिखित पोथियो में उपलब्ध होते हैं।

जब से यहाँ पर मुस्लिम राज्य की पूर्ण स्थापना हुई तब से उनकी संस्कृति और उनके साहित्य से भी यहा के लोगो का परिचय होना स्वाभाविक ही था। कालान्तर में सम्पर्क की निकटता स्थापित होने से फारसी भाषा का प्रचलन यहाँ के शिक्षित वर्ग मे हुआ और मुस्लिम संस्कृति की अनेको बातो को बारीकी से जानने के लिए इस भाषा मे रचित महत्वपूर्ण ग्रथों का अनुवाद स्थानीय भाषाओ मे किया जाने लगा। प्रस्तुत राजस्थानी अनुवाद इस बात का प्रमाण है। मुगल सल्तनत की मान्यताओ और अनुभवों की पृष्ठभूमि को जानना विशेष तौर से यहाँ के शासकों के लिए जरुरी था, क्योंकि उनका सम्बन्ध मुगलो के दरबार से निरतर बना हुआ था। इस दृष्टि से यह ग्रंथ यहाँ के शासक वर्ग और राजनीति में दिलचस्पी लेने वाले लोगो के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रथ रहा होगा। वैसे ज्ञान का कोई भी श्रोत, चाहे जिस किसी भाषा में हो, समय के

साथ आवश्यकतानुसार अवसर पाकर स्वयं अपना प्रचार-प्रसार अन्य भाषाओ के माध्यम से पा ही लेता है।

प्रस्तुत ग्रथ मे बादशाहो के अपेक्षित ४० गुणो का विस्तार के साथ वर्णन किया गया है। इन चालीस गुणो को मोटे रूप से ५ भागो में विभक्त किया जा सकता है—

१ ईश्वर के प्रति पूर्ण विश्वास और सभी कार्य उसी की रजाबदी से करना।

२– अन्य देशो के साथ उचित व्यवहार और शत्रुता रखने वाले देशों के प्रति जासूस, राजदूत आदि के माध्यम से सतर्कता बरतना।

३– प्रजा के साथ उचित सम्बन्ध स्थापित करना, उसके सुख-दुख का पूरा ध्यान रखना व न्याय की श्रेष्ठ व्यवस्था करना।

४– अपने राज्य के ओहदेदारो और छोटे-बडे नौकरो की पूरी जानकारी रखना, उनकी परीक्षा लेना और उचित व्यवहार करना।

५– व्यक्तिगत गुण, विद्वत्ता और कर्तव्यपरायणता मे श्रेष्ठता हासिल करना।

इन गुणो को विस्तार के साथ समझाते समय लेखक ने स्थान-स्थान पर प्रसिद्ध ऐतिहासिक बातो, किंवदतियों और बोध-कथाओ (fables) का प्रचुर मात्रा मे प्रयोग किया है। कई घटनाएँ और ऐतिहासिक पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ तो इतिहास से भी मेल खाती हैं। इस प्रकार के कई उपकरण मिल जाने से यह ग्रथ नीति सम्बन्धी तथ्यो का उपदेशात्मक ग्रथ ही न रह कर काफी दिलचस्प ग्रथ बन गया है। इसलिए साहित्य का पाठक भी इसमे दिलचस्पी ले सकता है।

यद्यपि मूल ग्रथ प्राचीन काल में विशेष उपयोगी रहा होगा पर आज भी कई दृष्टियो से इसका महत्त्व है। इस ग्रंथ के माध्यम से उन देशो की तत्कालीन राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक व आर्थिक परिस्थितियों तथा मान्यताओं का पता चलता है, क्योंकि पूरे ग्रथ मे यथास्थान इस प्रकार की चर्चा की गई है। समाज-शास्त्र और राजनीति-शास्त्र की परम्परा मे भी इस ग्रथ का अपना महत्व होना चाहिए।

पूरे ग्रथ का झुकाव आदर्श की ओर अधिक है। बादशाह एक आदर्श शासक किस तरह बन सकता है, सभी शिक्षाप्रद बातें इसी से सम्बन्ध रखती हैं।

इसलिए स्थान-स्थान पर आदर्श माने जाने वाले शासकों के सिद्धान्तो तथा उनके जीवन से सम्बन्ध रखने वाली महत्वपूर्ण घटनाओं का उल्लेख किया गया है। नोसेरवां को लेखक ने अत्यंत न्यायपरायण और एक आदर्श शासक माना है जिसका व्यक्तित्व बहुत उच्च कोटि का है और जो राज्य-कार्य में भी पूरा निपुण है।

नोसेरवा का जिक्र आते ही विक्रमादित्य, राजा भोज और अशोक जैसे हमारे देश के महान् शासको का आदर्श भी हमारे सामने उपस्थित हो जाता है जिन्होने मानवता को सर्वोपरि रख कर पर-हित के लिए ही राज्य किया और जिनकी प्रशसा आज भी हमारे देश मे की जाती है। इस तरह विभिन्न देशों के आदर्श शासको और उनके सिद्धान्तो पर जब हम मनन करते हैं तो एक बात बार-बार ध्यान मे आती है कि सभी श्रेष्ठ सस्कृतियों के श्रेष्ठतम सिद्धांतो में कितना साम्य है ? प्रत्येक श्रेष्ठ सस्कृति मानव के अच्छे गुणो तथा न्याय की श्रीवृद्धि को ही अपना चरम लक्ष्य मानती है—चाहे जिस किसी रूप मे हो, चाहे जिस किसी समय मे हो, चाहे जिस किसी देश मे हो। अतएव एक सुसस्कृत देश का श्रेष्ठ शासक श्रेष्ठतम मानव होता है। और जब इस प्रकार की श्रेष्ठता को प्रतिपादित करने वाले ग्रथ का हम अध्ययन करते हैं तो उससे शासक की राजनैतिक सतर्कता और दूरदर्शिता की ही जानकारी नही मिलती वरन् मानवोचित गुणों की श्रेष्ठता का परिचय भी मिलता है।

दुश्मनो के आक्रमण, राजनैतिक षडयत्र और सामाजिक उहापोह के बीच भी इन शासको ने जिस तरह मानवता से एक क्षण भर के लिए भी विछोह मजूर नही किया और अनत अपने सही सिद्धातों पर कायम रह कर ही सफलतापूर्वक राज्य करते रहे, ये सभी बाते मानवता और सत्य मे हमारी आस्था को और भी दृढ बना डालती हैं।

आधुनिक युग मे विज्ञान की उन्नति के कारण सामाजिक व्यवस्था और जीवन के प्रति दृष्टिकोण में बहुत तेजी के साथ परिवर्तन आ रहा है। फिर भी मानव द्वारा अर्जित पीढियो के ज्ञान और शाश्वत जीवन मूल्यों को पूर्णत गलत सिद्ध कर दिया गया हो ऐसी बात नही है। अत मानव परम्परा के सचित अनुभवो और व्यावहारिक सूझ-बूझ को व्यक्त करने वाले ग्रथो का आज भी सामाजिक महत्व है। उनकी अनेकों मान्यताएँ और सिद्धात हमारे लिए मूल्यवान हैं। न्याय मे आस्था बहुत प्राचीन काल से रही है और भविष्य मे भी रहेगी। न्याय की व्यवस्था करने वाले राजनैतिक ढाचे में परिवर्तन होना रहा है

पर न्याय के आधार-भूत सिद्धांतों में विशेष परिवर्तन नहीं हुआ। यही बात कई और मान्यताओं के बारे मे भी सही है। उदाहरणार्थ प्रस्तुत ग्रंथ की कुछ पंक्तियाँ इस दृष्टि से विचारणीय हैं—

सरम सू सोभा आलम री छै।[1]

संतोस तो पसु नूं चाहीजै। अेक ठौड़ बैठणो छोटी मति री कांम छै।[2]

जिणी चाहै प्रभू उणरो मुल्क मोटो करै तो उवो समैं रा पीड़ितां नूं मोटा करै[3]

गहणो नै पोसाक बडाई री विनय छै।[4]

मिनख रो जस थिर जीवण छै।[5]

सत्य कहणै मे, सत्य करणै मे कारण नचीनाई नै छुटकारा री छै।[6]

विचार मन री तरह री करणो भलो विचार छै।[7]

क्रोध जिणरा हाथ सू बंद छै ऊ मरद हकीम छै।[8]

अदालती न्याय नू अदता गहणो कहजे।[9]

ग्रंथ में कई स्थलो पर बड़ी ही सूक्ष्म अंतर्दृष्टि से मनोवैज्ञानिक तथ्यो का उद्घाटन किया गया है। विशेष तौर से वजीरो, उमरावो और नौकर चाकरो के लिए कही गई शिक्षाप्रद बातों में कई स्थानो पर मनोवैज्ञानिक सूझ का लेखक ने अच्छा परिचय दिया है जिसको ध्यान से देखने पर जीवन में अनेक उपयोगी बातें हासिल की जा सकती हैं।

इस प्रकार के अनुवादों से एक महत्त्वपूर्ण बात यह भी प्रकट होती है कि जहां राजस्थान निरन्तर विदेशी शासकों को चुनौती देता रहा है वहां वह उनकी संस्कृति से अच्छी और उपयोगी बातों को हासिल करने का प्रयत्न भी पूरे दिमाग से करता रहा है। इससे यहां के लोगों की ज्ञान अर्जित करने की जिज्ञासा भी परिलक्षित होती है।

अनुवादक ने मूल ग्रंथ का हूबहू अनुवाद न करके कई स्थलो पर उसे संक्षिप्त भी कर दिया है पर कुल मिला कर अनुवाद अच्छा बन पड़ा है। कई फारसी के शब्दों को भी ज्यों का त्यों अपना लिया है और कई शब्दों में थोड़ा

[1] पृ ३२ [2] पृ ३४ [3] पृ ३६ [4] पृ ६४ [5] पृ १०६ [6] पृ ७२
[7] पृ ३१ [8] पृ ४८ [9] पृ ३६।

हेर-फेर भी किया गया है, पर ठेट राजस्थानी के शब्दों, मुहावरों आदि के प्रयोग से ग्रंथ में निखार आ गया है।

प्रस्तुत ग्रंथ का सम्पादन शोध-संस्थान के संग्रह की प्रति से किया गया है। दूसरी प्रति श्री पुरुषोत्तमलाल मेनारिया के संग्रह से भी हमें प्राप्त हुई। दोनों प्रतियों में बहुत कुछ समानता है पर कई स्थलों पर इससे भी सम्पादन में सहायता ली गई है[1]। तीसरी प्रति का परिचय हमे श्री अगरचन्दजी नाहटा से मिला था पर उसकी प्रतिलिपि प्राप्त नही हो सकी। केवल उसके आदि तथा अंत के अंश अवश्य उपलब्ध हो सके हैं जिससे उसकी भाषा आदि के सम्बन्ध में कुछ अनुमान लगाया जा सकता है[2]।

---

[1]आदि—"अथ ग्रथ फारमी रो नाम इखलाक मोहसनी नीति राजस रो थो सो उण रो अरथ प्राक्रत करि लिख्यो। विलायत मे बादसाह सुल्तान हुसेन दातार जुझार, न्याई, समझणा, पिंडत था, तिणरै बडो बेटो बादसाहजादो अबुल मोहसन, तिणरी तारीफ गुणा री—तप जप, दान, तरवार, न्याव, प्रिथी तमाम मे परवरियो थो।"

अंत— किताब लिख पूरी कर पातसाहजादा नू दवा दी। नाम अखलाक-अल-मोहसनी दीयो। तिणमे वरस ग्रथ रो नीमरै छै सु मो० सग्राम सिंघ फारमी री तो वडी जोड थी तिण पाधरी भाषा मे आछी बाता, आछी सीखा लिखि, ग्रथ कर नाम नीति प्रकास दियो छै। वाचीया सुणीया में घणो नफो छै। इति श्री प्राक्रत भाषाबध नीति प्रकाम नामा ग्रथ समापत। सुभवतु। स० १८५४ मिति सावण वद १३ श्री बीकानेर मध्ये लि० मुहता हठी-सिंघ प्रत पोथी भीवसिंघजी री, सु भीवसिंघजी रै प्रत श्री दरबार री सु दरबार में प्रत महाराज विजयसिंहजी रै कारखानै सु मेडतै मे उतारी। स० १८१२ जेठ वद।"

[2]आदि—'विलायत मे पातसाह सुलतान हुसैन दातार जुभार न्यायी सुग्यान पंडित थो तिणरो बडो बादशाहजादो अबुल मोहसन, तिणरै गुणा सुभावा री तारीफ, तप, जप, दान तरवार, न्याव री जस आलम तमाम मे परवरियो थो।"

अंत—"किताब लिख पूरी कर पातसाहजादा नूं दवा दीनी। नाम अखलाक-अल-मोहसनी दियो, जिणमे वरस ग्रंथ रो नीसरै छै। सु मोहणोत सग्रामसिंह फारमी री तो घणी वडी जोड थी तिण पाधरी भासा मे आछी वाता, आछी सीखा लिख ग्रंथ करी नाम नीति प्रकास दियो छै, सु वाचिया सुणिया में घणो नफो छै। इति श्री प्राक्रत भाषाबध नीति प्रकास नामा ग्रंथ।

मदन रस वसु धरति, गुरु वासरि गुरु मास।
सित दल पचमि लिखि कियो, पूरण नीति प्रकास॥
सं० १८१६ में लिखित प्रति।"

हस्तलिखित प्रति मे, जैसा कि प्रायः होता है, पूर्ण विराम, अर्ध विराम, प्रश्नवाचक चिन्ह आदि का प्रयोग नही मिलता और न पदच्छेद आदि की ही व्यवस्था मिलती है पर हमने पाठको की सुविधा के लिए आवश्यकतानुसार इन्हे अपना लिया है। जहां कही अस्पष्टता या लिपिकार की असावधानी के कारण त्रुटियां रह गई थी—उनको भी शुद्ध रूप दे दिया है।

राजस्थानी मे अनुवादित साहित्य भी एक बडी निधि है। आशा है विद्वानो तथा शोधकर्ताओ का ध्यान इस ओर भी आकर्षित होगा।

अत मे जिन महानुभावो की प्रतियों का उपयोग मैंने सम्पादन मे किया है और जिन विद्वानो ने अपने लेख इस अंक मे प्रकाशनार्थ भेजे हैं उनका मैं हार्दिक आभार स्वीकार करता हूँ।

—नारायणसिंह भाटी

नीति प्रकास

फारसी मे ग्रथ इखलाक ग्रल मोहसनी नीती राजस री थी। उणरी ग्ररथ कर प्राक्रत भासा मे नीति प्रकास नाम दियौ।

विलायत मे बादसाह सुल्तान हुसैन दातार[1], जूभार[2], न्याई[3], समझणौ[4] पिडत थौ। तिणरै बडौ साहजादौ ग्रबुल मोहसन। उणरी तारीफ— गुण, जप-तप, दान, सूरता, न्याय मे प्रथ्वी रै ऊपर ग्रेक ही थौ। सुभाव, लाज, मरजाद[5], मुरवत[6] ग्रर बोलचाल रा बखाण[7] सगळा[8] ससार में करै था।

सारा सुभावा मे बडौ सुभाव माता पिता नै राजी राखणौ ही बडौ गुण छै, जिणसू ई[9] लोक मे जस[10] ग्रर परलोक मे सदगत होय।

मात पिता नै देय सुख सो सुत उत्तम जान।
सुख पावै ससार मह, पाछै सुरग मकान॥

सो कोई सबब सू चुगला रा चित मे स्यान पडी[11], बादसाह सू साहजादै री मिळणौ ही जे मुस्कल थौ।

ग्रेक वार बादसाह साहजादै नू लिखियौ—जे थांहरी ग्रोळूध[12] घणी ग्रावै छै, सो ग्रावौ तो म्हारौ जीव सुख पावै। जणा साहजादौ तुरत हरख[13] कर सोभा स, खासा साथ स[14], तिसक कूच कियौ। सारा मे साचा ग्रादमिया[15]

---

[1]दानी [2]योद्धा, युद्ध मे जूझने वाला [3]न्याय करने वाला [4]समझदार [5]मर्यादा [6]शील, सकोच [7]प्रशसा [8]सभी लोग[9] इस [10]यश [11]चुगलखोरों को बुरी सूझी [12]याद [13]हर्ष [14]विशिष्ट व्यक्तियों को साथ लेकर [15]सिद्धान्तरहित व्यक्ति।

री बात नही सुणी, पिता री आग्या प्रभू री आग्या ज्यूं जाण कूच दर कूच आय बादसाह सलामत सू मुलाकात कीवी।

बादसाह गळै लगाय मिळिया[1]। घणी मया[2] कीवी। सारा मुबारकबादी दीवी। ससार मे चैन हुवा री बधाई बटी।

सगळा[3] भला लोगा साहजादै नू ऊमर, दौलत री आसीरवाद दियौ। सेख हसन कासफी साहजादै रै पास मिळण नू आवियौ, दुआ आसीरवाद दियौ। पछै जोत[4] प्रभू री कृपा सूं, इणरा निराळा[5] सुभावा सू दीसती थी, सो भली भात देख नै बिचारियौ[6], भात दुआगोई[7] दोय तीन बचन इणरा उत्तम सुभावा रौ बयान कर लिखू, तिणरौ दस्तूर नीली राजस रौ राजा, साहजादा, उमरावा नूं होय, सो इणरौ नाम इखलाक अल मोहसनी देय लिख्यौ छै।

प्रथम समय मे मिनख आपमतै था। इणा रै माहोमाहे[8] रा अेका बिगर इलाज नही छै नै प्रकृति इणा री विरुद्ध छै, जिणा बीच मे रीत[9] चाहीजै, तिणसू[10] माहोमाहे गुदराण[11] करै। किणां ऊपर अन्याय न होय। सो वा रीत सरियत[12] छै। तिण रीत री थापना प्रभू री आग्या सू होय। तिण रीत रा बाधणहार[13] नू पैगवर कहै छै। उण रीत नू पहुच मुजतन[14] कर चलावै। कोई नूं रीत छोडणै देवै नही सो बादसाह कहावै। तिणसूं बादसाहा री मुरतब[15] पैगबरा सू मिळतौ-जुळतौ[16] छै। इणसूं पैगवर रीत रा बाधणहार छै अर बादसाह उणरा चलावणहार छै। सो हिमायत करणहार उण रीत रा कहियौ छै—प्रभू! आपरी बदगी पाछै पैगबरा री आग्या मानणी कही, ती पाछै देस रा धणी[17] बादसाह री आग्या मानणी कही।

प्रथम प्रभू सेवा करै, पुनि रिखि आग्या मान।
नरपति आग्या अनुसरै सो है परम सुजान॥

बादसाह भला सुभाव री रीत रौ जाणकार चाहीजै, तिणसूं सारा रौ जापतौ[18] करै। मोटा प्रभू कृपा कर उणनू आपरा बादा[19] ऊपर हाकिम कियौ,

---

[1]मिले [2]दया [3]सभी [4]ज्योति [5]निराले [6]विचार किया
[7]शुभ कामना [8]परस्पर [9]रीति, व्यवस्था [10]जिससे [11]निर्वाह
[12]मुसलमानो का धर्म-शास्त्र [13]बाधने वाले [14]अच्छा यत्न
[15]सिलसिला [16]मिलता-जुलता [17]मालिक [18]जाब्ता [19]सेवक।

वांदा नै उणरी आग्या में दियौ। इण कारण सूं बादसाह नै चाहीजै[1] कै अपणै ताई[2] सुभावां सूं आछौ कहावै।

सो बादसाह नूं चाळीस गुण झालणा[3] जोग छै। तिणमें केई प्रभू रा छै, केई एक ससार निमित्त छै। अै चाळीस गुण चाळीस वातां में छै, सो पाधरी[4] फारसी मे छै। आछी वातां प्रस्ताव समय माफिक भासा में लिखणी आई छै।

१ प्रभू री वदगी
२ राज प्राप्ती
३ विनती प्रभू सू
४ वडाई
५ सबर-धीरज
६ प्रभु इच्छा सूं राजी
७ प्रभू री नेहचौ[5]
८ सरम[6]
९ सील
१० अदव-सुभाव
११ हिम्मत
१२ हठ
१३ परीस्रम
१४ पावदी-सपगाई
१५ अदालती, न्याय
१६ क्षमा
१७ नम्रता
१८ मेळ
१९ दया
२० पुण्य-दान
२१ अहसान
२२ आदर

---

[1]चाहिए [2]अपने लिए [3]ग्रहण करना [4]सीधी [5]निश्चितता [6]शर्म।

२३ अमानत दियानत
२४ पालना बचनां री[1]
२५ सत्य
२६ अतिथि-सत्कार
२७ बिचार धीरज
२८ मैत्री सलाह
२९ दूरदेसी
३० पुरुसारथ[2]
३१ अहकार
३२ दड
३३ सावधानी
३४ ग्यान
३५ गुप्त
३६ समय री जाणकारी
३७ हक री जाणकारी
३८ सत्सगत
३९ कुसग त्याग
४० अनुचरा री पाळणा

इणा चाळीस बाता नू जाणणी[3] जरूरी छै।

पहली बात

पूजा वदगी प्रभू री बिध आग्या सहित करणी अर त्याग भूंडी[4] बातां रौ मुकररि[5] छै। पूजा वदगी प्रभू री रौ कारण ससार मे कुमळता सू रहणो नै आगतर[6] मे कारण छुटकारा रौ नै करामात रौ छै। तीसूं पूजा वदगी वादसाहा नू चाहीजै। प्रभू री आग्या मान आप नू सोभायमांन करै, जे इहलोक परलोक वास्तै प्रभू री आग्या आप मानै तौ उणरी आग्या सगळो[7] ससार मानै।

हजरत अली आपरी वादसाही रै समै दिन मे ससार रौ काम सुवारण नू[8]

---

[1]वचनों का पालन करना [2]पुरुषार्थ [3]जानना [4]बुरी [5]निश्चित
[6]अगल जन्म मे [7]समस्त [8]कार्य पूर्ण करने के लिए।

रहता नै रात नै प्रभू री वदगी में रहता। तरै उमरावा कहियौ—हे साहिब! आप इतरौ कसालो[1] क्यूं करौ, दिन रात आराम करौ। जणा फुरमायौ—जे दिन रा सोऊं तौ ससार रौ काम बिगड़ै, तीसू दिन में लोगां रा काम करूं छूं। रात नै काम प्रभू रौ करू छूं सो रात मे सोऊ तौ कयामत[2] रै समै आपरौ काम बिगड़ै छै।

अेक वादसाह रात री सही सध्या महापुरख सू विणती करी—मोनूं सीख देय[3]! तरै फुरमायौ[4]—जे सोभा ससार री नै छोड आग्या री चाह छै तौ रात प्रभू री दरगाह मे दूबळौ होय, भजन कर अर दिन मे आपरी दरगाह[5] बीच भूखा, प्यासा, दोहरा-दूबळा[6] फरयादी री वात पूछ नै सरवराई[7] कर। प्रभू रा वदा थारी आग्या मानै छै तौ तू प्रभू री आग्या मान।

जिकौ वादसाह प्रभू री आग्या[8] मानै छै उणरी आग्या खलक[9] मोनसी। देस रा लोगा रा सुभाव वादसाहा रा सुभावा माफिक होय—यथा राजा तथा प्रजा कहीजै छै। धणी वदगी करै तरै लोग पूजा-वदगी करै। दममास[10] वादसाह नूं आवै।

बीजी वात

इक्लास[11] सू निष्कपट, अदेसा विगर, पक्ष विगर, म्हारा थारा विगर गादी राज री बैठै। आपरी गरज सू काम नही करणौ व नीती प्रभू रा राजीपणा ऊपर राखणी।

वादसाह नूं चाहीजै काम करै जिण मे रजावदी प्रभू री चाहै, मन री चाही ना करै। तहकीक[12] मे सारी गरज सू प्रभू री ना-रजावदी ऊपजै। मिस्र देस रौ अेक वादसाह थौ। उणरी आग्या सेती वदा अेक वेअदव नूं ताजणा[13] मारै था। उण समै उवौ मरद वादसाह नू भूडौ कहणै लागियौ। गाळ देणी माडी[14]। तरै वादसाह फुरमाई—जे इणनूं मत मारौ। मो छोड दियौ। दूजै उमराव तद कह्यौ—इण वेसरम धीठ[15] नू घणौ मारणौ जोग थौ। वादसाह फुरमायौ—जद उण मोनू अजोग कही ताहरा म्हारौ मन उणमू वेराजी हुवौ

---

[1]कष्ट [2]महाप्रलय [3]मुझे विदा कर [4]कहा [5]दरबार [6]दुखी और दुर्बल [7]खातिरदारी [8]आज्ञा [9]दुनिया [10]दसवां अंश [11]मेल-जोल, प्रेम [12]जांच-पड़ताल [13]चाबुक [14]गाली देने लगा [15]ढीट।

नै वैर गाळ री लेण में हुवौ पण मैं अकल सूं चाहियौ नही। जे प्रभू रा कांम मे प्रकृति रौ चलण करूं[1] तौ इण तरह इकळाम सूं दूरी छै, हाकिमगरजी नूं धरम अर प्रभू री रजाबंदी सूं बेमुख रहणौ छै।

राज प्राप्त जे होय तौ, रहै सदा इकळास।
प्रभु इच्छा जाणै प्रबळ, होवै नाहि उदास॥
आपाभरजी[2] नहि बणै, ईस्वर पद हित होय।
ताके सुखमय राज मे, कबहु न सक्ट होय॥
पाया राजधमड[3] सूं, जे उनमत हो जात।
लुप्त होय सो सीघ्र ही, ज्यू तारा परभात॥

तीजी बात

जिण राजा बादसाह नू कूची विणती री हाथ आवै, उणरी विणती प्रभू सही मानै। विणती नफा री या तोटौ दूर करण री—अंहिज दो बात री छै। बादसाह जे नफा री विणती करै तौ ऊ निरिचत राजस करै[4]। दूजै वास्तै उत्पात, तोटा, बैरी रा धक्का, बलाय, रोग-दोख टळणै री विणती पण दीनता-हीनता सू करणी।

वडा कही छै- जे न्याई बादसाह री ही विणती कबूल होय छै। अेक नगरी मे कितरा अेक दिन-रात मेह घणौ बरसियौ[5], सो लोगा नूं कठणता बीती[6]। मकान गिर पडिया। डोळ[7] फिर नह सकै, सो सगळा[8] भयभीत हुआ। ज्योतिसिया कही—ग्रहा रै जोग सू[9] इसी मालम होय छै जे पाणी री अधिकता सूं सहर विकळ होयसै। मिनख रोवणै पीटणै लागिया। तरै[10] पच भेळा होय[11] बादसाह कन्है गया। बादसाह बुद्धिमान उत्तम सुभावा रौ थौ सो पचा नूं दिलासौ देय[12] आप अेकात जाय पवित्र होय, बैठ, प्रभू सूं कही—हे प्रभू! सहर रा लोग विकळ छै, मेह सू उजाड घणौ हुवौ[13], आप करता छौ, समरथ छौ प्रजा रा दुख दूर करणै नू अपणी कुदरत दिखावणै नू। यू विनय कर दडवत

---

[1]मेरी प्रकृति काम मे लू [2]खुदगर्जी [3]राज्य का गर्व [4]राज्य करे
[5]बरसा [6]लोग बहुत कठिनाई मे पड गये [7]छोटी नाव [8]सभी लोग
[9]ग्रहो के सयोग से [10]तब [11]शामिल होकर [12]आश्वासन देकर
[13]नुकसान बहुत हुआ।

करी, सो तुरंत मेह् वद हुवौ। वादॅळ फाट गया, सूरज निकळ आयौ, लोग सारा सुखी हुवा। आ बात परतख छै—राजा बादसाह् पवित्र होय दीन भाव सू प्रभू री विणती नहचौ कर[1] करै तौ प्रभू दया करै।

> नरपति राखै दीनता, प्रभु पद मे नित हेत।
> प्रजा प्रीत मे निरत हो, वाकी वह सुन लेत॥

चौथी बात

गुणानुवाद[2] गुण किया रौ अर प्रभू री दया रौ करणौ। प्रभू बादसाही मोटी वस्तु दीवी छै। सो बादसाह नू चाहीजै—सदा गुणानुवाद इण मोटी इनायत रौ करै। पण गुणानुवाद मन सू औ छै—जे प्रभू नू साचा मन सूं पिछाणै[3] अर आ जाणै—आ राज-रिद्ध मोनू प्रभू री मया[4] सू जुडी छै। जीभ री सुकर गुणानुवाद औ छै—सदा प्रभू नू याद कर कहै—सारी कृपा आपरी छै। सरीर रा अंगा सू सुक्र गुणानुवाद औ छै—जे इण अगा री कूवत सू उणरी वदगी माही खरच करै। जिण अग सू जिकी वदगी ठहरी छै सो तिण मे लगावै।

आख री वदगी आ छै—समार नै निजर सूं परायौ अर अनित्य जाण डर सूं देखै। पिडता, महापुरखा अर भला नू कारण विना देखै, दोहरा-दूबळा[5] नूं दया-मया जुत[6] देखै।

काना री वदगी आ छै—भगवान री अर महापुरखा री आग्या रा वचन सुणणा[7], सीख माणणी[8]। हाथा री वदगी आ छै—दान करणौ. भूखा, दोहरा-दूबळा, मागण वाळा री इच्छा पूरी करणौ। पगा री वदगी आ छै—तीरथ, देवस्थान अर महापुरखा रै दरसण[9] नू जावणौ, तपस्विया रै खाणै पीणै री खबर लेवणी[10]।

इण भात सुकर किया दिन प्रति दिन दौलत वधै, प्रभू उण री राज-रिद्ध, माल-मुल्क नू तरक्की देवै।

अेक बार सुल्तान सजर बडौ बादसाह बठी नू जावै थौ। मारग मे गूदडियौ फकीर ऊभौ थौ सो बादसाह नू सलाम कीवी। बादसाह माथौ हलाइयौ[11] पण

---

[1] धैर्य रख कर [2] गुण वर्णन करना [3] पहिचाने [4] कृपा [5] दुर्बल [6] युक्त [7] सुनना [8] शिक्षा माननी [9] दर्शन [10] खाने पीने की व्यवस्था का ध्यान रखना [11] हिलाया।

मुहडा मूं[1] जवाब नह कहियौ। तरै फकीर कहियौ—जे सलाम करणौ रीत छै, उत्तर सलाम रौ देणौ जरूर वाजब[2] छै। मैं रीत थी सो कीवी, तै रीत रौ उत्तर दियौ। बादसाह न्याय सूं आपरी चूक जाण, सलाम रा जवाब देण नूं बाग खीच ऊभौ रहिनै कही—हे दरवेस! हू सुकर करतौ थौ, तीसू थारै जवाब री गफलत हुई। तरै दरवेस कही—किणरौ सुकर करै छै? बादसाह कही—प्रभू नू धन्य कहू छू, तिण में सारै गुणानुवाद रौ तत[3] छै। दरवेस कही—हे बादसाह! तूं सुकरगुजारी रौ मारग[4] न जाणै नै सुकर री रीत करै छै। थारौ सुकर तौ था ऊपर प्रभू मया करी तिण माफिक चाहीजै। तरै बादसाह दरवेस नू अरज कीवी[5]—जे प्रभू जिण भात मानै तिण भात आप मोनू खबरदार करौ।

दरवेस कही—गुणानुवाद सुकर बादसाही पायै रौ न्याय छै। सुकर मोटा देस धणिया रौ माल अर रैयत ऊपर लालच न करणौ[6], नेकी सू आग्या चलावणौ, सेवका री सेवा रौ हक पहचाणणौ। सुकर बडा भाग प्रतापिया रौ—दोहरा-दूबळा अर विपत रा मारिया[7] ऊपर दया करणौ। सुकर घणा खजाना जवाहिर रौ—सदका[8] रोजीना दान ठौड जोग करणौ। सुकर बूवत नै डील रै जोर रौ—निरबळ[9] कमजोर सरणागता नू अपराध बक्सणौ, माफी करणौ। सुकर निरोगता रौ—रोगिया नै, अन्याय रा दुखिया नै पूरण औखध[10] देय तगडा करणा। सुकर साथ सामान रौ—आपरी प्रजा नूं दुस्मणा रै धक्कै सूं अळगी[11] राखणी। सुकर इमारत मोटा बाग बैकुंठ जिसा रौ—घर बाग रैयत रै माही चाकरा हसम[12] नू उतरणै न देणो। तमाम तंत सुकरगुजारी रौ—क्रोध में अर रजामदी में प्रभू नू जाण सत्य छोडणौ[13] नही, खलक रौ आराम आपरा आराम सू पहला राखजै। सुलतान सजर पातसाह नूं स्वाद दरवेस रै वचन रौ भिदियौ[14] सो चाही—घोड़ा सू उतरण री जात करूं[15]। पण देखै तौ दरवेस नही दीसै, तरै मदद हुवौ औ वचन मान लीजै। सो आप उण माफक दस्तूर आपरौ कियौ। मीरा हकीम री सकळ आपरै सामनै राखी। ससार रा दोनू साधन इण मीरा मे हुवै छै।

[1]मुंह से [2]वाजिब [3]सार [4]मार्ग [5]प्रार्थना की [6]करना [7]विपत्ति के मारे हुए [8]खैरात [9]निर्बल [10]औषधि [11]दूर [12]फौज [13]त्यागना [14]दरवेश के वचन मन को भाये [15]उतरने का प्रयत्न करना।

पांचवीं वात

धीरज[1] निपट वडौ गुण छै। प्रभु री दया मया धीरजवांन पुरखां ऊपर कही छै। धीरज रौ नफौ पुण्य अलेखं[2] इहलोक व परलोक में छै। कही छै—दाऊद नूं गैबवांणी[3] हुई—हे दाऊद! सबर कर, जे म्हारा सुभाव तोनूं ओपमा होय। म्हारा तमांम गुणां में म्हारौ गुण अेक औ छै, सो तूं धीरज जांण। मरद नै धीरज सारी वाता सूं भलौ छै, तिणसूं अरथ सधै[4]। विपत में धीरज धरै तौ जल्द आसान होय। धीरज कूंची खुमहाळी री छै। धीरज सगळै अटळ छै[5]।

अफरासियाब तूरान रौ वडौ वादसाह, सो आपरा उमरावां नूं कही—रूप, सरीर, मरदमी[6], साज, सामान इणा रै ऊपर भूलौ मता[7]। गप्प मारै, दावा करै, तिणरौ भरोसौ न करौ। इतरै इणनै धीरज सू परखौ, सपगाई[8] सू परखौ। जो धीरज मे पूरा छै तौ उणा री मरदानगी मे पूरौ भरोसौ करौ। मरद रौ मोल गप्प दावा सूं नही छै, कीमत मरद री धीरज सूं छै।

अेक दिन अेक मरद वादसाह कन्है ऊभौ थौ[9] अर वादसाह उणनूं वात करतौ थौ। होणहार सू उणरा जामा मे अेक विच्छू दौड़-दौड़ सू काटणै लागौ पण उमराव मुतलक[10] उण मस्लत मे[11] वात न काढी, हलचल उणमें जाहिर न हुई, वचन नगरौ दस्तूर अक्ल नै कायदा हिकमत सू न फिरियौ। घर आय उण विच्छू नूं जामा मे सू वाहर काढियौ। आ खवर वादसाह नूं पहोंची सो हैरान हुयौ। दूजै दिन उवौ अमीर हजूर माही आटयो[12] तरै वादसाह फुरमाई—जे विच्छू सरीर सूं दूर करणौ थौ सो क्यों न कियौ? उण अरज कीवी—म्हे इसा नहीं छा सो आपरी वात विच्छू रा डक रा धक्का मूं काट देवा। जे आज सभा मे विच्छू रा डक मे धीरज न कर सका तौ क्यूं कर कारह मार-काट व लडाई मे वैरिया रा हाथिया रो चोट सह सका। वादसाह नू वचन पसद आइयौ अर उणरौ पायौ वधायौ[13]। इनरी धीरज सू अरथ सधियौ।

---

[1]धैर्य [2]अनगिनत [3]आकाशवाणी [4]कार्य-सिद्धि हो [5]अटल है
[6]मर्दपना [7]इनका गर्व मत करो [8]दृढ़ता, विश्वास [9]खड़ा था
[10]सम्बन्ध मे [11]सलाह करते समय [12]आया [13]तरक्की दी।

छठी बात

प्रभू री रजा सूं राजी रहणौ[1], जो प्रभू सूं वदा नूं पहोचै। होणहार नूं तीर जाणियौ चाहीजै[2]। रजा जिसी कोई ढाल नही छै। जिकौ रजा नूं पहली माथौ देय तिकौ वेगौ गादी बडा री बैठै। जिकौ ईस्वर री करतूत पर राजी न रहै तिणसूं काईं फायदौ ? वदगी नैं रजा ही जे इलाज छै। बंदौ जतन[3] करै पण ईस्वर री इच्छा न जांणै। इच्छा उपाय रै ऊपर छै।

श्रेक मोटौ पुरख[4] प्रभू नूं विणती करी—जे हे प्रभू! मोनूं इसो राह बताय तिकौ कारण थारी रजावंदी रौ होय। तरै बांणी हुई—म्हारी इच्छा, करतूत सूं राजी रहै जद मैं तोसूं राजी रहूं। जिकौ दिल ईस्वर री इच्छा सूं राजो रहै, हाय पुकार नहीं करै, इण खातर[5] उणनूं दु.ख दिलगीरी नहीं व्यापै[6]।

सातवीं बात

तवकल[7] सो निस्चै कहीजै। जतनां रै करणै सूं दिल उठावणौ, नैहचौ प्रभू ऊपर करणौ। आपरै कामां री संवार[8] पैदा कुनिदा सूं चाहणौ छै। जिकौ बणै तिण मे भरोसौ मया प्रभू री मानै तौ सगळा काम उणरै मनमांन्या सधै[9]। बादसाह नूं जोग छै—राह नैहचै री नही छोडै।

श्रेक दिन, श्रेक बादसाह श्रेक सयाणा[10] पिंडत सू पूछी—फतह कितरी वस्तुवां मे छै ? पिंडत कही—दोय वस्तुवा मे। श्रेक तो त्रिकाळ रा भजन मे, दूजी तवकल मे, सो नेहचौ—मया काम रा संवारणहार रै ऊपर। उण बादसाह आपरो नीयम इण दोय कामा ऊपर राखियो।

श्रेक समय उणरो वैरी भारो साथ सामान सू चढ आवियो। श्रो पण उरा सू आपरो साथ सामान लेय साम्हो गयो[11]। जाय नेड़ा डेरा किया[12]। रात बीच मे रही, परभात लडाई होयसी। इण रात श्रो बादसाह तमाम रात नवाजस कीवी[13]। तरै श्रेक उमराव खिदमतगार कही—जे दमश्रेक आरांम

---

[1]प्रभु की इच्छा के अनुसार रहना [2]होनहार को तीर की तरह अचूक जानना चाहिये [3]यत्न [4]बड़ा आदमी [5]इसलिए [6]दुःख व्याप्त नहीं होता [7]तवक्कुल, सभी कामों के लिए ईश्वर पर पूर्ण विश्वास करना [8]कार्य की व्यवस्था [9]मनचाहा कार्य पूरा हो [10]सयाना [11]सामने गया [12]नजदीक पड़ाव डाला [13]ईश्वर से प्रार्थना की।

करो, परभात लड़ाई लड़णो छै। बादसाह कही—हूं तो आज रात मे कांम प्रभू री करूं छूं, फेर परभात री कांम तो प्रभू री छै, जिको चाहै ज्यूं करै। म्हारो तो उण बखत में कुछ कांम नहीं। उमराव फेर कही—तयारी सांमांन वाढ़ रा री करो[1]। मारकाट वाढ रै पाण होवै। तरै बादसाह फुरमायो—जे जिरह-बस्तर नेहचै रो पहरियो छै[2]। काम आपरो प्रभू पर छै, देखो उणरी काईं क्रपा होय। परभात मे लड़ाई रा मारचा दोनू फौजा मे वधिया। उण समै प्रभू री क्रपा री मदद उणरी तरफ आय पहोंची, सो वैरी रा पग छूट गया[3]। मन माही भय व्यापियो[4] तिणसूं बिगर तीर तरवार रो मार ही भाज गयो। इण तरफ बादसाह जीत पाय घर आया। सुखसेती[5] राज कियो।

आठवीं वात

हया, सरम लाज नू कहीजै छै। ओ खरो मोटो सुभाव छै। मोटा पुरखां कह्यो छै—सरम धरम रै रोखडा री डाह्ळी छै[6]। सरम मूं सोभा आलम[7] री छै। जो गुण सरम री, माही सूं ऊठै, किणी नूं किणी सूं सरम न होय तो संसार री सोभा मे खलल पडै। कोई मन चाहै सो करै। भूंडा करमां री भांजणहार[8] सरम छै। तो मालम हुई—जे मोटा छोटा नूं सरम मे फायदो घणो छै। सरम रै बिगर सारा ही गुण काचा छै[9]। सरम रो पडदो[10] सबसूं वडो जाणजे।

अेक भात सरम री इसो छै जे गुनहगार करतूत आपरी सूं लाजै छै[11], ज्यू हजरत आद प्रभू सू आपरी चूक में लाजिया छे।

दूजी भात सरम री दातारो छै। मोटो दातार सरम राखै छै। जे मायल[12] मागणै वाळो उणरो पोळ[13] सू निरास जाय, तो मोटा मन मे सरम खाय। प्रभू दातारा रा गुण, सरम अर दातारी सू बखाणै छै[14]। बदी अरज करै तिण री आसा पूरै छै। उण रै घर री आस करै सो निरास न होय। घणो दाता ऊंही छै जो मागण वाळा नू लाजतो पाछो न फेरै[15]।

---

[1]शस्त्र आदि युद्ध-सामग्री की तैयारी करो [2]धैर्य का कवच पहना है [3]दुश्मन भाग गया [4]व्याप्त हुआ [5]सुख से [6]शर्म, धर्म के वृक्ष की टहनी है [7]संसार [8]बुरे कर्मों को नष्ट करने वाली शर्म है [9]परिपक्व नहीं है [10]पर्दा [11]लज्जित होता है [12]मांगने वाला, याचक [13]दरवाजा, बैठक [14]प्रशंसा करते हैं [15]वापिस न लौटाये।

मोमू बादसाह रा समय मे अेक पुरख अरवी खारै पांणी रा देस रौ वासी थौ। उण खारा पाणी रै सिवाय न दीठौ, न चाखियौ[१]। अेक समै उठै काळ पडियौ[२] सो पेट भरणै री जरूरत सूं वतन छोड नीसरचौ। सो खारौ देस छोड मीठा देस मे आयौ। तिण रैन मे अेक दह[३] मेह रा पाणी सूं भरियौ दीठौ। अरवी काटा फूग झाड परा कर[४] पांणी पीयौ, जणां वीनूं इचरज आवियौ[५]—जे इसौ मीठौ पाणी कठै होय ? तरै मन मे कही—मैं पैलां सुणी थी—जे प्रभू रा वैकुंठ में पाणी इसौ छै जिणरौ[६] न मिठास घटै न स्वाद विगडै। जे प्रभू न भुलाडै[७] तौ उण म्हारी विगत भूख ऊपर कृपा कर औ अम्रत रौ पाणी धरती पर बरसायौ छै। हमे मसलत आ छै—थोडौ पाणी उठाय बादसाह कन्है ले जाऊ तौ उवौ इसी खिदमत रै बदळै म्हारै ऊपर अहसांण करसै। तिणसू मैं अर म्हारौ लोग काळ नूं काढस्या[८] सो उवौ अरवी मसक[९] भर सहर बगदाद नू लेय हालियौ।

कितरी अेक दूर सहर सूं रही थी सो बादसाह आपही सिकार नू उठीनै आवियौ[१०]। अरवी उणा नू देख दुआ दीवी। तरै बादसाह हया कर[११] उणसूं पूछी—हे अरबी ! कठा सू आवियौ ? इण अरज कीवी—जे फलां जायगा सूं। उठा रा मिनखा नू काळ भूख सूं दवाइया छै। मोमू कही—कठीनू जायसै ? उण कही—थारी दरगाह आयौ छू, पण खाली हाथ न छूं, तोहफौ[१२] लायौ छू, जिसौ कोई दीठौ न सुणियौ। मोमू इचरज में हुवौ[१३] नै कही—जे ल्याव काई लायौ छै ? अरवी मसक आगे करी नै कही—हे बादसाह ! औ पाणी वैकुंठ रौ छै। आलम मे न किणी चाखियौ न दीठौ। मोमू आवदार[१४] नू फुरमायौ सो प्यालौ भर नजीक[१५] लाइयौ। पाणी रौ रग फिर गयौ—मसक री वदवोय भिदी[१६]तीसू। बादसाह पाणी पीनै गिलानी पाई पर सरम सूं उणरौ पडदो न फाडियौ[१७]।

बादसाह कही—हे अरवी ! साची कही, औ पांणी घणौ पवीतर नै मीठौ छै, औ

---

[१]चखा [२]अकाल पडा [३]बडा हौज [४]अलग कर के [५]उसको आश्चर्य हुआ [६]जिसका [७]भुलाए [८]अकाल का समय व्यतीत करेंगे [९]मशक [१०]आया [११]कृपा कर [१२]भेंट [१३]आश्चर्यचकित हुआ [१४]पानी पिलाने वाला [१५]नजदीक [१६] मशक के चमड़े की बदबू मिल गई [१७]उसका भेद नही खोला।

हर किणी नू नही देवणो । पछै बादसाह आबदार नूं फुरमायो—जे मसक उरी लेय, भला राख । जावतै री ताकीद ज्यादा कीवी । बादसाह अरबी नू कही—थारो मतळब काई छै सो कह, भली बगत लायो छै । उण अरज कीवी—हे धणी ! म्हारै मिनख भूखा मरै छै । आम प्रभू री नै थारै दान री राखूं छूं । बादसाह फुरमाई सो हजार दीनार[1] उणनूं मिळिया अर कह्यो—जे इब[2] इण जायगा[3] सूं वतन नूं पाछो फिरजा । सो अरबी थैली लेय वतन नूं गयो ।

पाछै अेक उमराव पूछी—इणमें हिकमत[4] कांईं थी जे इण पाणी नै किणी नू नही चखायो ? अरबी नू अठासूं ही पाछो क्यूं मेल्यो ? तरै मोमूं कही—उवो पाणी बदबूदार थो पण अरबी रै पाणी मू आछो[5] थो सो उणनूं बैकुंठ रो दीसै थो । थे जो उण पाणी नू पीना तो तत पायां विगर[6] उणनूं मायै मारता,[7] तिणसू बापड़ो लाजतो[8] । जे अठा सू पाछो न फेरता तो आगे रा सहर में जाय नदी रो अव्वल पाणी पीतो जद आप सू लाजतो । तीसूं मोनूं सरम आई । जे कोई म्हारी आस कर आवै मो सरमिदा होय फिरै[9] तो आ वात आछी नही ।

सरम अेक भात री अदब छै । बादसाह नमेरवा जिण घर रै आगण में गुल नरगम होतो उठै आपरी स्त्री सू भोग-विलास न करतो—जे गुल नरगम सूं लोग आख री ओपमा[10] देय छै, इनरी सरम थी ।

नवीं वात

हराम री वातां नू त्याग करणं रो नाम सील[11] छै । पर-स्त्री सभोग कदे भूल कर ही न करणो । सील निपट मोटो गुण[12] जाणजे । वडा मिनखा कही छै—आदमी सुभाव सू दोय भात रा मानणा—अेक देवता नै बीजा राक्षस । देव सुभाव सू मिनख भलै सुभाव री नै भलै चलण[13] री चाहना करै । राक्षस प्रकत वाळा मिनख रिम[14] राखै, अजोग[15] वसन भखै, सरीर री सुख पर-स्त्री भोग जाणै, मरावो होय ।

---

[1]स्थानीय सिक्का [2]अब [3]जगह [4]तर्कीब, विशेषता [5]अच्छा [6]असलियत समझे बिना [7]अपमान करते [8]लज्जित होना [9]वापिस लौटे [10]उपमा [11]शील [12]बहुत बड़ा गुण [13]चाल-चलन [14]गुस्सा [15]अयोग्य ।

सरियत अक्ल री आ छै—जे सगतो भर देव-प्रकृत नूं जोर पकड़ावै[1] पसु-पद री गरज छोडै। जद इच्छा खाणं री होय तरै घापनै अन्न खाय। इणी भात काम रा जोर री वखत आपरी परणी स्त्री सूं भोग करै, पर-स्त्री री विचार तक नहीं करै। पछै सील उणनूं कहीजै—जिण समै कांम री जोर होवै उण समै मनसा[2] री बाग पाछी खैंचै। आपरी दानण[3] हिम्मत आपरा नूं पवित्र राखै। परणी रै विगर सांम्हो नहीं देखै। अजोग कांम देखण सूं आंख ढांपै[4] तो भलो वातां दौलत नै फतह री जुड़ै।

वादसाह आप सील सुद्ध होय जणा तहकीक अंधेर, कुकरम, वेसरमी री देस सूं टळै।

दसवीं बात

सारा जतनां सूं[5] अदब राखणी—आपरै सरीर सूं, बोली सूं, करतूत सूं[6]। सरीर सूं वेअदबी न करै। वचन सेती अजोग न बोलै[7], करतूत नालायकी रा ना करै। मिनखा नूं इज्जत सूं राखणा। आपरी नै औरां री आबरू न खोवणी। हकीकत अदब री आ छै—तमाम हाल मे मोटा पुरखां रा सुभाव जे प्रभू री कृपा सूं हुवा छै तिण नूं सीखै। अदब सारां सूं आछी दीसै, विसेस कर मोटा वादसाहां सूं, अय्वोपनिया सूं। अै पूरण[8] अदब सूं रहै तरै इणा नूं देख सेवक सारा अदब राखै इण वास्तै रैयत पण अदब न लोप सकसै[9]। इणसूं देस रा घणा काम सोभाळू होय[10]। विद्या वढै नै हिकमत ऊपजै। प्रभू वंदा नूं अदब देवै छै। वेअदव प्रभू-कृपा सूं निरास छै। वडा लोगा कही छै—भली खरी पूजी आछी वणाव[11] गहणो आदमियां नूं विसेस कर वादसाहां उमरावां नूं अदब छै। सो अदब नूं सही राखणी, छोडणी नहीं[12]।

मिस्र देस रै वादसाह री रूम देस रै वादसाह सूं हेत हुवो। उणरी वेटी आपरा वेटा नूं परणाई[13]। सगेपण सूं[14] घणो हेत हुवो। दोनूं देसा मे घणो चैन आवादांनी[15] हुई। माहोमाहे[16] सलाह मसलत पूछ नै कांम करता। अेक समै मिस्र रै वादसाह सदेसो रूम र वादसाह कन्है मेलियो—सगार मे वेटो मव सूं

---

[1] ताकतवर बनावे [2] मन्शा [3] दामन [4] आंख बन्द करते [5] यत्नपूर्वक [6] कर्म से [7] अनुचित शब्द न बोले [8] पूर्ण [9] लुप्त नहीं कर सकेगी [10] शोभामय होंगे [11] बनाव-शृंगार [12] त्यागना नहीं [13] ब्याही [14] आपसी विवाह-सम्बन्ध से [15] चहल-पहल [16] आपसमें।

घणो पियारो[1] होय छै, तिणसूं इणरै भलो होणै नूं जतन करणो जोग छै। सो म्हैं म्हारै बेटां रै वास्तै इतरा खजांना जवाहिरात री चीजां, वजीर, हाथी, घोड़ा, गढ़, कोट तयार किया छै। थां आपरै बेटां वास्तै काईं तयारी कीवी छै? ओ सदेमो केसर रूम कन्है पहोंचियो[2] तरै आ फरमाई—माल, मंत्री, गहणो, गढ़, किला अै सब निगुणा नै निपगा[3] छै। इणांरो भरोसो नहीं करणो, लेखो नहीं लेणो[4]। माल रै भरोसै भूलणो नही। हू तो आपरै बेटां खातर अदब रो गहणो सचै[5] कियो छै नै खजांना उणरै मांही उत्तम सुभावां रा भरिया छै। माल मारग जांणै रै माही छै[6]। उत्तम सुभाव पण अळगा नही जावै। अदब इल्म कदै दूर नही होय। आ खबर मिस्र देस रै बादमाह नूं पहोंची तरै फरमाई—वे सांच कहे छै। मोटा पुरखां नूं अदब नै विद्या चाहीजे तिणसूं ही जस[7] रहे छै।

ग्यारवीं वात

हिम्मत नूं वडी कहजे। वडा पुरखां कहो छै—वडी हिम्मत रा पुरखां नूं प्रभू प्यारा राखै छै। मोटा कांमां नूं नजरबडा करै छै—मोटापणू[8] अर भाग्य-प्रताप सूं। हिम्मत वडापणै सूं मेळ राखै छै। इणरै माहोमाहे[9] जुदाई मुस्कल छै। बादमाहां नूं हिम्मत ही वडी छै, उणनूं उजीर पूरी मददगार होय। मोटी हिम्मत राखै जिणसूं प्रभू नू अर प्रजा नू हिम्मत माफिक भरोसो होय।

याकूब नूं चढती जवानी में अेक बूढै रबीलेदार कह्यो—मन म्हारो थारै हाल माम्हो देखतो रहै छै, किण वास्तै के थारा जवांनी रा दिन छै, ममै कांम रै जोर रो नै कळंक[10] लागणै रो छै। तूं कौल देय मो थारै आछै घराणै री वेटी लाऊ। याकूब कह्यो—मैं वीनणी[11] पसंद कर राखी छै, तिणनूं कौल तयार छै। तरै वडेरो कह्यो—कुण छै? किणरी वेटी छै? जणा याकूब घर भीतर जाय तरवार लेय बाहर आवियो नै कहणै लागियो—हू वीनणी मुल्का रै ऊगणै आंथणै रो मू नकाह करस्यूं। तिणरी महो कौल नूं आ तरवार पाणो वाळो[12] अर बस्तर काटणी छै। कहो छै—प्रथ्वी-रूपी वीनणी ऊही

---

[1]प्यारा [2]पहुँचा [3]अस्थिर [4]गिनती में नहीं रखना, महत्व न देना [5]संचित [6]सम्पत्ति सब नष्ट होने वाली है [7]यश [8]बड़प्पन [9]आपस में [10]कलंक [11]दुल्हिन [12]तेज धार वाली।

परणसी[1] जो तीखी तरवारां रै बाढ[2] देयसी ।

जिण दिनां सिकदर रूम रै ऊगण सूं आथण ताईं[3] प्रथ्वी लेण नूं चाही—कूच करूं, दरियाव छोड प्रथ्वी खड मे थाण-दाण फेरूं[4], इण विचार सूं सचितो थो[5]—मन मे चितातुर थो । इणरै हकीम अरस्तू उजीर थो सो बादसाह नूं सचित उदास देख मन सू विचार कर कही—प्रथ्वीनाथ ! देस, दौलत, साथ-सामान, हुकमी, खजाना, आवादी घणी भाग[6] प्रताप आज दिन सगळा थोक छै। फेर आपरै सोच रो काई कारण छै जिको फुरमावो । सिकदर फुरमाई—देस रो मैदान मात मुल्क रो थोड़ो छै । मोनूं सरम आवै छै, तीसूं और मुल्क रै लेणै नूं चढ जापतो करणो[7] । हकीम अरस्तू अरज कीवी—बेसक इण ससार रै लेण नू आपरी हिम्मत जबरी छै । पण इण मुल्क रो काई, सास्ता[8] परलोक रा मैदान मुल्क लेण नूं मनसा करणी । जिण भांत बरकत न्याय री सूं देस मुल्क परलोक रा आपरै जापतै मे आवै । तद औ मुल्क तो आप ही फतह होयसी। उवो मुल्क मोटो नै औ मुल्क छोटो । मोटा मुल्क री फतह सूं मोटो होय नै सोभा[9] पावै । अठै बैठिया आगली सुधरै[10] तिको करणो भली बात छै । सिकदर इण वचन सूं आराम पाय हकीम नूं घणी स्याबासो[11] दीवी । आज हर कोई सिकदर रा बखाण[12] इण वास्तै करै छै, जे उणरी निजर इण लोक नूं न थो ।

हिम्मत सूं कीमत बढै, अमर करै जग नाम ।
कहै कौण इह लोक की, फतह होय सुख धाम ॥

बारवीं बात

अड नू हठ कहीजै । तिको अंग मतळबां रो नै सवारणहार कांमां रो[13] कहीजै । बादसाहा रै बिगर पूरो मुलक हाथ नही आवै । पूरा हठ बिगर बादसाही मसनद नू नही पहुचै[14] । हठ दुरुस्त ऊ छै—मतो[15] जिण काम रो करै तिणसू किणी रै मनै किया मनै ना होय । उण काम मे काहलो[16] कोताई[17] न करै ।

---

[1]शादी करेगा [2]धार [3]पूर्व से पश्चिम तक [4]अपना राज्य-स्थापन करू [5]चिंतित [6]भाग्य [7]पूरी व्यवस्था करनी [8]निरंतर [9]शोभा [10]अगला जन्म सुधरे [11]शाबाशी [12]प्रशसा [13]कार्य पूर्ण करने वाला [14]स्थापित नही होती [15]विचार [16]सुस्ती, ढील [17]कमी ।

हकीम नूं पूछी--जे वादसाहा रौ हठ की ठौड कांम आवै छै ? किण ठौड़ भलौ दीसै छै ? तरै कही—देस रा वैरी दूर करणै में भलौ दीसै छै। जद वादसाह प्रभू रौ नेहचौ कर[1] पागड़ै पग देवै[2] तरै फतह छै, जीत सामै लेय आवै। जिण वास्तै जे हठ दुरस्त निसाणी काम री जोर री नै फतह री छै। हठी वादसाह री धाक सूं वैरिया रौ छाती काची पड़ै।

अेक वादसाह नूं कोई व्यसन रौ सुभाव पडियौ सो वैदा हकीमां मना कियौ, उण रा अवगुण कहिया, पण व्यसन छोडै नही। अेक वार एक महापुरुस प्रभू रौ वदौ उणनूं देखणै नूं आवियौ। तिण इणनूं घणौ दुरवळ दीठौ, पीलरौ[3] रंग दीठौ, तरै हाल पूछियौ। वादसाह कही—घणी चाहूं छूं पण आदत छूटै नही। तौ तपस्वी कही—जे ऊ हठ करै छै जिकौ हठ वादसाहा में होय छै। कुणसौ[4] कारण छै सो व्यसन न छूटै ? तपसी रा वचन वादसाह नूं भिदिया[5]। उण दिन सूं हठ कियौ जे व्यसन छोडणौ। व्यसन न करणै सूं रोग मिट गयौ अर वादसाह तगडौ हुवौ। विचार सूं हठ करै तौ रोग, दोस, वैरी आपसूं मिटै। प्रण क्रिया पछै पाछौ नही फिरणौ[6]।

राजस री मोटी गुण हठ नूं जाणजे।

तेरवीं वात

जद जहद—सो मेहनत, परिस्रम-कठिणाई[7] सरीर सू अे मोटा वादसाहा, प्रथ्वी जीतणहारा रा सुभाव छै। ज्यो हीमत वडी छै त्यौं ही कठिणाई भी सरीर सू घणी चाहीजै। वडी हिम्मत रौ मरद मेहणत रा भार सूं हिचकै नहीं[8]। जे दोरा हुवा अरथ सुधरै तौ भली वात छै, नै कदाचित ढील होय तौ कोई आवल[9] उणनू आळसी[10] नहीं कहै। उणरी आगमण मसक्त[11] सारा ऊपर जाहिर होय।

हकीम हिंद रा री कहण गत यू छै—कीडी अेक मसक्त री कमर वाध अेक मोटा तूंदा[12] री रेत थोडी-थोडी लेय मारग रै परलै छेह नाखै थी। अेक पक्षी कही—हे दुरवळ ! तू औ काई काम करै छै ? कीड़ी कही—मोनूं अेक

---

[1]ईस्वर पर विश्वास कर [2]घोड़े पर चढ़ना है, कर्म में प्रवृत्त होता है [3]पीला [4]कौनसा [5]असर कर गये [6]वापिस नहीं लौटना [7]कठिनाई [8]हिचकता नहीं [9]बुद्धिमान [10]आलसी [11]परिश्रम [12]ढेर।

जे आपनूं इसै मरतबै पहुंचाऊं[1] जिणमें कोई म्हारै सरीक न होय। तरै कही—ओ काम मुस्कल घणो छै। याकूब कही—मैं जाणियो छै, अंत मरणो छै तिणसूं वडिया कांम में कांम आऊं, सो भलो। छोटा कांमां में मरस्यूं[2] सो ठीक नही। सो इसी मेहणत सूं याकूब मोटो बादसाह हुवो। मसकत सूं मनोवांछित फळ हाथ आवै छै।

चौदवीं बात

सपगाई[3] सब बाता में चाहीजै, कांम संवारणै मे, वैरी मारणै मे। तहकीक भांत भात रा[4] नफा इहलोक परलोक रा छै। तमाम संसार रै मिनखा नूं उनरी सपगाई सूं मेळ न छै जितरो बादसाहा नूं। जितरै बादसाह री सपगाई रैयत, चाकरा, मवेसिया रा कोट पाटण ऊपर नै कुकरमिया रै दड ऊपर, छोटा मोटा नूं जाहिर न होय, चाकर उमराव आग्या दुरुस्त नही मानै[5]। दुस्मण फिसाद विगाड करता पाछा न होय।

बादसाहा नू सपगाई पुख्ती छै, मदत छै। अेक हकीम कही छै—जिको बादसाहत री नीम[6] चाहै, उणरै पडण सूं निडर रहै, तौ चाहीजै नीम काम आपरा रै ऊपर सपगाई भार री राखै।

मरद सपगो ऊ छै जो राह रीत आपणी विणी रा भय सू फिरै नही। निपगाई[7] मे नफो नही छै। निस्पाणी सपगाई री दोय छै—अेक तौ जिको काम आरभ करियो तिणरो निरवाह करणो आपरै जुम्मै लाजमी जाणै। कही छै—केसर रूम रै नोसेरवा नू पूछो—वकाय थित बादसाहत री किण में छै? तरै कही—झूठ अणसमझी[8] बात हरगिज नही फुरमावै अर जिण काम नूं आग्या करै तिणनू पूरणता[9] नू पहुचावै। केसर कही—हकीम यूनान रा आ ही कही छै।

बीजो परीक्षा आ छै—जिको वचन जीभ सू कहणै मे आवै तिण वचन रै विरुद्ध चाल न चालै। ज्यू तवारीख मे मजकूर छै[10]। बादसाह रजा मैदान गजनी रा मे जावै थो। अेक हमाल[11] अपणै कांधै ऊपर अपणी इमारत रै ताईं अेक भारी पत्थर लेय नै जावै थो। तीनूं[12] दीठो सो भाटा रा भार

---

[1]पद पर पहुंचाऊं [2]मरूंगा [3]दृढ़ता [4]तरह-तरह के [5]आज्ञा अच्छी तरह नहीं मानें [6]नींव [7]अस्थिरता [8]बिना समझी [9]पूर्णता [10]कहा गया है [11]भार ढोने वाला [12]उसको।

नूं दोहरौ हालै थौ[१]। बादशाह इणरी मसक्कत देख दया कृपा रै सुभाव सूं कही—हे हमाल! श्रो पत्थर उठै ही रखदै। उवौ हमाल उण पत्थर नूं उठै हीज रख दीन्हौ। सो उवौ पत्थर उठै ही जे रहियौ। पत्थर नूं देख उण मारग सूं नीसरता घोडा चमक्ता था। सो श्रेक बार दरबारी हजूरिया समै देख साह नूं अरज कीवी—फलाणै दिन फलांणै हमाल आपरै हुकम सूं फलाणी जायगा पत्थर मारग मे नाखियौ थौ, सो उण जायगा होय घोडा दोहरा नीसरै छै। उणसूं चमक नै टर मानै छै[२]। उण हमाल बिगर उण भाठै नूं कोई भो उठाय नहीं सकै छै। जे आप हुक्म फरमावौ तौ उवौ हमाल उण ठौर सूं पत्थर उठावै, मारग सुथरौ[३] करै। जणा बादसाह फुरमाई—मैं म्हारी जीभ सूं कही थी—भाठौ ऊठै ही रख देय श्रौर इब हूं भाठौ हठावणै नूं हुकम करूं तौ मिनख म्हारी निपगाई रौ भरम धरै। तिणसूं उवौ भाठौ तौ उठै ही रहसी। कहै छै—उवौ भाठौ बादसाह री अखीर उम्र तक उठै पडियौ रहियौ सो ही नही उणरी मृत्यु रै पाछै उणरा बचना रा जतनां नूं बेटा पोता पण उण पत्थर नू उण मारग सू न उठवाइयौ।

बादसाहा रा बचन अहडा[४] होय छै। बादसाह बचनां रौ सदा जतन राखै छै।

पन्द्रवीं बात

अदालती न्याय नू अदल गहणौ कहजे। मुल्क री नै नूर री श्रा सवारण-हार जोत[५] छै। प्रभू री मोटा वदा नूं आही आग्या छै—अदल करौ, अहसाण करौ।

अदल श्रो छै—न्याय दोहरा-दूबळा नूं सबळा कन्है दिरावै। अहसाण[६] श्रो छै—जे दोहरा-दूबळा-निरामा ऊपर दया कर उणरी मनसा[७] पूरण करै। बडा कही छै—श्रेक सायत[८] न्याय री बादसाह नूं तोल में साठ बरस री बदगी ज्यूं गारी छै। बदगी रौ नफौ करणै वाळा सिवाय किणी दूजा नूं न पहोचै नै फायदौ अदल रौ खास आम मोटा छोटा नूं पहोचै। धरम करम री भलाई अदल सूं आछी कायम दीसै। न्याय रौ धरम सेवा सूं घणौ छै। मन रै विचार सूं बाहर छै।

[१]पत्थर के भार से कठिनतापूर्वक चल रहा था [२]डरते हैं [३]साफ [४]एक [५]ज्योति [६]एहसान [७]मंशा [८]पल।

अेक बादसाह नूं इच्छा हुई—जे मक्के सरीफ री जात्रा[1] करूं। तरै[2] वजीर उमरावा अरज करी—गरीबपरवर! मक्का सरीफ री जात्रा में चैन चाहीजै। बादसाहां रै वैरी घणा होय नीसूं[3] साथ सामांन सूं पधारौ। थोड़ै साथ सामान सूं पधारणै में भय छै। दूजी, देस में जीव जोखै छै। जद आपरी सायी रैयत माथा मूं अळगी होय[4], तरै फिसाद होय, संसार में खराबी होय। तद बादसाह फुरमायौ—जे आ न वणै तौ किण भांत सवाब मक्का री हज रौ पाऊ? जणा उजीर अरज कीवी—अठै अेक दरवेस छै, उण साठ हज किया छै। मदरा में मुद्दता रह्यौ छै, हमैं गोसै बैठौ छै। सही सवाब[5] हज रौ उण सूं मोल लेय लौ जिणसूं जात्रा रौ फळ अठै ही पावौ। बादसाह उण दरवेस कन्है गया। कितरी अेक वेळा[6] पाछै कही—जे म्हानूं चाह हज मक्का री पैदा हुई छै, पण वजीर उमराव सलाह ढील री देवै छै। म्हैं सुणी छै—थे हज घणी कीवी छै, जे थे अेक हज रौ फळ मोनूं वेचौ तौ थानूं सपति मिळै, म्हांनूं धरम जुड़ै[7]। दरवेस कही—हू तौ तमाम हज वेचूं छूं। बादसाह पूछी—हर अेक हज कितरै मे वेचौ छौ? दरवेस कही—उण जात्रा रै अेक पावडा[8] री कीमत मे सगळी प्रथ्वी लेऊ छूं। बादसाह कही—दुनिया नै दुनिया री माता म्हारै कन्है थोडी घणी प्रथ्वी छै सो अेक पावडा रौ मोल नही वणै[9] तौ पछै हज क्यूं कर लेऊ नै सारी हजा री क्यूंकर मन में गुजारूं। दरवेस कही—हे बादसाह! सारी हजा रौ मोल तोनूं आसान छै। बादसाह कही—जे किण भांत सूं आसान होयसै सो बताय। तरै दरवेस कही—जद गरीब रा कजिया[10] में न्याय करै, जिवा वेळा उण काम नूं लगावै उणरौ धरम मोनूं बकस[11]। तौ हू साठ हजा रौ पुण्य तोनूं देवूं। तिणमे मोनूं नफौ अत घणौ छै।

तौ बादसाह नूं मालम हुवौ—जे नीती रा जप-तप सिवाय दूजी कोई तपस्या नही छै। प्रभू रा बंदा री प्रतिपाळणा करणै सूं बेसी[12] कोई धरम नही छै। हिमायत अदल रो जे नही होवै तौ सबळा निबळा नूं मार धूपार करै[13]।

---

[1]यात्रा [2]तब [3]इसलिए [4]आपका आश्रय प्रजा पर से दूर होता है [5]शुभ कृत्य का फल [6]समय [7]तुम्हें धन मिलता है और मुझे धर्म का फल प्राप्त होता है [8]कदम [9]एक कदम का मोल नहीं बनता [10]झगड़ा [11]प्रदान कर [12]बढ़ कर [13]ताकतवर लोग कमजोर लोगों को मार कर अत्याचार करें।

जिवाई संसार री आपस मे मिळी छै। मिनखां रै हाल री संवार न्याय बिना नही। दरवेस भूखा रो मसा पूरण कियां नै न्याव किया जिको मन में होय सोही मोसर छै। फजीलत अदालत री मे ओही नुक्तौ दाव छै। अदल प्यारौ सारा मिनखा री छै।

इण भात री बात नसेरवां अदली री नै हजाज जालम री छै। नसेरवा हिंदू अगनीहोत्री थौ नै जाज मुसलमान थौ। जद नसेरवां री बात चालै तद सारा स्यावास, धन्य धन्य करै—उणरै न्याय नूं। अर हजाज री बात चालै तरै उणनू अन्याय रै कारण सारा ध्रक ध्रक करै[1] नै स्राप देवै[2]। तिणसूं किणी नै दुख नही देवणौ नै दुखिया रौ न्याय करणौ। जिणमूं अठै दौलत जस अर राजस थिर रहै। आगै बडी गत रौ कारण छै।

अब्दुल अेक दिन आपरै बेटा नूं कही—हे पुत्र! आपणा[3] घराणा मे दौलत व राज कठाताई रहसै ? जो न्याय नही करसै उणरी खराबी होसै। बडा कही छै—बादसाह नू अदल सायौ प्रभू-त्रपा रौ छै, तिण कन्है आया अन्याई री लगाई जळण[4] मिट ठडी होय। हकीमा कही छै—अदल बराबरी राखणी छै। ससार रै माही कोई सबळौ निबळा ऊपर जोर न करै। हर अेक तफा नूं आपरै पाया मे राखै[5]। बादसाह रै चार तफा छै। प्रथम तरवार रौ साथ। उमराव सिपाही अै तौ अगनी समान छै। बीजौ कलम रौ साथ। वजीर नवीसदा जे पवन ज्यौ जाणजे। तीजौ सौदागर नै किसबी अै पाणी सम जाणजे। चौथौ खेतेड[6] आ ठौड खाक[7] री छै।

जिण भात प्रक्रत च्यारा मे आदमी रा सरीर मे रखवाळी ऊपजै तिण भात जोडै। इण च्यारा मे अेक तर्फ प्रक्रत देस राज री खराबी ऊपर आवै। ससार रौ काम बिगडै। तिण वास्तै सारां सूं आपरी हद राखिया राजस रौ जापतौ रहै[8]। अेक गुण और छै—माटी[9] अर बादसाह अदल रा मे भेद नही छै। सो अेक पिडत मोमू बादसाह नू कही—जे अदल रौ सरीर गोर[10] माही नही बिगडै। मोमू कही—मोटा रै कहियै मे सक नही छै पण मनसा राखूं छू। नसेरवा नू देखौ ऊ तहकीक आदल हुवौ छै। सो मोमू सरम दाय नही

---

[1] धिक्कारते हैं [2] शाप देते हैं [3] अपने [4] जलन [5] अपने अधिकार मे रखे [6] खेती करने वाले [7] जमीन [8] राज्य का उचित प्रबंध रहता है [9] मिट्टी [10] कब्र।

गयौ[1] नै फुरमाइयौ। तरै नसेरवां री ठौड़ खोली जणां जणमें आप गयौ सो दीठौ, ताजौ धरती ऊपर सूतौ छै, जिण तरह जीवतौ नींद में सोवै। उणरा हाथ में तीन वीटी थी, जिणरा नगा ऊपर सीख[2] लिखी थी। प्रथम अेक दोस्त दुस्मण[3] सूं मनुहार सदारत करौ, काम विगर सलाह अकलवता[4] रै आरंभ मत करौ।

अेक पाटी माथै ऊपर टेरी थी। तिण पाटी ऊपर लिखी थी—जिकौ चाहै, प्रभू उणरौ मुल्क मोटौ करै तौ उवौ समै रा पीड़ितां नूं मोटा करै। जिकौ चाहै, म्हारौ मुल्क घणौ होय तौ उवौ न्याय घणौ करै। मोमू फुरमाई—जे अै सीखा लिख लेवौ। पाछै उठै इतर सुवासा छिड़काय[5] ठौड़ ढाकी।

तमाम न्याय री रीत मे विसेस[6] फरियादी रा वचन सुणणै री सरियत छै—दिलासा देय[7] सुणै, जे कोई घणौ वकै, अोळंभा[8] देय तौ वेराजी नहीं होय, रीस नही करै। अठै वादसाह वैद री ठौड राखै छै। फरियादी रोगी री जायगा[9] छै। रोगी चाहै—तमाम हकीकत रोग री कहू तौ वैद तमाम वात रोगी री सुणै नै तिण ऊपर खबरदार होय विचार करै, जद उणरी वात सूं, नाडी सूं रोग थरपै[10]। ताहरा अोखद[11] कर रोग गमावै।

अेक दिन अक सखस[12] बडा मिनख रै कन्है आपरी विथ कही[13]। उण नही सुणी जणा फेर कही, फेर नही सुणी तौ तीजी वार कही, सो घणी दवाय कर[14] कही। तरै उण कही—कितरौ'क दुख माथै नू देयसै। जणा फरियादी कही—माथौ तू छै, दरद नू कठै लै जाऊ। जद उणरी वात सुहाई सो उणरौ काम थौ जिकौ कर दियौ। प्रभू पहोंच[15] दोन्ही छै तौ पडिया रा हाथ पकडनै उठाय।

अेक वादसाह अेक महापुरख नै कही—जे हर वसत री जागात[16] छै। पण वादसाह री जागात कासूं छै? तौ उण जवाब दियौ—वादसाही री जागात आ छै—जो फरियादी आय पुकार करै तौ उणरा वचन सुणै, उणनू दिलासा

---

[1]शर्मिन्दा नही हुआ [2]शिक्षाप्रद बातें [3]दुश्मन [4]बुद्धिमान [5]सुगंधित वस्तुएँ छिड़का कर [6]विशेष [7]आश्वासन देकर [8]उलहना [9]जगह [10]स्थापित करता है [11]औषधि [12]सख्श [13]अपनी बात कही [14]बहुत जोर देकर कही [15]सामर्थ्य [16]कर्तव्य।

सूं वचन कहै। करड़ौ[1] जवाब नही देय। बात करणै मे दोहरा-दूवळां मूं जाळ नही राखै। छोटा नू बात रौ जवाब देणौ बडां री सुभाव छै। देखौ हजरत सुलेमान बादसाही नै पैगबरी छतां वचन निरबळ कीडी रौ सुणियौ।

श्रेक बादसाह चीण[2] देस रौ थौ, सो न्याय सू नाम पायौ थौ, तिणसूं प्रभू नै प्रजा दोनू ही राजी था। बुढापा मे माथौ दूख कांनां सू बहरौ हो गयौ थौ तरै वजीर उमरावा नूं भेळा करनै रोयौ, सो सगळा दिलगीर हुवा[3]। पछै बादसाह री तसल्ली नू :पाय करणै लागिया। बादसाह फुरमाई--थे श्रा मत जाणौ जे हू काना री कमी रै ऊपर रोऊ छू। निस्चै जांणूं छूं--श्रत सगळौ सरीर[4] नास होयसै। तिणनू जाणै सो मरद क्यूकर दिलगीर होय। म्हारै रोवणै रौ कारण श्रौ छै--कदे कोई दुखी फरियादी फरियाद करै तौ हू सुण नही सकूं। तरै ऊ निरास जायसै[5]। हू प्रभू री दरगाह चिंता करस्यूं।

वजीर उमरावां पूछी--निचिंती[6] रौ मारग फुरमावौ। तरै बादसाह फुरमाई--जे इण देस मे ढिंढोरौ फेरौ कै बिगर फरियादी कोई माथै ऊपर लाल कपडौ न पहरै, सो तिण सहनाण[7] नू देख मोनू खबर पडसै जणां हू न्याय करस्यू। घणा ही बादसाह श्रेक न्याय रै कारण यम रा दुखा सूं छूट बैकुठ नू गया छै।

बादसाह मलकसाह सलजोक श्रेक दिन नदी किनारै सिकार खेलै थौ, तद तावडी[8] रै कारण श्रेक बाग मे ठहरियौ थौ। चाकरा मे सूं श्रेक गुलाम खास हजूरी गाव मे गयौ। उण श्रेक बकरी नू चरती देख मार बाट खाधी। बकरी री मालिक डोकरी नू खबर पडी सो मारग री पुळ[9] रै ऊपर श्राय बैठी। बादसाह उठी कर श्रावियौ[10] ताहरा डोकरी घोडा री बाग[11] पकडी। उण ही गुलाम मारणै नू चाबकौ[12] उठायौ। तरै बादसाह फुरमायौ--मारे मत ना, श्रा तौ फरियाद करणै वाळी दीसै छै। देखा इणनू हाल पूछौ, किण ऊपर पुकारै छै? तरै बादसाह डोकरी नू पूछी--फरियाद कर! डोकरी कही--हे बादसाह! जो न्याव[13] इण नदी ऊपर नही कियौ तौ मोटा प्रभू री श्राण[14] छै। तौनू वैतरणी[15] रै तीर ऊपर न्याव किया बिगर नही छोडसूं। भली बिचार

---

[1]कटु [2]चीन [3]दुखी [4]पूरा शरीर [5]निराश होकर लौटेगा
[6]निश्चिन्तता [7]निशान [8]धूप [9]पुल [10]उधर से निकला [11]लगाम
[12]चाबुक [13]न्याय [14]सौगध [15]वैतरणी नदी।

दोनू ठौड़ में सूं कठै न्याव करसै ? वादसाह इण रा वचन री धाक सू तुरत पयादी होय[1] कही—हे माता ! उठै जवाव देवण री पहोच मो मे हरगिज नही छै। तू ग्रपणी दुख कह, तो सू किण भूडी कीवी छै ? सो उणसूं न्याव दिराऊ। डोकरी कही—हे वादसाह ! ग्रो ही गुलाम मोनूं जवरा ताजणा[2] मारिया, म्हारी वकरी मार खाधी। तिण वकरी सूं मैं ग्रर निवापा[3] म्हारा दोय दोहितरा[4] गुजरांण करै था। तरै मलकसाह उण गुलाम री हाथ कटायौ ग्रर ग्रेक वकरी रै वदळै सत्तर वकरी दिराई।

ग्रिसराग्रेक दिन पछै वादसाह काळ कियौ[5]। डोकरी जोवै थी। सो डोकरी ग्राधी रात मे वादसाह री गोर[6] ऊपर जाय घणी दीनता सूं प्रभू नूं वीणती करी—हे प्रभु ग्रो वदो थारो घोर मे छै। ग्रेक समै म्हारै मे विपत[7] पडी थी तरै इण म्हारो हाथ झाल[8] मदत कीवी। हमार उणमे वेळा पडी छै[9], तूं इण पर ग्रपा कर। उण वदै थकै मो ऊपर ग्रपा करी थी। तू वडौ छै, उण रा गुनाह वकस[10]।

ग्रेक सेवक मलकसाह नू सपनै मे दीठौ मो कही—जे उण डोकरी री विणती ऊपर न्याय न होनो तो जम रै प्यादा रै हाथ मूं खलासी होणी गाढी मुस्कल थी[11]।

ग्रेक न्याय री रीत—ग्राग्या प्रभू री रा जतन[12] करणा। न्याय करै मो सास्त्र रा सिरा माफक करै[13]। न क्रोध मे, न माया गे, तरफ प्रभू री नं माच री नू नीची नही नाखणी। जे ग्राग्या उणरै ऊपर मारा हुक्मा रै छै सो नकल छै।

मोमू वादसाह री वखत किणी गुनाह कियो थौ सो भाग गयो, तरै उणरा भाई नू पकड हजूर लाया। तरै फुरमाइयो—का तो भाई नू हाजिर करै नातर[14] उणरै वदळै इणनू मारो। तरै उण कही—हे वादसाह ! जे थारी ग्रैमाल चाहै तो मोनू मार। जे थू ग्राग्या करै इणनूं छोड तरै ऊ छोडै क न छोडै। वादसाह कही— छोडै। तरै उण कही—तो हू ग्राग्या लायो छू, उण वादसाह री जिणरा हुक्म सू थू हाकमी करै छै। तरै कही—राई हुकम

---

[1]पैदल हो कर [2]चाबुक [3]विना बाप के [4]लड़की के लड़के [5]मृत्यु को प्राप्त हुआ [6]कब्र [7]विपत्ति [8]पकड कर [9]कठिन समय आया है [10]गुनाह माफ कर [11]छुटकारा पाना बहुत कठिन था [12]यत्न [13]शास्त्रों की विधि के अनुसार करे [14]नहीं तो।

लायो छै ? उण कही—म्हारै कन्है ओ हुकम छै—जे प्रभू सास्त्र[1] में फुरमाइयो छै किणी नै किणी रै गुन्है मत मारो[2] । मोमू चुप रहियो नै फुरमाइयो इणनूं छोड देवो, आग्या पक्की लायो छै ।

उमर बेटै लेस रै अेक नूं साहिब रै वचन सूं कैद कियो थो। तरै उणरी माता अरजदास्ती लिख बादसाह रा मारग में ऊभी रही। बादसाह फुरमाइयो—आ कुण छै ? तरै मालम हुई—जे उण कैदी री मा छै। बादसाह उणरी तरफ सूं बेराजी[3] था सो सुणीअणसुणी[4] कीवी। ताहरां बुढिया फेर कह्यो—म्हारा उण बेगुनाह बेटा पर थारी कांई आग्या छै ? बादसाह कही—सौ लाकडी मार काळो मूंढो कर सहर दोळा[5] फेरो। जिको बादसाह नूं भूंडो कहै उणरी आ सजा छै। डोकरी कही—ओ हुक्म तूं करै छै ? बादसाह कही—हा म्हे करा छा। ताहरा डोकरी कही—तो बस हुकम प्रभू रो कठै हुवो, जिको तूं चाहै सो हुक्म करै। इण बात सूं बादसाह कांपियो[6], पछै फुरमाइयो तद कैदवाळा नूं परो काढियो, सिरोपाव[7] पहराइयो, खासो घोडो सवारी नू दियो अर फुरमाइयो इणनू चौहटै फेरो नै हेलो करो— उमर बेटो लेस रो कुण होय जिको विरोध उणरी खातिर करै ।

न्याय री अेक रीत और छै—नीयत दुरस्त नै निस्कपट राखणी, रैयत वास्तै भलो चाहणो। क्यो ? जे बादसाहा री नीयत माफक असर होय छै। जो नीयत न्याव करै तो भली नेपत[8] होय। प्रभू न करै, जो बुरी विचारै तो हासिल[9] मारियो जाय, रैयत खराब होय।

बादसाह कवाद अेक दिन सिकार माही लस्कर सू अेकलो पडियो[10]। तावडो चढता तिस[11] सू दोहरो हुवो[12]। अळगो सो धुओ देख उठै गयो। आगै बन मे, अेक तबू में, अेक बुढिया नै बेटी बैठा छै। तिका ऊठ नै इणरै घोडा री बाग झाली[13], उतार मिजमानी[14] कीवी। बादसाह जीमण कर, पाणी पीय, रात रा उठै ही सोइयो। डोकरी रै अेक गाय हती। बेटी गाय दूही

---

[1]शास्त्र [2]किसी के गुनाह के बदले किसी और को मत मारो [3]नाराज [4]अनसुनी [5]चारो तरफ [6]भय से कांपा [7]पैर से सिर तक की पोशाक [8]उपज [9]खेती की उपज का एक हिस्सा जो राजा या जागीरदार को मिलता था [10]अकेला रह गया [11]प्यास [12]कष्ट पाया। [13]लगाम पकडी [14]खातिर की ।

सो गाय दूध घणो दिन्हो । तद कवाद बादसाद नू इचरज[1] आइयो । बादसाह मन में कही—अै लोग वन मांही इण वास्तै रहै छै, तौ काई इणां रा हाल री खबर नही लेवणी ? रोज इतरो दूध दूहै छै, जो साल मे अेक दिन दरबार नूं देवै तौ इणांरो क्योंही न बीगड़ै नै दरवार मे खजानो वधै । यूं नीयत कर सहर नूं पहोचियो[2], जे औ कानून रैयत नूं लगावा ।

प्रभात हुवौ जद डावड़ी[3] गाय नै दूही पण दूध थोडो नीसरियो[4] । तद माता कही—इचरज नही, बादसाह री नीयत मे खराबी हुई होयसै । कवाद बादसाह नै मालम हुई तौ अचरज मानियौ नै कही—जे आ क्यूंकर जाणी ? तरै बुढिया कही—सदा गाय दूध घणो देवै थी पण आज थोडो दीन्हो। बादसाह नीयत भूंडी करै जणां वरकत उठावै । कवाद बादसाद कही—साची कहै छै । पछै नीयत मन री साफ कीवी । डावडी नूं कही—फेर आपणी गाय री धार काढ[5] । डावडी गाय दूही तद सदामत[6] जितरो दूध हुवो । इण ठौड कही छै—बादसाहां रो अदल भलो छै—बादळ बरसता, सूरज चमकता ।

बादसाह बहराम गोरी अेक समै सिकार खेलता अेक बाग री पौळ[7] पहोचिया, सो उठै बूढो माळी बागवानी करै थो । तिणनूं बहरामसाह पूछी—इण बाग मे दाडम छै ? बागवान कही—छै । बादसाह कही—अेक पियालो[8] अनार रै रस रो भर लाव । माळी बाग मे जाय तुरत पियालो भर लायो । बहराम पीय नै पाछै कही—दरवार रो हासिल[9] इण बाग पर कांई छै ? माळी कही—म्हारो बादसाह रोखडा[10] रो हासिल नही लेवै । खेती रो दसूंध[11] लेवै छै । बहराम बिचारी—म्हारै देस मे बाग घणा छै अर बागा मे रोख घणा छै जो बाग री दसूंध आवै तो घणो हासल वधै अर रैयत रो पण की बिगडै नही । हमै बाग रो हासल सगळा सूं[12] लेयसा । बागवान नूं कही—अेक पियालो अनार रो फेर भर लाव । माळी घणी वेळा मे पियालो लेय आवियो । बहराम पूछी—पहली वार मे तो वेगो आयो थो, अबकै देर सूं आइयो अर पियालो भी उतरो नही भरियो ? माळी जाणै नही थो कै ओही बहराम छै सो कहणै लागियो—हे जवान ! आ चूक म्हारी नही छै, म्हारै बादसाह री छै ।

---

[1]आश्चर्य [2]पहुँचा [3]लड़की [4]निकाला [5]गाय का दूध निकाल [6]हमेंशा जितना [7]दरवाजा [8]प्याला [9]हिस्सा [10]वृक्ष [11]दसवां हिस्सा [12]सब से ।

तिण आपरी नीयत फेरी छै। अन्याय करणं रो विचारी छै। तो कारण सूं पहला री बरकत दूर हुई। मैं पहली वार अेक ही दाडम सूं पियालौ भरियौ थौ। अबकी बार दम दाडमा सूं औ पियालौ भरियौ नही। बहरामसाह नूं वचन भिदिया[1]। विचार कियौ थौ सो मन सूं परो निसारियौ[2] अर बूढे माळी नूं कही—अेक पियालौ और लेय आव। सो माळी बाग मे जाय तुरत पियालौ भर हसतौ ही आवियौ अर पियालौ बहरांम रै हाथ माही दियौ। तद कहो—हे सवार ! इचरज रौ समयौ[3] छै। फेर बादसाह री नजर नेकी पर हुई छै सो मेवा मे बरक्त जाहिर हुई। अेक ही दाडम सूं अबकै पियालौ फेर भरियौ छै। बहरामसाह सुरत हाल री माळी नूं कही—कजियौ आपरी नीयत भूंडी करणै रौ नै फेर भली विचारणै रौ कहियौ। सो आ वचना सूं सीख मानौ, नीयत रैयत रै ऊपर त्रपा री करौ। हकीमा कही छै—अदल भलौ खरौ गुण छै, नै अन्याय खरी बुरी खुवारी[4] छै। अदल रौ गुण थिरता देस री नै तरक्की राजस[5] री छै। फळ अन्याय रौ—नास देस रौ, खराबी राजस री छै।

हुसगसाह आपरा बेटा नू कही थी सो मजकूर[6] छै—हे बेटा ! अन्याय रौ नाम छोडे नै न्याय अर अहसान घणौ करे। फरयादिया री दुरासीस[7] सूं घणौ डरणौ। बडा कही छै—अेक दुरासीस बुढिया राड री करै सो हजार तीर तरवार नही करै। अत अन्याय रौ विचार करै तौ अन्याय सूं दौलत जाय। माल री इच्छा मे सूं माल तौ घणा रै पगा हेटै हाथा मे घसियौ छै[8] तिण रै वास्तै रैयत सू झगडौ मता करे। आ निसन्देह छै—जिण बादसाह रैयत री माया लोवी तिण भीत री नीव खोदी नै मेडी नीपी[9], हकीमा कही छै। सुल्तान महमूद आपरै राज रा थाभा नू कही—अेक खरौ मूरख मिनख पैदा करौ। सो बडा आदमी दरबार रा हकीम हजूरी सयाणा[10] समझणा[11] नू देस मे भेजिया। सो घणा तलास सू जोवता फिरै था। आखिर अेक जणै नू दीठौ सो उबौ जिण डाहळी[12] ऊपर बैठौ छै तिणनूं ही कुल्हाडै सू काटै छै। जे उवा डाहळी तूटै तौ तहकीक[13] धरती ऊपर पडै। ऊची टौड थी, हजार जीव होय तौ पण मरै।

---

[1]वचन दिल मे बैठ गए [2]मन से निकाल दिया [3]समय [4]खुमारी [5]राज्य की उन्नति [6]शास्त्रो मे कही हुई है [7]दुराशिष [8]माल की कोई कद्र नही है [9]भीत की नीव खोद कर उस पर बने हुए महल की मरम्मत की अर्थात उल्टा कार्य किया [10]सयाना [11]समझदार [12]टहनी। [13]निश्चय ही।

सगळां अेको कियौ— औ खरौ मूरख छै। उणनूं पकड नै बादसाह कन्है लाय सारी हकीकत कही। तरै बादसाह फुरमाई—कोई इणसूं भी मूरख छै? ताहरां साथ सारी कही—आप फुरमावौ। तरा बादसाह कही—अन्याई, जिकौ अन्याय सूं आपरी रैयत नूं खराब करै। सो अन्याई आपनूं प्रभू री चोर करै। जिकौ राजा रैयत तोड़ नै खजाना भेळा करै, सो राजस रा पेड री जड काटै छै। जिकौ उमराव, सिपाही, चाकरा नूं खोस खजाना भेळा करै सो कोट पाड महल चुणै छै[1] अन्याय करै छै, सो आपनूं जिवा करै छै[2]।

सहर समरकद मे अेक अन्याई थौ तिणरै अन्याय सूं खलक दुखी थी। इणरै अन्याय री गिलो[3] प्रभू री दरगाह में घणी पहोचियौ। उवौ अेक रात अपणै महल री छत पर तखत ऊपर सूतौ थौ। अेक तीर आकास सूं आय उण री छाती मे लागियौ सो पीठ नूं नीसरियौ, तीसूं तुरत मर गयौ। परभात ऊ तीर काढियौ सो उणरै ऊपर लिखियौ थौ—जे अन्याय करै उण अन्याइया नूं औ तीर मुकरर छै, तिके वेगा हाड मास फोड नीसरै। वडा कही छै—हे अन्याई! अन्याय रौ तीर कमाण ऊपर राख्यौ छै। पण विचार कर मन बेधणा[4] न्याव री घात मे छै। तिणसूं वो तीर थारौ बख्तर में नीसरै छै, पण भाला निसासां दुरासीस रा नीसरै छै- लोह रा पहाडा परै[5]। इसो प्रभू रौ प्रताप छै।

साहजादै[6] रौ वडो न्याव थौ। घणौ दान अहसान थौ तिणसूं तमाम खुरासाण लाड लाडै था नै वैरी धाक सूं गळै था[7]। प्रभू ऊमर दराज करै[8]।

सोळवीं बात

अफूवत सो त्याग, माफ करणौ। औ सुभाव फजीलत[9] मे सारा सुभावा में ज्यादा छै। प्रभू वदा नूं आग्या की छै—त्याग करणौ नै चूक माफ करणौ। जिण थासूं बुरी की छै तिणसूं सुभाव पकडो[10]। हजरत मुस्तफै मक्का री फतै रै दिन कुरेस[11] घणा नूं दुख दियो थौ, सो ऊ पकडिया[12] आयौ, तद छोड दियौ, उणरी माल मलियत बहाल राखी। हकीमा कही—गुनाह जे घणौ वडौ छै पण वडपण माफ करणै वाळै री उणसूं ही वडो छै।

---

[1]देश की रक्षा का ध्यान न कर मौज करते हैं [2]अपने सिर पर लेता है [3]अन्याय की खबर [4]बेधना [5]लोह के पहाड चीर कर [6]शाहजादा अबुल मोहसन [7]धाक से गलते थे [8]उम्र बड़ी करे [9]प्रधान [10]उसके साथ ठीक व्यवहार करो [11]बुरी तरह [12]पकड़े जाने पर।

अेक गुनहगार अरब रा बादसाह कन्है आवियौ। तिण उण बादसाह रा कबीला रा लोगां नूं मारिया था। बादसाह कही—घणी मनगराई[१] छाती की। इसा मोटा गुनाह तैं मो सूं किया नै म्हारी त्रास[२] सुण मो सूं डरियौ नैं म्हारै कन्है आवियौ। तरै उण कही—छाती म्हारै आवणै री नै डरणौ थारै त्रास सूं, कारण अौ छै—हू जाणूं छू गुनाह म्हारौ मोटौ छै पण माफी थारी उणसूं घणी खरी मोटी छै। बादसाह उणरी बात पसंद कर चूक[३] माफ करी नै विसेस मया कर निस्चित कियौ।

अेक हजूरी कही—इसा बैरी नूं दाव पायौ नै बैर नही लियौ उणरी बाता सू ठगाइयौ[४]। बादसाह कही—यूं नही छै। जे उणसूं बैर लेऊ तौ उणरौ मन दुख पावै अर जे माफ करू तौ मन उणरौ खुसहाल होवै। मोनूं जस[५] दुनिया रौ नै अगोतर[६] रौ होय। जिकौ स्वाद माफी मे छै सो बैर लेण मे नही छै।

मोमूं खलीफे री बात छै। वो कहतौ—जो मिनख जाणै काई सवाद[७] छै चूक माफ करणै मे, तौ म्हारी दरगाह मे तहकीक तोफौ सिवाय गुनहगार रै न ल्यावै।

सिकदर अरस्तू सूं पूछो—फलाणा गुनहगार रै हक काई कहै छै? हकीम कही—हे बादसाह! गुनाह न होतौ तौ मोटौ गुण माफी रौ किणनूं ही जाहिर न होतौ। माफो किण समै भली छै? ताहरा कही—समै[८] पहोच रा मे बैरी रै ऊपर फतह पावणै मे। तौ उण माफी सूं सुक्रगुजारी फतह री होय।

बादसाह अेक बैरी ऊपर फतह पाई। उण बैरी नूं पकड, गुनहगार दाई[९] आंण राखियौ। तरै बादसाह उणसू पूछी—थू आप नूं किसड़ौ[१०] देखै छै। उण कही—प्रभू जिण बात नूं प्यारी राखै तिका माफी छै नै तू जिण बात नू मित्र राखै सो फतह छै। पछै प्रभू-फतह नूं थूं प्यारी राखतौ थौ सो उण कृपा की तौ माफी नू ऊ मित्र राखै तिकी पण तू कर। बादसाह अौ बचन पसंद कियौ, उणनू छोड दियौ।

मोटा बादसाहा नू चाहीजै—प्रक्रत भू डी त्याग, गुनहगार नूं मन निरमळ[११] कर गुना नू पहुचावै। गुनहगार सरमिदी मारियौ पाणी चैन माफी रा

---

[१]हिम्मत [२]भय [३]गल्ती [४]ठग गया [५]यश [६]अगले जन्म [७]स्वाद [८]समय [९]तरह [१०]कैसा [११]निर्मल।

सूं निवाजै[१]। मोटा वादसाहा रा अे मारग हुवा छै। आदि सूं हमार तांई वडां सूं माफी होती आई छै नै छोटा सूं गुनाह होता आविया छै।

अेक हजूरी वादसाह रौ गुनाह कियौ थौ सो कैद मे थौ, सो बादसाह अेक दिन अेक हजूरी सूं उण गुनहगार वास्तै मसलत करै थौ[२]। तरै उण कही—जे हूं वादसाह हो जाऊ तौ उणनूं प्राणदड देऊं। अतरी सुण वादसाह कही—अवार जद थूं म्हारी ठौड़ नही छै तौ करतूत म्हारी चाहीजै[३], अर थारी करतूत सूं पण विरुद्ध होय। मैं उण नूं माफ कियौ। क्यों ? जे गुनाह उणसूं भूंडा दीसै छै तौ माफी मो सूं भली दीसै छै।

जो आस माफी री तूं प्रभू सूं चाहै तौ कृपा सूं गुनहगारा नै वखस[४]।

अेक वादसाह अेक जणा नै कठैक अमाले मेलियौ थौ। उणसूं काम अजोग[५] हुवौ, सो वादसाह वेराजी हुवौ। कैद कराय हजूर वुलाय अेतराजी करणै लागियौ। उण वापडै कही—हे साहिव ! सोच कर, तोनूं पण काल्ह प्रभू री हजूर ऊभो करसै। तूं उण समै किण वस्तु नूं चाहसै ? वादसाह कही—माफी नू। ताहरा[६] उण कही—तौ मो ऊपर माफी कर। माफी प्रभू री मिळी छै[७]। हूं था कन्है, थे प्रभू कन्है गुनहगार छौ। वादसाह उणरी वात मान माफी दी।

तिणसूं माफी नूं मिन राखै छै तिका नू प्रभू प्यार करै छै। पण धरम नै प्रभू रा काम मे माफी कदेई नही देणी। उठै विसेस क्रोध अर गजव काम लावणौ।

सत्रवीं वात

अेक सुभाव प्रभू रौ नम्रता छै। सो प्रभू मोटा मिनखा नूं पण इनायत करी छै। तिका जोर सूं क्रोध नू जीतै छै।

वडा कही छै—जोरावर ऊ छै जो क्रोध रै समय आप नूं समाळै, आपरी प्रकृति रौ धणी होय, नरमी धारण करै। किताव अंजील मे मजकूर[८] छै—वादसाह नू वाजिव छै—आपरी प्रकृति नू नरमी सिखावै, जिणसूं जिकौ सुणै सो विचारै जे इणा नू कूवत सामरथ छै नै लोक जेरदस्त[९] इणरा हुकमी छै।

---

[१]प्रसन्न हो [२]सलाह कर रहा था [३]मेरा किया हुआ चलना चाहिए [४]गुनहगारों को माफ कर [५]अनुचित [६]तब [७]ईश्वर की ओर से मिली है [८]उल्लेखित [९]अधीन।

क्रोध जेर नरमो भारी खमाई[१] रै न होय तौ हरेक वचन करतूत सूं रीम पकडै, तरै तहकीक मिनख मारचा जाय, देस में खूबी नही रहै। भारी खमाई खजानौ अकल रौ छै। क्रोध जिण रा हाथ सूं कैद छै ऊ मरद हकीम छै। जिण में नरमी नही सो भूत बघेरौ छै। भूत री बाधणहार[२] नरमी छै। क्रोध री नदी मे पहाड पडै तौ वह जाय, तिण रा धक्का सूं जायगा[३] वह जाय। क्रोध री अग्नी महा जोर छै, तिणमूं उण मे न भेदै। नरमी री मदत विगर क्रोध किणी बादसाह रौ हेटौ न बैठै। विगर यां री भारी खमाई रै कोई हाक भार कहावत रैयत री नही उठाय सकै। बादसाह आदल ऊ छै तिकौ नरमी रौ गहणौ[४] पहरै। उणरी मदत सूं क्रोध ससार रा वैरी नूं उठाय नाखै।

सुलेमान अेराक सूं मजकूर छै—अेक दिन में मोमू बादसाह रो हजूर मे थौ मो नगीनौ अेक लाल रौ दीठौ। तिणरी लबाई चार आगळ[५], चौडाई दोय आंगळ प्रमाण थी। सफाई नै जोत[६] मे सूरज नै सुक्र रै ज्यूं चमकतौ थौ। पछै सुनार नू बुलाय नै फुरमाइयौ—इण नग रौ सिरपेच वणाय लाव। सुनार उण नग नू घर लेय गयौ। प्रभात पण मैं हजूर मे ही थौ सो बादसाह ऊ सर-पेच याद कियौ। आग्या पाय सुनार नूं हजूर मे हाजिर कियौ। सुनार नूं दीठौ सो ऊ डर सू वेद[७] दाई धूजतौ थौ। ताहरा मोमू सुनार मूं पूछी—सुनार! थारै कापणै रौ काई कारण छै? सुनार जीव की खम्या मागी अर नगीनौ काढ साम्हौ कियौ सो नगीनै रा चार बटका हुवा छै। सुनार हाथ जोड अरज कीवी—हे साहिब! घर घडियौ नै चाही नगीनौ सावळ मेल्ह देऊ[८] सो आळिया[९] माय सू अहरण[१०] आय पडी तीसू औ च्यार बटका हुवा। मोमू मुळक[११] नै फुरमाई—जा इणा री च्यार वींटी कर लाव। इण मे थारी कोई चूक नही छै। आ सूरत मोमू साह सूं हुई सो हद नरमाई भारी खमाई छै। ज्यू कोई भोजन लूण रै बिगर स्वाद न होय त्यू भलौ स्वभाव नरमी रै विगर सोहै नही[१२]।

---

[१]सहन-शक्ति [२]भूत को भी वश मे करने वाली [३]जगह, मकान [४]गहना [५]अगुल [६]ज्योति [७]बेंत का पौधा [८]अच्छी तरह रख दूं [९]ताखा, भीत मे रखी हुई छोटी अलमारी [१०]लोहे का एक चौकोर खड जिस पर लुहार या सुनार गर्म धातु को रख कर पीटते हैं [११]मुस्करा कर [१२]नर्मी के बिना सुशोभित नही होता।

नसेरवां कही—निसांणी नरमी-हलमी[1] री कांई छै ? तरै कही—नरमी-हलमी री तीन निसांणी छै—अेक, जे कोई कडवा बोलै, सारी वात बोलै तौ ऊ बरावर मीठौ बोलै । जे करतूत सूं वेराजी करै तौ उण दुख रै बदळै अहसांण करै । जिण भांत रवाजै हाजम फुरमाइयौ छै—कांई छै घणी हिलम नरमी ? जिकौ जहर दै तिणनूं मिसरी देय । रूंख नूं जिकौ भाठौ[2] मारै तिणनूं फळ देय । जिकौ अन्याय दुख सूं काळजौ छोलै[3] तिणनूं सांनदातार ज्यूं सोनौ देय ।

निसांणी दूजी आ छै—घणी रीस चढिया, भळ क्रोध री अत उछळियां अबोलौ[4] रहै । इण भांत मन ठौड रहै छै । दरवेसा, राह रा चालणहारां ओखद क्रोध री कियौ छै ।

इण भांत निसाणी तीजी, गुस्सौ नीचौ मारणौ छै । तहकीक मजा देणौ, लायक होय तिणनूं भली करजे ।

हजरत अली री मोटौ मिजमान अेक अरबी सो जीमणै बैठियौ[5] थौ । हजरत री गुलाम गरम आसा रा पियाला सूं मजलस[6] मे आवियौ, घणी दहसत रै मारै पग उणरौ बिछावणै ऊपर फिसळ गयौ सो गरम आसा रौ पियालौ इणरै माथा ऊपर नै हाथा ऊपर पडियौ । सो साहजादै उण साम्हौ बिगर रीस अदब देण नू दीठौ तद गुलाम री जीभ सू कहणौ आवियौ —वे धन्य जो गुस्सौ मारै । साहजादै कही—मैं क्रोध मारियौ । तरै गुलाम कही—वे धन्य जो मिनखा नू माफ करै । तरै कही—तोनूं[7] माफ कियौ । आदमी फेर कही—आदमी भली करण वाळा नू प्यार करै छै । ताहरा साहजादै कही—तोनू गुलामी सूं छोडियौ अर रोजगार थारौ बहाल राखियौ । सयाणा नू भूंडी ऊपर भूंडी करणी कम-अक्ली छै । पण जिका तत पायौ छै[8] तिका तौ भूंडी ऊपर भली कीवी छै ।

हजरत ईसा सूं पूछियौ—करडी सारू सारी वस्तुवा में कांई छै ? तरै फुरमाई—क्रोध प्रभू रौ । तरै कही—जिण वगत सूं प्रभू रा गजब सू निडर होजे ? कही—आपरै क्रोध रा तरक सू । मोलवी रूप कही—त्याग रीस, काम लालच री करै सो मिनख पैगंबर सुभावा छै ।

---

[1]सहनशीलता [2]पत्थर [3]अत्यधिक कष्ट देना है [4]मौन [5]खाना खाने बैठा [6]मजलिस [7]तुझे [8]जिन्होंने मर्म को समझा है ।

जांणियौ चाहीजै कै क्रोध कितरी ठौडां भलौ छै। जिकौ क्रोध वास्तै हिरस[1], लालच, ग्रहकार ग्रर ग्रापदिखाई[2] नूं होय सो भूंडौ। पण धरम रा सहारा वास्तै होय सो भलौ छै। ज्यूं कोई ग्रापरी स्त्रिया नूं नरमी करै सो ग्रकल मे सरीत मे भूंडी[3] छै, मुरीत मे पण भली नही। क्यो ? जे ग्रहंकार बिगर क्रोध न होय। पूरौ मरद ऊ छै—ठौड नरमी री नै ठौड ग्रोध री सही निजर सू ठहराय[4] ठौड री माफक कांम करै।

ग्रठारवीं बात

मीठा नै मिळता सुभावा सूं मुराद तत भला सुभाव खलक सूं राखणा[5]। ग्राछा सुभाव नै रसूक नरमी मन राखणै सूं छै। मुलायमत[6] सू ग्रेक बार साभी होवै। मुदार, मुलायमत ग्रै सुभाव भला छै।

प्रभू धरम पैदा कियौ, तरै प्रभू नू धरम ग्ररज कीवी—हे प्रभू! मोनू जोर देवौ। तरै प्रभू इणनू भला सुभावा नै दातारी रौ जोर दियौ। प्रभू भूठ नूं पैदा कियौ तरै इणनू ही कठोर सुभाव नै सूमड़ैपण[7] रौ जोर दियौ।

ग्रेक दिन ईसा नूं बजार मे जाता साम्हौ ग्रेक पुरख मिळियौ। तिण ग्रेक वचन पूछियौ। इण धणी नरमाई मिठाई सूं[8] जवाब दियौ। मूरख लड़णै ग्रर भूंडी कहणै लागियौ[9]। ऊ जीरी बुरी कहतौ थौ ईसा उणरा वखाण[10] करतौ थौ। ऊ जितरी ही लडाई नूं करै थौ ग्रै नरमी मिठाई सूं समभावै था। इण रौ मित्र ग्रेक उठै पहोंचियौ तिण कही—हे प्रभू रा बडा बदा! क्यूं इणसू निरबळ[11] तू हुवौ छै ? ऊ के हर करै छै ? वासण होय सो भरै—उणसूं ग्रा बात ग्रावै छै, मोसू ग्रा बात ग्रावै छै। उणसू मोनूं रीस न चढै, ऊ मोमूं ग्रदब सीखै छै। हू उणरै वचन सू मूरख नही बणू छूं। ऊ म्हारा सुभाव सूं ग्राकल[12] होय छै।

हकीमा कही छै—भला सुभावा री निसाणी दस छै—

१ मिनखा नू भला सुभावा मे वरकसी[13] नही करणी।

२ ग्रापरै मन सू न्याव विचार ग्रन्याव न करणौ।

---

[1]लालच [2]ग्रपना दिखावा [3]बुरी [4]उचित ग्रनुचित का भेद समझ कर [5]रखना [6]विनम्रता [7]कजूसी [8]मीठेपन से [9]बुरे शब्द कहने लगा [10]प्रशसा [11]निर्बल [12]बुद्धिमान [13]विपरीतता।

३ किणी रा अवगुण न जोवणा[1], गुणा नूं लखणा[2]।
४ किणी सूं खरावी वण आवै तौ वदळौ न लेवणौ।
५ गुनाहगार माफी री अरज करै तौ मांनणी।
६ अपणै अरथ सूं आवै जिकौ अरथ पूरौ करणौ।
७ आप सदा अदव सेती रहणौ।
८ दुखिया रै दुख दूर करणै नूं हित करणौ।
९ सदा सब काळ प्रसन्नता सू रहणौ।
१० सब मिनखां सूं मीठा वचन वोलणा।

अपणौ काम आप संवारणौ, मीठा नम्रता मूं वचन वोलणा कारण हित नै प्यार वढणै रौ छै। नै कडवा रूखा वचन हेत नूं काटणै रौ तत[3] जांणजे। मीठा वोल्यां हाथी कान पकडिया आवै।

जिण सेर वावर वादसाह आपरौ तखत ग्रहण कर हिकमत सूं संवारियौ थौ तिण आपरै वेटा नूं वहुमूल्य जांमौ[4] पहराणौ चाहियौ जिसौ कोई वीजौ पण न पहर सकै। तद कही—थां पहरियौ इसौ जामौ तौ वजार मे मोल लाभ सकै[5] छै। वेटै कही—उण जामा रौ काई मोल छै ? वादसाह कहणै लागियौ—तांणौ उणरौ भला सुभाव भली करणी, वाणौ उणरौ सूधाई[6], कांम किणी रौ कर देणौ, आ भारी खमाई छै। जो कोई इणा वाता रौ विचार करै तौ जांमौ सारी वाता पुण्य दान रौ छै।

फरेदू नूं पूछियौ—चाकरा नू क्यूंकर किण वमन सूं नै जतना सू[7] राखणा ? तरै फुरमाइयौ—मया प्यार नै खमाई सू। वही—मुस्कल किण वात सू आसांन करीजै ? जणा फुरमाइयौ—नरमी मुलायमी सुद्धता सू।

सैयदसाह वजीर सूं पूछी—गुणां मे किसौ गुण वादसाहा नूं जरूरी नै खरौ छै ? वजीर अरज कीवी—मिठाई, मिताई, खमाई, नरमाई अर मुलायमी। सिण वास्तै ? जे इण गुणा सू रैयत दुआ आपरै वादसाह नू देवै अर सिपाही पण इण गुणा सूं वादसाह री रजावदी[8] चाहै। वादसाह रौ हित दुआ रैयत रौ सूं नै सिपाही री रजावदी सूं सोभा पावै। दूजा, प्यार मे गुनाहगार नूं गोसमाळी[9] इण भात देणी आवै छै सो रीस मे नही दी जाय।

---

[1]देखना [2]लक्ष्य करना, ध्यानपूर्वक देखना [3]मर्म [4]जामा [5]माल मिल सकता है [6]सीधापन [7]यत्नपूर्वक [8]स्वीकृति, कृपा [9]ताड़ना।

ग्रेक वादसाह् मिलाई, नरमाई रा गुण घणा राखै थौ। ग्रोछा वचन कदे नही बोलै थौ। सो ग्रेक दिन रसोईदार नूं हुकम दियौ—ग्राज फलाणी खाणौ भली भात वणाय ला। पण रसोईदार दूजी भात रौ खाणौ वणाय नजर लायौ। बादसाह् जीमण री वेळा[1] ग्रास उठाइयौ सो माखी[2] दीठी, दूजौ खाणौ उठाइयौ सो उणमे ही माखी दीठी, फेर तीजै खाणे रौ ग्रास उठाइयौ सो उणरै माही जे माखी पाई तद थाळ नूं परौ कियौ[3]। फेर रसोईदार नूं बुलाय फुरमाई—जे ग्राज रा खाणा सै[4] ग्राछा सवाद छै। सवारै[5] फेर ग्रेही खाणा वणाय लावजै[6], पण इतरी माखी मत नाखजै। सारी सभा वाळा सुण चकित हुइया नै रसोईदार पण घणी सरम उठाई[7]। फेर कदेही[8] उवौ रसोईदार इण सरमिदगी रै कारण सूं कोई गळती नही कीवी।

उगणीसवी बात

सफकत[9] नै मरहमत सो दया ग्रर कृपा धारणी। कृपा रैयत रै ऊपर नै दया तमाम जीवा रै ऊपर मोटा बादसाहा नूं जोग छै। क्यो ? जे जेरदस्त लोक प्रभू री सूप बादसाह नूं छै। इणा पर दाखत जतन रैयत रा करै तौ ग्राराम सू रहै। पछै बादमाह नूं चाहीजै—ग्रासा प्रभू री कृपा री करै ग्रर हिम्मत रहमत रहीम री छै। सो कृपा करणै वाळा ऊपर कृपा करै छै तौ निबळा रै ऊपर ग्रापनू दया सूं सोभायमान[10] सरब[11] जीवा ऊपर करै। सो गत ग्राखिर तरी नै कुसळ ससार रौ छै, सो ग्रापरी दया मया सूं बधियौ छै।

सुबक्तकीन मुल्तान महमूद गाजी रौ प्रथम समै मे समजोर[12] रौ चाकर थौ। उणरै पास ग्रेक ग्राछौ घोडौ थौ। उवौ नितका[13] सिकार जावतौ ग्रर दिन दोरा काढै थौ। ग्रेक दिन सिकार नूं बन में गयौ तौ हिरणी भाग गई। ग्रेक छोटौ बच्चौ थौ सो भाग नही सकियौ सो पकड पग बांध ह्राने ऊपर मेल्ह[14] महर नू हालियौ। हिरणी बच्चै नूं पकडियौ देख्यौ तौ इणरै पाछै दौडी ग्रर पुकारी। सुबकतकीन नू उणरै ऊपर दया ग्राई सो वी बच्चै नूं

---

[1]समय [2]मक्खी [3]दूर हटाया [4]सब [5]कल [6]लाना [7]बहुत शर्मिंदा हुग्रा [8]कभी भी [9]महानुभूति [10]शोभायमान [11]सर्व [12]बराबरी की ताकत रखने वाला [13]रोजाना [14]काठी के ग्रगले भाग पर रख कर।

छोड दीन्हो। तरै उणरी मां आपरै वच्चै सूं मिळ आकास साम्हो मोंहडो कर[1] बोली—जीभ री बोली समझै तिणनू मन सू विनती करी। सुवक्तकीन रात रा सहर में रीतै हाथ आय सोय रह्यो। देखै तो हजरत पैगवर इणनू कहै छै—उवा दया मया तूं अबोला[2] जीव सूं करी तिणसूं प्रभू री दरगाह में तै कुरब[3] घणो पायो, म्हे तौसूं राजो हुवा। तौनूं वादसाही इनायत हुई चाहीजै—प्रभू रा वदा ऊपर इसी ही जे मया करे, रैयत रै ऊपर रिआयत करे। अेक वडो पुरख कही छै—दया मया हैवांना ऊपर किया इण संसार री वादसाही पाई छै तो मिनखां रै ऊपर दया मया किया तो वादसाहत मुलक थितिया[4] वडी गति री पावै तो अचरज[5] नही।

वादसाह कही—अेक निमाणी मया री आ छै—जे रैयत नूं इसी प्यारी राखै छै ज्यूं वाप बेटा नूं। जिकी आप ऊपर न सुहावै तिकी उण ऊपर न लगावै। अे पण माल जीव आपरा नू उणसूं पाछो न राखै। ऊ वारणै उणरै करै, मारा दुआ उमर दौलत वधणै री करै। ज्यो उणरी दया मया संसार ऊपर घणी होय छै त्योंही प्रभू री दया मया उणरै ऊपर घणी होय। प्रभू री मया प्रभू रा वदा ऊपर मया करसै तिण ऊपर होयसै।

हकीमा नू पूछी—वादसाहा नू भलो खरो सिकार काई छै ? तरै कही—सिकार मन री तरह री करणो[6] भलो सिकार छै। इण वास्तै जद मन आपरै वस हुवो तरै और सै वस्तु ताव मन रै छै। जद दोस्ती वादसाह री मन रैयत रा मे ठहरी तरै कोई तरह री पाछ[7] धणी सू नही राखै।

अेक मया आ छै—जिनरी हो सकै मिनखा नू खेती इमारत मे लगावै, कारज चलावै, नेहर काटण मे, तळाव बाध मोरी राखणै मे, कुवा करणै मे, घोरा वधावणै[8] मे मदत करै। नोसेरवा आपरा आमल नू फुरमाई—जे फरमान लिख। थारै तालकै री विलायत मे धरती अणवाही[9] रही तो तोनू जीवा मारणो[10] ही फरमाय स्यू, सो हिकमत इणमे आ छै—फायदो वादसाह रो हामल सू होय नै हामल जद घणो होय, जे देस वसतो होय[11]। वसत विगर खेती न वधै अर खेती रैयत सूं पूरी मया रै विगर नही वधै।

---

[1]आकाश की ओर मुंह करके [2]जो बोल नहीं सकता [3]इज्जत [4]वैभव [5]आश्चर्य [6]मन की गति को काबू करना [7]कमी [8]पानी बाधना [9]बिना बोई हुई [10]जान से मारना [11]बसा हुआ हो।

बादसाह अबुलसैयद रा उमराव खुदाबद रा समय मे रैयत कन्है सूं धणौ बांटौ[1] लेणौ सरू कियौ, दंड करणै लागिया। अेक दिन बादसाह उमरावा सूं कही—मैं आज तलक रैयत री रिआयत मे थौ। आज पछै रिआयत बरतरफ करुं छू[2]। जो मसलत होय तौ आवौ रैयत नूं लूट लेवां, रैयत रै कुछ न रहणं देवां। पण सरत[3] आ छै—आज पाछै थे महीनौ नही मागौ[4]। पाछै कोई कुछ मागसै तौ मराय देसू। तरै उमरावा अरज कीवी—म्हे रोजगार बिनां चाकरी क्यूकर कर सका। तौ बादसाह फुरमाइयौ—थाहरो म्हारी जिवारी रैयत रै हासिल सूं छै। जो इणानूं खेती रै माही लूट लेवा तौ हासिल री आस कठा सूं? था विचारौ[5]—जे बीज बळध[6] धान रैयत रौ उरौ लीजै तरै अे खेती छोडै अर खेती तरक किया सूं हासिल नहीं होय, तरै कहौ काई खावस्या, काई पहरस्या। उमराव औ वचन सुण रैयत पर दया कीवी। वडा कही छै—बादसाहा नूं जग सोनारा सू भलौ छै। रैयत सू जग खरच किया घटै। रैयत रौ सदा हासिल आवतौ रहै।

चाहिजै आ छै—नित दरबार कर फरियाद लोगा री नै अरज भूखा री सुणै, तरै सारी बाता री ठीक आपनूं होय। मुहडा आगला किणी[7] काम मे गरज लोभ सू काम नही करै। मक्का रै पीरजादा नोसेरसाह नूं लिखी—तोनू बादसाही न सोभै[8] क्यू के थारा नायक मिनखा ऊपरै भात भात रा अन्याय करै छै। तरै उण पाछी लिखियौ—था लिखी छै तिणरी मोनूं खबर नही छै। तरै उण दूजी बार[9] पाछी लिखी—जे उजर थारौ गुनाह सूं भूंडी छै। वडा कहो छै—तोनू जवाब दियौ जाणजे सो औरनू मत सौप, रैयत रौ काम थे आपरी गरदन ऊपर झालियौ छै[10]। तोनू जवाब देणौ पडसी, आ बेखबरी आळस किण काम री, आ बात कुण सुणसी[11]?

मानसी फारू कारज फुरमाइयौ—जिकी विलायत म्हारै तालकै छै[12] तठा री पूळ तूटै। उण ऊपर रेवड छाळिया[13] रा नीसरता पग खाड मे पड़ै तिकौ आगोतर मे मोनू ही पूछसै। तिणरौ जबाब मोनू करणौ होयसै। जिण

---

[1]खेती का भाग [2]हटता हूँ [3]शर्तें [4]महीने का वेतन नही मागोगे [5]विचार करो [6]बैल [7]किसी [8]शोभायमान नही होती [9]दूसरी बार [10]अपने ऊपर जिम्मवारी ली है [11]कौन सुनेगा [12]जो देश मेरे जिम्मे है [13]बकरिया।

वादसाही कबूल कर गादी ऊपर पग दियौ तिणनूं यूं विचार दया मया रैत ऊपर करणी चाहीजै ।

मोटै तखत वैठणौ आसान छै पण अठै घडी भर नूं चैन मत जाणजे—न्याय नै भूखां री परदाखत[1] करणौ छै ।

वीसवीं वात

खैरात भवरात, सो पुण्य । पवित्र पुण्य दान रौ राह करणौ वादसाहा दौलतमदा रै सिर भार छै । जिकौ मुवा पछै हासिल उणरै जीव नूं पोंछै[2] सो दान मसीत[3] वदगी री ठौड़ नै फकीरा रै उतरणै री ठौड़ मारा ही मारग मे होय । कुवा पुळ तिणरौ मास्तौ[4] पुण्य छै, सो करणै वाळा रा जीव नू पहोंचै ।

जिका सारा बुद्धिमान था तिणा ससार नू अनित्य निसार जाणियौ । इण सराय में आवण रौ फळ यादगीर रै सिवाय कुछ वाकी नही रहसै ।

जे वडी इमारता वादसाहा, उमरावा, वजीरा, देस रा सभागिया[5] वणाई छै सो सारा ससार मे मसहूर नाम छै । सपति नै सरीर तौ रहै नही, जिणसू नाम जस रो भलौ जिको रहै, मोटै कमठाणा सूं[6] नाम घणा दिन रहै । नोसेरवा जिसा नामो रहिया नही । उणरा ग्रंवान सराय रौ नाव आज तलक सताजौ छै । वडां कही छै—दौलत जुडै[7] तौ भलाई कीजै । सो भलाई दीसती पैला ऊपर छै[8], पण अत आपनू छै ।

कही छै—आदमी नै मुवा पाछै उणासू सगळा काम अळगा हो जाय पण तीन वात तौ लागी ही रहै—

प्रथम—पुण्य, दान, थिर देहरा[9], कुवा आदि ।

दूजा —कोई इसौ काम कियौ होय जिणसू खलक नफौ उठावै ।

तीजा—वेटौ सपूत धरमात्मा जिकौ उणरा जीव नू दुवा करै, दान देवै ।

तिणसू पुण्य रै ठिकाणै उठा रा मिनख पूजा प्रभू री नूं राखै, तिणारा रोजगार

---

[1]देखरेख [2]पहुँचता है [3]मसजिद [4]लगातार [5]सुभाग्यवान [6]बड़ी इमारतें बनवाने से [7]धन प्राप्त हो [8]पहले तो बाहर दिखाई देती है [9]देवनामो के स्थान ।

री भलो भात खबर लेय । दूजी, पाठसाळा स्थापित कर पिंडत तालवै[१], इल्म रोजगारी बैठाणं[२], तिके धरम सास्तर जे खलक नूं भणावै[३] । तिणरौ पुण्य उणनू होय अर महापुरसा रै रहणै नू ठौड बणावै उवै उठै आराम सू रहै, उणरै खाणै पीणै अर पहरणै री रोजीनौ करै[४] तौ पुण्य पहोचै अर सदावरत[५] भूखा निमित्त अन्न काचौ पाकौ देय तौ उणसू प्रताप बधै, श्रौ घणौ वडौ अन्नदान छै। इणरै सिवाय श्रौर दान नही छै। रोगिया रै वास्तै श्रौसधालय बणवावै । उठै रोगी रहै उणरी श्रौखध नूं पथ्य पाणी नूं प्रबंध होय तौ कारण निरोगता कुसळता नै बडा ही श्राराम नूं होय श्रौर मारगा मे सराय धरम-साळा मुसाफिर लोगा रै ठहरणै वास्तै बणावै इणरौ नफौ घणौ छै। नदी-नाळा रै ऊपर पुळ बधावै, तिणमूं रस्तागीर[६] सगळा आराम उठावै सो घणौ भलौ कांम छै ।

बडा कही छै—पुळां बाधिया अत ठौड री नदी वैतरणी उतरता प्रभू श्रासानी करसै । जठै पाणी री कमी होय, कुवा वावडी तळावा रै बणाया सूं पुण्य घणौ होय । जीव मातर उण जायगा[७] सुख पावै । धरम रै काम रा विचार भला मिनख राखै । दान पुण्य रै कामा मे भला सुभावा रै मिनखा नूं राखै जिका भली भात उण कामा नूं चलावै । अर बादसाह सदा उणरै कामा री खबर लेतौ रहै । इण काम मे विसेस श्राळस[८] बेपरवाही नही करै ।

श्रेक मोटा मिनख नूं देह छोडिया कई श्रेक दिन हुश्रा था सो सुपन[९] मे श्रेक श्रादमी सू मिळनै कही—घणा दिना सू जम-किंकरा[१०] रै हाथ दुख मे थौ । पछै छुटकारा री परवाणौ[११] प्रभू री दरगाह सू पहोंचियो । प्रभू म्हारा सारा गुनाह वरसिया[१२] तरै उणमूं पूछी—गुनाह वरसणै रौ काई कारण थौ ? उण कही—मैं श्रेक जगळ मे धरमसाळा बणवाई थी उठै गरमी री मौसम मे श्रेक रिखीस्वर श्राय छाया मे वैठ सुख पायौ । ठडा होय, जळ पीय, घणा चैन सू प्रभू नू विणती करी—हे प्रभू ! इण आराम री ठौड रै बणावणै वाळै नूं वैकुंठ रौ वास देय श्राराम दीजै । इव[१३] उणरी विणती सूं हू सुरग-सुख भोगूं छू । इण वास्तै धरम करम श्रवस करणौ ।

---

[१]बुलावे [२]प्रारभ करे [३]विद्या सिखावे [४]रोजाना के लिए व्यवस्था करे [५]सदावर्त [६]राहगीर [७]जगह [८]श्रालस्य [९]स्वप्न [१०]यम के सेवक [११]परवाना [१२]माफ किये [१३]श्रब ।

इक्कीसवीं बात

सखावत[१] नै ग्रहसाण ।

सखावत, दातारी—जस निमित्त देणौ । ग्रहसांण सो मित्रां री ग्ररथ साधणौ[२] । कोई गुणी ग्रादमियां नूं, विसेस मोटै कुळवांना नूं देणै वरसणै जिसौ दूजौ काम नही छै । ग्रादमी री वडपण दान सूं छै नै करामात प्रभू सूं नम्रता व दडवत सूं छै । इसा गुण जिणमें ग्रेक ही नही सो भलौ नही । हकीमां सूं पूछियौ—ग्रेव तिका तमाम गुणां नूं ढाकै सो कांई छै ? तरै कही—सूमडापण[३] । फेर पूछी—ग्रेक ही गुण जो तमाम ही ग्रौगुणां नूं ढांकै इसौ काई छै ? तरै कही—दातारी । साच जाणौ, दातारी किया विगर वडाई न होय ।

सिकदर ग्ररस्तू सू पूछी—दोनूं ठौड सभागियौ[४] कुण ? तरै कही--सभागियौ ग्रागोतर मे ऊ छै जो वेही सूं भली करै । प्रभू कही छै—जो ग्रेक भली करसै, उणरै दस गुणी भलौ हू करस्यूं । पण ससार मे सभागियौ ऊ छै तिकौ मिनखा रै मन नूं ग्रहसाण सूं बस मे करै । जद मन, जिकौ सरीर रौ राजा छै, तिकौ किणी रै कैद ग्रायौ तरै डील तौ उणरै मागै कैद होय ईज[५] । जद वडौ साहिव[६] तमाम मना रौ हुवौ तरै सारी ही वाता सभागियौ हुवौ । खुसरौ परवेज रै ग्रेक उमराव सेनापति थौ सो घणै साथ रौ राखणहार[७], वैरिया केरौ मारणहार[८], वडौ नामी[९] थौ । उणरै पराक्रम नै समभ री सारी तरफा देस मे धाक थी । वादसाह तक उणरै कहै मे चालतौ । सो हरकारा[१०] ग्रेक समै वादसाह नूं खबर दीवी—जे ग्रौ उमराव थासूं फिराऊ होयसै । सो इण फिरता पहला इलाज करौ । वादसाह सचिता[११] हुवा नै कही—ग्रौ फिरै तौ घणा लोग इणरै भेळा, सो इणरै फिरिया तौ वादसाही मे फितूर[१२] मोटौ होय । पछै वादसाह ग्रापरै हजूरी सहणा[१३] सूं सलाह पूछी सो सगळा री सलाह बैठी—इणनूं कैदी कीजे । वादसाह इणारी सलाह वखाणी । दूजै दिन उण ग्रमीर नू तेडियौ[१४] नै उणरा भला काम साम-धरम[१५] रा वखाण किया ।

---

[१]दानशीलता [२]कार्य पूरा करना [३]कंजूसी [४]भाग्यवान [५]होगा ही [६]मालिक [७]रखने वाला [८]वैरियों को मारने वाला [९]वहुत प्रसिद्ध [१०]खबर लाने ले जाने वाला [११]चिंतित [१२]ग्रव्यवस्था, झगड़ा [१३]समझदार [१४]बुलाये [१५]स्याम धर्म ।

वडी वस्तुवा नकद मोहरां जवाहर हाथी घोडा उणरै पायै सूं ज्यादा[1] वक्सीस किया। नाम नै खिताव बधाइयौ। सलाह वद करणै री कही थी उवां समै पाय अरज कीवी—जे आपरै हठ सूं फिरणै रौ कारण काई थौ। वादसाह हस नै फुरमाइयौ—मैं थारै विचार रै विरुद्ध नही कियौ। थां कही—कैद करौ, सो मैं चाही मोहकम खरी कैद करूं सो सबळी[2] कैद कांई कै कैद अहसाण री सो न दीठी। मैं दूजौ विचार कियौ। हरएक कैद तौ सरीर रा खंडा नूं टहरी छै सो जिकौ वध अेक अग रै ऊपर होय सो कांई वध होयसै। तीसू चाही वध उणरै मन रै ऊपर राखूं। मन राजा छै, अंग उणरा सेवक छै। जद मन आप कैद हुवौ तौ उणरा खंडा नूं कैद हुवा ही सरै। दूजौ बंध लोहै रौ जिण अग नूं दीजै सो सोहाण खुरसाण[3] सूं घिसियौ जाय। वध दान अहसाण रौ मन ऊपर दियौ सो किणी वस्तु सूं दूर नही होय। पक्षी पसु नूं लेय रस्सा सू बध कीजै नै आदमी नै दान अहसाण सू वाधजै। वादसाह री कृपा सूं उण अमीर री सव भात निसा हुई। कोई मन मे कदास[4] थी सो महरबांनी सूं कुवुद्धि मिट गई। पछै उण रईस घणी सामधरमी सूं वदगी कीवी। वडा कही छै—जिणनूं दीजै सो आपरौ होय, सदा वखाण करै। जो वैरी नै दान अहमाण करै तौ सही मित्र महरवान होय। गुण दान अेक औ छै—मन ससार रा दातार ऊपर मित्राई[5] करै जो इणा पायौ होय। ज्यूं खुरासांण रा मरद सुणै जे अेराक मे फलाणौ मोटौ छै तौ सारा उणसू दोस्ती राखै, स्यावास कहै। दातार जे मुवौ होय तौ याद करै, तरह तरह सू वखाण करै। ज्यू हातमताई नै नौसौ सत्तर बरस हुवा, पण उणरै दान अहसाण रौ जिकर[6] नित नवौ छै। हातम री दातारी अरव यमन ताई[7] पहोची नै साम रूम ताई सुणी सो वाली साम रौ हाकम अर वादसाह रूम रौ इणरा वैरी होय लागा। किण वास्तै ? अ पण दातार कहावै था पण हातिम रा बखांण इसा—जे वादळ दरिया-दिल[8] इणरा दान सू सरमिदा था। माल आलम रौ उणरी पगां री हिम्मत रै नीचै थौ। सो तीन वादसाहा उणसू सलूक कियौ थौ। प्रथम वाली साम रौ बादसाह, औ साम देस रूम सू आथूणौ[9] छै। उठा रा वादसाहा नूं वालो

---

[1]उसके ओहदे से अधिक [2]बलवान, मजबूत [3]सान [4]शायद कभी [5]मित्रता [6]जिक्र [7]तक [8]समुद्र के समान बडा दिल रखने वाला [9]पश्चिम की ओर।

कहजे । इणनूं परखवा[1] नै ग्रेक ग्रादमी भेज्यौ । ऊंट राता केमां, काळी ग्रास्यां, मोटै थूवै रा मंगाया सो ऊट इण तरह रा ग्ररब देस में नादिर[2] छै, मंहगा मिळै छै। इसा ऊंट उण समै हातिम रा गांव मे नही था। जणा ग्रेळची[3] हातिम कन्है ग्राय वाली सांम देसरा री सदेसौ दियौ। हातिम कबूल कर डेरौ दियौ, ग्रेळची री भलो महमानी कीवी ग्रर सारा गावा पासती रा[4] नूं कहायो—इसा ऊंट लावौ, पूरौ मोल लेवौ। दूजै महीनै रुपिया देयस्यूं[5], सो सौ ऊंट करज कर भेजिया। तौ उण बादसाह ग्रा सारी बात सुणी। तरै इचरज पाय[6] कही—म्हे तौ ग्ररवौ नूं परखै था[7], उवौ ग्राप म्हारै वास्तै करज में पड़ियौ। पछै वाली उण ऊटा ऊपर माता मिस्र सागरी लादनै उणही ग्रेळची रै साथ ग्ररब भेज दिया। ताहरा हातिम फुरमाई—ऊटा रा धणिया जे मोनूं ऊट करज दिया था ग्रापरा ऊट भार सुद्धा[8] पाछा लेय जावौ। सो भार सुद्धा ऊट पाछा फेरिया। ग्राप कुछ नही राखियौ। ग्रा खबर साम रै वाली नू पहोची तरै फुरमाइयौ—इतरी मुरीत हद्द ग्रादमी री नूं छै। दातारी हातिम री घणी सरी छै।

दूजौ रूम रौ वडौ बादसाह तिणनूं खुनकारा कहै छै। तिण दीठौ[9]—हातिम रौ नाम घणौ छै, उठै घोडा ऊट घणा होय छै सो इणरी दातारी ग्राजमाणै[10] नूं ग्रापरी कुछ चीज वसत ग्रर सदेसौ घोडा रौ ले ग्रेळची भेजियौ। ग्रेळची हातिम रहतौ उण ठौड ग्रायौ। उण दिन मेह, बादळ बिजळी सू रान ग्रधारी थी। हातिम महमान री सातरदारी कीवी ग्राछी ठौड उतारियौ, पछै मेहमान नू सुवाण्यौ[11], ग्राप बाहिर गयौ, काई बात न हुई। प्रभात हातिम उजर कियौ जे रात हीडा[12] न किया सो माफ करौ। इण कह्या—हू तौ रूम रौ ग्रेळची छूं, या कन्है मोनू भेजियौ छै, ग्रै वस्तुवा नै ग्रो फुरमान छै। हातिम मजमून पायौ तरै मन मे घणौ सचित[13] हुवौ। ग्रेळची ग्रपणै ग्यान सू इणरी चिंता जाणनै कही—जे घोडा देणै री मसा नही छै तौ कुछ न कहा छा। तरै हातिम कही—जे इसा घोडा कोई ग्रादमी हजार मागै तौ कदे ना नही कहू। सेख रूम रौ बादसाह मो कन्है ग्रेक घोडौ मागै थौ, था जिसौ

---

[1]परखने के लिए [2]श्रेष्ठ [3]पत्रवाहक, राजदूत [4]पास के [5]दूंगा [6]आश्चर्यचकित होकर [7]परीक्षा ले रहे थे [8]ऊंटों पर लदे हुए भार-सहित [9]देखा [10]आजमाने के लिए [11]सुलाया [12]काम [13]चिंतित।

मोटौ[1] आदमी भेजियौ। औ सोच मोनू इण वास्तै छै जे पहला मोनूं कुछ खबर नहीं हुई नही तौ उण घोडै नूं मार खाणौ न करतौ, रात थी, बादळां रै जोर सूं अधारौ थौ, वित्त रेवड़[2] अळगौ थौ, तरै मैं दीठौ महमानी महमांन री करणी सो उही[3] घोडौ हाजर थौ सो मारियौ। पछै दूजा घोडा अर दूजी वस्तुवा अरबी बादसाह नूं भेजी। अेळची नूं राजी कर आछी वस्तुवां दीवी। अेळची रूम आवियौ। बादसाह हकीकत सुण न्याय विचार कही—दातारी नै मुरीत हातिमसाह री घणी खरी छै।

यमन रौ बादसाह घणौ दान अहसाण मुरब्बत मे ऊठियौ[4] थौ सो घणा खाणा अव्वल जिमातौ। मागणै वाळा नूं घणा माल आदर सूं देवतौ। मन मे चाहै थौ—म्हारै बिगर कोई भी किणी री दातारी रा बखाण न करै। सो इण आगै कदे कोई हातिम री दातारी रा बखाण करतौ जणा इणनूं रीस चढती। उवौ हातिम री भुडाई[5] री मसा[6] राखै थौ। कहतौ—जे हातिम रन[7] रौ रहणहार[8], उवौ देस अेक रैयत मे छै, देस रौ कोई धणी नही, हुक्म कुछ हालै नही। तिणसूं उवौ काई दान दातारो करसै। ऊ अेक बरस रै माही नही दे सकै उतरौ म्हारै हाथ सू नित जावै छै। उणसूं सौगुणा पाहुणा[9] आगै राखूं छूं। उवौ काई तिथ[10] राखै छै। इणही मर्म कोई हातिम री दान दातारी रा इणरै आगै फेर बखाण किया, तीसूं यमन रै बादसाह नूं घणी रीस चढी। अदेरौ जोर कियौ[11], घणौ सोच कियौ। लोग हातिम रा बखाण करता रहि गया। इण मन मे विचार कियौ—जे हातिम नूं किणही भात मराय नाखूं। सो अेक महा हत्यारौ, पापी, जालिम थौ उणनू हजूर बुलाइयौ अर मया करनै हुक्म कियौ—जे तूं अरब जाय, हर भात कर हातिम नूं मार आवै तौ तोनूं मोटौ करूं। इण पापी कही—बिला सक मार आस्यूं। सो उठा सूं सीघ कर हालतौ-हालतौ घणा दिना मे उण गाव आवियौ। उठै अेक रन मे अेक जवान रूपवत[12], भला सुभावा, बडी लिलाडी रौ भागवान[13] मिळियौ, तिण घणी मया कर पूछियौ—कठा सूं आइया नै कठै जायस्यौ। उण पापी कहियौ यमन सू आवियौ नै मतौ[14] साम नू राखूं छू। तौ इण बडी बीणती

---

[1] बड़ा [2] जानवर भेड़ें आदि [3] वही [4] उन्नति की [5] बुराई [6] इच्छा [7] जंगल [8] रहने वाला [9] मेहमान [10] स्थिति [11] प्रगट गुस्सा किया [12] रूपवान [13] भाग्यवान [14] विचार, ध्येय।

करी—जे आज था म्हारै घर ऊनरी ज्यौं चाकरी करूं। इणरै मीठा बोल सूं पापी वस हुवौ, तीसू इणरै डेरै[1] आवियौ। सो इण डेरौ दिराय मिजमानी भांत-भांत रा जीमण सरव[2] मेवा मिसरी आदि सूं की। जे इणरै मन मे नही था इसा हीड़ा[3] किया। तद मन मे ऊ उच्चकौ[4] इण जवांन रा वखाण करतौ थौ नै स्याबास कहतौ थौ। जे इसा ही मिनख होय छै सो मो सरीखा अणसेंधा[5] सूं इतरी मया कीवी। रात बीती, प्रभात हुवौ। ताहरा उवौ सख्स आय विदा करतौ गदगद होय कही—जे था काई आविया, चार दिन ही नही टिकिया, जे टिकौ तौ घणी मया[6] जांणू। इण कही—रह नही सकू, मोनूं अेक वडौ मोटौ जरूरी काम छै। तरै इण कही—जे आप मोनू वाकिफ करौ तौ मोसूं वणै सो मदत करू। तौ इण मोटौ पुरख देख अपणै मन मे कही—जे म्हारौ काम वडौ खरौ छै सो इसा मित्र री मदत विगर पेस न पहोच सकसी[7]। औ मरद मूरीत नै असेंधा रौ पीहर छै[8]। इण सिवाय ओर कोई भलौ नही मिळसै। जे इणनूं वात कह साथ लेयनै काम करणै नूं कमर बाधौ। काम भला मित्रा री मदद विगर नही वण सकै छै। पछै उण वात छानी[9] राखणै री सोंम[10] देय घणा जतन सू कही—मैं सुणी छै, इण तरफ कोई हातम नामे दातार कहावै छै तिण सू यमन रौ वादसाह वेराजी हुवौ छै। हू अेक चोर उचक्को, मिनखा नूं मारणहार छू। यमन रौ वादसाह मोनूं माल-मत्तौ गाव देणै रौ घणौ वायदौ कियौ छै। इण सरत[11] जे हातिम नूं मार माथौ लेय जाऊ। मैं पेट रै वास्तै कबूल कर अठै आयौ छू। पण हातिम अर उणरौ ठौड ठिकाणौ नही जाणू। सो थाहरी क्रपा सूं हातिम नूं वतावौ नै उणरै मारणै मे मदत करै तौ मो ऊपर घणौ अहसाण होवै। थाहरी दया सू मैं वादसाह कन्है जाय इनाम पाऊ अर थाहरा गुण गाऊ।

उण जवान इणरा वचन सुण कही—मैं ही हातम छू, माथौ वाढ, उतावळ कर[12], म्हारा साथी खबरदार होय जठा पहला[13] माथौ लेय जा ज्यू[14] थाग वादसाह री नै थारी गरज सरै। यू कहि हातिम अपणौ माथौ आघौ कियौ[15]

---

[1]रहने के स्थान पर [2]सर्व [3]कार्य, खातिर [4]उचक्का, बदमाश [5]बिना जानपहिचान का [6]कृपा [7]कार्य पूर्णता को प्राप्त नही होगा [8]बिना जानपहिचान के आदमी के लिए भी अपने घर के सामने है [9]गुप्त [10]सौगंध [11]शर्त [12]शीघ्रता कर [13]जिससे पहले [14]जिससे [15]आगे की ओर किया।

नै कही—जळदी कर, देर मत करे। तरै ऊ पापी पुकारियौ नै धरती रै ऊपर पडियौ अर हातिम रै पगा रौ चुवन लियौ। धन्य छै तू, थारी हिम्मत अर धन्य धन्य थारी दान-दातारी। इण तरह घणा बखाण कर सीख कीवी[1]।

हातिम इणनूं मारग री खरची कपड़ा-लत्ता देय विदा कियौ। उवौ पापी पाछौ यमन आय बादसाह नूं सारी हवीक्त कही। जद बादसाह गाढ छोड[2] न्याय बोल्यौ—आ दातारी मिनख री हद मे नहीं। पईसा, रिपिया, हाथी, घोडा, जेवर, जमी रा दातार घणा, पण[3] माथौ तौ हातिम दातार नूं छोड कुण दे सकै छै? उणरी दातारी धन्य छै। ओ काम घणौ करडौ[4] छै।

अेक किताब मे लिखी छै—हातिम मुवौ जद गाडियौ। उणरी कबर नदी रै रेलै[5] सूं नेडै[6] थी। अेक समै मेह घणौ आइयौ। रेलौ इसौ जोर सू आवियौ जे घोर नूं ख़ुवार करै। तरै हातिम रै बेटै आ बात जाण नै उणरौ सरीर दूजी ठौड गाडणै नू घोर खोली सो देखै तौ तमाम सरीर तौ गळ गयौ पण हाथ जीमणौ[7] ज्यू रौ त्यू छै। आ देख सारा मिनख इचरज मे हुवा[8]। तरै अेक संणै[9] कही—ताजौ रहै इणरौ इचरज मत मानौ, क्यू? ज उण इण हाथ सू मागणै वाळा नू घणा दान दिया छै, सो दान पुण्य री हिमायत सूं हाथ सलामत रहियौ छै। तिणसूं दांन देणौ बडी बात जाणजे।

दारा बादसाह पूछी—बादसाही रौ बणाव काई छै? तरै कही—इज्जत सू जीवणै मे। तौ पूछी—इज्जत क्यूकर रहै? तरै कही—रूवार किया। सोना सू जिकौ सोना नू उडावै, बकसै, तिणनूं सारा वडौ नै प्यारौ राखै। जिणनू सोनौ प्यारौ छै तिणनूं सारा ही आछौ निकारणौ[10] गिणै। जिकौ[11] पईसा नू खावै खरचै उणा री अठै ईजत छै नै उठै आगै ही ईजत होय। साहजादौ मोहसन वडौ दातार छै। अदल सू आलम[12] सवारियौ छै नै हिकमत सूं राज थिर छै, दान मागणै वाळा री आसा पूरणौ छै[13]। हाथा दान रौ करणहार छै। ईस्वर इणरौ दान अहसाण ज्यादा करै।

---

[1]विदा लो [2]अपना गर्व त्याग कर [3]परन्तु [4]कठिन [5]नदी का बहाव [6]नजदीक [7]दाहिना [8]आश्चर्यचकित हुए [9]समझदार आदमी [10]बिना काम का [11]जो [12]संसार [13]आशा पूर्ण करने वाला है।

बाईसवीं बात

तवाजे ग्रहतराम, सो आया आदमी रौ विनय करणौ। औ कारण आपरौ मुरतब बधाणै रौ छै। जिकौ ही प्रभू रै वास्तै नम चालै[1] तिणरौ कारज[2] प्रभू बणावै। नसीर बेटौ ग्रहमद रौ बादसाह समानिया[3] में थौ तिण आपरै बेटा नूं सीख दीवी—हे पुत्र! जो चाह थी सो मुल्क में मसक्कत सूं हाथ की[4] नै प्यारी ऊमर बादसाहत बाधण मे[5] अर उणरा कायदा मे खरच की सो घणा बरस तोनूं कायम रहै। तू खजाना ऊपर भरोसौ मत कर क्योंकै माल मारग जवाल[6] जाणै मे छै। लस्कर ऊपर मांन मत राखे क्योंकै सिपाही रौ हाल मुनक्काज[7] छै, लालची छै। तकियौ सासती[8] राजस मुलक ऊपर छै। सो दांन ग्रहसाण कर नै ताजीम अर खिताब सू विनय मिनखा रौ बधार[9]।

विनय अर बखिस दोनूं जाळ छै। मन मिनखा रा इण दोनूं जाळां में फसै सो हरगिज नही छूटै। बटा कही छै—जिण रौ विनय करसै सो थारै बस रहसै[10], ऊ थारौ हुकमी[11] रहसी अर तोनूं माहिब गिणसी[12]। विनय सूं अणसंधा ही मित्र होय। विनय कांई छै कै आपनू आगलै सूं कम गिणै, उण नूं ऊंचौ बैठांण आया रौ कारण बधावै। जिकौ इण बात सू मुख फेरै सो जांणै म्हारी जात सदेह मे पडसै। पण विनय करण वाळौ मोटा सुभाव नै मोटा घराणा[13] रौ छै तिकौ बिना कारण किणी सू नही डरै छै। क्यूं कै विनय पण वडाई व तेज मे कुछ कमी नही करै छै। विसेस कारण, मुलाहिजौ उणरौ नजीक प्रभू रै नै ससार रै बधै[14]। विनय राजा बादसाहा नू भलो छै। भूखौ मिनख जे विनय करै तौ औ उणरौ सुभाव छै।

इण ठौड मालम आ हुइ छै—जे मरोड[15] ओछा कमीणा[16] सूं छै। आपरौ गरज औगण[17] नै कमी मरोड मे छिपावणी जाणी छै, जे आदमी ग्रहकार खुवार[18] बेकारण करै तीसूं स्वार भली न छै[19]। किवार कपट नै छै। खासा दरीगाह प्रभू रा छै।

---

[1]विनम्रता मे चलता है [2]कार्य [3]तत्कालीन [4]प्राप्त की [5]राज्य कायम करने मे [6]सारे माल का ह्रास होने को है [7]दगा [8]निरंतर [9]मनुष्यों मे सद्भावना बढा [10]वश मे रहेगा [11]हुक्म मानने वाला [12]मालिक मानेगा [13]घराना [14]बढ़े [15]ऋूठा गर्व [16]निम्न कोटि के लोग [17]अवगुन [18]तिरस्कार [19]प्रतिष्ठित लोगो के लिए अच्छी बात नही है।

विनय सारा सूं सोभै छै। दौलतवंदा सूं विसेस सोभतौ दीसै छै। क्यूंकै गहणौ[1] नै पोसाक वडाई री विनय छै। इवनस्माक हारूं रसीद री मजलिस मे आयौ। खलीफै ऊठ उणरी ताजीम कीवी। तरै इवनस्माक कही—हे वादसाह ! विनय थारी वादसाही मे वडौ खरौ छै। वादसाह कही—भली कही, ब्यौरौ कहौ। तरै कही—जिण किणी नूं प्रभू घणौ माल, सुदरता वडाई दीवी[2], उवौ माल सूं ददा नै मदत अहसाण करै, रप सूं सील पाळै[3], वडाई सू विनय मिनखा री करै, तिणनूं प्रभू आपरै प्यारै सेवगा[4] मे गिणै। वादसाह औ वचन पसद कियौ अर लिख लियौ। आछी सीख लिखणी। सैणा आजमायौ छै—विनय सू मोटौ नाम पावै, मतळब नू पहोचै। मोटा घरांणा रा आदमिया रौ घणौ वडौ भरोसौ छै। कारण वडाई वधणै रौ विनय छै।

इमाम मुहम्मदहसन रसीदसाह कन्है आयौ। रसीद उणनूं घणी ताजीम कीवी, ऊठ नै ऊभौ रहियौ। उणनूं आपरी ठौड वैसाणियौ[5]। सीख करी जद कितराअेक पावडा पहुचायौ[6]। पछै अेक खवास[7] कही—इतरौ विनय आप कियौ इणसू वादसाह री धाक नही रहै छै। वादसाह कही—जिकी धाक विनय करता थका नही रहै, सो न हुई ही भली। अेक विनय री निसाणी[8]—चाहना करणी, सोहवत पिडता धरमवता[9] री नै भला साचा महापुरखा रै दरसणा री। जिणरी साथ, आपनू आछा सुभावा मे ससार नू दिखावै, वाता साची प्रभू री खुसामद मे वणावै, विसेस उणरै दरसण नूं जावणौ।

जद अवदुल हकूमत खुरासाण री आयौ तौ नैसापुर मे उतरियौ। सारा वडा आदमी उणसू सलाम करणै आइया। सात दिना पाछै पूछी—कोई रहियौ छै[10] जो इण सहर रौ म्हा कन्है न आयौ छै। तरै हजूरी सहर रौ थौ उण कही—जे सहर रा आदमी था सो सारा आया पण दोय दरवेस[11] गोसे[12] वैठा छै। अठी-उठी देखणा सू उणा आरा[13]सूं आख ढाकी[14] छै। मिनखा री भीड सू जुदा होय प्रभू रौ भजन करै छै, सो नही आया छै। तरै अवदुलाह पूछी—अै दोनू तन कुण छै ? ताहरा कही—अहमद हरव नै मुहम्मद असल

---

[1]गहना [2]बडप्पन दिया [3]शील की रक्षा करे [4]सेवकों [5]बैठाया [6]कुछ कदम तक पहुँचाने गया [7]सेवक [8]निशानी [9]धर्म का अनुसरण करने वाले [10]कोई बाकी रहा है [11]फकीर, महात्मा [12]गोशे, एकान्त [13]उपेक्षा, घृणा [14]बन्द की।

मतूमी छै, जिका प्रभू रा भजन करै छै। बादसाह उमरावां रै दरबार नही जाय छै। तौ बादसाह कही—जे वे नही आइया तौ म्हे ही उणांरी सलांम नूं जायस्यां[1]। पछै आप सवार हुवौ अहमद हरब रै नजीक आवियौ तद अेक जणौ दौड़ पहोचियौ नै कही—अब्दुल थाहरै आवै छै[2]। अहमद नै ऊठ साम्हौ[3] जाणै री समय नही, तौही[4] ऊठियौ। इतरै मे अब्दुल पहोचियौ। तरै अहमद माथौ ऊचौ करनै कही—हे अब्दुल! मे सुणी थी कै मिनख भला सुभावा, रूप-वंत[5] तू छै पण हमार[6] उणसूं ही भलौ देखूं छू। इसा आछा मुंहडा सूं[7] ईस्वर री आग्या लोप[8] भूंडौ मत करे। इसा अव्वल गाला सूं लकडी आग दोजख[9] री मत करे। औ कह निमाज करणै लागियौ। अब्दुल मीस पाय गळ गळा थका[10] बारै आइया।

पछै मुहम्मद असलम रै घरा गया सो उण तौ किंवड[11] ही नही खोलिया। तद लोगा कही—औ तौ जुमा रै दिन[12] ही नमाज नू आवै छै, उठै मिळणौ होयसी। सो जुमा रै दिन अब्दुल इण रै मारग ऊपर जाय ऊभौ रहियौ। सेख घर सूं निकळ मसीत[13] जाणं नू थौ सो दीठौ—सवार मारग मे ऊभा छै, तरै उठै ही ऊभौ रहियौ। अब्दुल घोडै सू उतर सेख कन्है आय सलांम कीवी। मुहम्मद असलम पूछियौ—कुण छौ, काई काम रासौ छौ[14]? अब्दुल कही—हूं फलाणौ छूं, थाहरी जियारत[15] आइयौ छू। तरै सेख कही—प्रभू री सोंम तोनूं मोसूं किसौ काम छै नै मोनूं तोसूं किसी बात? आ कह मोहडौ[16] भीत साम्हौ कियौ सो पाछौ उण साम्हौ नही कियौ। अब्दुल आगै आय पगा कन्है धरती ऊपर माथौ रासियौ नै मन मे विणती कीवी—हे प्रभू! हू थारी रजावदी वास्तै इण थारा बदा सू प्यार करू छूं। तद उण समै गैबवाणी[17] हुई—माथौ उठाय थाहरा गुनाह इण बदगी रै वास्तै माफ किया। आप भूंडा होयजे पण भला सू प्यार सगत कीज।

अेक बादसाह दरबेस रै दरसण नू गया। उण अतीत[18] प्रभू नू तुरत दटवत कीवी। अतीत कही—दडवत गुरू प्रभू रा गुणानुवाद रो छै। फेर

---

[1]जाएंगे [2]अब्दुल तुम्हारे पास आ रहे हैं [3]सामने [4]तो भी [5]रूपवान [6]इस समय [7]मुंह से [8]ईश्वर की आज्ञा टाल कर [9]नरक [10]गद्-गद् होकर [11]दरवाजा [12]शुक्रवार के दिन [13]मस्जिद [14]क्या काम है [15]दर्शन [16]मुंह [17]आकाश वाणी [18]साधु पुरुष।

वजीर कही—तै सुक्र किण वास्तै कियौ । तरै अतीत कही—प्रभू नूं सुक्र इण वास्तै कियौ जे साह नू मो कन्है आणियौ[1], मोनूं साह कन्है नही लेय गयौ ।

आवणौ बादसाहा रौ दरवेसां रै नजीक बदगी छै । अर जावणौ दरवेसां रौ, बंदगी दरगाह बादसाहा री मे, गुनाहगारी छै । पछै जद फळ बादसाह नू बंदगी री हुवौ, गुनाह मोसूं नही हुवौ । तरै ठौड सुकरगुजारी गुणानुवाद[2] री हुई, तिणसूं दण्डवत कीवी ।

तेईसवीं बात

अमानत दयानत । पिडता, धरम रा जाणणहारा, साचा प्रवीण लोगा, इसी कही छै—जे अमानत तत उत्तम सुभावा री जाणजे अर दयानत जड मोटा सुभावा री जाणजे । धरम री नीव अमानत छै अर दयानत सूं मारग आछो[3] दीसै छै । जद कोई अमानत मे नजर राखै तरै खयानत को छै ।

जिकी प्रभू बदा नै दी छै सो अमानत छै । तिणमे खयानत जोग नही[4] । जिण भात आख अमानत छै कै जिणसूं निसाणी कुदरत री मे देखै । कान अमानत छै जिणसू साची धरमी वाता सुणै । जीभ अमानत छै जिणसूं जिकर प्रभू री करतौ रहै । हाथ अमानत छै जिणसूं काम धरम रा, दान पुण्य करतौ रहै तौ खलक नू फायदौ होय । जद आख हराम नू खोलै, जीभ सूं भूंठ प्रपच कहै, कान सू अजोग सुणै, हाथ सूं जीवा नूं दुख देय. तिण तहकीक अमानत प्रभू री सौंप[5] मे चोरी की छै ।

वादसाहा नू अमानत सरीर री पाछै दूजी अमानत रा जतन करणा जोग छै । सो रैयत री हाल देखणी, क्यूंकै उवा सौंप खलक नै पैदा करणहार[6] प्रभू री छै । जो इणरा जापता[7] मे तकसीर[8] होय तद अमानत मे कमी होय । हकीमा कही छै—जे वादसाह अमाल[9] अन्याई नूं परगनै भेजै[10] तौ निसाणी चोरी री छै । हक री तरै मे अन्याई नू रैयत रै ऊपर अमाल करणौ इसौ होय छै ज्यू गुवाळी छाळिया री ल्याळिया नू देणी[11] । प्रभू रौ समरण भजन री

---

[1]साह को मेरे पास लाया [2]यश-वर्णन [3]अच्छा [4]उचित (योग्य) नहीं [5]दन [6]करने वाला [7]व्यवस्था [8]भूल [9](अमल) कर्मचारी [10]परगने की हकूमत करने के लिए भेजे [11]जैसे बकरियों को चराने के लिए सियारों के सुपुर्द करना ।

दियांनत छै सो पाळियां मे इहलोक परलोक रो नफो छै। सदा मरद धरमातमा आछा दियांनतदार मोटा होवैं, सगळा प्यार राखैं।

पहली वार नोसेरवा न्याय नू कमर नही बांधी, मारग सुख आराम रै चालियो सो रैयत री खबर नही लेतो। इणरै पडोस मे अेक मरद दातार थो। उवो देण मे वडो नामी थो, पाहुणा री खिदमत मे नामी थो। छोटां रा वडा हीडा काढतो, सो इणरो नाम वडा मे हुवो। तरै नोसेरवा इणरी परख नूं सौदागर रो लिवास[1] पहर नै पयादो[2] उणरै घरा आयो। उण तो इणनूं नही पिछाणियो[3] पण इणरै सुभाव माफिक जीमण भात भात रा जिमाया, घणी खातर की, कुछ पाछ नही राखी[4]। महमान नै आछी साळ[5] मे वैठाणियो। उठा सूं वाग री पाकी अगूरा दीमती थी। उठै वैठाय राग रग करवाइयो। आखिर मजलिस मे उण सौदागर रै रूप सुक कहियो—हे मोटा आदमी! मैं सौदागर छूं, थारा वखाण वडा सुण आयो थो। थारा दान अहसाण रा वखाण सुणिया था सो दीठा, थू हजारगुणो छै। इव जावू छू, मोनू आग्या कर, थाहरै वास्तै के[6] चीज भेजूं? तो उण घर रै धणी कही—हे मित्र! थाहरी[7] दौलत सै छै। पण थासू हेत छै तीसू कहू छू, जे मोनू मसा ताजा अगूरा री छै। सो थें वाग जावो या थानू कोई लावै तो थोडीसी मोनू भेज दीज्यो[8]। जद नोसेरवा कही—थारा ही वाग मे दाखा पाकी दीठी सो क्यो न खाय? तद कही—हे मित्र, वादसाह म्हारो मरद अन्याई वेपरवाह छै, उवो रैयत री परवाह नही राखै छै। अगूर आ आई छै सो कोई कूत[9] करणे वाळो नही भेजै छै, तिको कूत करै। अर मिनख विसेस दाखा खाय छै, पण मैं नही खाऊ, क्यो जे इणमे हक वादसाह रो छै। हनोज[10] कूत नही हुवो छै सो मैं दाख खाऊ तो चोरी आवै। म्हारा पथ मे चोरी हराम छै। ये दिया जनी रो पाप छै। जद वाग में दाख लागी तोरै ताळो जुडू छू। किणही नू वाग मे नही जाणै देवू। जद वादसाह आपरो लाग लगाय लेवै तद हू अगूर रै हाथ लगाऊ। नोसेरवा आ वात सुणी तद दिलगीर होय[11] कही—उवो अन्याई दिलगीर वादसाह मैं छू सो वेखबर छू। थाहरी दानता रा कारण सू सावधानी रो पल्लो पकडियो।

---

[1]पोशाक [2]पैदल [3]पहिचाना [4]कुछ भी कमी नहीं रखी [5]अच्छे लंबे कमरे में बैठाया [6]क्या [7]तुम्हारी [8]भेज देना [9]लगान तय करने के लिए फसल की कीमत अन्दाज से निश्चित करना [10]अभी तक [11]दुखित होकर।

बेटौ अमीर बलख रौ नमां स्यांम नूं बाहिर गयौ थौ। गुजर उणरौ अेक छोटी बाग री भीत उपर हुवौ सो दीठौ—बूढौ बामण[1] दाख रा चेढा[2] लगावै छै। तद अमीरजादौ कही—हे बूढा ! जिण पेड़ रा फळ नही खाणा होयमी तिणनूं क्यौं रोपै छै। बूढै कह्यौ—दूजा बाहिया[3] था सो म्हे खावां छा, म्हे बावा सो और खायसै नै सही तौ म्हे पण खावस्या। अमीरजादौ जवान मगरूर[4] थौ तिण सोस[5] खाधी। तूं बाग रा मेवा नही खावसी आ कहिनै चलौ गयौ। बूढै कही—कुण छै ? कही—साहजादौ छूं।

किलरा अेक दिन पाछै साहजादै रौ मन बाग देखणै वास्तै हुवौ। सो सवार होय साथ सामान सूं जावै थौ, सो अेक बाग मे पहोचियौ[6]। ठौड़ निपट आछी देखी, मेवौ अव्वल दीठौ, ठौड खुस आई, तरै घोडा सूं उतर बाग मे गयौ। अेक बूटो बाग में फिरतौ थौ तिण अमीरजादै नूं नही पिछांणियौ। अमीरजादै ही पण नही जाणियौ। बूढै मेवा री डाली भर नजर करी। अमीरजादौ मेवौ बाटणै लागियौ तद थोटौ सो उण बूढा नूं दियौ अर कही—तूं भी खा। बूढौ उवौ मेवौ हाथ मे लेय अेक खिदमतगार नूं दियौ अर कहो—मोनूं औ मेवौ नही खाणौ चाहीजै[7]। अमीरजादौ पूछी—क्यू नही खावणौ चाहीजै ? इण कही—जिण समै में रूखडौ[8] औ लगावै थौ[9], तिण समै बलख रै अमीर रौ बेटौ अठै आइयौ। मोनूं रोस लगावण दिसा माथै मारियौ[10]—बूढौ हुवौ, मरण मिराणं आवियौ[11], काई कांम दूर दराज करै छै, जे इण जमीन मे रोम वाहे छै क कितराक बरसा पाछै मेवौ फळमी ? सो मोनूं उण तलाक री सूंस बाही—जे तूं इण बाग रौ मेवौ नही खायसी। सो मैं उणरा सोस सू मेवौ नही खायौ छै, न खाऊ छूं। क्यो ? जे उणरौ सोंम भाजं[12]। म्हारी दियानत दुरुस्त रहै। तद उण जवान कही—हे बूटा ! उवौ अमीरजादौ मैं ही छूं अर मैं ही सूंस खाधी थी। थाहरी दियानत सू हू म्हारै राज री वजीरात तोनूं सपी। किण ही काम रौ आरभ थाहरी सलाह बिगर नहीं करस्यू। सो बूढौ उणरी कहण[13] कबूल करी। दियानत सू उणरौ पायौ वधियौ।

---

[1]ब्राह्मण [2]पौधा [3]दूसरों ने बोये थे [4]मदमारी [5]सौगंध [6]पहुंचा [7]चाहिए [8]वृक्ष [9]लगा रहा था [10]उलहना दिया [11]मरने को है [12]सौगंध टूटती है [13]कहना।

चोईसवीं बात

कौल पाळणौ[1] काम जवान मरदां रौ छै, अर सुभाव भला पुरखां[2] रौ छै। किणी सूं कौल करणौ सो पाळणौ अर फिरणौ कदे हो नही[3]।

प्रभू फुरमावै छै—हे बदा ! कौल पाळौ सो माहोमाहे[4] बांधौ। और ठौड़ पण कही छै—कौल पाळौ सो मोसूं करौ छौ[5]। हू पण उणरै बदळै थासूं कौल पाळ बदळौ देऊ। पूरौ धरम उणमें नही छै जो कौल नही पाळै।

इस्मायल नै अेक मित्र साथ आवै था सो मित्र रौ घर कन्है आइयौ तरै मित्र कही—थाहरौ साथ मोनू प्यारौ छै। अठै बैठणै रौ वायदौ मोसूं करै तौ घर मे कांम छै सो करनै तुरत आऊं छूं। सो इस्मायल वायदौ कर बैठ गयौ। उवौ मरद घर में गयौ सो उणनूं काम घणौ हुवौ। आपरै वायदा नूं अर इस्मायल नू भूल गयौ। उणरा घर मे और भी बारणौ[6] थौ तिण राह बाहर निकस गयौ। तीजै दिन उठै पहोंचियौ। आगै इस्मायल नूं दीठौ जे घर रै बारणै बैठौ थौ तरै पूछियौ—हे मोटा पुरख ! अठै क्य बैठियौ ? उण कही—तूं बैठाण गयौ थौ जद रौ बैठौ थारी वाट देखू छू। तरै उण कही—जे हू नही आयौ तौ तूं गयौ क्यूं नही ? कही—मैं वायदौ कियौ थौ सो किण भात जावै थौ। जे तूं मुद्दता नही आवतौ तौही हूं बैठौ रहितौ[7], अठा सू ऊठतौ ही नही। तद सगळा कही—साचा लोक रौ धणी औ छै[8]।

पछै कौल पळणै सू ही भलौ छै। प्रभू सूं कौल पाळणौ बिसेस खरौ छै।

अेक साहिब रै गुलाम थौ सो सीळवत[9], प्रभू सूं डर करणै वाळौ थौ। सो अेक दिन साहिब अचानक बेचाक हुवा[10] तद प्रभू सू कौल कियौ—जे सही सलामत होय जाऊ तौ इण गुलाम नू छोड देऊ। सो प्रभू उणनू आराम कियौ। पण गुलाम सू मया घणी थी सो आजाद नही कियौ। तद साहिब दूसरा बेचाक हुवा। गुलाम नू कही—तबीब[11] नू बुलाय लाव जे औखध करै। गुलाम बाहर जाय फेर आयौ। साहिब कही—तबीब कठै रहियौ ? गुलाम कही—जे बैद कही छै—ऊ खरौ भूठौ छै, कहै जिकौ पाळण नही करै, मैं उण

---

[1]वायदा पूरा करना [2]अच्छे आदमियों [3]वायदे से विमुख नहीं होना [4]आपस मे [5]मेरे वायद को पूरा करते हो [6]दरवाजा [7]बैठा रहता [8]सच्चाई का मालिक यह है [9]शीलवान [10]अस्वस्थ [11]वैद्य।

रौ इलाज नही करूं। साहिब श्रौ वचन सुण कही—हे गुलांम ! बैंद नूं कह मैं भूठौ होय पछताऊं छूं, कौल तोडिया रौ तोबा करूं छू[१]। इब जीव भी जावै तौही कौल सूं फिरूं नही। गुलाम कही—वैद कहै छै जे तूं कौल पाळै तौ श्रौखध श्राराम रौ चखाऊं। साहिब तुरत गुलाम नूं वदीखत फाड़ छोड दीन्हौ। सो तुरत श्रारांम हुवौ। प्रभू सूं कौल पाळियौ सो प्रभू पण तुरत ऋपा करी।

श्रेक बादसाह नूं मुहम[२] पण करडी बणी[३] तरै प्रभू सूं कौल कियौ—जे म्हारौ काम सुधरै तौ जितरी नक्द खजाना मे छै सारी फकीरां नूं बांटूं, भूखा नूं खुवाय देऊ। सो प्रभू उणरौ काम मनमान्यौ[४] कियौ। बादसाह चाही—कौल श्रापरौ पाळजे सो खजानची नूं तेडनै[५] कही—नक्द खजानै रौ लेखौ करौ[६], सो लेखौ लियौ। खजानौ घणौ दीठौ तरै उजीरा उमरावां कही—इतरौ माल दरवेसा नूं नही दियौ चाहीजै। लस्कर बिगर सामान नही रहै। बादसाह कही—म्हे प्रभू सूं कौल कियौ छं, श्रौ खजानौ मागणै वाळा भूखा नूं देवौ। उमरावा कही—पिडतां कही छै—बादसाह रा सगळा सेवक बादसाह कन्है मागण जोग ही छै। बादसाह इण कजियै में[७] हैरान हुवौ, भाखी[८] सूं बैठौ देखै छै। सो नीचै श्रेक मस्तानौ श्रायौ। तरै बादसाह फुरमाई—इण दीवांनै नूं तावौ तिणसू सलाह करू। दीवानौ श्राइयौ तरै बादसाह पूछी—मैं श्रेक कौल प्रभू सूं बाधियौ थौ जे म्हारौ काम सुधरै तौ जितरी नक्द खजाना मे छै सो प्रभू री राह फकीरा दरवेसा नूं देवा। इब म्हारौ काम सुधारियौ। माल नक्द घणौ छै। पिडत सिपाहिया नूं इणमे हक्दार करै छै। थांहरी सलाह काई छै ? दीवानौ कहणै लागियौ—जिण समै कौल कियौ, माल दरवेसा नूं देयस्यू तरै सिपाहिया नूं खातिर मे श्राणिया था[९] ? दीवानौ कही—जिण निमित्त देणौ कियौ थौ उणही नू देवौ। श्रेक उमराव कही—हे दीवाना ! माल घणौ छै नै सिपाही बेसामान छै। दीवानौ उणसूं मुंहडो फेर[१०] कही—हे बादसाह ! तू फेर जिणसू कौल नजर कियौ छै, काम रासै छै या नही ? जो फेर उणसू काम नही छै, उणसू मागणौ नही होसी[११] तौ चाहै सो कर। तरै बादसाह

[१]पश्चाताप करता हूं [२]भ्रम में डालने वाली स्थिति [३]बहुत कठिन आई [४]मनचाहा [५]बुला कर [६]हिसाब लगाओ [७]झंझट में [८]झरोखा, छाटी खिड़की [९]विचार में लाया था ? [१०]मुंह फेर कर [११]उससे मांगना न हो।

फुरमाइयौ—तमाम खजानौ फकीरां नू बाट देवौ। कौल पाळणं री गुण किणी सूं उतरो भलो नही लागं जितरौ बादसाहां सूं। क्यूकं इणारौ बचन संसार रै काना मे पहोंचै। इणां रौ हवाल मजलसा मे कहणी आवै। सारी खलक[1] इणा रै कौल री खबर पावै छै, जद कहे कौल निवहै छै। नहीतर[2] मिन वैरियां नूं इणा रै कहे री भरोसौ नही रहै।

बादसाह हुसग री सीख़ा मे मजकूर छै। तिण कही—हे बेटा! कौल तोड़णं री पाप घणौ लागै। बादसाहा नू कौल बादसाही री पाळणौ घणौ जरूरी छै।

अफरासियाव न्याय करणं मे, अन्याई री पिछाण मे, नै गरीबा रै दुख री तलास में घणौ हठ करतौ, दुख घणौ खेंचतौ। तरै हजूरिया कही—इण तलास री हठ अति करो छो[3] नै मुख खोवौ छो। जद बाहसाह कही—वायदौ आपरौ क्यूंकर भूठौ कर सकू छू? तौ कही—म्हेतौ आपसू वायदौ करता सुणिया नही। बादसाह कही—बादसाही छै सो वायदौ ही छै। बादसाह री गरदन ऊपर लाजम छै, इण वायदा नू पाळै। वायदौ पाळणौ औ छै—न्याय गरीब री अन्याई कना सूं लेवै[4]। जो इण भात नही करै छै सो वायदौ खोटौ करै छै।

अेक बादसाह हकीम नू पूछी—मरद नू किसौ गुण प्यारौ करणौ छै। कही—वायदा पाळण सूं। अेक खूबी कौल पाळणं री आ छै—जे स्थिति ससार री उणसू बधी छै। क्यूकं मदार[5] आलम री बादसाहत ऊपर छै। बादसाहत री मदार बादसाह, लस्कर[6] नै आलम ऊपर छै। बादसाह आपरौ खजानौ साथ ऊपर इण वास्तै खरचै जे वैरी आया चाकर कौल पाळसी। जे रीत कौल पाळणं री मिट जाय तौ फेर चाकर सिपाही ऊपर भरोसौ न रहै, तौ देस री बाघणी मे खलल होय[7]। दूजो—सौदा मे, विणज मे, खेती में, भात-भात री परठ लिखीजै छै, जे उवा पाळीजै नही तौ ससार मे भला री रीत बिगर जाय[8]।

हर बात मे कौल पाळणौ वडी बात छै। वफादार साच री मग करजे, साचो ही कौल पाळजे। मित्र सेवक रा घणा थोक कीजे, जिणरो सरीर मरणं-मारणं री वेळा थारी ढाल होय।

---

[1]पूरा ससार [2]वरना [3]अत्यधिक हठ करते हो [4]अन्याई को दड देकर गरीब का न्याय करो [5]मुदार [6]फौज [7]देश के प्रबध में अव्यवस्था हो [8]भलाई का रास्ता समाप्त हो जाय।

तवारीख विलायत खुरासाण री मे लिखियौ छै—जिण समै याकूबलेस सापुर पहुचियौ ताहरा[1] उठा रौ हाकिम वागी हुवौ। सहर घेरियौ। ताहरां बडा उमरावा याकूब नै छानै[2] कागद भेजिया—म्हे थारा छां[3], मनुहारा लिखी। जद याकूब सापुर लियौ। रैयत व उमराव आग्या मे आणिया[4]। तरै इबराहिम व महाजना नै बुलाय फुरमाइयौ—सारा इयां रा कागद भेजिया थे, पचां सू अेकौ वयो न कियौ ? तद इवराहिम कही—मोनूं तोसू आगली पिछाण नही। तिणरी फेर सेध[5] करूं नै महमद थारा सू राजी न थौ जे उणसूं फिराऊ होऊं[6]। मोसूं धणी सूं फिरियौ न जाय। मारौ या छोडौ।

याकूब फुरमाइयौ—तूं बधारणै लायक छै[7]। स्याबास[8] थारी स्यामधरमाई नू। पछै उणनूं बधार मोटौ कियौ। जिणा[9] कपट सूं धणी रौ पख[10] छोडियौ तिणा नूं मारिया, ख्वार किया। जिका हक नही पिछाणै उणसूं किसी आस[11] ? जो स्यामधरम रा कौल पाळणै मे नामी होय तौ दिन-दिन प्रताप वधै।

पच्चीसवीं बात

सत्य कहणै मे, सत्य करणै में, कारण नचीताई[12] नै छुटकारा रौ छै। अस दिन सत्य रा धणी छूटिया छै। तूं पण सत्य नूं पाळण कर सो छूटै। वडा कही छै—मैदान वचन रौ चौडौ आछौ छै सो वोलणै वाळा सूं भूठ क्यों बोलणौ[13] पडै। साच बोलता भूठ कदेही न बोलणौ। वडा पुरखा कही छै—भूठ मे डर मार अधरम[14] रौ न होतौ अर सत्य मे आम धरम री न होती तो पण भूठ नै त्याग साच री तरफ कोई नही आवतौ। इण वास्तै जे मनुस्य नू भूठ खार निकारणौ[15] करै।

मुस्तरसद बादसाह आपरा बेटा नूं लिखी छै—जो तू चाहै तोसूं लोग डरै तौ भूठ मत कहै। मरद भूठ बोलै तौ धाक जाती रहै। हजार तरवार उणरै जतना रै वास्तै[16] उणा रै गिरद[17] होय पण जीभ उणरी भूठी छै तौ मिनखा री निजर मे उणरौ भार नही छै। साच रा धणी रा बोल-बाला छै। ज्यूं कमाण[18] बांकी करडी छै पण विनय करै छै तीर रै आगै आया।

---

[1]तब [2]गुप्त रूप से [3]हम तुम्हारी ओर हैं [4]अपनी आज्ञा के आधीन किये [5]जान पहिचान [6]उनके खिलाफ होऊं [7]तरक्की देने योग्य है [8]शाबास [9]जिन्होंने [10]पक्ष [11]आशा [12]निश्चितता [13]बोलना [14]अधर्म [15]बाहर [16]उसकी रक्षा के लिए [17]चारों ओर [18]कमान।

हजाज जालम कितराक नूं[1] मारतौ थौ जद वारी उणां में एक री पहोंची तरै उण कही—फलांणौ वैरी थारौ गिलौ[2] करतौ थौ, थारी फाटी वातां[3] करतौ थौ, मैं उणनूं मनै कियौ थौ, तोनूं गाळ काढतौ राखियौ थौ। हजाज कही—इणरी साख[4] रागै छै ? कही—राखूं छूं। ग्रेक बदीवांन दूजौ दिसा इमारत थी उणा पंचा मे थौ, उण कही—साच कहै छै, मैं सुणी छै। इण उणनूं थारी चावत सूं मना कियौ थौ तरै हजाज कही—तैं इणरै इण काम में मदद क्यूं नही की ? तरै कही—हूं तोनूं वैरी राखतौ थौ[5], मोनूं जोग[6] नही थौ जे थारौ भलौ चाहूं। हजाज फुरमाइयौ—तौ दोना नूं आजाद कर छोडिया, ग्रेक नै हक रै कारण, दूसरा नै साच रै कारण। उणरै पाछै ग्रा कहावत मसहूर हुई—भूठ छुडावसी[7] तौ साच दिवेस छुडावसी। सांच सूं किणी रौ कुछ विगडियौ नही। साच वचना में प्रभू छै। जिण भात भूठ मुहडा रौ पांणी उतारै छै उण भात हासी मसखरी[8] रयात रा मन भुंडा छै। विसेस वादसाह उमराव जो आपरा चाकरा सूं मजाक करै तौ मनगरा होवै[9]। तरै चाकरा नूं पण उणरौ भार मन मे नही रहै छै।

महती[10] मजाक कीजै। जिकौ मन में वैर भाव राखै, समै पायां वैर लै, फिसाद री विचारै, तिणसूं न कीजै। रोसनाई किताव में मजकूर छै—मन कर फाटा वोलणा[11]। भूठ मसखरी री सुभाव कर आपरै पग कुलाडी[12] मत मारै। इण सुभाव सूं जो तूं वादसाह भी छै तौ थारौ पाणी उतरसी[13]। चाद जिसौ करसी। दूजा, चावत करणी मोटा वादसाहा नूं मुनासिव नही। क्यो ? जे इणनूं कुदरत ग्रा छै—चाहै जो ही चाहै जिणनूं मुहडा ऊपर कह सकै छै तौ चावत सूं ग्रापनूं हिसाव रैयत रा मे नही राखिया चाहीजै। सेवका नै पण किणी रा चावत सूं मनै करणा। क्यूं ? जे पाप चावत रौ घणौ छै। ग्रर तोटौ उणरौ ग्राखिर दुनिया मे घणौ छै।

चावत करणै रौ पाप छै ज्योंही सुणणै[14] रौ पाप छै।

---

[1] कितने एक लोगों को [2] बुराई [3] गन्दी बातें [4] साक्षी [5] तुझे वैरी गिनता था [6] मेरे लिए उचित नहीं था [7] मुक्त करवायेगा [8] हँसी-मजाक [9] मन में गर्व आ जाता है [10] जो बर्दाश्त हो सके [11] गन्दी बातें मुंह से मत निकाल [12] कुल्हाड़ी [13] इज्जत चली जायगी [14] सुनने।

छब्बीसवीं वात

मागण वाळा री इच्छा पूरण[१] करणै मे जिणसूं जितरौ होय सकं तितरौ काम ससार रौ काढै[२]। बडा कही छै—आपरै वदां री मदद प्रभू करी छै। जिको सदा मदद करै तौ बदा उणरी कही करै छै। जो तूं प्रभू री मया चाहै छै तौ आपरा बदा री मदद कर, मया घणी होयसी। जिणरै ऊपर प्रभू री मया होय तिणसूं मागणं वाळा नूं देणौ अर भूखा री खबर लेणौ जोग छै। ज्यो दौलत घणी होय तौ फकीरा री मसा पूरणी[३], दूबळा[४] रौ घणौ खरौ मन राखियौ चाहीजै। जिण सभागिया[५] नू बादसाहत री दौलत मिळी होय तिणा नूं चाहीजै—दुख कसालो ससार रौ उठावै। मागणं वाळा री मसा पूरणी मोटौ काम अर नफौ गिणणौ। किणी अरथी[६] रा काम मे ढील न करै तौ ततखण थारौ प्रताप वधै।

अत सुगत[७] चाहैं तौ गरीब, दोहरा दूबळा, निरास्रया नू उसीलौ करणौ[८], मिनखा रौ मन ठडौ करणौ[९] बडौ खरौ काम छै। पछै सरत बादसाहा री आ छै सो मागणं वाळा री आसा पूरणं री बाट देखतौ रहै।

अेक वार सिकदर दिन ऊगै सूं रात तक दरबार मे 'था। कोई फरियादी व मागणं वाळौ नही आयौ। तद ऊठती वार सिकदर कह्यौ—आज कौ दिन ऊमर रै लेखै मे नही गिणू। जद अेक दरबारी कही—जिको दिन सबुसळ, सुख-सपति, काम-सुधार, फौजा री फतह रै साथ पूरं सामान, पूरं खजानं सूं पूरण[१०] कियौ छै जो बादसाह इण दिन नूं ऊमर रा लेखा मे नही गिणं तौ फेर किसौ दिन गिणं ? जद कही—जिकं दिन बादसाह सूं गरीबा नूं न्याय नही पहोचै नै भूखा दुखिया री खबर नी ली जावै तिको दिन क्यू कर ऊमर माही गिण सकीजै[११] ?

चीण[१२] देस रै बादसाह सिकदर सूं पूछी—तू स्वाद बादसाहत रौ की मे[१३] पायौ ? सिकदर कही—तीन वात में, प्रथम दुस्मण मार हटावणै मे,

---

[१] पूर्ण [२] काम निकाले [३] इच्छा पूर्ण करना [४] दुर्बल [५] भाग्यवान [६] काम की अपेक्षा रखने वाला [७] अच्छी गति [८] निराश्रित लोगों के गुजारे का प्रबध करना [९] मन को शान्ति प्रदान करना [१०] पूर्ण [११] गिना जा सकता है [१२] चीन [१३] किस मे।

दूजौ मित्र सेवका नूं वधावणें मे, तिजौ मागण वाळा री इच्छा पूरण करणें मे अर इणां नूं राजी करणें मे।

इण विनां ग्रौर वात मे किनौ स्वाद छै, किसौ इतवार छै ? वडौ वादसाह ऊ छै जिण संसार रा आराम तलास किया छै।

सत्ताईसवीं वात

तानी नें तालम, सो विचार मे ढील देणौ कही छै। सुसताई[1] रा काम मे मैतांन उत्पात री मदत छै। धीरज, सुसताई विचार सारा काम सुधारै अर उतावळी[2] सूं निस्चय सारा कांम बिगाड़े। जिण काम मे विचार सुस्ताई सूं कांम करै तौ सही मनमानी सुधरै। जिको काम गरमी हळकाई सूं आदरै तौ सही आ छै—ग्ररथ नही सुधरै[3], अगलै दुख री कारण होय, ससार सूं सरमिंदगी होय। परवेजसाह आपरा नू सीख देतौ[4]—जे तूं रैयत नूं आपरी आग्या मानणी फुरमावै छै तौ तू पण आग्या अकल री मत लोपे[5]। हरअेक काम वर्णे तिणमें विचार करनै अकल सू सीख पूछ। विसेस उण कामां में जिणमें मिनखां रै जीवै मरणे री वात होय या घर माल खराव करणौ होय।

हुमगसाह री सीख मे कही छै—रैयत व सिपाही रा काम सवारणें मे उतावळ[6], अन्याय छै। मारणें री उतावळ कदै नही करणी चाहीजे। क्रोध अर गजव रै समै प्रजनि रै वस नही होवणौ।

अकल रै विचार सूं काम रै अंत नू देखौ, तीसू काम किया रै पाछै पछतावौ[7] नही होय। पाछै पछतावै सू कोई नफौ नही छै।

आदमी नें मारणें मे विचार करणौ। मारणौ तौ अेक ही सास मे हो सकै छै पर मारियै नू जिवाणौ[8] लाखा सासा मे ही नही होय। हळकाई तीर की ज्यू जाणजे, सो कमाण सू निकळिया पछै[9] पाछौ नही फिरै। धीरज नैं सुस्ताई तरवार दाई[10] छै सो हाथ मे रहै, चाहै जिण दाय करौ।

गजव रीस रै समै यू जोग छै, जे आग्या नही करणी, चुप रहणौ उण काम रौ मत अकल में ही विचारणौ।

---

[1]धैर्य, धीमापन [2]शीघ्रता [3]कार्यसिद्धि न हो [4]शिक्षा देता था [5]बुद्धि से दूर न हटे [6]शीघ्रता [7]पश्चात्ताप [8]जिलाना [9]कमान से छोड़ने पर [10]तलवार की तरह।

अरब देस मे बाबर बडौ नामी बादसाह थौ। उण तीन रुक्का लिख अपणै गुलाम नूं दिया अर हुकम फुरमाइयौ—मोनूं दरबार बैठिया क्रोध गजब रीस होय तरै तूं बिना कहे रुक्कौ अेक मोनूं बताय, फेर रीस नहीं घटै तौ बीजौ, फेर ही जे प्रक्रत[1] न बदळै तौ तीजौ रुक्कौ सामनै पेस करणौ। म्हारै क्रोध सूं डरणौ[2] नहीं।

मजमून पहलौ—तू बदौ निरबळ छै, प्रभू जोरावर[3] छै, तिण तोनूं बडौ कियौ छै।

मजमून दूजौ—विचार कर, गरीबा ऊपर, प्रभू री सौप रै ऊपर। उतावळ सू काम मत कर। जिका मिनख तोनूं निरबळ[4] दीसै उण पर जोर मतां कर। क्यों? जे थारै ऊपर प्रभू तोसूं भी जोरावर छै। उणरी मया[5] सेती तूं बडौ हुवौ छै।

मजमून तीजौ—इण काम मे अग्यांन कर रीत सूं अधिक मत कर, न्याय आगौ मत काढै[6]।

जद अहमदसाह मानी मुवौ जणा उणरै आठ बरस रै बेटै नूं वजीर उमरावा तख्त पर बैठाणियौ[7] सो आप ही न्याय री माफक आग्या करै थौ। जद नोसेरसाह जवान हुवौ, आग्या करण लागियौ, बाप री देस जपत मे आणियौ[8]। भात भात री पिडताई परवाडा उणसूं था। पण जवानी रै जोर में बिगर परीक्षा अहकार सू बादसाही रा गरूर मे क्रोध बेगौ होतौ। बिगर विचारिया आग्या करतौ। थोडै गुनाह पै सजा घणी करतौ। सो नोसेरसाह आपरै वजीर नू कही—जाहिरा म्हारै मांहो काई अैब दैसै छै सो कह ज्यो उणरै मिटावणै[9] मे मसगूल होऊं। वजीर अरज करी—प्रभू री दया सूं रावळी जात[10] घणा ही गुणा सू सोभै छै। अै दिन दीजै, अै खाणा, नियामता[11] थाळ खलक[12] रै जीमण नू तैयार रहै छै। पण खाणा मे लूण[13] निपट ही थोडौ छै। अर बिगर लूण कोई सवाद नहीं छै। नोसेरसाह फुरमाई—लूण इण थाळ रौ काई छै सो बता। वजीर अरज करी—जे लूण इण थाळ रौ हुकूमत रौ विचार नै भारी नमाई[14] छै, अर जिको इण थाळ नू बिगाडै सो क्रोध छै।

[1]प्रकृति [2]डरना [3]ताकतवर, समर्थ [4]निर्बल [5]कृपा [6]न्याय को दूर मत हटा [7]बैठाया [8]पूर्ण अधिकार मे लिया [9]मिटाने [10]वंश-परम्परा [11]स्वादिष्ट भोजन [12]दुनिया [13]नमक [14]विनम्रता।

नोसेरसाह कही—मैं जाणी अर मोनूं मालम थी जे औ श्रैव मो में छै। पण सुभाव इसौ ही हुवौ, प्रक्रत[1] इसी ही जे बणी। इब[2] के उपाव[3] करीजै ? जद वजीर कही—थानूं आपरा जीव मे चाहिजै आग्या देती वेळा विचार होवै, काम उतावळ सूं मतना करो। खिदमत में आदमी मोटा उत्तम सुभावा रा रहै। जो क्रोध रै समै थानै माफी वक्सणै री अरज करै तौ प्रक्रत ठहराव रै ऊपर आवै[4]।

सो बादसाह मोटै आदमिया नूं फुरमाइयौ—थे मोटा आदमी कारणीक[5] म्हारी दौलत मे छौ, तिणसूं हिमैं सवाया छौ, सो हूं वहू छूं कै जिणनूं हूं मारणै री हुक्म देऊं सो थे तीन दिन ढील में राखौ, तीन वार मोसूं अरज करौ। हजूरिया अरज करी—थे गुनहगार नूं जो माफी रै लायक होय तौ भली तरह सूं वक्साओ[6]। जद काम इण प्रवघ सू वंठियौ, थोड़ा दिना में उणरौ न्याय सौभाग्य हुवौ, सारा ससार में।

तिणसूं वडा कही छै—हर काम में विचार धीरज सूं करणौ, उतावळी कदे न करणी।

अठाईसवीं वात

सीग्र मिश्रा सूं सलाह करणै मे। मोटा पुरख नूं पण पाच माणसां सूं मसलत[7] कर काम करौ। सारा कामां में पचायती करणी रीत होय। विचार करणै में फायदौ घणौ छै, तिणसूं काम सुधरै। दूजौ कोई विगर टहराव मसलत रै काम करै तौ भलौ भी होय तौ लोग मोसा दै[8]। जो पाच मैणा री मसलत सू काम कियौ होय तिणमें फायदौ कुछ भी नही होय तौ उणनूं कोई भूंडौ[9] नही कहै। अर दूसरा आ कै विचार काम रै चार्‍रू तरफ फिर नही सकै छै। जद पाच सैणा होय तरै तरह-तरह रा विचार आवै, फेर आप आपरा विचार प्रकट करै, पाछै भली होय सो टहरावै। काम रा धणिया नूं जोग छै जिवौ ही काम बणै, तिणनूं विगर अकलवता[10] री ममलत रै आरभ नही करै।

मसलत नू मुस्कल रै ताईं आमान करणै री वडी वात जाणी। इतरी मारी अकना री विचार श्रैव अक्ल सू सोहगौ[11] अर नफा सूं भरियौ होसी। ममलन

---

[1]प्रक्रति [2]अब [3]उपाय [4]आदत मे घोमापन आये [5]काम के [6]देयो [7]सलाह, बातचीत [8]ताना देते हैं [9]बुरा [10]बुद्धिमान [11]सस्ता।

करणो जोग छै तो चाहिजै कै सलाह, हिम्मतधारी अर परख रा धणी, दूर-अदेसी, बूढा, कामा रा अतरा देखणं वाळा[1] सूं पूछै। क्योंकै बुद्धि-बळ इण लोगा रौ सहज अर तदवीर माफक साहठौ[2] कहियौ छै।

वहराम गौरी आपरै वेटा नू सीख[3] दीनी—देस रा कामा मे मसलत कर आकला[4] सू। बुद्धि-बळ पक्कौ सिकार दाई छै, जो अेक जणा रै हाथ मे नही आवै सो पण सिकार घणा जणा रै हाथ माही सूं निकस कर[5] नही जाय सकै छै। काम पडिया जितरै विचार आकल रा सूझे जितरै दूजी चीज री चाहना न कीजै। जिकौ बुद्धि-बळ सूं काम वण पावै सो तीर तरवार तोपा सूं नही सधै।

रूम देस रै बादसाह रै अजीज मिस्र सूं बैर पडियौ, तरै साथ कर आपस मे लडणै रौ मतौ कियौ[6]। रूमिया रा साथ माही अेक आदमी इसौ थौ जिका ही वात होती अजीज मिस्र नू खबर करतौ अर सांची खवर लिखतौ। आ खवर जासूस रूम रै बादसाह नूं पहुचाई सो कुछ कान ही नही दियौ, उण कहणै वाळै साम्हौ ही नही दीठौ[7], उणसू पूछ गाछ न कीवी। जद लडाई रौ दिन नेडौ[8] आयौ तद उणनू बुलाय आपरै आगै किणी काम नूं लगाइयौ अर उण समै आपरा लस्कर रा सिरदारा नू बुलाया अर कही—अजीज रा वजीर उमरावा मोनू नामा भेज्या छै अर सोस खाय[9] लिखियौ छै कै जरै सफर जंग रौ परौ बाधौ तौ अजीज नू हाथ वाध मो कन्है लावै। थे मनगरा थका[10] लड़णै नू कमर बाधौ। उण मरद औ वचन सुणियौ तद हैरान हुवौ अर सभा माही सू बाहिर आयौ। तुरत औ समाचार लिख अजीज नूं परा भेजिया। अजीज जद आ बात जाणी तौ डरियौ अर ढील करणं री राह नही देखी सो विना लडिया ही परो भागियौ। रूम रै बादसाह उणरै पाछै लस्कर भेज तमाम सामान माल उरौ लियौ[11]। इसी बुद्धिमानी सूं फौज भजाई[12] अर जिण विगर विचारै काम कियौ सो आपरै हाथ सूं देस गमाइयौ[13]।

---

[1]काम की बारीकी को देखने वालों से [2]मजबूत [3]शिक्षा [4]द्विवान [5]निकल कर [6]विचार किया [7]सामने भी नहीं देखा [8]नजदीक [9]कसम खा कर [10]जोशसहित [11]ले लिया [12]फौज मे फूट डाल दी [13]खो दिया।

जो तूं देस राखियो चाहै छै तो काम री नीति बुद्धि-बळ रै ऊपरा राख। मुल्क लेवणं नूं लस्कर सेवक हसम[1] सामान सैं चाहीजै पण सारां सूं बुद्धि-वळ नूं भलो जाणजे।

ग्रेक बादसाह हकीमा सू पूछी—बुद्धि-बळ भलो छै कै माटीपणो[2] ? जद हकीमा कही—माटीपणो तरवार रै बरावर छै ग्रर बुद्धि-वळ जोरावर हाथ छै। हाथ जिका होय सो तरवार सूं तुरत काम करै, तरवार नही भी होय तो मुक्का सेती मार भगावै। पण विना हाथा रै कोरी तरवार ही कुछ काम नही कर सकै।

वडा कही छै—जवान रा माटीपणा रै ग्रागै[3] ग्रकल नू जाणजे।

ग्रेक यू पूछी—जे भली खरी ग्रकल काई छै ? जणा कही—उत्पात नूं नीचो वैठाणो[4]। जिण भात वादसाह हयात सू वणी। सूरत हाल इण भात थी—जे वैरी सबळो[5] खुरासाण सू उण ऊपरै ग्राइयो। ऊ पण वडो लस्कर वणाय[6] उण साम्है गयो सो इणरा उमरावा मुलाहिजो ग्रंत काम रो कर दूर-ग्रदेसी कर[7] कागद ग्रापरै वादसाह रै वैरी नू लिखियो, तिणमे घणी ग्रदव-ग्रपणायत[8] लिखी सो उणनू पसद ग्राई। सारा ही कागद भेळा कर थेली में भर ऊपर मुहर लगाय खजानै मे रखवाइया[9]। ईस्वर री इसी क्रपा हुई जे लडाई मे वादसाह हयात री जीत हुई। वैरी भाज गयो। खजांना सामान सगळा इणारै हाथ मे ग्राविया[10]। उवा थेली कागदा री जो इणरै उमरावा वैरी नू लिखिया था, खजाना मे राखी थी सो हाथ मे ग्राई। वादसाह सू मालम हुई तो पूछी—इण थेली मे काई छै ? मालम होणं पर भी उण थेली नै खोली नही, मुहरसुद्धा ही राखी ग्रर मन सू ही कही—जो ग्र कागद जाहिर करू तो उमरावा सूं मन भूडो हुवै[11]। ग्रर ग्रै ग्रो हाल जाणै जणा मोमू डरै। पाछै ग्रापरा बुरा मिटाणै नूं, म्हारै भडा नू मतो करै[12] तो फिसाद वधै सो मिटा-वणो घणो दोहरो[13] वणै।

सो वादसाह तुरत वजीर उमरावा नू हजूर मे बुलवाइया। उण थेली उणा नू खाई ग्रर कही—ग्रै नामा छै। जिका मोटा ग्रादमिया म्हारै लस्कर वाळा

---

[1]फौज [2]मर्दपना [3]बढ कर [4]उत्पात को समाप्त करना [5]सबल [6]फौज बना कर [7]दूरदर्शिता [8]अपनत्व [9]रखवाये [10]आये [11]मन-मुटाव होगा [12]मेरा नुकसान करने का विचार करेंगे [13]अति कठिन।

ऊडौ विचार[1] कर म्हारैं वेगी नू लिखिया था। उण सारा नू अेकठा कर इण थेली मे भर मुहर बद कीवी छै। सो हमार पण उण ही मुहर सूं छै[2] सो म्हारै हाथ आई छै। प्रभु री सोस[3], मोटा पाया री सोस, जे थेली मैं खोली होय। न तौ मैं पढी न जाणी, जे इण नामा[4] मे काई छ अर किसौ नामौ किण रौ लिखियौ छै। पछै आप फुरमाई—जे इण थेली नू बाळौ सो नामा सै बाळ नाखिया[5]।

जद उमरावा इसी क्रपा मया देखी तौ सगळा राजी हुवा। बादसाह री वडी समझ, भारी समाई देख सगळा[6] चाकरी रै अेकमना हुवा। इण भली बुद्धि रै विचार सूं सगळा नू मोटा छोटा नू जिको ही सांच विचारी होय, इतवारी होय, जिणसूं सलाह कीजै। छोटा रा मन मे काई खातिर मे आवै सो वडा रा मन मे न आई होय। किणी मसलत करणै मे जिका नै पायौ छै[7] तिका सूं फिरजै नही। सैणा सूं मसलत पेस करजै नही। सैणा मसलत नूं पेसकार दौलतमदा रौ कहियौ छै। पाछै बादसाहा ऊपर लाजिम छै—जिको काम बणै सो बुद्धि रा जोर सू सवारै। हर अेक खलल समय सूं बणै[8] तिण नू मसलत अर जोर अकल रा सू सवारै, इलाज उणरी करै।

अकल सू लसकर नै भाजै। तरवार सू अेक या सौ ताई मारै। आपरी अकल रै ऊपर मगरूर न रहजै। आरसी[9] बुद्धि-बळ री आगै राख मदत जोयजै। अेकला खबरदारा सू तौ अरथ मधणै[10] रौ मारग लाभै।

उन्तीसवीं बात

हजम, सो ऊडौ विचार। काम रै अत रौ सोच करणौ[11] अर त्याग करणौ सुरु सू भूडा[12] कामा रौ। औ सुभाव बादसाहा नू भलौ खरौ छै।

अफलातियाव रा बचन छै—जिको ऊडौ विचारै, अभरोसियौ रहै सो बैरिया रा दगा सू बचै। हकीकत हजम री ऊडौ सोचणौ छै, आगम देखणौ छै[13]। मरद आकल जद निमाणी बुराई री देखै व उत्पात देखै तौ तुरत जतना मे लागै[14]।

---

[1]गहरा विचार [2]वही मोहर,लगी हुई है [3]सौगध [4]पत्र जला डाले [6]सभी [7]प्रधानता [8]समय के फेर से जो विघ्न पैदा होते हैं [9]आइना [10]कार्यसिद्धि [11]विचार करना [12]बुरे [13]भविष्य का विचार करना [14]यत्न करने लगता है।

अर मूरख बलाय मे नही पड़ै जितरै खबरदार न होय । जद बुद्धिमांन देखै—जे कोई लोहो नै भाठो लडावै छै, तो विचारै कै आग पडसे[1] तो घास मे लागसे[2] तीसूं बुझावणं[3], उठजावणं रा फिकर मे होय । मूरख आग मे रहै पण औरा सूं खबर नही पावै ।

वडा नूं पूछियो जे हजम काई छै ? तो कही—असल जड़ ऊंडा विचारणं रो अभरोसो[4] छै । हकीम कही भूंडै जीव मत रहै । अर भूंडै भरोसा मे रहै तो दगा तोफान[5] सूं चैन मे मत रहै, तिणमे अवगुण घणो । तहकीक वाक्य—विपत[6] रा सूं आगै ही जतन करै । बलाय आवता पहला फिकर पक्का सूं बांधै । साच ऊपर व समय रा भाइया रै भरोसै न रहै । काचा यारा री यारी रो गिणत न करै[7] । आपरै मन री बात किणी नूं खबर न दै तो बुराई वैरिया दगाबाजा रो सूं निडर रहै । जे कोई भी चैन परलोक मे अठा रो चाहै तिको विगर मदद ऊंडा विचारा री मजल[8] न पहुचै ।

जिका बात वर्णै उणमे पहला अभरोसो विचारजे तो अरथ दुरस्त दीसै । इबराहिम इमाम पहली वेळा साहिब दौलत अब्दुल मुसलम नूं खुरामांण भेजियो[9] । तिणनूं पहला सीख आ दीनी—जो चाहै वचन थारो नही जाय, काम धारै मन रै मानिया सधै तो जिण किणी सूं तोनूं अभरोसो मन मांही आवै उणनूं मार क्षय कर ।

अेक ऊंडो विचार बादसाहा रो औ छै कै जिण किणी रै ऊपर अभरोसो होय उणनूं नूं आगै सूं दूर कर । तवारीख इस्लामी मे मजकूर छै—जद असफार बेटो सेगेया रो मनो लेण मूं मना न उतरियो तरै उणनूं अबुल जाफर रै मारणं ऊपर[10] राखियो । अबुल जाफर आ खबर सुणी जद डरियो सो कोट जुड़ बैठियो[11] । असफार देस जबत कियो अर दिलमी नूं घणं साथ सूं उण कोट ऊपर भेजियो । घणी ही चाही—कोट लै, पण नही वर्णं, तरै दिलमी अेक नूं वसीठ[12] लेय भेजियो, तिण इण दोना रै बीच मेळाव ठहरायो[13] । औ ठहराव हुवो कै अबुल जाफर दिलमी नूं कोट मे मिजमानी[14] करै । सो

[1]अग्नि पैदा होगी [2]लगेगी [3]बुझाने के लिए [4]विश्वास न करना
[5]तूफान [6]विपत्ति [7]कच्चे दोस्तो की दोस्ती का विश्वास न करें [8]मंजिल
[9]भेजा [10]मारने के लिए [11]किले का दर्वाजा बन्द कर के बैठ गया
[12]दूत [13]मिलने का प्रबंध किया [14]मेहमानी ।

मिजमानी तयार कर दिलमी नूं बुलाइयौ। दिलमी आपरै ठावै साथ सूं भीतर जावणौ ठहरायौ—जे जाफर नू मारां। सो दिलमी कोट री पौळ आयौ तौ जाफर हुकम कियौ तिणसूं साथ इणरौ बाहर रहियौ।

जाफर नूं सधिवाय रोग थौ सो हाल नहीं सकै थौ। बुरज रै झरोखे[1] मे बैठौ, बारी सूं रन नै कोट री खाई दीसै थी। दिलमी नूं बुलायौ, वाता कीवी। दिलमी कह्यो—खिलवत[2] करौ जे मसलत[3] री बात कहा। अबुल जाफर कही जद सै बाहर गया। तरै दिलमी किंवाड[4] आडा देय खंजर सूं अबुल जाफर नू मार पछै आप कन्है रेसम री रस्सी थी सौ बारी मे बाध उतर, खाई रौ पाणी तिर आपरै लस्कर मे आयौ। जो जाफर ऊडौ बिचारतौ[5] अर उणनू कन्है तेड[6] अेकात न बैठतौ तौ नही मरतौ।

अखबार आसार मे इण भात री बाता घणी छै।

अविस्वास नही करणै सू माथा गमाया छै। सयाणौ[7] जे बिचारै तौ जांणै कोई कोट ऊडा बिचार अविस्वास रा जतन बिगर नही छै। मरणै रौ डर बेपरवाही आळस जिसौ नही छै। अभरोसा मे खय कर इण मारग डर भरियौ छै।

जदेक बादळ देखै औ ही बिचार कर—नदी रा काठा[8] ऊपर छै। तिणसूं अभरोसा सावधानी दौलत रै वास्तै छै।

तीसवीं बात

सुजायत[9] माटीपणौ, मोटौ गुण छै। तिणमे जोर नही छै तिण जवान आदमी नू मरणौ भलौ छै। प्रभू सूरवीरा नूं प्यारा राखै छै। बडा कही छै—सूरवीरा रौ दरसण कीजै, इणा रौ भरोसौ प्रभू रै ऊपर छै। मनभगा[10] रौ भरोसौ लडाई मे सू भागणै ऊपर छै। मनगरा प्रभू ऊपर राखै छै।

हजरत पैगबर माटीपणा आपरा जीव ऊपर इसारत[11] कीवी छै—जे रिजक म्हारौ भाला री छाया मे छै। बचन लडणै रा हाथिया री चूप लडाई मे करणै

---

[1]बुर्ज की बारी [2]एकान्त [3]सलाह [4]दरवाजा [5]गहरा विचार करता [6]बुला कर [7]समझदार [8]नदी के किनारे [9]वीरता [10]हिम्मत-रहित [11]इशारा।

मिजमानी तयार कर दिलमी नू बुलाइयो। दिलमी आपरै ठावै साथ सूं भीतर जावणौ ठहरायौ—जे जाफर नू मारां। सो दिलमी कोट री पौळ आयौ तौ जाफर हुकम कियौ तिणसूं साथ इणरौ बाहर रहियौ।

जाफर नू सधिवाय रोग थौ सो हाल नही सकै थौ। बुरज रै झरोखै[1] मे बैठौ, बारी सूं रन नै कोट री खाई दीसै थी। दिलमी नू बुलायौ, बाता कीवी। दिलमी कह्यो—खिलबत[2] करौ जे मसलत[3] री बात कहा। अबुल जाफर कही जद सै बाहर गया। तरै दिलमी किवाड[4] आडा देय खजर सूं अबुल जाफर नू मार पछै आप कन्है रेसम री रस्सी थी सौ बारी में बाध उतर, खाई रौ पाणी तिर आपरै लस्कर मे आयौ। जो जाफर ऊडौ विचारतौ[5] अर उणनू कन्है तेड[6] अेकात न बैठतौ तौ नही मरतौ।

अखबार आसार मे इण भात री बाता घणी छै।

अविस्वास नही करणै सूं माथा गमाया छै। सयाणौ[7] जे बिचारै तौ जाणै कोई कोट ऊडा विचार अविस्वास रा जतन बिगर नही छै। मरणै रौ डर बेपरवाही आळस जिसौ नही छै। अभरोसा मे खय कर इण मारग डर भरियौ छै।

जदेक बादळ देखै औ ही बिचार कर—नदी रा काठा[8] ऊपर छै। तिणसूं अभरोसा सावधानी दौलत रै वास्तै छै।

तीसवीं बात

सुजायत[9] माटीपणौ, मोटौ गुण छै। तिणमे जोर नही छै तिण जवान आदमी नू मरणौ भलौ छै। प्रभू सूरवीरा नूं प्यारा राखै छै। वडा कही छै—सूरवीरा री दरसण कीजै, इणा री भरोसौ प्रभू रै ऊपर छै। मनभगा[10] री भरोसौ लडाई मे सू भागणै ऊपर छै। मनगरा प्रभू ऊपर राखै छै।

हजरत पैगवर माटीपणा आपरा जीव ऊपर इसारत[11] कीवी छै—जे रिजक म्हारौ भाला री छाया मे छै। वचन लड़णै रा हाथिया री चूप लड़ाई मे करणै

---

[1]बुर्ज की बारी [2]एकान्त [3]सलाह [4]दरवाजा [5]गहरा विचार करता [6]बुला कर [7]समझदार [8]नदी के किनारे [9]वीरता [10]हिम्मत-रहित [11]इशारा।

कही—साच जाणू छूं, मौत पहोचती छै[1] तौ जतन मे नफो न छै अर मौत न आई छै तौ मोनू मांटीपणै मे ज्यान नही छै। लड़ाई री हकीकत आ छै—जीव री आस छोडिया बिगर लडाई मे नही जाय सकै, तिमा काम री आस नही करणी।

अेक समै साथ हबस रौ देस यमन रै ऊपर जोरौ हुवौ[2]। तरै बादसाह सेफ भाज नोसेरवा कन्है आयौ, मदत मागी। नोसेरवा फुरमाई तौ लोग भूडा, चोर, बिगाडा[3] कैद था सो छोड हथियार बस्तर दे अठारहसौ मरद सेफ रै साथ दिया। सेफ इण मुद्धा[4] नावा मे बैठिया अर पैलै कानी पार गया। तरै सेफ फुरमाइयौ सो नावां तोड पाणी मे डुबोय दीवी, अर कही—देस यमन रा मे आया, हमे वैरी सूं लडणौ छै। थे दोय काम मे पडिया छौ, भलौ विचार करौ, जीतणौ कै मरणौ[5]। सो जरूरत सू उणां जीव रौ लालच छोड मनगरा थका[6] वैरियां ऊपर टूट पडिया। इसी हथवाह की[7] सो हबस री बडी फौज मार फतह कर राज लियौ। सो मरद लडाई मे चाहीजै डरै नही।

रुस्तमदस्तौ कही—हजार घाव पडै सो मोनूं पियारौ[8] छै—माचा ऊपर मरणै सू। जस रै साथ मरू सो जोग छै, सरीर तौ मौत नूं ही जे छै। जिकौ बादसाहा मे सूरौ[9] मनगरौ होय—घणी भीड पडिया[10] पगा सपगौ रहै[11], तिकौ प्रथ्वी वेगी जीतै। जद याकूब लेस री बात बधी तौ चाह करी—जे खुरासाण जबत करू, सो अेक दिन मतौ हठ अेक लडाई री कियौ थौ। साथ उमराव बारणै[12] आय ऊभौ रहियौ। याकूब भारी जिरह[13] पहरिया बाहर आयौ तौ जोतिखिया उण वखत रौ लगन ले कही—जे हमार वेळा[14] असुभ छै, चार घडी री ढील करौ तौ पाछै महूरत मनमानियौ छै। याकूब तावडै मे भारी जिरह सू मैडी ऊपर[15] घणी वेळा ऊभौ रहियौ सो सगळा उमराव इणरा धीरज[16] सू हैरान रहिया। पाछै आछै लगन री वेळा आया मेडी सू उतर घोडै चढ हालिया। वितराक कही—इसा भारी जिरह सूं इसै तावडै मे[17] खडै रहणै रौ कारण काई थौ ? इणा कही—मोनूं आगै काम बडौ थौ। जिण

---

[1]आने वाली है [2]हमला करने लगा, हावी होने लगा [3]नुकसान करने वाले [4]सहित [5]जीतना या मरना [6]हिम्मत कर के [7]युद्ध, प्रहार [8]प्यारा [9]बहादुर [10]बहुत विपत्ति आने पर [11]पूर्ण धैर्य रखे [12]दरवाजे पर [13]कवच [14]समय [15]महल पर [16]धैर्य [17]धूप मे।

कही—साच जाणू छूं, मौत पहोचती छै[1] तौ जतन मे नफौ न छै अर मौत न आई छै तौ मोनू माटीपणै मे ज्यान नही छै। लड़ाई री हकीकत आ छै—जीव री आस छोडिया विगर लडाई मे नहीं जाय सकै, तिसा काम री आस नही करणी।

अेक समै साथ हबस रौ देस यमन रै ऊपर जोरौ हुवौ[2]। तरै बादसाह सेफ भाज नोसेरवा कन्है आयौ, मदत मागी। नोसेरवा फुरमाई तौ लोग भूडा, चोर, विगाडा[3] कैद था सो छोड हथियार बख्तर दे अठारहसौ मरद सेफ रै साथ दिया। सेफ इण सुद्धा[4] नावा मे बैठिया अर पैली कानी पार गया। तरै सेफ फुरमाइयौ सो नावा तोड पाणी मे डुबोय दीवी, अर कही—देस यमन रा मे आया, हमे वैरी सूं लड़णौ छै। थे दोय काम मे पडिया छौ, भलौ विचार करौ, जीतणौ कै मरणौ[5]। सो जरूरत सू उणा जीव रौ लालच छोड मनगरा थका[6] वैरिया ऊपर टूट पडिया। इमी हथवाह की[7] सो हबस री वडी फौज मार फतह कर राज लियौ। सो मरद लडाई मे चाहीजै डरै नही।

रुस्तमदस्तौ कही—हजार घाव पडै सो मोनूं पियारौ[8] छै—माचा ऊपर मरणै सू। जस रै साथ मरू सो जोग छै, सरीर तौ मौत नूं ही जे छै। जिको वादसाहा मे सूरौ[9] मनगरौ होय—घणी भीड पडिया[10] पगा सपगौ रहै[11], तिको प्रथ्वी वेगी जीतै। जद याकूब लेस री बात बधी तौ चाह करी—जे खुरासाण जब्त करू, सो अेक दिन मलौ हठ अेक लडाई रौ कियौ थौ। साथ उमराव बारणै[12] आय ऊभौ रहियौ। याकूब भारी जिरह[13] पहरिया बाहर आयौ तौ जोतिखिया उण बखत रौ लगन ले कही—जे हमार वेळा[14] असुभ छै, चार घडी री ढील करौ तौ पाछै महूरत मनमानियौ छै। याकूब तावडै मे भारी जिरह सू मैंडी ऊपर[15] घणी वेळा ऊभौ रहियौ सो सगळा उमराव इणरा धीरज[16] सू हैरान रहिया। पाछै आछै लगन रो वेळा आया मेड़ी सू उतर घोडै चढ हालिया। कितराक कही—इसा भारी जिरह सू इसै तावड़ै मे[17] खडै रहणै रौ कारण काई थौ? इणा कही—मोनूं आगै काम वडौ थौ। जिण

---

[1]आने वाली है [2]हमला करने लगा, हावी होने लगा [3]नुक्सान करने वाले [4]सहित [5]जीतना या मरना [6]हिम्मत कर के [7]युद्ध, प्रहार [8]प्यारा [9]बहादुर [10]बहुत विपत्ति आने पर [11]पूर्ण धैर्य रखे [12]दरवाजे पर [13]कवच [14]समय [15]महल पर [16]धैर्य [17]धूप मे।

कही—साच जाणू छू, मौत पहोचती छै[1] तौ जतन में नफौ न छै अर मौत न आई छै तौ मोनूं भाटीपणं में ज्यान नही छै। लड़ाई री हकीकत आ छै—जीव री आस छोडिया बिगर लडाई मे नहीं जाय सकं, तिमा काम री आस नही करणी।

अेक समै साथ हबस रौ देस यमन रै ऊपर जोरौ हुवौ[2]। तरै बादसाह सेफ भाज नोसेरवा कन्है आयौ, मदत मागी। नोसेरवा फुरमाई तौ लोग भूडा, चोर, बिगाडा[3] कैद था सो छोड हथियार बस्तर दे अठारहसौ मरद सेफ रै साथ दिया। सेफ इण सुद्धा[4] नावा में बैठिया अर पैली कानी पार गया। तरै सेफ फुरमाइयौ सो नावां तोड पाणी मे डुबोय दीवी, अर कही—देस यमन रा मे आया, हमे वैरी सूं लडणौ छै। थे दोय काम मे पड़िया छौ, भलौ विचार करौ, जीतणौ कै मरणौ[5]। सो जरूरत सू उणा जीव रौ लालच छोड मनगरा थका[6] वैरिया ऊपर टूट पडिया। इमी हथवाह कीं[7] सो हबस री बडो फौज मार फतह कर राज लियौ। सो मरद लडाई मे चाहीजै डरै नहीं।

रुस्तमदस्तौ कही—हजार घाव पडै सो मोनूं पियारौ[8] छै—भाचा ऊपर मरणं सू। जस रै साथ मरू सो जोग छै, सरीर तौ मौत नूं ही जे छै। जिको बादसाहा मे सूरौ[9] मनगरौ होय—घणी भीड पडिया[10] पगा सपगौ रहै[11], तिको प्रथ्वी वेगी जीतै। जद याकूब लेस री बात वधी तौ चाह करी—जे खुरासाण जबत करू, सो अेक दिन मतौ हठ अेक लडाई रौ कियौ थौ। साथ उमराव बारणै[12] आय ऊभौ रहियौ। याकूब भारी जिरह[13] पहरिया बाहर आयौ तौ जोतिखिया उण बखत रौ लगन ले कही—जे हमार वेळा[14] असुभ छै, चार घडी री ढील करौ तौ पाछै महूरत मनमानियौ छै। याकूब तावड़ै मे भारी जिरह सू मडी ऊपर[15] घणी वेळा ऊभौ रहियौ सो सगळा उमराव इणरा धीरज[16] सू हैरान रहिया। पाछै आछै लगन री वेळा आया मेडी सू उतर घोडै चढ हालिया। कितराक कही—इसा भारी जिरह सूं इसै तावडै मे[17] खडै रहणं रौ कारण काई थौ ? इणा कही—मोनूं आगै काम वडो थौ। जिण

---

[1]आने वाली है [2]हमला करने लगा, हावी होने लगा [3]नुकसान करने वाले [4]सहित [5]जीतना या मरना [6]हिम्मत कर के [7]युद्ध, प्रहार [8]प्यारा [9]बहादुर [10]बहुत विपत्ति आने पर [11]पूर्ण धैर्य रखे [12]दरवाजे पर [13]कवच [14]समय [15]महल पर [16]धैर्य [17]धूप मे।

कही—साच जाणू छू', मौत पहोचती छै[1] तौ जतन मे नफौ न छै अर मौत न आई छै तौ मोनू' माटीपणै मे ज्यान नही छै। लड़ाई री हकीकत आ छै—जीव री आस छोडिया विगर लड़ाई मे नही जाय सकै, तिसा काम री आस नही करणी।

अेक समै साथ हबस रौ देस यमन रै ऊपर जोरौ हुवौ[2]। तरै बादसाह सेफ भाज नोसेरवा कन्है आयौ, मदत मागी। नोसेरवा फुरमाई तौ लोग भूडा, चोर, बिगाडा[3] कैद था सो छोड हथियार बरतर दे अठारहसौ मरद सेफ रै साथ दिया। सेफ इण सुद्धा[4] नावा मे बैठिया अर पैली कानी पार गया। तरै सेफ फुरमाइयौ सो नावा तोड पाणी मे डुबोय दीवी, अर कही—देस यमन रा मे आया, हमै वैरी सू' लड़णौ छै। ये दोय कांम मे पड़िया छौ, भलौ विचार करौ, जीतणौ कै मरणौ[5]। सो जरूरत सू उणां जीव रौ लालच छोड मनगरा थका[6] वैरिया ऊपर टूट पडिया। इसी हथवाह कीं[7] सो हबस री वडी फौज मार फतह कर राज लियौ। सो मरद लड़ाई मे चाहीजै डरै नही।

रुस्तमदस्तौ कही—हजार घाव पडै सो मोनू' पियारौ[8] छै—माचा ऊपर मरणै सू। जस रै साथ मरू सो जोग छै, सरीर तौ मौत नू' ही जे छै। जिको बादसाह ग सूरौ[9] मनगरौ होय—घणी भीड पडिया[10] पगा सपगौ रहै[11], तिको प्रथ्वी वेगी जीतै। जद याकूब लेस री बात बधी तौ चाह करी—जे खुरासाण जबत करू, सो अेक दिन मतौ हठ अेक लडाई रौ कियौ थौ। साथ उमराव बारणै[12] आय ऊभो रहियौ। याकूब भारी जिरह[13] पहरिया बाहर आयौ तौ जोतिसिया उण वखत रौ लगन ले कही—ऐ हमार वेळा[14] असुभ छै, चार घडी रो ढील करौ तौ पाछै महूरत मनमानियौ छै। याकूब तावड़ै मे भारी जिरह सू मडी ऊपर[15] घणी वेळा ऊभो रहियौ सो सगळा उमराव इणरा धीरज[16] सू हैरान रहिया। पाछै आछै लगन रो वेळा आया मेड़ी सू उतर घोडै चढ हालिया। किणरा कही—इसा भारी जिरह सू' इसै तावड़ै मे[17] खडै रहणै रो कारण कांई थो ? इणा कही—मोनू' आगै काम वडो थो। जि'

[1]आने वाली है [2]हमला करने लगा, हावी होने लगा [3]नुकसान करने वाले [4]सहित [5]जीतना या मरना [6]हिम्मत करके [7]... [8]प्यारा [9]बहादुर [10]बहुत विपत्ति आने पर [11]... [12]दरवाजे पर [13]कवच [14]समय [15]महल पर [16]धैर्य

दरवेस छै पण वेसवर छै।
खाणौ छै पण वेनमक छै।
पिंडत छै पण वेतपस्या छै।
घोडौ छै पण वेलगाम छै।
बखतावर[1] छै पण बेदातारी छै।
रोख[2] छै पण विनां फळ छै।
वादसाह छै पण विनां दळ[3] छै।
वादसाही छै पण बेहिम्मत छै।

अै सगळा इसा छै जिसौ विना पूंजी रौ सौदागर होय। अेक वादसाह अरब मे थौ सो उणरै वैरी सू लडाई वणी जद दोनू लसकरां सांफळा वधिया[4]। तद वादसाह अरब रा नू उमरावा कही—हे वादसाह! लडाई रा काम मे दो ही वातां हाय छै। कै तौ जीत होय कै हार होय। जे होणहार रै वस आंपणी[5] हार होय अर फौज भाजै तौ तोनू कठै जोवा[6]? वादसाह कही—जे हू भाजू तौ मोनू उवौ ही जोवै जो प्रभू रौ गुनहगार छै। जो वैरिया री जीत होय तौ मोनूं था घोडा रै पगा तळै देखज्यो[7]। इव देखौ जीतू छूं कै मरू छूं।

सो कही छै उवौ वेढ मे[8] तरवारा मारै थौ, वैरिया रा साथ ऊपर हमला करै थौ। सूरज माथा रै ऊपर आवियौ, जूझारा[9] नूं पियास लागी, गरमी रै कारण सू मरदा रा होठ सूखण लागिया अर गरद[10] गाला ऊपर चढी जणा अेक लागो गुलाम मुल्तान अरब रो भालर पाणी री[11] लेय वादसाह रै पगवाड़ै पहोचियो[12]। धीरप सू अरज कीवी—हे वादसाह सलामत! पियास लागी होयसी, थोडी ढील कर पाणी पी लेवो। वादसाह फुरमाई—जे म्हारी पियास मोसूं ही मरी पियासी छै। प्रभू इज्जत राखणहार री सोस छै—जितरै[13] आ तरवार वैरिया रै लोही सू नही धापै उतरै[14] हू पाणी नही पी सकूं, ढील नही कर सकू। सो इसा पक्का हट सू तथा पूरै ही माटीपणै रै कारण सूं मोटा प्रभू पतह दीवी।

[1]सम्पन्न [2]वृक्ष [3]दल, फौज [4]लड़ने आये [5]अपनी [6]कहाँ जाओगे [7]पैरों के नीचे रौंदना [8]युद्ध मे [9]जूझने वाले, योद्धा [10]गर्द [11]पानी की झारी [12]पास पहुँचा [13]जब तक [14]तब तक।

दरवेस छै पण बेसवर छै।
खाणौ छै पण बेनमक छै।
पिंडत छै पण बेतपस्या छै।
घोड़ौ छै पण बेलगाम छै।
बखतावर[1] छै पण बेदातारी छै।
रोख[2] छै पण बिना फळ छै।
बादसाह छै पण बिना दळ[3] छै।
बादसाही छै पण बेहिम्मत छै।

अे सगळा इसा छै जिसी बिना पूजी रौ सौदागर होय। अेक बादसाह अरब मे थौ सो उणरै वैरी सू लड़ाई वणी जद दोनू लसकरा साफळा बधिया[4]। तद बादसाह अरब रा नू उमरावा कही—हे बादसाह! लड़ाई रा काम मे दो ही वाता होय छै। कै तौ जीत होय कै हार होय। जे होणहार रै वस आपणी[5] हार होय अर फौज भाजै तौ तोनू कठै जोवा[6]? बादसाह कही—जे हू भाजू तौ मोनू उवौ ही जोवै जो प्रभू रौ गुनहगार छै। जो वैरिया री जीत होय तौ मोनू था घोड़ा रै पगा तळै देखज्यो[7]। इब देखी जीतू छूं कै मरू छूं।

सो कही छै उवौ वेढ मे[8] तरवारा मारै थौ, वैरिया रा साथ ऊपर हमला करै थौ। सूरज माथा रै ऊपर आवियौ, जूझारा[9] नूं पियास लागी, गरमी रै कारण सू मरदा रा होठ सूखण लागिया अर गरद[10] गाला ऊपर चढी जणा अेक खासौ गुलाम सुल्तान अरब रौ झालर पाणी री[11] लेय बादसाह रै पमवाड़ै पहोचियौ[12]। धीरप सू अरज कीवी—हे बादसाह सलामत! पियास लागी होयसी, थोडी ढील कर पाणी पी लेवौ। बादसाह फुरमाई—जे म्हारी पियास मोसूं ही खरी पियासी छै। प्रभू इज्जत राखणहार री सोम छै—जितरै[13] आ तरवार वैरिया रै लोही मू नही धापै उतरै[14] हू पाणी नही पी सकूं, ढील नही कर सकू। सो इसा पक्का हठ सू तथा पूरे ही माटीपणै रै कारण सूं मोटा प्रभू फतह दीवी।

---

[1]सम्पन्न [2]वृक्ष [3]दल, फौज [4]शस्त्र बांधे [5]अपनी [6]कहाँ खोजें [7]पैरों के नीचे दलना [8]युद्ध में [9]जूझने वाले, योद्धा [10]गर्दं [11]पानी की झारी [12]पास पहुँचा [13]जब तक [14]तब तक।

ऊपर भरोसौ मतना करजे चाहै घणौ मारौ ही होय। जितरै काम नरमी सूं वणै उतरै थूं करडाई[1] मतना करजे अर जितरै काम ताजणा[2] सूं सरै उतरै तरवार मत काढजे। सिकदर फुरमाई—सही, म्हारौ काम वैरी सूं लडाई रौ वणै तौ किण भात सलूक करूं ? किण भांत अमल[3] कर लड़णै री करूं ?

हकीम कही—हाल लडाई रौ दोय भात सूं छै, तीसरी भात नहीं।

या तौ तूं किही सूं लडणै जाय छै।

या कोई थाहरै ऊपर लडणै आवै छै।

जे तूं लडणै रौ मतौ करै छै तौ तोनूं दस सरत[4] री हिमायत करणी।

१ चाहै गरज उण लडाई सूं छूट पूरी भलाई री न होय, धरम न छूटै अर दफा अन्याव[5] उत्पात रा न होय।

२. मनसा[6] करणी प्रभू सूं अर उणसूं मदद मागणी[7] अर दुआ खैरायत दान उवारण[8] मे करणी। देवता रिखीसरा सूं हिम्मत मदद री विणती करणी।

३. अविस्वास री हद्द करणी, लोक विचारणौ[9]। जासुस आपरा साथै, वैरी रा लस्कर अर उणरा साथ रै पाया हेत विरोध री पूरी खवर लेणी।

४. आपरै लस्कर सूं पूरी मया खवर करणी जे मारा अेक दिल, अेक जीभ वोलै। सिपाही री अेकौ[10] वादसाह नूं कारण फतह जोर रौ छै। साथ रै अेक मता सूं वादसाहा री इज्जत वधै छै। अेकौ वडा माणसा रौ[11] तथा मवीलै री वा सगा-सोइया रौ इण काम मे जरुरी छै।

५ साथ नूं वोल वायदा मुल्क देणै रा देवै। आगै वडा करणै रौ[12] नीयत करी चाहीजै। भागण पडै[13] तौ पाछै इलाज करणौ।

६ बुद्धिवळ सेती काम लस्कर रौ मुदायत सेनापति किसा नूं ठहरावणौ।

७ सेनापति मे तीन गुण होणा जरुरी छै—सूरवीर, मनगरौ[14] होय, इण वात रौ नाम पायौ होय तौ उणसूं डर वैरी रा मन पै पडै।

विचार बुद्धिवळ पूरौ राखतौ होय, वंसार नेवाळ लडाई रौ जाणतौ होय[15], कोई ठोड जडै विचार माटीपणौ घणौ काम आवै, भात भात रा वहाना

---

[1]कठोरता [2]चाबुक [3]व्यवहार [4]शर्तें [5]अन्याय [6]मन [7]सहायता मागना [8]उबारने के लिए [9]दुनिया को पहिचानना [10]एकता [11]बड़े लोगों का [12]दर्जा बढ़ाने की [13]भाग लड़ हों [14]बड़ा, बहादुर [15]लड़ाई की सभी तरकीबों का जानकार हो।

ऊपर भरोसौ मतना करजे चाहै घणौ मारौ ही होय। जितरै काम नरमी सूं वणै उतरै थूं करडाई[1] मतना करजे अर जितरै काम ताजणा[2] सूं सरै उतरै तरवार मत काढजे। सिकदर फुरमाई—सही, म्हारौ काम वैरी सूं लडाई रौ वणै तौ किण भात सलूक करूं? किण भात अमल[3] कर लड़णं री करूं?

हकीम कही—हाल लडाई रौ दोय भात सूं छै, तीसरी भात नही।

या तौ तूं किही सूं लडणं जाय छै।

या कोई थाहरै ऊपर लडणं आवै छै।

जे तूं लडणं रौ मतौ करै छै तौ तोनूं दस सरत[4] री हिमायत करणी।

१ चाहै गरज उण लडाई सूं छूट पूरी भलाई री न होय, धरम न छूटै अर दफा अन्याव[5] उत्पात रा न होय।

२ मनसा[6] करणी प्रभू सू अर उणसूं मदद मागणी[7] अर दुआ खैरायत दान उवारण[8] मे करणौ। देवता रिखीसरा सूं हिम्मत मदद री विणती करणी।

३. अविस्वास री हद्द करणी, लोक विचारणौ[9]। जासूस आपरा साथै, वैरी रा लस्कर अर उणरा साथ रै पाया हेत विरोध री पूरी खबर लेणी।

४. आपरै लस्कर सूं पूरी मया खबर करणी जे सारा अेक दिल, अेक जीभ बोलै। सिपाही री अेकौ[10] वादसाह नूं कारण फतह जोर रौ छै। साथ रै अेक मता सू वादसाहा री इज्जत वधै छै। अेकौ वडा माणसा री[11] तथा कवीलै रौ वा सगा-सोइया रौ इण काम मे जरूरी छै।

५ साथ नू कौल वायदा मुल्ल देणै रा देवै। आगै वडा करणै री[12] नीयत करी चाहीजै। भागण पडै[13] तौ पाछै इलाज करणौ।

६ बुद्धिवळ सेती काम लस्कर रौ मुदायत सेनापति किसा नूं ठहरावणौ।

७ सेनापति मे तीन गुण होणा जरूगी छै—सूरवीर, मनगरौ[14] होय, इण वात रौ नाम पायौ होय तौ उणसूं डर वैरी रा मन पै पड़ै।

विचार वुद्धिवळ पूरौ राखतौ होय, पैसार नेकाळ लडाई रौ जाणतौ होय[15], कोई ठौड जठै विचार माटीपणौ घणौ काम आवै, भात भात रा वहाना

---

[1]कठोरता [2]चाबुक [3]व्यवहार [4]शर्त [5]अन्याय [6]मन्शा [7]सहायता मागना [8]उवारने के लिए [9]दुनिया को पहिचानना [10]एकता [11]बड़ लोगों का [12]दर्जा बढ़ाने की [13]भाग खड़ हो [14]बड़ा, बहादुर [15]लड़ाई की सभी गतिविधो का जानकार हो।

वधाजे नही[१]। सलाह रो वात नही मांनणी भूडी छै। सलाह री इच्छु[२] सदा जीत री धणी छै। सयाणा जो होय सो सलाह करै छै। लड़ाई घर गमणं री ठौड छै[३] सो टाळजै[४]।

सिकदर श्रो बचन दस्तूर श्रमल कियो श्रर नियम लडणं सू सलाह री थाप्यो। सो माटीपणो सूरवीरता वादसाहां व वडा उमरावां नूं वडो गुण छै।

साहजादो मोहसन साह वेस तरवारिया छै[५], जिणरी सारै धाक छै। खेत मे पहाड़ री ज्यू सपगा छै।

इकतीसवीं बात

गैरत[६] मे सो गैरत जोग श्रहकार सूं राखणो भलो छै। मिनखां नूं इणरो जतन करणो लाजमी छै। तदवीर कांमा री मे, ताकीद धाक री मे वादसाहा नूं श्रो गुण खरो जरूरी छै। काम धरम पथ रा मे श्रर काम देस रा मे श्रहकार दोय भात भलो छै। गैरत धरम री श्रा छै—जे श्राग्या[७] करणै जोग[८] कामां री मांनै, भूडा कामा री ताकीद करै, श्रापरा चाकरा नूं रैयत देस री नूं जप, तप, भजन री श्राग्या करै। भूंडा कामा वाळा नूं मना करै, सजा करै। वादसाह नूं चाहीजै, गुडा, भाड, चोर नूं ताजणा[९] व तरवार सूं सजा रीत माफक देवै। हाथ सूं सजा दै, जीभ सूं कहै। जे नही मानै तौ रीस[१०] कर कहै। श्रो पद पिडत तपस्वी रो छै—जे जीभ सूं मना करै। मन मे भूडा नूं वैरी नही जाणै, तिणसू प्रभू राजी नही छै।

वादसाहा नू काम घणा छै, तिणसू काम री पहोंच[११] पूरी नही कर सकै। नायक देस मे मोतबिर सवळा[१२] मेलै, जिका श्रादमी भली चाल रा होय श्रर साचा सीळवत[१३] निरलोभी होय। जे क्यू करै[१४] सो ससार रा भला व प्रभू री रजामदी नू करै।

श्रहकार दुनिया निमित्त तीन भात रो छै।

---

[१]बढाना मत [२]इच्छुक [३]घर नष्ट करने वाली है [४]टालना [५]शस्त्र धारण किये हुए है [६]श्राज्ञा [७]लज्जा [८]योग्य [९]चाबुक [१०]गुस्सा [११]काम की दखरेख [१२]ताकतवर [१३]शीलवान [१४]जो कुछ करे।

बधाजे नही[1]। सलाह गे वात नही मानणो भूडो छै। सलाह रो इच्छु[2] सदा जीत रो धणी छै। सयाणा जो होय सो सलाह करै छै। लडाई घर गमणै री ठौड छै[3] सो टाळजै[4]।

सिकंदर औ बचन दस्तूर अमल कियो अर नियम लड़णै सू सलाह रो थाप्यो। सो माटीपणो सूरवीरता वादसाहा व वडा उमरावा नूं वडो गुण छै।

साहजादो मोहसन साह वेस तरवारिया छै[5], जिणरी सारै धाक छै। खेत मे पहाड़ री ज्यू सपगा छै।

इकतीसवीं वात

गैरत[6] मे सो गैरत जोग अहकार सूं राखणो भलो छै। मिनखा नूं इणरो जतन करणो लाजमी छै। तदबीर कामा री मे, ताकीद धाक री मे वादसाहां नूं औ गुण खरो जरूरी छै। काम धरम पथ रा मे अर काम देस रा मे अहंकार दोय भान भलो छै। गैरत धरम री आ छै—जे आग्या[7] करणै जोग[8] कामा री मानै, भूडा कामा री ताकीद करै, आपरा चाकरा नूं रैयत देस री नूं जप, तप, भजन री आग्या करै। भूंडा कामा वाळा नूं मना करै, सजा करै। वादसाह नूं चाहोजै, गुडा, भाड, चोर नू ताजणा[9] व तरवार सूं सजा रीत माफक देवै। हाथ सूं सजा दै, जीभ सूं कहै। जे नही मानै तो रीस[10] कर कहै। औ पद पिडत तपस्वी रो छै—जे जीभ सू मना करै। मन मे भूडा नूं वैरी नही जाणै, तिणसू प्रभू राजी नही छै।

वादसाहा नू काम घणा छै, तिणसू काम री पहोच[11] पूरी नही कर सकै। नायक देस मे मोतबिर सबळा[12]·मेलै, जिका आदमी भली चाल रा होय अर साचा सीळवत[13] निरलोभी होय। जे क्यू करै[14] सो ससार रा भला व प्रभू री रजामदी नू करै।

अहकार दुनिया निमित्त तीन भात रो छै।

---

[1]बढाना मत [2]इच्छुक [3]घर नष्ट करने वाली है [4]टालना [5]शस्त्र धारण किये हुए है [6]आज्ञा [7]लज्जा [8]योग्य [9]चाबुक [10]गुस्सा [11]काम की देखरेख [12]ताकतवर [13]शीलवान [14]जो कुछ करे।

प्रथम, अहंकार वादसाह नूं आपरै सरीकिया[1] सूं। दूजो, आपरै जनानै रो जापतो[2]। तीजो, खलक सूं पण अहंकार आपरा सरीकियां नूं छै। सो इसो होय वादसाह वडापण ऊंचाई जोवै। जे इणसूं कोई दान, मान, तरवार, साच, सील मं ऊंचो नही पहुंचै। मुरवत रा कारण सारा सूं वाध होवै। इण अहंकार सूं सारा काम मनवांछित सुधरै। यो गुण खासा हिम्मतवान धणी रो छै। जितरी हिम्मत वडी व खरी होय त्यूं पण गैरत रो जोर घणो होय। अेक साहजादै हमार हकीम नूं पूछो—चाहूं छूं सरीकिया रै ऊपर होऊ[3] तरै मोनूं का सू कियो चाहीजै? हकीम कही—हे वादसाहाजादा! दौलत वधणै नू कोई कारण भलो खरो अहंकार व हिम्मत सूं नही छै। पण अहंकार खासा खजाना निमत्त इण भात होय—जे आपरी राणी सहेली नू अणसेंधा[4] ओपरा[5] पुरख सूं पड़दै राखै। इणनूं हद सील री नै साच री ताकीद करै, तिणनूं देखा-देखी खलक मे पण पडदा सतर रीत नाम हरम सू होय। भली स्त्री नूं दावै[6] तिण तरफ आख नही खोलणी, पग दावै तिण गळो मे नही देवणो। सरीर नूं जे पाप लागै छै सो आख नूं लागै छै। आपरै धणी, मा, वाप, भाई, वेटा, नाना, मामा विना कोई नूं मूंडो नही वतावणो।

पण अहंकार जतन खलक रो इण तरह छै—जितो जतन आपरै जनानै रो राखै तिण भात वसी[7] रो जतन राखै, किणी नू नही छोडै। दरवार रो चाकर वदनामी भला घराणा रा मिनख नू लगावै तो मानणो नही। छिद्र भला आद-मिया रा ढदे न उघाडणा[8]। गरीब रैयतरा री नलासी न करणी। वणता छता[9] अवगुणा नू ढाकणा[10]। जिको वादसाह गरीबा रा छिद्र टाकै उणरा अेव प्रभू टापै। जिको कोई रो पडदो नही फाडै उणरो पडदो कोई नही फाड़ सकै, हिमायत पण अहंकार छै।

हिमायत आपरै चोर री तथा मान री पूरी गैरत आ छै—किणी नू मरणै रानिया पछै परो नही देवै[11]।

अरव देस में दस्तूर थो अर इव ही छै[12], जद कोई भीत री छाया व तम्बू री छाया म आवै तो उणनू पाडोस राखै। जो जीभ सू मरणो नही चाहै

---

[1] साथ के [2] आज्ञा [3] बढ़ कर होऊ [4] बिना जान-पहिचान का [5] पर-नर्वा [6] मन म भाव [7] देश मे बसने वाले [8] खोलना, उद्घाटन करना [9] जहा तक बन सके [10] छिपाना [11] निकाल कर नहीं दे [12] अब भी है।

तौ भी आपरै सरणै आयौडा[1] नूं किणी नूं नही देता। इण काम मे माल खरच होता अर जीवणै मरणै तक री नौबत पहोंचती पण आयै नूं किणी रै हाथ नही सौंपता। बाजै जानवर नूं तम्बू घर खेत माही आया पाछै मरणै नही देता।

बहराम गोरी अरब देस मे नामोन मजर कन्है आपरै बापरी आग्या सूं सिपाहीगिरी सीखै थौ। सो अेक दिन सिकार रमणै[2] गयौ थौ। बहराम अेक हिरण वासै[3] घोडौ दियौ। हिरण भागतौ भागतौ तिसायौ[4] होय अेक वस्ती मे सरण गयौ सो अेक तबू मे घुस गयौ। उण तबू रै मालिक रौ नाम थौ कवीसो। तिण हिरण नूं बाधियौ। बहराम पण हिरण रै पाछै ही आयौ थौ सो तीर नूं कमान रै ऊपर चढाया ही हेलौ मारियौ[5]—हे घर रा धणी! म्हारौ सिकार उरौ दे[6]। कवीसो इणनू जाणै ही नही थौ सो कही—हे मोटा माणस! आ मुरब्बत[7] नही जो मैं सरणै आयौडा नूं काढ[8] किणी नूं देवूं, अर तूं मार खावै। तौ बहराम जोर सू करडी कहणै लागियौ[9]। कवीसो कही—मोटा वचन मत कहै, जितरै औ तीर म्हारी छाती मे लगाय नै मारै उतरै औ हिरण हाथ नही आवै। अर तू मोनूं मारसै[10] ताहरा म्हारा भाई पण तोनूं मारसै। आपरा जीव रै ऊपर दया कर, इण हिरण नू छोड, जा। जो लालच ही राखै छै तौ ताजौ घोडौ छै सो जीन लगाम मुद्धा तोनूं दियौ, सो लेय चढलै अर आपरौ घोडौ खेंचिया तू आपरै घर जा।

बहराम नू इणरी हिमायत पसद आई, घोडौ तौ लीन्हौ नेही, आपरै घर पाछौ आयौ। पाछै जिण दिन तखत बैठियौ, छत्र धारियौ[11], ताहरा बहराम कवीसे नू तेड[12] पूरौ वधारियौ[13]। उणनू अरब मे वजीर लग जोला विरद[14] दियौ। अैसो सरणाई साधार।

बत्तीसवी वात

सिपाहियत, सो चूक[15] रौ दड देवणौ[16], जापतौ करणौ अर राह राखणौ। सो दड सियासत[17] दोय भात छै। अेक तौ दड आपरै सरीर रौ अर अेक

[1]शरण मे आए हुए [2]खेलने [3]पीछे [4]प्यासा [5]आवाज दी [6]इधर द [7]भलमनसी [8]निकाल कर [9]कटु वचन कहने लगा [10]मारेगा [11]छत्र धारण किया [12]बुला कर [13]बडा आदमी बनाया [14]विरुद्ध [15]गल्ती [16]सजा देना [17]शासन।

सीयासत आप सिवाय। पण दंड सरीर आपरा नूं छुडावणौ—सुभाव लखण बोली भूडी सू छै, अर गुण पवीतर[1] सीखणा। दड सीयासत आप सिवाय दो भात री छै। अेक तौ सीयासत उमराव चाकर दरगाह रा री छै। दूजी सीयासत खलक छोटा नै रैयत रीत री। सो भूंडा नै भूडा कामा रा करण वाळां नूं चाहीजै सदा डरता धूजता राखै[2], भला नूं अर भला कामा रा करण वाळा नूं देवै, अमावत[3] राखै, बुजरगी महर सूं पूछै।

कोई पूछी—कुणसी[4] वात वडा सुभावा छै? तौ कही—उवा छै कै जिण सूं बेगुनाह उणसूं निडर रहै अर गुनाहगार डरता रहै। उणरी तेग रौ जोर निवळा रै ऊपर दान, भूखा दरवेसा नूं होय।

हुसगसाह कहतौ थौ कै हू दयाल[5] छूं, प्रभू री छूं। भूडा अर फिसादी रै डंक केहर म्हारा मे पवित्र मिल्यौ छै। अर जहर धाक म्हारा मे नीवात दया री मिळी छै। तरीयाक नै जहर दोनूं म्हारै सजानै मे छै। उणन् दोस्ता नूं देऊ इणनू वैरिया नू। हकीमा कही छै—जो जवत सीयासत रौ नही होय तौ काम जहान रौ रीत भात रै ऊपर नही रहै[6]। अर जो दस्तूर सीस देणै रौ व सजा देणै रौ नही होय तौ काम खराब होय। जो बीनणी[7] मुल्क रूपिणी न्याय सूं मन मानी छै पण उणसू सयाणै आदल विगर सीयासत वणै नही। जिकौ बादसाहा नूं रोग छै। सरदारो नूं निवळाई सीयासत सूं वेखबर होय तिणरा देस रा थाभा मे वेगी खलल पडै[8]। नीव बादसाहत री मे उत्पात हळाहळ हळचळ आवै। सोभा मुल्क री नै पथ री अर सलाह दीन दौलत री सीयासत छै। बादसाह रा सीयासत री तेग[9] विगर देस खराब होय। विगर सास्त्र री रीत न्याय नै साच आपरी ठौड नही ठहरै। अर विगर तेज सीयासत रै काम न्याय रौ अर धरम रौ नही सुधरै।

तहकीक चलण पथ रौ, मदार टिकणौ मुल्क रौ, सीयासत ऊपर छै। जो बादसाह रा तेज तरवार री धाक नही हो तौ कोई ठडौ पाणी नही पी सकै[10]। वडा कही छै—जो बादसाह नहो होता तौ मिनख मिनखा नू खावता। देस सीयासत विना जब्त नही होय अर उत्पात पण सीयासत विना नही मिटै।

---

[1]पवित्र [2]भयभीत रखे [3]आशा से पूर्ण [4]कौनसी [5]दयालु [6]समुचित व्यवस्था के अनुकूल नहीं रहे [7]दुल्हिन [8]देश की दृढ़ता में कमजोरी आ जाती है [9]तलवार [10]चैन से नहीं रह सकते।

अेक खलीफौ मसीत[1] रा मकबरा रै ऊपर चढनै तरवार काढ़ी, मुसफ री पोथी हाथ मे ली अर कही—हे भला आदमिया ! थानूं औ घणौ छै—जे मुसफर बाचौ[2], अर थे भूडा इणमूं सूधा न होवौ तौ तरवार ल्याया छा।

तमगाजखा बडौ नामी बादसाह थौ। तिण सियासत रै जोर सूं मुल्क आबादान कियौ[3]। अर उणरी तरवार री धाक सूं अन्याय री जड़ उपड़ गई। अेक दिन अेक आदमी फूला रौ दस्तौ नजर लायौ सो लीन्हौ। फेर बादसाह पूछी—अै फूल कठा सूं लायौ ? उण कही—बाग मे सूं चुणिया छै। बादसाह कही—उबौ बाग थारौ ही थौ ? उण कही—नही। तरै कही—नाज[4] फूल अठै घणा होय तिणसूं लेवै बेचै कोई नही। बादसाह बिचारी—जिकौ धणी री आग्या रै बिगर फूल लेवै छै सो मेवौ ही पण तोड लेवै। इण भात दूजा ही पण चाहै सो करणी करै[5]। सो बादसाह हुकम कियौ—जे इणरा हाथ काटौ। पाछै घणा मिनखा बखसावणं[7] री अरज करी ताहरा अेक आगळी काट छोड दीन्हौ। तमगाजखा बदमास निडरा नूं मारतौ तरै इणा अेक दिन अेक सहर कोट री पोळ ऊपर लिखियौ—जे म्हे इसौ घास छा जितरौ काटै उतरौ ही घणौ होवै। आ खबर बादसाह सुणी तरै फुरमाइयौ—जे उण आखरा[8] री पाखती लिखौ कै म्हे पण बागबान इसा छा जो ऊभा बाट देखा छा जे ऊगौ अर तुरत उपाड नाखा।

हुरमज बेटौ नसेरवा रौ। न्याय आपरौ तेज तरवार रा सूं बणाइयौ थौ अर ऋपा आपरी केहर सू भली राखतौ थौ। भला नूं जिवातौ थौ अर भूडा नूं फजीत करै थौ[9]। अेक समै उणरै जागीरदार बाग मे बिगर माळी री आग्या अेक लूम दाख री[10] लीवी। बागवान उणरै घोड़ा री बाग पकडी अर कही—कै तौ मोनूं राजी कर नहीतर[11] थारै पर फरियाद करू छूं। उवौ कुछ उणनू देवै थौ, ऊ पण राजी नही होवै थौ, पण डर धाक हुरमज री दखौ थी जे उण बागवान नू अेक हजार दीनार दिया। हकीमा कही छै—बादसाहत रोख[12] ज्यू छै और सियासत पाणी री छौट छै तौ घणौ जोग छै। जड रोख

---

[1]मस्जिद [2]धार्मिक पोथी पढ़ो [3]आबाद [4]चुन है [5]अनाज [6]मन-माना कार्य करे [7]क्षमा कर देने की [8]अक्षरों [9]दण्ड देता था [10]दाखों का गुच्छा [11]वरना [12]वृक्ष।

वादसाहत री तूं पांणी सीयासत[1] सूं जे ताजी राखसे तौ फळ चैन चार लागै। जाणी चाहीजै--सीयासत ठावी जोग छै। जिका मजा लायक होवै तिणां नूं सजा करणी। उवै किसाक छै—दुख देण रा पैसारा[2] व भूंडा विचार विचारणै वाळा ? तिका इसा छै—जाणजे साप वीछू। तिण सूं हानी मोटा छोटां नै पहोचै।

अेक वादसाह हकीम नू पूछी—जे आदमिया मे सीयासत लायक कुण छै ? तौ कही—आदमी तौ सीयासत लायक नही छै। सीयासत तौ ल्याळी[3], साप, वीछू नूं करणी, जे काटणै अर फाटणै वाळा छै। वादसाह कही—वात रौ अरथ कहौ। तौ कही—हे वादसाह ! खलकत[4] मे अेक इसौ साथ छै जिका नूं पूरी भली तरह सूं जीवणौ भलौ, सारा नूं नफौ, तोटौ[5] न पहोचै। अै तौ आदमी छै सो देवता ज्यू छै। दूजा ल्याळी, साप, वीछू, चीता, वघेरा ज्यू छै। इणा सूं सदा सारा नूं हानी पहोचै, नफौ नही। तौ पछै आदमिया मे देवता सुभाव होय तिका आछी भात रा मिनख छै। और जिकौ प्रकृत सुभाव व्याघ्र, साप री ज्यू होवै तिकौ खरौ भूडौ मिनख छै। सो व्याघ्र, सापां री ज्यू मारणै[6] सीयासत करणै जोग[7] छै।

किही चस्मे नोसेरवा रै अेक जालिम अेक निरवळ नूं तमाचौ मारियौ। उण नोसेरवा मू फरियाद करी। तौ नोसेरवा उणनू गरदन मरायौ[8]। पाछै अेक नवास[9] कही—अजव अदल हजरत रौ, जे इतरी थोडी तकसीर[10] ऊपर आदमी मरवायौ। नोसेरवा कही—तू झूठ कहै छै। मैं आदमी नू जीवा नही मरायौ। मैं तो साप, ल्याळी, वीछू, कुत्ते नू मरायौ छै। खुसरौ परवेज वजीर वुजरग उमेद नू पूछियौ—खलक मे सीयासत लायक कुण छै ? तौ कही—हे वादसाह ! खलक पाच तरह रौ छै। अेक उवै जे कोई जात[11] मू भला छै, इणा मू सारा नू[12] भलाई पहोचै। इसा नू मदद देणी, इसा रै भेळौ वैठणौ।

दूजा उवै--जे भला तौ छै पण उणा सू किही नू भलौ न पहोचै तिणा सूं प्यार राखजे, भली करणै री तावीद करजे।

तीजा उवै छै—जे मध्यम सुभाव छै। उणा सू भलौ होय न भूंडौ होय, तिणा नू उत्तम मारग सिखायौ चाहीजै अर बुराई सू डरायौ[13] चाहीजै।

---

[1]शासन [2]मद्यगामी [3]भेड़िया [4]दुनिया [5]घाटा [6]मारने [7]योग्य [8]मौत की सजा दी [9]नौकर [10]गुनाह [11]जाति [12]सब को [13]डराना।

चोथौ साथ उवौ छै जिकौ भूंडौ छै पण किणी नूं बुरौ नहीं पहुंचावै छै। इणा नूं ख्वार[1] वेइज्जत राखिया चाहीजै तौ बुराई छोडै।

पाचवौ साथ उवौ छै जिकौ भूडौ[2] छै अर लोगा नूं बुराई पहुचावै छै। इणा नूं सीयासत किया चाहिजै। पहला गोस्ताली, ताजणौ, कैद करणौ। नहीं मानै तौ मारणौ।

अेक नफौ सीयासत री उत्पात नीचा नूं वैठाणौ छै[3]। जद मरद उत्पाती बुरोगार[4] देखै तौ सीयासत री आग तेज छै, तरै छिप रहे। जो थोडी सी कमी तेज मे देखै तौ हजार उत्पात उठाय वैठा करै। बादसाह री धाक री कमी में *निबळौ[5] ही फिसाद करणै नू तयार होय।*

तेतीसवीं वात

सावधानी, देस री खबरदारी होय। हालत देस, गढ, कोट, उमराव, चाकर, रैयत री नै जाणणौ न्यायी वादसाहा री रीत छै। खबरदार आदमी भरोसा रा विदा करै[6], जासूस दतआरी[7] अमीन ठोड ठोड मेलै, तौ जासूसी हाल देस उमराव रैयत री करै। अरज रै समय अरज करै सो खबर पाया पाछै तिणरौ जतन[8] करै। जिकी चूक[9] देस न्याय रै काम में जाहिर होय तिणरौ जापतौ दुरस्त करै, विगड़ता पहली जतन करै।

इमा घणा हुवा छै जिका वादसाह रात रै समै पोसाक बदळ[10] वस्ती मे फिरै था। किण वास्तै ? जे विपरीत खबर होवै सो वादसाह रा हजूरी सुणै नही, सुणै तो आपरी सलाह नू समय रै मुलाहजै करै। वादसाह नूं नही कह सकै। हजरत अली रात रा गाव मे बाजार मे रूप फेरता[11] अर लोगा नूं पूछता— दाउद वामू किसोक छै ? मुहडा आगला[12] किसाक छै ? सो कठै ही खलल देखता तौ तिणरा जतन मे होवता। सुल्तान महमूद गाजी रात रा फिरता, हकीकत पूछता। पण वादसाह अेकला फिरै जिणमे भय छै, तीसूं वडा सैणा रौ दस्तूर वाध्यो छै।

[1]तिरस्कार [2]बुरा [3]उत्पात को दबाना [4]बुरे कार्य करने वाला [5]निर्बल [6]शासन-कार्य करने के लिए भेजे [7]भरोसे वाले [8]यत्न [9]गल्ती [10]पोशाक बदल कर [11]भेष बदलते [12]उनके पास नौकरी करने वाला।

वादसाहां नूं चाहीजे—खबरदार ग्रामीन आछै सुभावा, वेगरज, निरलोभी, पवित्र मनसा रा विदा करै। इण भात जे उणनूं कोई जाणं नही। रोजगार उणरौ मनमानियौ ठहराय देवै। तीमूं कोई जाणं-पिछाणं तौ उणनूं वहकाय अर ललचाय न सकं[1]। जासूस इसा राखं जो चाहै जद ही खबर देय सकं। कोई खबर इसी होय जे ढील हुवा नही वणं। जद हाल इण भात होय—वादसाह छोटी-मोटी वाता नूं जो सुणं तौ उमराव वजीर सारा जाणं तद वे सारा भली भात सू चाले। कोई ही वेजा कारज[2] नही कर सकं। आलम में मोटौ वादसाह ऊही छै जे सारी खबर राखं। ऊही सारां ऊपर होवै[3]।

अेक वादसाह इसौ थौ जे ईस्वर री सगळी[4] ग्राग्या माथै ऊपर राखं थौ[5] अर प्रभू रा खलक ऊपर मया राखं थौ। वाघ वकरी अेक घाट पाणी पीवै था। उणरै समय मे किणी नू कुदरत ही नहीं जे जोग काम कर सकं।

अेक वडौ उमराव तिण ऊपर वदगी स्वामीधरमी री अहसाण घणौ ही कियौ। भारी वात कोई उणरै हाल री वादसाह मू अरज नही कर सकं। तिकौ छानै[6] दारू[7] पीवै, व्यभिचार करं। कोई अरज इणरा गिला करणै री करै आ पहोच नही राखं। इणरौ कारण चलण घणौ। सो वादसाह किण ही भात खवर पाय चाही—जे मुहडा-मुंहडै उणनू कुछ कहै। किण वास्तै? कहण इसा वचना मे मोटा माणस रौ पडदौ फाडणौ छै[8]। इसी तरह वादसाह री धाक नू ज्यान छै। तिणनू तेड[9] अर फुरमाइयौ—मोनूं इसा मुरगा चाहीजे तिणा री चोच राती होय, माथौ वाजू उणरा काळा, वाकी सोह[10] सफेद।' तौ विना इसा किणी सू पैदा नही होय। अमीर कही—घणी भात तलास कर लायस्यू[11], तीन दिन री मोहलत पाऊ। पाछै अमीर तलास मे हुवौ पण देस सहर मे इसा पक्षी हाथ न ग्राया। तौ अमीर जाय वादसाह नू अरज की—जे आपरं हुकम माफिक तलास री दौड थी जितरी करी पण उसा[12] पक्षी तौ पैदा नही हुवा, इव जे हुकम होय सो करू। वादसाह कही—आज थाहरौ

---

[1]लालच मे नही डाल सके [2]अनुचित कार्य [3]सबसे ऊपर स्थान प्राप्त करे [4]समस्त [5]शिरोधार्य रखता था [6]छुप कर [7]शराब [8]बड़े आदमी का रहस्योद्घाटन करना है [9]बुला कर [10]सब [11]लाऊंगा [12]वैसे।

देस मे चलण छै[1] अर थे सारा काम मे ग्राजाद छौ, ग्रा काई वात, जावौ फेर तलास कर लावौ।

सो फेर ही ग्रमीर घणौ[2] तलास कियौ पण उसा पक्षी पाया ही नही। तौ फेर साह री हजूरी मे ग्रायौ। तद वादसाह कही—थे देस सहर सूं इसा ही खवरदार छौ? चार मुरगा इण रग रा ग्रेक घर माही ग्राया छै पण था पैदा नही कर सक्या छौ। जावौ, चौक मे ऊगूणी[3] वाजार मे जावौ, फलाणी मसीत[4] रै वारणा कन्है ग्रेक मुहलौ फलाणै सहनाण छै, जीवणै हाथ उण मुहला मे गळी छै—इसै ग्राकार। ग्रागै उण गळी मे इण निसाणौ[5] घर छै, तिणरौ वारणौ ग्राथूणौ[6] छै। उण घर मे जावौ। साळ[7] दिखणधू[8] छै, तिणम उरो[9] छै तिण मे ग्राळ्यौ[10] छै, उणरौ थे किवाड़ खोलज्यौ। उठै ऊनी खौळी री पीजरौ छै, तिण पीजरा मे इसा मुरगा फलाणै दिसावर सूं ग्राया छै सो जाय ले ग्रावौ।

सो ऊ ग्रमीर सुण हैरान हुवौ ग्रर उठै गयौ। वादसाह रै कहै माफिक सारा सैनाण सूं तलास कर पक्षी सुद्दा पीजरौ ले ग्रायौ। वादसाह कही—वादसाह नूं चाहीजै जे ग्रापरै देस री इतरी खवर राखै जद राजस[11] थिर रहै। ग्रमीर ग्रा वात सुणी तरै ग्राप सोची—जो वादसाह वाजार, गळी, घर, गाव री इसी खवर राखै छै सो सही म्हारा कुलछणा री खवर पाई होसी, कै इव पायसै[12], तीसूं इव ग्रौ मारग छोडणौ[13]। पाछै वदफेली[14] कीवी री प्रास्चित कर ग्राछै मारग ग्राप ही ग्रायौ। इण वात सूं मालम होय छै—वादसाह नूं मिनखा रै हाल री खवर राखणै मे घणौ फायदौ छै।

साचा खवरदारा सू वेपरवाही दूर होवै छै, तिणसूं सारी वाता खवरदार होवै। मनसूर साह कहतौ—मोनू तीन भलै जणा री[15] चाहना छै—ग्रेक तौ ग्रामल जिकौ माल रैयत रौ म्हारै नही लावै ग्रर म्हारौ माल रैयत नूं न छोडै। दूसरौ, हाकिम सहर रौ न्याव[16], गरीव रौ जोरावरा[17] सू लेय विगर

---

[1]तुम्हारा देश मे प्रभाव है [2]बहुत [3]पूर्वी [4]फला मस्जिद [5]इन निशानो वाला [6]पश्चिम की ग्रोर [7]लबा कमरा [8]दक्षिण-उत्तर [9]छोटा बद कमरा [10]ताक [11]राज्य [12]या ग्रब पायेगा [13]ग्रब यह रास्ता छोडना [14]ग्रनुचित कार्य [15]भले ग्रादमियो की [16]न्याय [17]ताकतवर।

लालच री गरज सूं हुकम करै। पछै तीजा वास्तै पूछी, तौ कही—ऊ जे इसौ खरौ माणस[1] होय जो इण दोना री माची साची खबर मोनूं आय करै। जिण बादसाह रै इसा भला माणस तीनू होय तौ बादसाह नै रैयत दोनां नूं घणौ नफौ छै, फायदौ छै।

अरब देस रौ बादसाह खबर री घणी तलास करतौ। सो कांम अठा तक पहोंचियौ—जे ऊ नित आपरै हाकिम उमराव वजीरां नूं कहै थौ—आज फलाणौ यौ काम कियौ, या चीज खाई, या बात कही, इण ठौड़ सूतौ। सो इसा समाचार सुण लोग जाणता[2]—जे इणनूं देवता सारी बाता कहै छै। तिणनूं देवता नही कहै था पण मारी बाता खबरदार ही खबर करै था। जो बात खबरदार रै कहै विगर दूसरा कोई पहुचावता तौ सरत[3] उणरी आ छै—जे तुरत हुकम नही करता। वडा कही छै—कै बादसाहा रौ हुकम होणहार[4] रै बराबर छै। जो हुकम दै सो ही इसौ ही होय, कुण लोपै[5], कुण मना करै? पण बादसाहा री सरत आ छ—जे काम ससार रै मे पूरी निगाह राखै, पूरी निसा देर्ह, पूरा करार परख्या विगर[6] हुकम नही करै। सरत दूजी आ छै—भरम[7] सूं वेगुनाह नू बलाय मे नही नाखै। घणी जायगा भरम रै कारण पछतावा[8] अर दुख रौ कारण होय। वडा कही छै—जो कोई अकेला भरम सूं विगर तहकीक साच रै हुकम करै तौ उण भरम मे चूक छै। तिणसू आपनै प्रभू रा गरज मे आणजे।

कबादसाह रा समय मे अेक जणौ वन मे गयौ। उठै अेक जणै नू मरियोड़ौ पडियौ दीठौ[9]। माथौ कटियोडौ पडियौ छै, छुरौ कन्है पडियौ छै सो औ देख हैरान हुवौ। तिण ही वेळा अेक हाकम रौ चाकर उठै पहोंचियौ[10]। उण यौ हाल देख तिणरा हाथ बाध नै छुरी समेत दरबार मे लायौ, वाकौ हाकिम सू कहियौ[11]। तौ हाकिम उण ऊपर रीस कर कही—तू आदमी क्यू मारियौ? तौ इण कही—मैं नही मारियौ छं, हू तौ उठै पूगियौ ही थौ, उणनूं देख हैरान थौ। इतरै मे आपरौ चाकर मोनू पकड उरौ लायौ[12] पण हू नहीं जाणू जे

---

[1]एकरा आदमी [2]जानते [3]शर्त [4]होनहार [5]कौन उल्लघन करे [6]सत्य को अच्छी तरह जाने बिना [7]भ्रम, शक [8]पश्चात्ताप [9]मरा हुआ पडा देखा [10]पहुँचा [11]सारी घटना हाकिम से कही [12]मुझे पकड कर ले आया।

कुण मारियौ[1]। हाकिम कह्यो—मोनूं मालम पड़ै छै तूं इणनूं मारियौ छै पण इसी बाता बणा कर छूटणी चाहै छै। उण आदमी कही—हे साहिब ! भरम सू दोस मत ठहरावौ[2]। प्रभू कही छै—भरम साच नही छै। हाकिम अेक ही बात नही मानी अर हुकम फुरमाइयौ—सूळी देवौ[3]। सूळी री ठौड़ उणनूं लाय सूळी पर चढावै था, उण समय माफक दस्तूर हेलौ कियौ—इण सकस फलाणै आदमी नू बन मे मारियौ सो इणनूं सूळी चढावा छा। सो घणा आदमी देखणै आविया। उण बहदा मे सूं अेक आदमी आगै होय कही—हे हाकम ! धीरज धर, हू बादसाह कन्है जाय सारी बात प्रकट करू छूं, तू उतावळ[4] मत करै। औ आदमी बेगुनाह छै, बेगुनाह नू मारणौ भूडौ[5] काम छै। इतरी बात सुण हाकम ढील कीवी। उण आदमी नूं बादसाह कन्है ले गया। तौ इण अरज करी—हे साहिब ! बन मे उण आदमी नूं मैं मारियौ छै। उवौ म्हारौ वैरी थौ तीसूं हू समय पाय उणनू मार भागियौ। इब जिण जवान नूं मारणै रौ तूं हुकम कियौ सो बेगुनाह छै, औ इण बात री खबर नही राखै छै। बादसाह विचार कियौ अर प्रभू री सोस कियौ[6]—हूमैं भरम ऊपर कदे आग्या करू नही। पाछै उणनू कैद कर तुरत आ सुरत हाल[7] बडा बादसाह कवादसाह सूं अरज की। उण पिंडता सूं पूछी तरै सगळा[8] ही कही—उणनूं मारियौ नही चाहिजै[9]। किण वास्ते ?—जे अेक नू मारियौ छै तौ अेक बेगुनाह नू जिवाड़ियौ[10] छै अर साच राखी छै। पछै कवादसाह उण जवान नू लेडनै[11] सारी बात पूछ सिरौपाव[12] देय दोना नू छोड दिया। अर मन मे सोच फुरमाई—जे सीख लिखौ—बादसाह नू आ जोग छै—भरम मे पड मिनख नू हरगिज नही मारै, भरम सू मारणौ न्याय नही। साच ठहरिया विगर मारणौ नही। जिण गाव मे भरम सू मारीजै उठा सूं वेगा भागीजै।

अेक बादसाह दरबार कियौ। छोटा मोटा सगळा आइया। बादसाह रा दरसण[13] करै था। अेक बूढौ अरज करी—जिकौ बादसाह रै पगा लागै तिण नू उत्तम वस्तु गुजरानियौ चाहीजै[14]। सो तौ म्हारै हाथ सोना रूपा नूं नही

---

[1]किसने मारा [2]दोष मत दो [3]शूली पर चढा दो [4]जल्दबाजी [5]बुरा [6]ईश्वर की कसम खाई [7]सारी स्थिति [8]सब [9]उसे मारना नही चाहिए [10]जिलाया [11]बुला कर [12]पूरी पोशाक [13]दर्शन [14]नजर करनी चाहिए।

पहोचं पण चाहू छूं, मोती हिकमत रो गुजरानूं । बादसाह फुरमाइयो—म्हारै हिकमत रा वचना री घणी दरकार छै, सो कहो। वूढै कही—हे बादसाह ! बीच भरम रै अर साच रै आतरो[1] चार आगळ सूं अधिक नहीं छै। जो बात आग्या देखे सो साच होय छै। अर जो काना सुणै सो हकीकत मे भरम मे झूठी मिळै छै। जद बादसाह आग्या जिकी फुरमावै सो साच ही फुरमावै, झूठ न फुरमावै। झूठी आग्या दुनिया मे बदनामी रो कारण छै। अर अखीर मे[2] पाप होय। बादसाह वचना रा वखाण कर कबूलिया[3]। अेक हकीम सूं पूछी—बाजे बादसाहा री बेखबरी रो कारण काई छै ? सो अरज करी—तीन वस्तुवा सूं बादसाह देस नै रैयत सू बेखबर होवै। प्रथम, काम स्त्रिया रो अर विसेस पर स्त्री री चाहना। जो काम रै बाधणै मे[4] रहै सो ही काम जोत होवै, उवो परवाह किणी री किणी बात मे नही राखै। अेक जणो सिकदर मूं कहो—तूं वडो बादसाह छै। लुगाया घणी परण[5] तोसूं बेटा घणा होवै, थारी यादगार रहै। तो बादसाह सिकदर कही—जे म्हारी तो यादगार न्याय छै अर जस[6] छै। घणी भूंडी होय जो सारा मरदा सूं तो जीतै अर अत मे लुगाया सूं हारै। अेक, काम रै वास्तै आ रीत सेर मरदा[7] री नही। दूजो, कारण बेपरवाही रो ओ छै जे हिरस[8] होवै—माल खजाना भेळा करणै[9] री गाडणै री। इणसूं खरो भूडो सुभाव दूसरो ओर नही छै। किण वास्तै ? माल भेळा करणै री हिरस मे हराम हलाल जोग अजोग नही जाणै[10]। सोच देस रैयत रो नही पावै। सारो माल आप ही चाहै, धापै ही नही। तपस्वी अेक बादसाह नू सीख दीवी[11]—हे बादसाह ! हमार सेवक रैयत थारा वखतावर[12] छै तो तोनू बादसाहित सभागिया[13] री छै। जो तू रैयत नू खोस[14] माल उरो लेयसै[15] तरै उवे भूखा मगता होयसै। तो थारी बादसाहित भूखा मगता री ही जे होयसै। तिणसू थारी सारी सोभा घटसै[16]।

हकीम फरदोसी कही—जो बादसाह माल भेळो करणै रो विचार करै तो आपरै जीव नू दुख खडो करै। उवो माल भेळो जाण वैरी राज तलक

---

[1]दूरी [2]अत मे [3]स्वीकार किया [4]कार्य पूरा करने मे [5]खूब स्त्रियो से शादी कर [6]यश [7]बहादुर व्यक्ति [8]लोभ [9]शामिल करना [10]उचित-अनुचित मे भेद नही होता [11]शिक्षा दीवी [12]दानी [13]भाग्यवान [14]छीन कर [15]ले लेगा [16]पूरी शोभा घट जाएगी।

लेय मारै। तीसूं रैयत नूं वेराजी किया माल लेवणो फीटी मेहनत जाणजै[१]। वादसाह अेक ग्रमीर सूं कही—रैयत केरो[२] माल सारो उरै लाय खजाना भर। तो ग्रमीर ग्ररज करी—खजानै री सै सौभा मालदार रैयत सूं छै। जिकी रैयत भूखी कगली होय सो वादसाह भरै खजानै भूखा कगला रो वादसाह वाजै[३]। तो ग्रमीर कही—जद चाहूं जद ही हासल[४] लेऊ छूं, विगर मतळव रैयत खोसूं नही[५]।

तीजी वेखवरी दारू[६] पीवणो जाणजै। सो दारू पीवणो वरवादी रो कारण छै। वादसाहा नूं चाहीजै, मस्ती त्यागै। किण वास्तै ? उवो वेखवर होवै जणा माल ग्रर मुलक सूं ही वेखवर रहसै। तरै चाहै तिका तिणसूं करै। घणो वेळा[७] हुई छै, मस्ती मे केई वातां वोलतां वकता ऊठता वैठता हुई छै। तिणसूं कितराक खलक मे उत्पात उत्पन्न हुवा छै। सो सावधान हुवा पाछै जतन उण काम रा नही वणिया छै। वादसाह ग्रर चौकीदार नूं नीद जोग[८] नही छै। जागणो ग्रर होसियारी भली छै। सो प्रभू री सुनजर सूं मोहमनसाह घणा सावधान छै, पवित्र छै। दारू रै व्यसन सूं ग्रै टळिया छै[९]। दिन में ससार रै काम नूं सावधान, रात नूं प्रभू रा भजन में सावधान छै।

चौतीसवीं वात

फिरासत मे, मो ग्यान हिया रो, राजस[१०] री पूरी सरत[११] होय। हाकमो मे काम रै धणिया नूं[१२] वाजिव छै जिको हृद सूं काम वणै तिणमे पूरा विचार सू तो जतन करै। जो ऊ काम रोसन प्रकट दीसतो होय तो रीत धरम री न्याय माफक उणमें ग्राग्या करै। जो भेद उण काम रो जाहिर न होय छै तरै फिरासत ग्यान रा तेज सू सोजना करणी[१३]। कहणै वाळा रै कहिया रो भरोसो नही कियो चाहीजै। वडा कही छै—सोभा राजस री हुकमत री गहणो[१४] फिरासत ग्यान सू छै। दोय ग्रवळा[१५] स्त्रीया हजरत सुलेमान कन्है गई। ग्रेक डावडै[१६] ऊपर दावो कियो। ग्रेक कहै थी डावड़ो म्हारो छै। वीजी कहै थी

[१]बुरा प्रयत्न समझो [२]जनता का [३]कहलाता है [४]खेती की उपज का हिस्सा [५]जनता से जबरदस्ती माल नहीं लूंगा [६]शराब [७]कई बार [८]योग्य, उचित [९]दूर रहे है [१०]राज्य शासन [११]शर्त [१२]काम के मालिकों को [१३]खोज करनी [१४]गहना [१५]अबला [१६]लड़के।

जे डावड़ौ म्हारौ छै। सारा दरबारी न्याय करणै मे हैरान था। हजरत सुलेमान फुरमाई—इण डावड़ै रा दोय टुकड़ा कर दोना नूं ग्रेक-ग्रेक टुकड़ौ देवौ। सो चूहडौ तरवार काढी। तरै ग्रेक स्त्री रोवणै लागी[1], कूकणै लागी ग्रर कहणै लागी—जे डावड़ै नूं मारौ मत ना, हू भूठी छूं, म्हारौ हक नही, डावड़ौ उणरौ छै जिकौ उणनूं ही दिरावौ। पण उण दूजी स्त्री नू कुछ ही दरद दुख न ग्रायौ, ज्यूं की त्यूं देखती हीं रह गई। सुलेमान हुक्म फुरमाइयौ—डावड़ौ[2] उण स्त्री नूं देवौ जो मारणै मूं राजी नही छै। सो फिरासत ग्यान चाह ग्रा करै छै। जे उवा[3] ही स्त्री उणरी माता थी सो डावड़ौ मरतौ देख ग्राप हक छोड भूठी वण गई। ग्रर जिणनूं डावडै ऊपर दया न ग्राई सो भूंठी थी, उणरौ डावडौ नही थौ।

फिरामत री दोय भात छै—ग्रेक फिरासत सरयती नै दूजी हुकमी। फिरासत सरयती बदगी प्रभू री छै तिणसू मन साफ कर परब्रह्म नूं जाणणौ[4], तौ उणरी ग्रधता छूटै, ग्यान ऊपजै, भूठ छिपै, साच ठहरै। जिकौ वात देखै उणमे साच भूठ पावै। ग्रमाममुहम्मद जफरसाह कन्है ग्रमीम मुहम्मद चाकर मका री पोळी[5] बैठा था। इतरा मे ग्रेक मरद ग्रायौ। ग्रमाम कही—ग्रौ मरद खाती दीसै छै[6]। ग्रमीम कही—म्हारी नजरा लुहार दीसै छै। पाछै उण मरद नू तेड[7] पूछियौ तौ मालम हुई—जे पहला तौ लुहारी करै थौ, हमार पण खातीपणै रौ काम करू छू। दोनू पुरखा री फिरस्तगी मालम हुई। जिकै प्रभू रा रजू छै[8], तिणरै मन माही ग्रारसी[9] छै सो ग्रेक प्रभू नू जाणै।

दूजी फिरासत हुकमी छै। उवा हकीमा परीक्षा करनै पाई छै। परीक्षा उणरी रूप रग सू पाई छै सो घणी साची मिळै छै। हकीम सयाणा समय रा जे हुवा सो नोसेरवा रै वास्तै किताव फिरासत कीवी छै। सो नोसेरवा सदा उणनू वाच[10] न उण माफक हुकम करतौ। ग्रेक दिन ग्रेक मरद ग्रति खाटरौ[11] सभा नोसेरवा री मे ग्राय फरियाद करी—म्हारै ऊपर सितम[12] हुवौ छै। तौ नोसेरवा कही—भूठी कहै छै। इण वास्तै जे हकीमा फिरासत में

---

[1]रोने लगा [2]लड़का [3]वह [4]जानना [5]प्रतोली, दरवाजा [6]दिखाई देता है [7]बुला कर [8]ईश्वर के प्रिय है [9]दर्पण [10]पढ़ कर [11]बहुत छोटे कद का [12]अत्याचार।

कही छै—जिकी खाटरै डील होय सो धेठौ[1], मकर[2] भरियौ ग्रर ग्रन्यायी होय। सो ग्रौ मरद ग्रन्यायी छै। जद मालम कियौ तरै यूं हो जे थो।

तवारीख मे मजकूर छै[3]—ग्रेक बार पण फेर मरद खाटरौ नोसेरवा कन्है फरियाद करी—मो ऊपर सितम कियौ छै। नोसेरवा कही—खाटरै ऊपर कोई सितम नही कर सकै। सही तौ ग्रा छै, तैं किणी ऊपर सितम कियौ होयसैं। क्यूं ? जे तूं खाटरौ छै। तरै उण ग्ररज करी—हे बादसाह ! जिण मो ऊपर ग्रन्याय कियौ छै तिको मोसूं ही खाटरौ छै। नोसेरवा मुळकिया[4] ग्रर न्याय पहुचायौ। हजरत सैयदग्रली हमदानी किताब जखी रै तलमलूक मे लिखी छै—'कौल हिकमत रा लोगा रा, काम निसाण फिरासत रा मे। सो खातिर मे म्हारै इसी ग्राई, उवै तमाम उण ही तरह सूं लिखूं तौ बादसाहां नूं दस्तूर ग्रमल होय[5]।

सो इण तरह हकीमा ग्रापरी बातां मे कही छै—रग घणौ गोरौ, ग्राकासी नीलौ, कुरगी ग्राख्या रौ होय तिणरी परख छै—मुंहडे करड़ौ[6], बेसरम, चोर, बदमास, कम ग्रकल, निबळा विचार[7] रौ होय छै। इण सहनाण[8] सुद्दा हिडकी पतळी खोस रौ होय, तेज दिस्टी, चौड़ी लिलाडी ग्रर उणरै माथै केस घणा होय तौ हकीमा कही छै—इसा सूं डरजै, साप ज्यूं जाणजै।

निसाणी केसा री हकीमा कही छै—केस करड़ा रातड लिया[9] रग माफिक *निसाणी सूरापण[10] ग्राराम, माथा दिमाग री छै।* केस नरम निसाणी मन-भग[11] डरणै री छै। ज्यादती सलेखम री छै। रोम थोडा निसाणी समझ री छै। केस घणा खवा[12] ऊपर नै गरदन ऊपर निसाणी मनगराई[13] ग्रर मूरखता री छै। केस घणा छाती ग्रर पेट ऊपर निसाणी ग्रणमेळ प्रक्रत री ग्रर कम समझ री छै, चाह ग्रन्याव रा री छै। केस पीळा निसाणी मूरखता, दभ, ग्राप-दिखावौ ग्रर वेगा रीस चढणै री छै। केस काळा निसाणी ग्रकल ग्रर बात लाभ होणै री जाणजै। केस माफक स्याही रताई मे निसाणी मध्यम भाव गुणा री होवै।

---

[1]बेशर्म [2]मक्कारी [3]लिखा हुआ है [4]मुस्कराये [5]बादशाह उसके अनुसार कार्य करें [6]मुंह से कटु वचन बोलने वाला [7]निर्बल विचारों का [8]निशान [9]ललाई लिये हुये [10]बहादुरी [11]उत्साहरहित [12]कन्धे [13]घमंडपन।

लिलाड़ी[1] री हकीमा कही छै—कै लिलाड़ी जे चौड़ी अर ऊपर उणरे खतूत अजून सूं आडा सळ, तिसूळी[2] होय सो निसाणी वैर-भाव री अर ख्याल मत[3] भूठा री होवै। लिलाड़ी वारीक पतळी-दूवळी, नीसाणी नीचा सुभाव, निवळाई री कोताई[4] री होय। लिलाडी माफक जिण ऊपर सळ होय सो निसाणी साच हेत समझ री वीठी आ जाण पण सावधानो बुद्धिवळ री होय।

परीक्षा नाक री। सो नाक री पतळाई होय तौ निसाणी ढील नरमी मुलायमी री होय। नाक वाको, निसाणी सूरवीरता री होय। नाक चौडो, निसाणी कामी मिलणसार री होय। नाक रा वेभा[6] री चौड़ाई निसाणी क्रोध री जाणजे। जाडाई नाक वीचलो अर नाक री टीसी मातो सू निसाणी घणी करड़ाई, भूठ बोला री। नाक माफिक लम्वाई चौडाई आडाई अर पतळाई री निसाणी समझ अकल री छै।

परीक्षा काना री। कान मोटा निसाणी मूरखता अकडाई[7] री जाणजे। पण उणनू याद रौ जोर घणो होय। कान छोटा निसाणी मूरखता अर चोरी री छै। कान मध्यम भाव निसाणी मध्यम भाव अहवाल री होय। परीक्षा भवारा री। भवारा[8] मोटा घणा केसा—निसाणी जाणौ करड़ाई री वचना मे होय। भवारा लंवा काना ताई निसाणी गप्पी, अभिमानी री छै। भवारा काळा, मध्यम भाव छोटाई लम्वाई, निसाणी समझ अर दातारी री छै।

परीक्षा आख री। आख नीलं रग, मोटी तेज दिस्टी[9], निसाणी अदेखाई री छै। आख ओछी ओभरी धुडकी देणरी[10] वेसरमी री निसाणी छै। आख थोड़ी खुले, कम टमकं, सो निसाणी वेसमझपण री, थोडी मोटी प्रकत री जाणजे। आख तेज, नजर घणी टमके सो चिन्ह मक्कार वहानेवाज अर चोर रै होय। आख मे राताई निसाणी माटीपणं री[11] अर मनगरापणं री[12] होवै। आख री काळी पूतळी[13] रै दोळा[14] पीळा टिवका—निसाणी उत्पात री अर बुराई पैदा करण री जाणजे। आख जो मध्यम भाव होय—छोटाई व वडाई मे स्याही व राताई मे, सो निसाणी समझदारी, सावधानी, मतभासी, दानिस्ताई[15] री होवै।

---

[1]ललाट [2]त्रिशूल [3]मति [4]ढीलापन [5]उस जगह [6]नथुने के छिद्र [7]घमंड [8]भौंहें [9]दृष्टि [10]जल्दी गुस्से होने की [11]बहादुरी की [12]गर्वीले मन की [13]पुतली [14]चारों ओर [15]दान देन की।

परीक्षा मोहड़ा[1] री। मोहड़ो चौड़ो—निसाणी माटीपणा री। जाडा होठ—निसाणी मूरखता री जाणजै। मध्य भाव, होठ राताई लिया होय सो निसाणी चतुर धरमात्मा री छै।

परीक्षा दाता री। दात घणा होय, वाका होय, ओधा-सोधा होय तौ निसाणी भला विचार वाळा री, मक्कार व बहानावाज री, गूढ प्रकानण अर चोरी री होय। दात सगळा चौड़ा, निसाणी न्याय री अर साच बुद्धिवळ री होवै।

परीक्षा गाला री। गाल फूल्या, मास सूं भरिया, निसाणी मूरख अर करड़ा सुभाव वाळा री होवै। विगर माहीला रोग रै गाला रौ सूकापण अर पीळकापण[2], दूबळाई[3], निसाणी भूंडा सुभावा री छै। मध्यम भाव इण वाता सूं निसाणी भली खरी जाणजै।

परीक्षा आवाज री। आवाज ऊंची, भारी, निसाणी वीरता री। आवाज झीणी बारीक, निसाणी अभरोसै री[4] जाणजै। अर फिकर री जाणजै। आवाज मध्यम भाव री, निसाणी भलो किफायती अर बुद्धिवळ चतुरता री जाणजै। आवाज मे गुणगुणापण[5] निसाणी मूरखता री अर कम समझी री छै। वात कहता हाथ हलावणौ[6] निसाणी वड़प्पण अर बुद्धिवळ री छै। जोर रा वचन मे *निसाणी खूवी री जाणौ।*

परीक्षा गरदन री। छोटी गरदन निसाणी मक्कार व गरदनमार[7] री जाणजै। गरदन लावी, निसाणी वीर हिम्मतवर री कह्यो छै। मध्यम भाव गरदन, निसाणी सत्य न्याय अर बुद्धिवळधारी री जाणजै।

परीक्षा पेट अर छाती री। वडौ पेट, निसाणी अडकाई सूमड़ापण[8] अर आळस[9] री होय छै। छोटौ पेट, पतळी कमर, चौडी भारी छाती, निसाणी परिस्रमी वीर री होय छै। मध्यम भाव पेट, मीनौ, निसाणी उत्तम विचार वाळा चतुर पुरखा[10] री जाणौ।

परीक्षा पीठ अर खवा री[11]। कूबडी पीठ, छोटा खवा—निसाणी कम हिम्मत, नीच अकल री छै। सीधी पीठ, वैल सरीखा खवा—निसाणी सूरवीरता

---

[1]मुंह [2]पीलापन [3]पतलापन [4]अविश्वास की [5]अस्पष्ट बारीक आवाज [6]हिलाना [7]घात करने वाला [8]कंजूसी [9]आलस्य [10]पुरुषो [11]कधो की।

री जाणजें। साधारण पीठ, सीधा खवा—निसांणी सज्जनता व चतुरता री जाणजें।

परीक्षा हथेळी नें आंगळिया[1] री। हथेळी व आंगळिया लावी भरी हुई, निसाणी वीरता री होय छै। हथेळी व आंगळिया कोमळ, निसाणी छै—चतुराई व दातार पुरखा री। हथेळी व आंगळिया छोटी मोटी, निसाणी दरिद्र उचक्का री जाणजें।

परीक्षा पीडिया[2] री—पीडी लावी, भरी हुई, निसाणी सूरता री जाणजें। पीडी हळकी पतळी, निसाणी चतुरता री कही छै। पीडी वाकी टेढी-मेढी, निसाणी चोर मक्कार पुरखा री जाणजें।

इण भात भला-बुरा पुरखा री निसाणी हुकमी फिरासत नूं जाणणी। आदमिया नू फायदो घणो होय।

हकीमा इण भात परीक्षा कर भारी हळकै आदमिया नू जाणिया छै। जिका इसा सुभावा थकां आपरी तपस्या कर नें भला पुरखा री सगति सूं, भलां वाता आगली[3] सुण प्रवत सुधारी होय तौ चिन्ह भू डाई रा देख, विचार सू जोग अजोग ठहरावणो[4]। जिण भात यूनानिया री वात छै। हकीम अफलातून इलाही पहाड रै ऊपर वसतौ थौ। उण पहाड रै अेक मारग थौ। सो मारग रै ऊपर अेक चितेरौ[5] विठाणियौ[6] थौ। तिणनू हुकम थौ—जे कोई म्हारै हजूर आवें तरै पहला उणरी सूरत लिख म्हारै कनैं[7] लावें। जे म्हारी परीक्षा माफक सुभाव उणरा होवें तो बुलाऊ। नहीतर[8] मैं उणसू मिळू नही। जिणनूं उण हकीम सूं मिळणें री चाहना होती तरै ऊ चितेरौ उणरो रूप लिख हकीम कन्है लेजावें थौ। ती नू हकीम देख लेतौ तरै बुलावें थौ। अेक वार अेक सख्स[9] मिळणें नू आवियौ। चितेरौ उणरौ रूप लिख पेस कियौ। हकीम निसाणी देख आग्या फुरमाई जे औ म्हारै सू मिळाप करणें लायक[10] नही। आ खबर उवौ महापुरुष सुणी तरै फेर हकीम नू सदेसौ भेजियौ। आप जिमा चिन्ह फिरासत माफिक देख्या छै पहला मैं उमो ही थो पण इब तपस्या कर सारा इलाजा सू सुभाव वदळियौ छै[11]। तरै हकीम उणनू बुलाय मिळिया।

---

[1]अगुलियां [2]पिंडलियां [3]पुरानी [4]योग्य-अयोग्य का निर्णय करना [5]चितेरा [6]बैठाया [7]मेरे पास [8]वरना [9]शख्स [10]मिलने योग्य [11]स्वभाव बदल लिया है।

तीसूं सारी ही परख निसाणी फिरासत रै ऊपर न राखणी। आपरी अकल सूं विचार, कांम करणो।

पैंतीसवीं वात

छिपावणो[1] वात रो, अेक भात अदव सेती देस री रक्षा करणी जाणजै। हर अेक वात विचार जाहिर होणै, फूटणै सूं वादसाहा नूं मुल्की[2] कामा में डर घणो छै। हजरत मुसतफा जठी नूं चालता तठी नूं छिपियो राखै था। इण भात सूं वात काढता जिकी सुणणै वाळा[3] तक नू खवर नही पडती। मोटा राजा अर वादसाह आगै लडाइया रै समय मे इण भात सलूक करता था। आपरी रीत भात विचार रौ किणी नूं भेद नही देवै था।

सिकदर उगूणी[4] रै देस सूं लडतो तरै डेरा रो म्होडो[5] अरव सामो[6] करै थो। वात थारी मे कोई सरीक नही हो सकै तिणसूं थारो भेद तो विना कोई जाणै तो उण विचार अर समझ रै ऊपर रोयो चाहीजै[7]। आ वात मसहूर छै।

तीन वाता छिपी राखणी। किणी नूं जाहर करणी नही। प्रथम, आपरै हालणै[8] रो मारग छिपियो राखणो, सो वैरिया नू वेरो नही पटै[9]। दूजो, आपरो धरम पथ किंही नू न कहणो। क्यू ? जे चुगल अदेखी घणा छै। तीजो, माल आपरो छिपियो राखणो। क्यू ? जे लालची घणा छै।

सही ता आ छै–जिको गूढ थारै छै सो छानो राखणो[10] भलो। किण वास्तै ? गूढ राखणै वाळा आलम मे कम छै। हकीमा फुरमाई छै—मन मे आदमी रै दोय वात छै—या तो सपत छै या दुख विपत[11] छै। अैही दोनूं छानी राखणी छै। जो दौलत छै तो छिपी राखणी चाहिजै। तो अदेखिया री आख उण ऊपर काम न करै। लालचिया रै धक्कै सूं निचिंत[12] रहै। अर जे विपत छै तो छिपी राखजै तो मित्र लोगा नू दिलगिरी[13] न होय, वैरिया नूं मोमा मारणै रो[14] कारण न होय। तिणमूं आपरी विध छिपी ही राखणी। अेक जणै हकीम सू पूछी—अेक गूढ म्हारै मन मे खटकै छै सो किणनूं कहू, जो भला राखै, प्रकट न करै ? तरै हकीम कही—जाहिर करै किणी नूं जे उणसूं

---

[1]छिपाना [2]मुल्क के [3]सुनने वालों को [4]पूर्वी [5]मुंह [6]सामने [7]अफसोस करना चाहिए [8]चलने [9]पता नहीं चले [10]छिपा कर रखना [11]विपत्ती [12]निश्चित [13]दुःख [14]उपालम्भ देने का।

काम नही तिको क्यूं न राखै, न कहै ? तूं जो आपरो भार नही खेंच सकै तौ उवौ भार यार[1] नही उठाय सकै तौ यारी सूं वेराजी मतना होय।

सिकंदर आपरो गूढ अेक जणै नूं इतवारी[2] जाण कह्यौ थौ। पण उण तौ गूढ प्रकासियौ[3]। सो सिकदर सुणी तरै हकीमा नूं बुलाय पूछी—कोई किणी रो गूढ़ फोड़ै[4] उणरी सजा काई होणी चाहीजे ? हकीम कही—पूरो व्योरो फुरमावो। तौ सिकदर कही—मैं अेक जणै सूं गूढ कहियौ थौ, उण प्रकासियौ तीसूं मन म्हारो वेराजी हुवौ छै। हू चाहू छूं उणनूं कुछ सजा देऊ। हकीम कही—हे वादसाह ! उणसू तू वेराजी मतना होय। तू हो जे आपरो गूढ आप प्रकासियौ। तूं अपणौ गूढ क्यू कहियौ ? गूढ उही छै जे किणी नूं कोई कहै नही। कहै पाछै गूढ रह नही सकै छै। विगर अरथ[5] आपरी कोई ही वात मोहडा[6] सूं भूल कर ही नही कहणी। पेट मे वात राखणै वाळा आलम[7] में कम मिनख छै।

छत्तीसवीं वात

जाणकारी समय री। सो वादसाहा अर दूजा मोटा मिनखा नयाणा[8] सम-झदार खवरदारा ऊपर जाहिर छै। ऊमर विजळी रै भवकै दाई[9] जाय छै। जीवण[10] दरियाव री लहर री भात छै। जिकी घडी जीवण री वीतै छै नो अमोलक[11] जवाहिर छै। तिणरो मोल जाणियौ चाहीजे। जीवण मे घडी गई सो पाछी नही आणी जाय[12]। जो घड़ी वाकी छै सो पडदा[13] माही छिपी छै। कुण जाण सकै छै जे कितरीक छै ? घडी जे गई ज्यू और आगै आवै सो आपरी ऊमर जाणजे। इण ऊमर मे आपरो काम कियौ ही चाहोजे। इसा अथिर[14] समय मे साहिब दौलत ऊ छै जिको दान, अहसाण, क्रपा-मया कर मिनखा रै ऊपर जस नेकनामी आपरी राखै छै। सपत, दौलत, सरीर अथिर छै। मिनख गै जस थिर जीवण छै।

अेक वादसाह री सभा माही अेक पुरस रा घणा हो घणा वखाण[15] हुवा। *सभा वाळा उणरै गुणा री घणी तारीफ कोवी। सो वादसाह नू उणरै देखणै*

---

[1]मित्र [2]विश्वासनीय [3]प्रकट कर दिया [4]गूढ़ बात कहदे [5]मतलब [6]मुंह [7]दुनिया [8]सयाने [9]बिजली की चमक की तरह [10]जिन्दगी [11]अमूल्य [12]वापिस नही लाई जा सकती [13]पर्दा [14]अस्थिर [15]बखान।

री तबियत हुई। तरै उणनू बुलवाइयौ[1]। उवौ महापुरख सभा माही आइयौ। सो सलाम किया पाछै कहियौ—बादसाह सलामत नूं हजारा बरसा री ऊमर होयज्यौ। बादसाह कही—तूं पहली बार मे ही उसौ करडौ वचन कहियौ सो थाहरै जाणपणै सूं अजब दीठौ। उवौ पुरख जवाब दीन्हौ—जीवण आदमी रौ इण सरीर सू ही नही छै। सगळा[2] हो जाणै छै जे आदमी तो हजारा बरसा नही जी सकै। पण नेकनामी रौ जस दूसरौ जीवण ही जाणजै[3]। सो इण सरीर रै नास हुवा पछै भी आबाद रहै छ। सो म्हारी गरज आ थी—जे हजरत रौ जस आलम मे हजारा बरसा तलक कायम रहै। अैवान[4] नोसेरवा रौ आलम मे ऊचाई राखै छै, सगळा[5] लोग जाणै छै। ऊचाई उणरी ऊचा कागरा सूं अर भळै[6] जाळी-झरोखा सूं नही छै। कितरा ही ईट पत्थर ऊपरै-ऊपरी मेलणा, कितरा ही जाळी-झरोखा बारणा उणमे खोलणा की सोभा नही राखै छै।

पण अकल सू देखणै री ठौड़ आ छै—उणरै अैवान बादसाही रै सहारै अेक बुढिया डोकरी री झूपडी रही थी। सो उवा बात इण भात मसहूर छै। जद अैवान बण नै तयार हुवौ तद बादसाह अपणै दरबारी हजूरिया[7] सयाणा समझदार हकीमा नू हुकम फुरमाइयौ—जे देखौ, इण इमारत मे कोई खलल अेब रहि गयौ होय तौ उणरै हटाणै रा जतन[8] मे मसगूल होवा। इणा सारी तरफा इमारत देख अर पाछै आय अरज करी—आ बडी इमारत इसी सबळी[9] अर महीन काम री बणो छै जाणै छोटौ वैकुठ ही छै। कोई खलल अेब इणमे नही छै। पण अेक बात आ छै—इण अैवान रै खूणा ऊपर[10] अेक छोटौगो घर छै तिका मे जो धुवौ होय सो सारी भीता नू काळी करै छै। औ घर परौ होय तौ घणौ ही मुनासिब छै। इसी खोट इण अैवान सूं दूर ही करणी जोग छै[11]। नोसेरवा कही—औ घर अेक बूढी औरत रौ छै। बूढो मरण सिराणै पहुची छै[12]। जणा अैवान रौ सूत खंचियौ[13] थौ तरै बुढिया रौ घर आडौ आयौ तो मैं अेक आदमी उण कन्है भेजियौ अर कह्यौ—जे औ घर म्हानू महगै मोल वेच दे क इणरो अेवज ओर कोई आछी ठौड़ तोनूं देऊ। तद उवा बूढी डोकरी सदेसो भेजियौ—हे बादसाह! मैं इण घर मे जाई छू[14], इतरी मोटी हुई छूं,

[1]बुलवाया [2]सभी [3]जानना [4]राजप्रासाद [5]सभी [6]फिर
[7]दरबारी [8]यत्न [9]मजबूत [10]कोने पर [11]योग्य है [12]मरने वाली है [13]मकान की नींव की जगह कायम की [14]जन्मी हूं।

में तो तमाम आलम[1] थारै देखूं छूं, पण तूं म्हारो ओ निपट छोटो घर नहीं देख सकै छै ? इसा वचन सुण हूं चुप रह गयो अर कुछ ही कही नहीं। अेक वार, उणरै मोर्वै[2] सूं जे धुवों आवै छै। तिणसूं अेवान री सारी भीत काळी होवै छै अर मिनखा री आरया नूं खोट पहुचावै[3] तीसूं सदेसो भेजियो—ओ धुवों क्यूं करै छै ? तरै जवाब भेजियो—आपरै वास्तै कुछ राधूं छूं। सो मैं कुछ नही कही अर रात पड़िया थाळी आछै जीमण री[4] उणनूं भेजी अर कहवायो—जे इण भात म्हे तोनूं भात-भात रा जीमण नितका भेजस्यां[5], तू घर मे आग मता बाळे[6], धुंवा सूं म्हारो अेवान काळो होय छै। तो जवाब भेजियो—ससार में किनराक भूखा रोवता रहै छै। हू ओ खाणो खाऊ तो कद रवा[7] होय ? हू आपरै पेदा कुनिंदा सूं डरू छूं। सत्तर वरस हुवा जवा री रोटी व लाल री हलाल री खाधो छै सो हराम रा खाणा नही खाऊ। म्हारै घर नू रहणे दे, ओ घर थारै अदल[8] री सोभा छै। उमराव जद देखै तू पुराणै न्याय सूं रवा नही राखै छ तो और ही पण रैयत रै माल नू हाथ चालाकी नही करै छै। दूजो ओ छै कै ओ अेवान थारो सदा नही रहसै[9] पण वात म्हारै घर री ससार माही घणा दिन रहसी। ओ वचन उणरो मोनूं पसद आयो जणा उणरै पडोस सूं राजी हुवो।

उण वुढिया डोकरी रै अेक गाय रहै थी, सो प्रभात चरणै नू उछेरती[10], आथण[11] पाछी लाती। अेवान रै म्होडा आगै विछायत गिलमा री[12] सदा विछनो सो गाय तिणरै ऊपर कर निकळती। जणा अक दिन अेक हजूरी कही— हे डोकरी ! ओ चलण मता करै[13]। तू कारण बादसाह रो तोडै छै अर धाक वादसाहत री तोडै छै। तो डोकरी कहो—कारण वादसाह रो अन्याव[14] सूं तूटै छै कै न्याव सू ? वादसाहत री धाक मूरखता सू तूटै छै कै अकल सू ? हू जिको करू छू तिको वादसाह री नेकनामी नू करू छू अर आगै भलो चाहूं छूं। प्रभू री गोन[15] उवा साची कही। किण वास्तै ? जे हजार वरस गुजरिया छै, पण वात वडो डोकरी री भूपडी री व अेवान नोसेरवां री ताजी अर नवो

---

[1]ससार [2]धुंआं निकलने की चिमनी [3]नुकसान पहुचाना है [4]अच्छे खाने की [5]हर रोज भेजेंगे [6]मत जलाना [7]वाजिब [8]न्याय [9]रहेगा [10]चरने के लिए बाहिर निकालती [11]सध्या [12]गिर्दों की [13]इस प्रकार का व्यवहार मत कर [14]अन्याय [15]सौगंध।

छै। बात री चलण, आछै री बदळी देखौ। समै अबार ताई खराब नही करै छै—अबान नोसेरवा नूं।

हकीमा कही छै—दुनिया री भरोसो नही चाहीजै। आकल¹ ऊ छै जे दौलत अथिर² पराई रै मन न बांधै अर जाणै कै जिणनूं प्रभू बादसाही दी, हक उण दौलत ऊपर उणरो जोग छै। हक यू छै—कै आछै चलणां³ सूं भलाई बाटौ तौ ससार मे जस नाम होय। अर मारग सरम दातारी रौ नही छोडै तौ अखीर में⁴ मुगत होय। कवादसाह देस आपरो जोर अक्ल पक्की भली रा सूं जबत कियो थो। रीता भातां⁵ भली राखी थी। निसाणी अेक उणरो आ थी—कवीस्वरा सूं प्यार राखै थौ अर कहै थौ—नाम दोय बसत सूं कायम रहै छै—अेक तो गुणिया री कविता सूं अर अेक इमारत सूं। नजम फरदोसी रौ नही होतो तो कुण जाणता⁶ कोई सभा कै काउस री नै लडाई रुस्तम अर इस-फदयार री हुई? नजम निजामी सूं नाम बहराम रौ ऊंचो हुवो। कविता अनवरी री सूं तारीफ सजर री जाणी।

सुलतान महमूद बाग राखै थौ, सो उबो बाग निपट भलो थो। धरती रै ऊपर बैकुंठ थो। सो आपरै बाप नसरुद्दीन सुबकतगीन नूं मेहमानी निपट भली कीवी। जीमाया पाछै⁷ बेटो बाप सूं पूछी—औ बाग आपरी निजर माहै किसो छै? तरै नसरद्दीन कही—हे पुत्र! बाग खरो भलो छै। पण उमराव जिमो चाहै उमो बाग बणा सकै छै। बादसाहा नूं चाहीजै⁸—इसो बाग बणावै कै औरा सूं न बण सकै। उसो मेयो दूसरो जायगा हाथ नही आ सकै। गुल-तांन फुरमाइयो—ऊ किसो बाग होसी? तद जवाब पाइयो⁹—हूत¹⁰ अन-पालण रा अर महमान रा फजला सायरा हकीमा रा बाग माय बैठाण, तो फूल लागै तिणनूं ठंड जाडै री पर लू गरमी री नही लागै। निजामी कह्यो—इण बाग में इमारत मोटी कीवी। महमूद सूं हर अेक सोभा बैकुंठ ऊपरला री थी, सो न देखीजे छै। ऊंची ईंट अेक उण माही सूं नींव¹¹ उण सारो री रही छै—पगा सूं कविताई। नोसेरवा बाग बणाणै रै विचार में था तरै बुज-रची मेहर कह्यो—हे मोटा बादसाह! पाणी धरती पर देस हमार थारै हाथ छै

¹समझदार ²अस्थायी ³अच्छे चालचलन से ⁴अंत में ⁵सामाजिक रीति-नीति ⁶कौन जानता ⁷खाना खिलाने के पश्चात ⁸बादशाह को चाहिए ⁹उत्तर मिला ¹⁰बहुत ¹¹नींव।

सो इण नदी रै कांठै[1] बाग बणाव । इसो बणाव सो घणा समय तक रहै । ओ बाग ऊमर रो कदै नीलो छै अर कदै ही सूकसी ।

संतीसवों बात

जाणकारी हक रा गुणा री । सो मानणो हक रो, गुण संसार मे विसेस मोटा पुरखा नूं जोग छै। क्यो ? जे ई बात ऊपर बडी जात सुभाव घराणै री निसाणी परतख[2] छै । प्रभू री नियामता[3] रा हक दिया पछै देणो हक ऋपा मायता[4] रो कियो चाहीजै । प्रभू कही छै—म्हारी रजामंदी इणरी रजामंदी सूं वधी छै। वडा कही छै—जिको मांवाप नू राजी राखै सो प्रभू नूं राजी राखियो । इणा रा हीडा[5] करणै सू आपरी बदगी गिणै छै। मायता री रजामदी सूं ससार मे दौलत अर आगोतर मे कारण छुटकारै रो[6] छै ।

मालिक दीनार मक्का गयो थो । मो मिनख जात सू[7] डेरै आइया । मालिक रात मे सपनो दीठो—जे दोय फरिस्ता छै सो माहोमाहे कही—इण सगळां री[8] जात कबूल हुई । अेक अहमद बेटा बलखो री न हुई तो मालिक जाग परभात काफला खुरासाण मे गयो । सो अहमद बेटा महमूद बलखी रै नूं तळास करै थो । सो देखै तो बडा डेरा मे अहमद भलो जवान तापड़[9] पहरिया बैठो छै। तिण मालिक नू देख उठ सलाम कीवी अर कही—हे मालिक ! तैं सपना मे जिणरी जात अणकबूली[10] जाणी सो हू छू । मैं ओ तापड इणी वास्तै पहरियो छै। मालिक मन मे हैरान हुवो अर कही—प्रभू री सूंस[11] थारो हियो[12] इसो उजळो[13] छै । मैं जाणो चाहू छूं, जात अणकबूली रै माही कारण काई छै ? अहमद कही—मैं जाणू छूं । मालिक कही—तो मोनू बताय । अहमद कही—म्हारो बाप मोमू नाराज हो रहियो छै। मालिक पूछी—थारो बाप कठै छै ? कही—इण काफला में छै। मालिक कही—कोई मोनूं साथ देय सो थारै बाप नू बतावै तो उणनू राजो कर तांनू बगसाऊ[14] । अहमद कोई नूं साथ दियो मो दोनूं उण कन्है गया । उठे जाय दीठो—जे अेक बूढो बडी जीनत[15] सू कुरमी ऊपर बैठो छै। घणा लोग ऊभा

---

[1]किनारे पर [2]प्रत्यक्ष [3]धन-दौलत [4]माता-पिता [5]कार्य [6]मुक्ति का [7]धार्मिक यात्रा से [8]सभी की [9]टाट का हलका कपड़ा [10]अस्वीकार [11]सौगंध [12]हृदय [13]उज्ज्वल [14]माफी दिलाऊं [15]शाभा ।

छै। सो नेड़ा जाय सलाम कीवी। उण जवाव दियो। तरै मालिक पूछो—हे सेख! थारै कोई लड़को छै? इण जवाब दीन्हो—हा छै, पण तिणसूं हूं नाराज छूं। तो मालिक कही—हे पीर! जाणै छै, आज रौ समै ऊ नही छै जे दोई मन मे किणी सूं आजार[1] राखै। दीन बक्सण नूं नाहरो छै, वैरिया रो छोड देणौ छै। आपरै बेटा नूं पाप मे न राखियो चाहै। हू मालिक दीनार छूं। काल्ह[2] इसो सपनो दीठो छै तीसूं तो कन्है आयो छूं। प्रभू रै वास्तै उण डावडै री चूक माफ कर। जद बूढ़ै या वात सुणी तो ऊभो होय[3] कहणै लागियो—हे मालिक! तूं न्यारो मरद आयो, प्रभू नूं वकसारण मे लायो। मैं कबूल कीवी, उणरी चूक माफ कर दीन्ही। हू राजी हुवो। मालिक बूढ़ै रा बखाण किया[4]। फेर बेटा रै डेरै वधाई देणै आइयो। सो इणनूं दीठो तो तापड परो नाख नै अवल पोसाक पहर साम्हो आय कही—हे मालिक! तोनूं प्रभू भलाई रो बदळो देवै, था म्हारै अर बाप रै बीच सलाह कराई तीसूं म्हारी जात्रा सफळ हुई।

माता री रजामदी रो नफो बाप री रजामदी सू घणो ज्यादा छै। कही छै—वैकुंठ माता रै पगा नीचै छै। दूजौ हक नेडा[5] कवीला रो छै सो इणा री वरदास्त[6] करणी, इणा सूं अहसान करणो। जे पर-गाव छै तो सलाम विणती सू, अर जे भूखौ छै अर हाजिर छै तो नकद जिनस[7] सूं। सभागिया[8] नू मुजरै जाय अर बखाण उणरा करणा। हक गुरु रो छै जिको गुरु री खवर लेय कारण करै तिको दुनिया में अर अगोतर में फळ भला पावै। हक पडोसिया रो, सो घर रौ तथा बाग रौ पाडोसी होय तिणरौ कारण राखै तौ घडा कही छ—उणसू प्रभू राजी होय। सो पाडोसी रो कारण औ छै—जे आपसू वण आवै[9] सो उणरो भलौ करै। आपरी तरफ री तथा औरा रै तरफ री आपत[10] उणसू टाळै अर जो भूखौ बेसामान होय तौ उणा री खबर लेवै, उणरो हाल देख मदत करतौ रहै।

अेक भूखो वखतावर[11] रै पडोस घर मे रहै थो। अेक दिन उण वखतावर रो बेटौ भूखा रै घरा गयौ अर दीठौ—ऊ मरद आपरै कवीलै समेत[12] भोजन करै छै। सो ऊ डावडो[13] उठै ऊभो रहियो अर उण खाणा री चाह राखी।

---

[1]आपत्ति [2]कल [3]खडा होकर [4]प्रशसा की [5]नजदीक [6]बरदाश्त [7]वस्तु [8]भाग्यवान [9]बने [10]आफत [11]दानी [12]सहित [13]लडका।

पण किण ही कुछ दियो नही सो डावडो रोवतो आयो। तो मा वाप पूछी--क्यू रोवै छै ? जरै डावड़ो कही—पाड़ोसी रै घर गयो थो, उवै सब घर वाळा जीमै था[1], मोनू न दियो। जणा वाप रै हुकम सू तरह-तरह रा भोजन हाजिर हुवा पण वो जीमै नही, ऊभो ही रोवै छै अर कहै छै—मोनू पाड़ोसी रा घर रा खाणा लाय देवो। तद वाप पाड़ोसी रा घर रै वाहर आय ऊभो रहियो अर उणनूं वुलायो अर कही—हे दरवेस ! आ नही चाहीजै कै तोमूं म्हानू दुख पहोंचै[2]। दरवेस कही—प्रभू न करै मोसूं किणो नू दुख पहोंचै। वखतावर कही--इणमूं काई थोड़ो दुख होसी, जे म्हारो डावडो थारै घर मे आयो, थां सव घर रा खाणो खायो पर डावड़े नू नही दियो। ऊ रोवतो वाहर नू आयो, हमार तलक ऊभो रोवै छै। किणी वसत सू राजी नही होय छै। थाहरै घर रो जीमण[3] मागै छै। दरवेस पलक नीची नाख[4] कही—हे साहिव ! इण वात में भेद छै। मोसूं मत पूछो। क्यू ? जे म्हारो पडदो फाटै छै[5]। साहिव घणै हठ सूं पूछो—जे साचो भेद कह वताय। तो दरवेस कही—म्है सारै घर रा जीमण करै था सो म्हानू हलाल थो, पण थारै वेटा नू हराम थो, इण वास्तै नही दियो। इतरी सुण साहिव कही—धन्य छै परमेस्वर, तोनू इसो उवो खाणो काई थो जे अेक नूं हलाल अर अेक नू हराम होवै। दरवेस कही—कुरान में पढियो छै कै नही, तिण मे आग्या छै कै अणहोत मे मुरदार[6] हलाल छै। सो म्हारै घर रा नू तीन दिन रो फाको निमरिया[7] किण ही भात खाणै नू नही जुडियो। आज फलाणै उजाड़ मे अेक गधो मुवो दीठो। ती रो मास काट लायो थो सो राधियो थो। उवो मोनूं हलाल अर थारै वेटा नू हराम थो। इतरी वात सुण साहिव हैरान हुवो अर गेय नै कहणै लागियो—जे प्रभू मोनूं कयामन मे पूछसै[8] कै थारै पाडोसी मे इतरी विपत[9] थी पण तू वेखवर थो। तरै हू काई जवाव देस्यू[10] ? इतरी कह दरवेस रो हाथ पकड आपरै घर मे लायो। नकद मता[11] थी सो आधी उणनू दी। फेर तिण ऊपर प्रभू इसी कृपा करी जे उणरै माल घणो वधियो।

सहर वादसाह रो घर छै, तिणमें जे भूखा वेसामान होय तिणरी खवर

---

[1]भोजन कर रहे थे [2]पहुंचे [3]खाना [4]शर्म के मारे पलकें नीची कर के [5]मेरी पोल खुलती है [6]मरे हुए जानवर का मांस [7]भूख मे निकलने पर [8]पूछेगा [9]विपत्ति [10]क्या जवाब दूंगा [11]नकद माल।

लेणौ जोग छैं। आ बात मसहूर छैं—यूसफ दुकाळ[1] बरसा मे मिस्र देस रौ बादसाह थौ। सो नित दूबळौ होवै थौ। तरै उणसूं कोई दूबळा होणै रौ कारण पूछियौ। तरै बादसाह जवाब दियौ—रोग छानौ राखूं छूं[2]। हकीमा कही—रोग कहौ जे औखध करा। बादसाह कही—सात बरस सूं मिस्र री बादसाही करूं छूं सो जीव म्हारै री आ चाह छै—जे उणनूं जवा री रोटी सूं धपाऊ, सो नही धपायौ छै। तौ हकीमां कही—इतरौ कमालौ[3] किण वास्तै करौ छौ ? बादसाह कही—भूखा री करमगत रै माफक करूं छूं। मैं डरूं छूं कै अेक रात भर मिस्र देस में भूखौ रहै, अर मैं धायौ[4] होऊ तौ मोनूं कयामत में पकड होवै।

कहै छैं—बादसाह रात रा अेक खासा सूं बाहिर निकळ हकीकत सुणतौ सो अेक सियाळा[5] री रात मे अेक मसीत[6] कन्है जाय नीसरियौ[7]। उठै अेक फकीर नूं नागौ[8] दीठौ, जे ठड सूं धूजै छै अर कहै छै—हे प्रभू ! औ बादसाह दुनिया रौ, थारै माल नूं आपरै जीव रा सुख नूं खरच करै छै। भूखा दूबळा री काई खबर न राखै। औ दिन कयामत रै बैकुंठ मे होयसी, तौ थारी सोस[9] बैकुठ मे पग नही रखस्यूं। बादसाह इतरा बचन सुण मसीत में गयौ अर अेक जामौ[10] अर थैली रोकड़ री उणरै आगै मेल दीनता सूं कही—मैं सुणी छे, दरवेस बादसाह बैकुंठ रा होयसै। आज अठै म्है बादसाह छा सो थासूं सलाह करा छा, काल्ह थै बादसाह होवौ तरै कुमया मत कीज्यौ[11] अर म्हारी हिमायत मत छोडज्यौ।

दूजौ हक महमाना रौ जोग[12] छै सो महमाना नूं कारण राखणौ। कारण महमान री औ छै—उणनूं प्यारौ राखणौ, उणसू इसी मनुहार करणो तिणसूं उणरै कारण इज्जत वधै। उणरी रजामदी ही करणी। हकीमा कही छै—महमान साम्हौ मत देखजै, कुण छै ? अर आपरा बडप्पण रै समै आपरै साम्हौ देख। अेक बात मसहूर छैं—तलहा नूं उवाकौ हुवौ कै अेकलौ कैस रा कबीला मे आय उतरियौ। सिरदार कबीलै रौ, मालिक रौ बेटौ थौ सो इणनूं पिछाणियौ[13] नही, कारण कुरब[14] मे कमी कीवी।

---

[1]अकाल [2]छिपा कर रखता हूं [3]दु:ख [4]भोजन से तृप्त [5]सर्दी
[6]मस्जिद [7]निकला [8]नगा [9]तुम्हारी सौगध [10]पहिनने का कपड़ा
[11]नाराजगी मत करना [12]योग्य [13]पहिचाना [14]इज्जत।

तलह तौ आपरी भारी खमाई[1] जात व सुभाव सूं ज्यूं हुई गुजरांन करनें हालियौ। पाछै मालिक नूं मालम हुई जे फलाणो थौ, तीसूं सरमिंदौ होय उजर खमाई रौ लिख रुको[2] पाछा सूं भेजियौ। जिणरौ मजमून ओ छै—मैं आपनूं नही जाणिया, खिदमत मे तकसीर हुई। उम्मेदवार छां—थे वडा छौ, तकसीर माफ करावज्यौ। सो तलह जवाब मे लिखियौ—थां उजर लिखियौ सो मन मे कुछ मत आंणौ[3]। मैं इसी हजार भूल ओक उजर सूं माफ करूं, पण ऊ वचन के न पिछाण्यौ[4] सो काचौ छै। ऊ नर मया वडम रा सूं दूर छै। जे महमानी में वडां रा हीड़ा करणा[5], ओ वडा पुरखा री वडदातारी रौ राह नही छै। सरत[6] पाहुणाई करणै रौ[7] आ छै—सूरज व मेह दाई सारै बराबर चमकै, वरसै तौ हक उणरा वडप्पण माफक कियौ। जो छोटौ छै तौ अहसांन दातारी आपरी जाहिर कीवो छ। तकसीर खिदमत वडां री मे कारण सरमिंदगी रौ छै। अर कृपा निवळाई सूं करणै मे कारण पछतावा[8] अर अपजस[9] रौ न छै। कितराक वडा हुवा छै जे आपरा वैरिया सूं रिआयत कीवी छै. महमानी जे कीवी छै। जिण तरह तवारीख मे लिखी छै—किरमान मे ओक वादसाह थौ। वडौ दातार, पाहुणा रौ पीहर[10] अर अहसान री हद थौ। जिको हो उणरै गाव मे आवतौ[11] रसोवडै मे उणरै हो रोटी खावतौ। जितरै दिन सहर में रहतौ उतरै दिन दोनूं टका रौ[12] खाणौ उणनूं पहोंचतौ।

अक समै अजादउद्दोला लस्कर वडा सू उणरौ देस लेणं आयौ। पण इण वादसाह रौ जोर नही थौ सो कोट रैं माही पैठौ[13]। उणरै साथ सू मोरचा ऊपर वैठौ लडतौ। आथण[14] के रात पडिया अजादउद्दोला रौ लस्कर धापनै खाय इतरौ खाणौ भेजतौ। तौ अजादउद्दोला सदेसौ भेजियौ—जे प्रभात सूं आथण तक तौ लड़णौ अर रात मे खाणौ मेल्हणौ, इणमें कारण काई छै? तरै इण जवाब भेजियौ—लडाई करणी माटीपणौ[15] छै अर यो जीमण भेजणौ मिनखाचारौ[16] छै। थें पण म्हारा वैरी छै अर आयौडा छै तीसू पाहुणा छै।

---

[1]विनम्रता [2]पत्र [3]मन मे कुछ मत लाओ [4]पहिचाना [5]बड़े लोगों की खातिर करना [6]शर्त [7]मेहमान की खातिर करने की [8]पश्चाताप [9]अपयश [10]मेहमानों को उनके घर का सा आदर देने वाला [11]आता [12]दोनों समय का [13]अपने किले के अन्दर घुस कर बैठ गया [14]सन्ध्या [15]बहादुरी [16]मनुष्यता।

सो कोई म्हारै गाव आवै अर ऊ रोटी आपरी आप खावै आ मुरवत नही छै। जद अजादउद्दोला आ बात सुणी तौ दिलगीर[1] होय कही—जिणमें इतरौ मिनखाचारौ होय उणसूं लड़णौ मुरवत नही। सरत और महमानदारो रो आ छै—जो महमान सूं चूक गुनाह होय तौ उणरै जी मे गुनाह सूं दरगुजरै।

तीन सौ वदीवान मान वेटा जायद रा कन्है वैरी पकडिया आया[2]। तरै चाही—इणा नूं मारणं री आग्या करै। जद अेक डावड़ै[3] वदीखाना मे उठै कही—हे अमीर! तोनूं प्रभू री सोस छै, पाणी पिवाड़[4], प्यासौ मत मारै। मान वेटौ जायद रौ फुरमाई जणा प्यालौ पाणी रौ भर उणनूं दीनौ। फेर कह्यो—हे अमीर! म्हारी तमांम ही फौज प्यासी छै, हू अेकलौ[5] पाणी न पीऊ। जे पीऊ तौ वेमुरीत[6] होय। सगळा नूं पाणी पियाव। मान रै हुकम सूं सवनूं पाणी पायौ। तरै डावड़ौ ऊठ नै फेर कह्यो—हे अमीर! म्है सगळा थारा पाहुणा[7] हुवा सो पाहुणा री इज्जत वाजिब छै। महमान मारणा दातारा री रीत नही छै। मान डावडा री समझ बोल नूं देख इचरज[8] मे होय, सगळा वदीवाना नूं छोड दीना।

अेक उमराव री कितरौ ही माल अेक जणा रै माथै थौ सो ऊ देणं री ढील करतौ थौ। जद उणनूं मोहसल नूं सौंपायौ[9]—जे रिपिया वसूल करै। मोहसल उणनूं घर ले जाय धान पाणी खाणं-पीणं नूं नही दियौ। तौ उण रोय मोहसल सूं अरज करी—तूं मोनूं अेक वार अमीर कन्है लेय हाल, अरज होय सो कहू। मोहसल नूं उण ऊपर दया आई जणा उणनूं अमीर कन्है लेय गयौ। आगै उठै भुजाई जीमता था[10] सो पण मोहसल उणनूं भेळौ ले जीमणं वैठियौ[11]। अमीर री उणरै ऊपर निजर पड़ी तौ उण मोहसल सूं कह्यो—औ सख्स आज म्हारैं रोटी खाई तीसूं पाहुणौ हुवौ छै। सो इणनूं दुख देणौ मुरवत[12] नही छै। मै लैणौ वग्सियौ[13], इव छोड देय सो आपरै घर जाय।

और हक माफ करावणं वाळं री लाजम छै। जिकौ ही पहला री चूक माफ करावसं, जे नरमो दीनता सूं कहसं। सो मानणौ जोग सवाल करणं वाळा

---

[1]दुखित [2]कैद हो कर आए [3]लड़के [4]पानी पिला [5]अकेला [6]बेरहमी [7]पाहुने [8]आश्चर्य [9]सौंपा [10]विशेष प्रकार का खाना खा रहे थे [11]शामिल बिठा कर खाना खाने लगा [12]ठीक [13]कर्ज माफ किया

नूं निगस फेरै, तौ सात दिन ताईं ईस्वर री कृपा रा देवता उणरा घर दोळा[1] नहीं फिरै ।

सुलतान इवराहिम आदिम कहता—अै मागणै वाळा दोसत छै सो घर-घर वारणै आवै छै[2] अर कहै छै—कुछ होय सो ही देवौ, थांहरै वास्तै उठाय ले जावा । अत रा घर मे मेलस्या, उठै दस गुणौ दिरावस्या[3] ।

दूजौ हक, चाहना पैला री चूक वखसावण वाळा री रिआयत करणी । किण वास्तै ? कही छै—जे माफी री अरज छै सो दीनता सूं छै । परायी माफ करायसी सो मिनख वडो होयसी । इसा पुरखा रा[4] वचन रौ कारण करणौ जोग छै । वात इमा मोटा री गुनाहगारा रै वास्तै सुणणी[5] मभागिया रौ सुभाव छै । अेक असराफ अेक गुनाहगार रै वास्तै मनसूरसाह सू वखसावण री करी । खलीफै कही—इण गुनाह वडौ कियौ छै । तौ ऊ असराफ कही—हू वडौ गुनाह तौ वखसावण री अरज ही करू छूं । छोटा छोटा गुनाह तौ विगर अरज ही वस्सौ छौ । इया वात खलीफै नू पसद आई सो गुनाह वस्सीस करी ।

साहवान दौलत रा नू माफ करणी चूक जेरदस्ता री[6] निसाणी वडापण अर हिम्मत री कही छै । अरज करणै वाळा रौ वचन वहानौ छै कै जिणमू इणां री दया जाहिर होय छै । अेक नू किणी खिदमत मे चोरी रौ नाम किया पाछै धणी कैद फुरमाइयौ । सो मुद्दता तलक[7] उणरी वात ही न पूछी । अेक मोटा पुरख पराई भली कहणै रौ हक याद रासणै मे नामी थौ[8] सो इणरौ वदीवान सूं हेत थौ । उवौ वादसाह नू लिखी तिणरौ तत औ छै[9]—चूक माफ करणौ मोटा रौ विरद[10] सुभाव छै । ऊ फकीर वदीवान दुखा मे फस रह्यौ छ, मरणै नू पहोचियौ[11] । हू जाणू छू सुभाव मोटौ आपरौ वदीवाना नै छोडणै नूं वहानौ जोवै छै । दामण[12] उणरौ इण चूक सू पाक छै नौ खलामी री इसारत[13] होय । जो चूक उणमें छै तौ माफ फुरमावौ । जो इण दोनूं वाता मिवाय और मुरत छै तौ गुनाह नू वलसियौ ही चाहीजै । जद रुक्कौ वादसाह नू पहोंचियौ तौ ऊ आछी तरह लिखियोडौ देख जवाव मे लिखी—था

---

[1]घर के इर्दगिर्द [2]दरवाज़ पर आते हैं [3]दिलाएँगे [4]पुरुषों के [5]सुननी [6]कमज़ोर [7]बहुत लंबे समय तक [8]मशहूर था [9]उसका सार यह है [10]विरद [11]मरने वाला है [12]दामन [13]संकेत ।

वखसावौ तिणरौ काम सुधरै ही। जे थाहरै वगसावण रै कागद सूं किया-अणकिया चूक नूं माफ कियौ अर कैद सूं छोड दियौ। थाहरै कहिया सूं[1] जीवदान देवा तौ फेर किणी नूं गुनाह क्यूं न माफ करा। पण हद्द रो मरा मे वखसावण री हद्द न छै। विसेस भला आदमिया नूं उण काम में माफी री नही कहणी। प्रभू कहो छै—म्हारी हद्द मे थे कृपा मया मतां करौ। तमगाजखां रै समै मे अेक चोर नूं जे पकड लाया सो चोर घणौ जवान व रूपवान थौ। उणरै रूप रा कितराक वखाण लिखजै[2]। तमगाजखा फुरमाई—सहर रै चौक माही हाथ काटौ। सारा उमराव हकीमा घणी दीनता सूं अरज करी—इणरी चूक[3] म्हां सगळां नूं ही[4] थे वगसौ। इण काम में म्हारौ कुछ ही दखल नहो। प्रभू आप ही फुरमाइयौ छै—चोर रा हाथ काटो। तौ सगळा कही—इमा नाजुक हाथा ऊपर म्हांनूं दया आवै छै। कही—थां चोर रै नाजुक हाथा रै ऊपर मत देखौ। जिणां रौ माल चोरियौ उणा रा मन रै दुख साम्है देखौ[5]। थानूं चाहोजै—इसी जायगा रिआयत मतना करावौ। अर रिआयत हक किणरौ छै, जिकौ थोड़ी संध[6] राखतौ होय या कुछ खिदमत की होय। जो उसीलौ अौ थोडो छै पण मोटा छोटा नूं घणौ करै छै तिणसूं फकीर नू निवाजै छै।

अेक सख्स किणी रौ घर भाड़ै लियौ थौ, कितराअेक दिन रहि परो गयौ[7]। सो दूजै देस मे उवौ वढ़तौ वढतौ जे साही उजोर हुवौ। अठी सूं घर भाड़ै देणै वाळौ फकीर ही हालतौ हालतौ उठी आवियौ[8]। वजोर री पोळ आयौ[9], माही नू पैसणे लागियौ[10] तौ दरवान पूछी—तूं कुण छै? इण कहो—वजीर रौ आसवान[11] छूं। घर भाडे दीनी छो सो आस कर आयौ छूं—जे हक म्हारौ पाऊ। मोनूं कृपा कर मोटौ करै। दरवान हसियो अर कहो—हे मरद! तूं भोळौ छै। घर भाड़ै दियौ थौ तिणनूं हक विचारियौ छै, इतरी राह काट आयौ छै, जे हक पाऊ। जा, आपरै काम लाग। होणहार[12] सूं वजीर डयोढ़ी रा पड़दा[13] कन्है माही ऊभौ थौ, अै वाता सुणं थौ। दरवान उठी नू देखियौ तौ कहो—अेक जणौ कहै छै— आपरौ आसवान छूं, घर भाड़ै दियौ थौ, तौ हू मना

[1]तुम्हारे कहने से [2]उसकी कितनी प्रशंसा की जाय [3]गल्ती [4]सब को ही [5]दुःख की ओर देखो [6]जान-पहिचान [7]चला गया [8]आया [9]वजीर के दरवाजे पर आया [10]घुसने लगा [11]आशा करने वाला [12]होनहार [13]पर्दा।

कियो—जे इसा सहल उसीला पर[1] वजीर सूं मिळ नहीं सकै, जा श्रपणै काम लाग। वजीर कही—तै वडी भूल करी। जाय ग्रर उणनूं लाय। तौ दरवांन जाय उणनूं लेय ग्रायौ। वजीर ताजीम घणी कीवी[2], दिलासा दी, उणरै घर रै टावरां री कुसळ पूछी। घणी ग्राछी खातिर कर, सगळां वास्तै[3] ग्राछी वसतां सौंप, उणनूं घणो माल देयनै ग्राछी भात विदा कियो। घरा पहुचायौ।

ग्रेक समै ग्रवदुला ताहर ग्राम खास कियौ थौ। सो भूखा लोग ग्रापरौ हाल ग्ररज करै था ग्रर भाग सारू[4] पावै था। इतरा में ग्रेक जणौ कही—हे ग्रमीर! म्हारौ तो ऊपर हक छै, सो दोय भात राखूं छूं—ग्रेक माल रो, ग्रेक खिदमत रो। तीसूं ग्रास राखूं छूं, दोनूं भांत री ग्रासा भर दीजै[5], मोटो कर दीजे। ग्रवदुला ताहर कही—माल रो हक काईं छै सो वताय? इण कही—फलाणै दिन वगदाद मे था फौज सूं निकळै था, तौ उण वेळा हूं म्हारै घर ग्रागै खूव छिडकाव कियौ—जे गरद उड ग्रमीर रै जांमा ऊपर नही लागै। माल तो ग्रो पाणी मे खरचियो। फेर पूछी—खिदमत कांईं कीवी छै? तो कही—थे ग्रेक दिन घोड़ै चढै था सो हू वाह झाल[6] थानूं चढाया था। ग्रमीर कवूल कीवी—साच कहै छै। पाछै उणनूं निवाजस कीवी[7], घणो ही मोटो कियो। ग्रटा तक मोटा री कही, ग्रणहुतो[8] ही कोई गुण कियो हुवै, ग्रै मोटा नही जाणै, पण ग्रापरी वडप्पण सूं मानै। ग्राप जाणै छै—जे झूठ कही, पण उणरो प्रपच किही सू नही करै। सो विसेस मोटापणो दातारी जाणो।

ग्रेक जणै नू खून रै कळक माही पकड जियाद वसराई कन्है लाइया। जियाद उणरै मारणै री इसारत[9] कीवी। चूहडं[10] तरवार खेंची, तरै खूनी री ग्राख वाध दोन्ही सो वापडो मौत देख मोर कियो पण कोई ही न सुणी। फेर तोवा करी पण फायदो कुछ न हुवो। तौ फेर कहणै लागियो—हे ग्रमीर! म्हारै ग्रर रावळै[11] वीच कारण पाडोस रो छै। पाडोसी रो कुरव करणो दातारी रै मुरतव री राह मे घणो विसेस छै। जो म्हारै ग्रापरै कमो होयसै तो ग्रोगुण[12] जोवणै वाळा[13] मोसा देयसै[14]—कै हक पाडोस रो ग्रमीर

---

[1] इतने साधारण काम के लिए [2] बहुत इज्जत की [3] सब के लिए [4] भाग्य के अनुसार [5] आशा पूर्ण करना [6] बाह पकड़ कर [7] सत्कार किया [8] बहुत अधिक [9] संकेत [10] जल्लाद [11] आपके (आदर-सूचक शब्द) [12] अवगुण [13] देखने वाले [14] ताने मारेंगे।

न राखियौ, पाड़ोसी नूं मराय दियौ। अमीर मन मे विचारी—गरीब नूं मारणौ अर आपरौ गिलौ[1] कराणौ राज मारगिया सूं, जिणा किणी नूं दुख नही दियौ छै, तिणा सूं दूर छै। जियाद लावै फिकर में पड़ियौ, सोच दौड़ायौ[2] सो इण सूं कठै ही सैंध नही नीसरै[3]। जद कही—तूं कह, तोसूं किसौ पड़ोस छै? इण कही—म्हारै बाप रौ घर बसरे थौ। अमीर रै घर सूं ही लागियौ थौ। म्हारौ बाप घणी बारा[4] अमीर सूं बाता करै थौ। जियाद पूछी—थाहरै बावा व बाप रौ नाम काईं छै? तरै कही—हे अमीर! जीव रा डर सूं नाम बाप रौ फरामोस कियौ छै। जणा जियाद हस नै उणनूं खून बकसियौ। औ गुनाह मन रै मेल सूं नही वखसियौ पण अेक आछी अरज सूं वडा हजार गुनाह कठिन भी वखसै। हक रैयत रौ न्याय अर अहसान छै।

अड़तीसवीं वात

संगत[5] मोटा अर दाना हकीमा री पारस वरावर छै। जिसी संगत होय उसी ही जे अकल ऊपजै। पारस देस मे वादसाहा रौ कायदौ थौ—जिकौ इणरी संगत मे होय तिकौ हिकमत फजीलत[6] सूं खाली न होतौ थौ। कोई ही वात रौ विचार अर हुकम इणां री सलाह विगर नही करता। इण वास्तै जे नीव वादसाहत री साच अदल अर न्याय ऊपर राखी थी। सो देस में राज इणा रौ चार हजार वरसा रहियौ।

सुल्तान सजर मोटौ वादसाह हकीम ऊमरखयाम नूं तखत ऊपर वरावर वैठातौ। खलीफा अवासी आप मयाणा पिंडत था। तमाम वध छोड काम इणा रा वचना हिकमत सयाणप[7] रा ऊपर था। खिलाफतनामा में मजकूर छै—वादसाह किणनूं कहणौ? तरै कहियौ छै—कै साहिब भार प्रभुता रौ होय, हुकम उणरै हिकमत ऊपर होय तौ पछै जोग आलम छै। देसोत[8] नूं हिकमत सीखणी। हिकमत इण भात सीखजै—सारी विध[9] ससार रा कायदा री सीखै। सीखिया माफिक काम करै। इण वास्तै देसोता नू सगत व मिळाप पिंडता, फजला, हकीमा, जाण, प्रवीणा[10] रौ चाहना करणो। यूनानिया रै रीत मा

[1]घायल [2]गहरा विचार करने लगा [3]जान-पहिचान नहीं निकलती
[4]कई बार [5]संगति [6]प्रतिष्ठा [7]समझदारी [8]देश का पति
[9]विधि [10]प्रवीण लोग।

री—जे इणां रै बादसाह कोई होय तिणरी विद्या हिकमत सारा पिंडता सूं घणी होय। वडा पिंडता री सीख होय[1] तौ उणमूं भलो वस्तुवां ऊपजै।

सोहवत मे असर मोटी छै। सीख में आई छै—भली संगत गांधी रा इतर दाईं छै[2], जो आग सूं न वळसी[3] पण धुआ मूं आस्या तौ डरसी। तमाम पिंडता अर हकीमा सूं वादसाहा नू सगत जरूरी छै। पिंडत सयांणी, सदाचारी, धरमात्मा, जे सिरै रा हुकम जाणै। सभा मे हलाल, हरांम, जोग-अजोग रा वचन कहै। अेक निवाज रोजा रीत कहै, तिणसूं रीत पंथ री बादसाह न भूलै। सीख देणै वाळी साची पूरी गुरु होय जिको अतरग रा कामा री सीख[4] देय अर ससार री सीख देय। ऊ आछी भात, आछा प्रस्तावां सूं भूंडी बोली बुरै करतव सू मना कर राखै। भख, अभख, पीण, अपीण, पर स्त्री सूं मना करै। सीख देणै वाळा री सीख नू न सह सकै तीसू चाहीजै—सीख नरमाई अर मुलायमी सू कहै। पचा मे बैठ नै सीख कदै नही देणी। अेकात समै देख मुलायमत सू वचन कहै। क्यू ? जे समय री सलाह नरमी सूं मनमुहाती होय छै। आगला वादसाह तौ महापुरखा सू वचन कडवा सुणता[5], फेर उणनूं मानता अर उण माफक चालता। हारूरसीद बादसाह सेख सफीक बलखी नूं कह्यो—मोनूं सीख देय। सेख कहणै लागियो—हे अमीर ! प्रभू रै अेक सराय छै तिणनूं दोजख[6] व नरक नाम कहै छै। तोनू उणरी दरवान कियो अर तीन वसत दीवी छै तिणा सू खलक नू दोजख मे मता जाणै दै। सो वसत माल तरवार अर ताजणौ[7] छै। तोनू चाहीजै माल तौ भूखा गरीबा नू देय सो वै चोरी अन्यायी कर नरक न भोगै। अर अन्याइया नू तरवार सू काट तौ ससार उणा री बुराई सू नचीती होवै[8]। ताजणा सू छिनाळ[9], जुवारी अर बदफैला नूं अदब देय तौ उवै वदफैली नही करै। जो इसी करणी होवै तौ तूं ही छूटै अर खलक ही छूटै। सो इणसू विरध कीवी तौ सगळा नरक में जायसै अर पण माग आगै तू ही जायसै। हारू रसीद गळगळी होय[10] सेख रा हाथ चूमिया।

तवीब पक्कौ, महरवान, दयावत दस्तूर इलाज रा जाणिया होय। मामतर

[1] वड़े पंडितों से बढ़ कर हो [2] इत्र की तरह है [3] जलेगा [4] शिक्षा
[5] कटु वचन सुनने पे [6] नरक [7] चाबुक [8] निश्चिन्त होवें [9] बदमाश
[10] गद्गद् हो कर।

वेदक कुराण पढिया याद कियोड़ा होय, रोगा री कुली ग्रोखद[1] जाणतौ होय, हाथ सिध होय। दूजौ, इसौ होय तिणरा पग री बरकत सूं रोग भागै तिकौ सदा प्रकत बादसाह री देख साधारण ग्रौखध दे। प्रभू टाळै[2], जो प्रकत मे विरुध देखे तौ तुरत उणरौ जतन करै। जोतसी[3] साचौ बारीकी जाणणौ[4] ग्रंथ जीव टीपणा रौ पढियौ होय ग्रर कूंचो रूप ग्राकास रा ग्रहा री हाथ की होय, जो सही भाव समझण मे पूरी होय तौ बादसाह री लगनपत्री देख भलै ग्रह रा दान करावै। तिणसूं राज व प्रताप ग्रडिग थिर रहै। विसेस दान सदका उवारणा[5] करावै तिणसूं कुरोग, कुबुध, कुदसा[6] रौ जोग मिटै। भली दसा, भली बुधि ग्रर निरोगता रौ जोग पावै।

कवीस्वर मिठबोलौ[7], ग्राछी वरणन रीत रौ जाणकार, समय री कविता करणै मे ग्रधिक बुद्धिमान होय। तिकौ साहिब रौ नाम गुणा मे भली ही जुगत[8] सूं राखै। हजूरी रूपवंत भली कहणी रौ, जिकौ ग्राछा स्लोक सुभासिता सू सभा नूं राजी राखै। सो विचार दीठौ, भलौ खरौ हजूरी पोथी मुसाहिबा री, महापुरखा री बाधै[9]। जिणमे मोटी वातां छै। तिका वाता री पोथी विगर रुजगार सगत करै, ग्राछी सीख देवै[10], साच कहै। भलो करतूत नूं जिणसूं सीख पावै सो मारग सजै[11]। बडा कही छै—तमाम खलक ग्रकल हो मागै छै। ग्रर ग्रकल परीक्षा चाहै छै। क्यू ? जे कही छै—परीक्षा ग्रारसी ग्रकल री छै, तिणमे रूप भलम रौ दीसै छै।

समै री परीक्षा नू पूरी तौ ऊमर, पूरौ माल, पूरौ ग्राराम ग्रर पूरौ साथ चाहीजै। जद हकीमा दीठौ[12]—ऊमर थोडी छै सो ग्रै वाता पाय सकै नही। तरै इलाज नै उपाय कियौ। कृपा सूं बुद्धिवळ कियौ तीसू थोडी ऊमर मे तमाम परीक्षा समझै सो खबरदार होय। तौ पाछै खबरा बादसाहा री, साहजादां री हालात, उमरावा वजीरा रौ वचन ग्रर पिडता हकीमा री सीखा[13] किताबा मे लिख ग्रर वाता मोटा माणस पहला हुवोडा री[14] जे सुधार भला चलण सू होय सो लिखी ग्रर विगाड भूंडै चलण सू होय सो लिखी। तौ बादसाह,

---

[1]ग्रोषधि [2]ईश्वर न करे [3]ज्योतिषी [4]बारीकियो को जानने वाला [5]वारफेर [6]खराब दशा [7]मीठी बोली वाला [8]युक्ति [9]रचना करे [10]ग्रच्छी शिक्षा दे [11]मार्ग प्रशस्त करे [12]देखा [13]शिक्षा की बातें [14]जो पहले हो चुके हैं।

वजीर, राजा, अमीर तिणनूं पढ़ रीत माफक हालै[1]। आछी वात जांण[2] ग्रहण करै नै भूंडी वाता नूं छोडै, तिणनूं दोनूं ठौड़ फायदो[3] होय।

गुणचाळीसवीं वात

दूर करणी—नीच प्रदत, संतान, भूंडा मिनखा रो। ज्यूं मोटा महापुरखा री सगत वाजब छै त्यूं ही मिळाप[4] भूंडा, वेसरम व वदमासां रो त्याग करणो जोग छै[5]। क्यूं? जे सगत माफक वुद्धि होयसै उसा ही लखण होयसं। पछै भूंडां री संगत सूं भूडा पळ[6] होय। भला री संगत सूं दौलत व मान वधै। ओर भूंडा माणसा रै मिळाप सूं दुख कळंक[7], कुवुद्धि रो कारण होय। भूंडा दोय भात रा छै—अेक तो मारणै जिसा[8], अेक मना करणै जिसा। जिणनू मारणै सूं लोगां नूं नफो होय, सुख ऊपजे, तिणनूं मारणो ही वादसाह नूं वाजव[9] छै। हुसगसाह री सीख थी—जे हे वेटा! तूं वेसरम, भूंडा, संतान वदमासा नूं माथै मारिया राखजै[10], दुख देय राखजै। भूंडा नूं, देस रा विगाड़ा नूं, चोरा नूं, गाठकटा, वटमारां नूं मारजै। मारग घाटा[11] सूं दूर करजै। तो रस्तागीर निचत[12] होवै। सौदागर विणजारा हालै अर देसातरी थारा देसा मे आवै जावै। भात भात री मता वसता खरीद-फरोक्त होवै[13], तीनू संसार नूं सुख ऊपजै।

अमीर मोमनी ऊमर कही—अेक मर्म हिंदूपण मे सौदागरो नूं सहर मदायन गयो। चाळीस थान कावळ यमन रा म्हारै कन्है था। सो मदायन नेड़ै[14] पहोंचियो। उठै चोरा उवै थान मोसू खोस लिया[15]। हू मदायन पहोंच फरियाद कीवी—नोसेर आ, म्हारी वात सुण। उण दरवान नू भेजियो। उण म्हारो हाथ पकड अेक हवेली आछी में उतारियो। कहियो—इठै रह, चोर थारा पैदा करा[16], माल थारो लेवै नू आणा। सो हू उण घर मे रहतो, हर-रोज खाणो अव्वल दरवार नू आवतो जिको हू खावतो। सवारै[17] दरवार

---

[1]रीति के अनुसार चल सकें [2]अच्छी बातें जान कर [3]लाभ [4]मेल-जोल [5]त्याग करना उचित है [6]बुरे फल [7]कलंक [8]मारने योग्य [9]उचित [10]दण्डित करना [11]पहाड़ी घाटियों के रास्ते [12]निश्चित [13]बिक्री होवे [14]समीप [15]छीन लिये [16]चोरों को ढूंढ निकालें [17]प्रभात में।

नोसेरवा रै माही जातौ, उठै बादसाही री रीत रैयत पाळणै री देखतौ। चाळीस दिना पाछै अेक दिन जद हूं घर आवियौ[1] तरै दीठौ[2]—जे त्यै ही थान उठै धरिया छै। नेड़े अेक हाथ कटियौ पड़ियौ छै अर कागद अेक ऊपर चाळीस तगा अव्वल सोनै री उठै ही मेल्ही छै। उण कागद मे लिखी छै—चाळीस दिन मे थारा चोर हाथ आया, रखत[3] थारौ तोनूं पहोचियौ, सो अे चाळीस तगा सोना री थारी चाळीस दिना री मजूरी छै। जद तूं आपरै देस मे जावै तौ म्हारी गिलौ[4] मता करजै[5]। इण बात सूं मालम होय छै—बादसाह मोटा नूं, चोरा, बटमारा सूं मार री धाक निंचित करै छै। जिको ही मारग मे किणी नू दुख देय, माल खोसै, तिणनू मार री सजा देवै। सो इसी भात दूजा नूं ही डर ऊपजै।

दूजी भात रा भोडा, फिसादी, लड़ाईखोरा, खानाजगी[6], उत्पातां रा उठाऊ[7] जिका मोटा सहरा मे रहै, भूडा[8] लखणा सूं लोगा नू दुख देवै, माल खोसै, किणी री बहू-बेटी सू हाथ चालाकी करै। हर कोई आपरी आबरू रै भय सू इणा नू कुछ कह नही सकै। सबळा[9] हाकम बिना इणा ऊपर किणी री हाथ नही पड़ै तौ पछै इणा नूं परै उपाड़णी जरूरी छै[10]। खबर मे आई छै—सहर हलब मे भूडा घणा हुवा सो लोग इणा सूं अत आया[11]। बादसाह मिस्र रा कन्है फरियाद जे जाय करी तौ बादसाह हाकम नू भेजियौ तिको इण भूडा सैताना रै मारणै मे हुवौ। कितरा ही भूडा सैतान उणमे सूं मरिया पण बाकी रा डरिया नही, अपणौ मारग छोडियौ नही। अठा तक हुई—जिण ठौड हाकम मसजिद मे निवाज करता तिणरै साम्है ही लिखियौ—हे हाकम! क्यूं दुख पावै छै? म्हैं तौ इसा माही छा—अेक मारै तौ दोय पैदा होवा। म्है तौ मरण नू इज्जत समझा छा। इण बात सूं कुछ लाज डर नही करा छा। तूं मारणै सू हार मानसै पण म्है मरणै सूं नही हारस्या। हाकम जणा इसौ लेख वांच्यौ[12] तौ मन मे बात बिचारी, फेर हुकम फुरमाइयौ, तीसूं उण लेख नीचै जबाब लिखियौ—आज म्हैं थाहरी टणकाई[13] जाणी। थाहरौ माहोमाहे रौ

---

[1]आया [2]देखा [3]सामान [4]बदनामी [5]मत करना [6]झगड़ालू [7]उत्पात पैदा करने वाले [8]बुरे [9]सबल [10]इन्हें समाप्त करना आवश्यक है [11]मारने से हार मानेगा [12]पढ़ा [13]बहादुरी, ताक्त।

को मालम हुवो। इब मैं करतब कियो तिणसू पछतावां छा, माफी चाहां छां। ाणे याहरै वधारण में छा। म्हारी सबां नूं मलाम छै। हजूरी सगळा[1] इण वाव सूं हैरान हुवा। डर सूं कुछ कह नहीं सकै। हाकम माही-वारै उणा भूंडा वखाण करणै मे हुवो[2]। कैद करणै मारणै सूं खरो हाथ खेंचियो। इसी वात ाण दूसरै दिन सहर रा पच महाजन आविया अर चाही हाकम सूं भूंडी ी मिलो कहां[3]। पण हाकम आप पहला ही कहणै लागियो—हे पंचो! आज हारै हुकम सूं जवान जे *मारिया गया उणरै वास्तै मन म्हारो गाढ़ो पछतावो* करै छै[4]। इसा टणका मनगरा जवाना नूं मारणो जोग नहीं। टणका थोड़ा ंदा होय छै। *मोनूं तो इस टणका मांणसा री जरूरत छै। रूम रा किला रो* केलादार वागी हुवो छै। मोनूं उठारै पैमारै नूं[5] काम रा टणका ही जवान मरद चाहीजै। जे था सगळा म्हारो भलो चाहो छो तो इणां रै सरदार नूं म्हारै कन्है लेय आवो तो निवाजस करू।

हलकारा[6] वहेरा कही—सरदार इणां रो वूढो छै, उणरै वारह वेटा छै। पण उवै याहरा डर री धाक सूं बाहर नहीं आवै, घर में ही रहै छै। तो हाकम फुरमाई—*उणा नूं मोसूं वेडर कर उरा लावो*[7]। *जणा लोग उणनूं लाया।* हाकम उणा रो घणो कारण कियो[8], घणो मया कर वूढै नूं आपरै पलंग री चौकी दीवी। रुखाळी[9] दरवार री वेटा नू दीवी। सगळा नूं सिरोपाव[10] वखस मोटा किया। पछै कितराक दिना मे इणा रै मन मे हाकम सूं निचिताई[11] हुई। सो अेक दिन हाकम फुरमाई—मोनूं लड़ाकू मरद पैमारिया जवाना री दरकार छै। था पिछाणो छो, थासूं काम होयसै। आछै लडाका नूं लावो जे सिरोपाव देऊ, अर मनमान्यो रोजगार कर देऊ। इसी सुण वूढो वाप अर वेटा घणा राजी हुवा। पछै तीन सौ जवान काठिया वाठिया हिया रा[12] भेळा कर हजूर लाया। हाकम इणा नू देख, दिलासा कर पाछै फुरमाई—इणा नू काल्ह लेय आवो जे सिरोपाव पहराऊ। सो तीनसो थान भारो मोला

---

[1]सभी [2]प्रशंसा करने लगा [3]शिकायत करें [4]बहुत पश्चात्ताप कर रहा है [5]हमला करने के लिए [6]खबर लाने वाले [7]भयरहित कर के मेरे पास ले आओ [8]बहुत आदर दिया [9]रखवाली [10]सिर से पैर तक की पोशाक [11]निश्चिंतता [12]मजबूत दिल वाले।

दरजियां नूं देय फड़ाया सो सीवणै लागिया[1]। उणरा सेवक, सहर रा पंच, रैयत रा सगळा लोग हैरांन हुवा। माहोमाहे[2] सगळा कहणै लागिया—जे वादसाह हाकम नूं इणा रै दूर करणै नूं भेजिया छै पण श्रै इणां नूं निवाजै छै[3], कांटां री ठौड फूल रोपै छै, जहर री ठौड़ मिसरी चवावै छै। पण जद रात पडी तौ तीन सौ मरद ठावा[4] नूं वस्तर पहराय, जामाखाने री हवेली में ठहराइया। जे सिरोपाव पहरणै नूं आवै तौ कतल करज्यौ।

दूजै दिन सगळा जवान हाजर श्राया, तरै हाकम फुरमाई—जावौ सगळा जामाखाने मे सिरोपाव पहरौ अर खर वदगी करणै नूं तैयार रहौ। श्रै सगळा जामाखाने मे गया सो इणा नूं भीतर जाता ही सगळा नूं कतल कर नाखिया। उण बूढै नूं चार-चार बेटा रै सागै मरायौ। माथा ऊंची मीनारां टकाइया[5]। ऊ सहर पाक उणा हरामजादां सूं कियौ।

जिका भूंडा अन्याई भलै मिनखां नूं दुख देवै सो प्रभू री रीस सूं वादसाहां नूं उणा रौ मारणौ जोग छै[6]। इसा रै मारणै सूं कोई नूं पाप नही लागै। अन्याइया रौ अठै उठै[7] दोनूं ठौड भूंडौ छै। पण जिका मना करणै जोग, दूजी भांत रा छै उणां नूं मनै करणौ। उणा सूं बोलणौ अर मिळाप[8], दौलतमदा नूं दोनूं ही खतरनाक छै। अेक—सुख न चीन्है, चुगली करै अर भूंठी खबर करं, भूंठी साची सूं माहोमाहे किणी रै उत्पात करै। दोय—मित्रा रै माहोमाहे वैर करै, तिका री वावत प्रभू फुरमाइयौ छै—जे भूंठी बात लगाळौ चुगल नै सुख न चीन्हौ, श्रै कदै वैकुंठ न जाय। बडा कही छै—जद कोई थारै कन्है खबर लावै तौ तोनू जोग छै—उणनूं साच मत जाण, धीरज धर। फेर उणनूं मना कर—जे प्रभू इण बाता सू बेराजी होयसै, इण बात रौ पाप होयसै। पापी नूं मना करणौ जोग जाणजै। उणनूं वैरी जाणजै। क्यू ? जे प्रभू उणा सूं बेराजी छै। उणरै कहै रौ किणी भाई सूं भरम मत राखै[9]। क्यूं ? जे भरम भूंडौ छै। उणरी खबर ऊपर जासूसी मता करै। क्यूं ? जे इसी बाता री जासूसी मना छै। सुख न चीन्हौ, कहै सो मत मानै। आछी तरै तौ आ होय जे उणनूं नजीक मत आणै देय[10]। उणरौ बचन ही मता[11] सुणै।

---

[1]कपडे सीने लगे [2]परस्पर [3]आदर करते हैं [4]चुने हुए [5]मीनारो पर सिर टकवाये [6]उनको मारना उचित है [7]यहा तथा ईश्वर के वहा [8]बोलना तथा मिलना-जुलना [9]किसी भाई पर सदेह मत करना [10]समीप मत आने दे [11]नही।

ग्रेक सभागियै[1] ग्रेक गुलांम मोल लीन्हौ। जद वेचणै वाळौ उणनूं कही—जे ग्रेक ग्रैव इण माही छै—ग्रौ सुख नही चीन्है छै। जद लेणै वाळौ कही—गुलांम सुख नही चीन्है तौ काई करै ? सो उणनूं लेय लीन्हौ। कितराक दिन पाछै गुलाम बीबी नूं कही—जे म्हारौ साहिव[2] तोसूं प्यार नही राखै छै, दूसरी स्त्री ग्राणसी[3]। बीबी इणरौ वचन सुण दिलगीर[4] हुई। गुलांम जाणी वचन कारगर हुवौ। गुलाम पूछी—थे चाहौ तौ थासूं ही प्यार राखै। बीबी कही—हां चाहूं छूं। गुलाम कही—हूं वसीकरण मंत्र जाणूं छूं। जद साहिव सोवै तद थोड़ा सा वाळ राछ[5] सूं लायदै तौ हूं इसौ तंत्र करूं जे ऊ जनम भर दास रहसी। स्त्री कही—ग्राज ही उपाव[6] करस्यूं। गुलाम कही—ठीक होयसी।

साहिव रै पास ग्राय गुलाम कहणै लागियौ—ग्रापरौ हूं लूण-पाणी खाधौ छै तीसूं जिसी वात जांणी-सुणी सो कहूं छूं। थाहरै सही जचै तौ सावधान रहज्यौ। साहिव कही—वात कह, कांई छै ? गुलाम कही—थाहरी स्त्री फलांणै जवान सूं यारी कीवी छै[7]। उणसूं इणरौ मन राजी जे हुवौ छै। उण ग्राज थारै मारणै नूं ग्रेक तेज राछ दीन्हौ छै सो रात मे बीवा तोनूं गरदन काट मारसी[8]। जे जिंदगी चाहै छै तौ सावधानी सूं जागतौ सोयजै[9], नही तौ थारी मरजी।

साहिव घर माही ग्रायौ, खाणौ खायौ, फेर सोय गयौ। सो गुलांम री वात याद राख, झूठ ही ग्राख मीच, खुरराटा भरणै लागियौ। वीबी जाणी नींद गहरी ग्राई छै। सो ग्राप वैठी होय तकिया नीचै सूं उस्तरौ ले, दाढी धीरै सी पकडी। केस लेण नूं राछ ग्रागै कियौ। इतरा मे साहिव ग्राख खोली सो उणरै हाथ सूं राछ छीन, वीवी री गरदन काट मारी। वीवी रै पीहर मे खबर हुई—जे वीवी इण तरह मारी गई छै। तरै पीहर रा ग्रादमी मतौ कर ग्राविया[10] सो उणरै धणी नूं गरदन काट मार नाखियौ। सुरा न चीन्हा री वातां सूं उणरौ सारौ घर ही वरवाद हुवौ। तीसूं इसा नूं नजीक ही न ग्राणै देवौ। ग्रर चुगल रौ कदै मोहडौ न देखणौ[11]। इणरी कही कोई वात न सुणजै।

सासतर[12] मे लिखी छै—चुगल हलाल री पैदायस नही छै। ग्रेक वरस वनी सराय मे काळ पडियौ[13], मेह नही वरसियौ। जद हजरत मूसा भला-भला

---

[1]भाग्यवान [2]मालिक [3]दूसरी ग्रौरत लायेगा [4]दुखित [5]उस्तरा [6]उपाय [7]प्रेम स्थापित किया है [8]मार डालेगी [9]जगते सोना [10]निश्चय कर के ग्राये [11]मुंह न देखना [12]शास्त्र [13]ग्रकाल पड़ा।

आदमिया रै सागै[1] जाय चार दिन-रात प्रभू सूं विणती कीवी। पण मेह ओक बूंद नही आवियौ। तौ हजरत मूसा बुरी तरह सूं रोयौ, पुकारियौ—जे हे साहिब ! अरज क्यूं नी सुणी ? तौ आकास सूं गैववाणी हुई—हे मूसा ! चाळीस दिन फेर मिन्नत करसै[2] तौ कबूल होयसै। किण वास्तै ? जे काम मे चुगल छै सो तिणरै पाप सूं अरज नही सुणी। तौ मूसा कही—प्रभू ! मोनूं फुरमावौ जे चुगल कुण छै ? सो तीनूं चुगली री सोस दिराय देऊं। फेर अवाज हुई—म्हे चुगल नूं दुस्मण[3] राखां छा सो आप ही चुगली क्यूं करा। तूं सारै साथ नूं कहै तौ उवै चुगली री तोवा करै[4] अर आगै कदे नही करै। जद मूसा रै कहै सूं सगळा तोबा कर सोस करी तौ मेह घणौ हुवौ। इण वास्तै मोटा वादसाहा नूं चुगली री वात नही सुणणी। अर उणनूं पास ही न आणै देवौ।

अेक बादसाह कीही ऊपर[5] मेहरवान हुवौ तौ ओक दिन उणसूं कही—जो तूं चाहै कै थारी दिनोदिन ही मरतबौ[6] बधै अर म्हारै पास सारै सेवगा[7] मे कारणीक[8] वणै तौ चाहीजै, तीन काम न करै—प्रथम तौ आ, जे भूंठ नही कहै। भूंठ कहणौ मिनखा री निजर मे ख्वार[9] होय छै अर निकारणौ[10] होय छ। दूजा, म्हारा बखाण[11] म्हारै कन्है मत करै। क्यूं ? जे हूं आपनूं तोसूं घणौ जाणूं छू। तीजा, चुगली करणै सूं डरतौ रहै। म्हारै आगै रैयत री अर साथ री कदे भूंडी मत कहै[12]। इणा रो जद हूं भूंडी सुणूं तौ हू इणां सूं भूंडो होऊ। अर खवर म्हारी भूंडाई री रैयत रै आगै अर हसम रैयत री म्हारै आगै जाहिर होय तौ डर जातौ रहै, मेळ दूजा कन्है जावणै नूं करै। दूसरै वादसाह नूं चाहै। तीसूं म्हारै देस में खलल घणी पड़ै। तिणसूं चुगल नूं जीव सूं मारणौ जोग छै[13]। अेक वार अेक चाकर नोसेरवां रै कन्है चुगली अेक सख्स री करी। तौ बादसाह फुरमाई—आ वात अबार तहकीक[14] करू छूं, जे साच छै तौ तोनूं चुगली रै सबाव वैरी मानस्यूं, जे भूंठ छै तौ गरदन मरायस्यूं[15]। अर जे तूं तोवा करै तौ माफ करस्यू। तौ उण अरज करी—आज म्हा मे चूक पडी छै। तोवा कीवी। तौ नोसेरवा कही—मैं माफ कीवी।

---

[1]साथ [2]प्रार्थना करेगा [3]दुश्मन [4]अनुचित कार्य को फिर न करने की शपथ [5]किसी पर [6]पद [7]सेवकों [8]कारगुजार [9]अनादृत [10]बिना काम का [11]प्रशंसा [12]बुराई न करे [13]मारना उचित है [14]निश्चय [15]मरवा डालूंगा।

श्रेक चुगल सूं श्ररज पाय बादसाह मायतसम नूं लिखी--फलाणो नांमी[1] सौदागर मुवो। उणरै माल घणो रहियो छै, श्रेक छोटो सो बेटो छै, जो फरमान होय तो लडको खाय उतरो राख, बाकी करज तरीके सोंपा। बेटो मोटो होयसी तरै पाछो सोंपस्या। इण भात खजानो वधसी[2]। मायतसम उण ही श्ररजी रै पूठै[3] लिखी छै--मरणै वाळै नूं प्रभू वखसज्यो[4] श्रर माल में बरकत दीज्यो, बेटा नूं भली भात मोटो करज्यो। चुगल प्रभू री फटकार में पकड़ीजज्यो। लोग गरज रा श्राप मतळवी छै जिका कहै श्रर करै सो गरज श्रापरी राखता ही होयसी। साच री ख्वाहिस सूं बात नही कहै छै।

हुसगसाह श्रापरी सीखा में फुरमाई छै--श्रापागरजी, मतळवी लोगा री संगत सूं श्रळगा रहजे। गरजी लोग दीमत मे[5] श्राछा दीसै पण श्राछा होय नही। भली बात पैला री नू कैद जे दिखावै। ऊ बाहर मित्र भीतर वैरी छै। श्रर जद मालम हुवै तो गरज गोय कपट नू तदबीर नाम दियो छै। भूंडी नूं भलाई मे दिखावै, गुण नूं श्रवगुणा मे गिणै तो पाछै पूरी निसा[6] विना वचन इणां रै ऊपर श्राग्या नही करी चाहीजै। इणा रै वचन री खोजना पूरी ही कीवी चाहीजै। सिकदर श्ररस्तू सूं पूछी--चाकरी मिळाप बादसाहां रा नूं कुणसो[7] तायफो माफक छै श्रर किसो टोळो बताय नालायक छै? हुकीम श्ररस्तू श्ररज कीवी--लायक खिदमत बादसाहा रै ऊ होय--जे श्रमीन कचन श्रर माल रो चोर न होय। किण वास्तै? जे श्रमीनत कारण इज्जत रो छै श्रर चोरी कारण खराबी रो छै। श्रमीन सतोसी होय। निरलोभ व संतोस श्रलेखै[8] माल छै श्रर लालच करणो श्रत घणो दुख छै।

श्रमीन भली करणो[9], विना श्रैब रो चाहीजै। भली करणो सू सारी ठौड़ प्यारो मान्यो छै। श्रेक देखणै सू मारा कन्है सुखदायक छै। काम करणै वाळो होय, गप्पी न होय। लड़ाई रा मिनख[10] मोटा जाणजै श्रर गप्पी भूंठा कळंकी[11] जाणजै। सासता मिलणसार निस्कपटी होय। मिलणसार वफादार होय। कपट रो फळ श्रन्याय श्रर दुखदायक जाणजै। श्रमीन भली राह-रीत रो होय, कुमारगी न होय। भली रीत री मदद श्रादमी नू वैकुठ मे ले जाय। चलण कुमारग

---

[1]बहुत बडा, प्रसिद्ध [2]खजाना बढ़गा [3]पीछे [4]मुक्ति देना [5]देखने मे [6]प्रमाण [7]कौनसा [8]श्रनगिनत [9]भला करने वाला [10]युद्ध मे काम देने वाले श्रादमी [11]कलंकित।

री राह भुलाय नरक ले जाय। बादशाहा नूं चाहीजे सात तफा नूं आपरी खिदमत मे नही आणं देवे। अेक तौ अदेसा[1] नूं। क्यू ? जे जहर अदेखा रौ किणी तरीका सूं पाळीजे नही। अदेखा रौ दुख किंही भात न मिटं जो तमाम फिसाद रौ मूळ छै। जीव अदेखा रौ घणौ निवळौ[2] छै। इण निबळापणं सू दौलत नूं पूरौ धक्कौ छै। वडा कहो छै—पनाह मागौ, अदेखा सूं प्रभू बचावै। फेर कही छै—अदेखौ वदर भला गुण खा जाय छै, जिण भात अंाग लकड़ी नू नही छोडे। तहकीक[3] अदेखापण खरौ भूडौ सुभाव छै। मूळ इणरौ छोटी हिम्मत निरबळ सुभाव[4] सूं होय छै। अदेखापण मूरखता रौ तत छै[5]। अकल थोड़ो री परीक्षा छै। अदेखौ पेला रा[6] सुख सूं दुख में छै। अदेखा रै मरणं रौ कारण अदेखाई ही छै।

सिकदर बादसाह रा समय में जिनावर अेक जाहिर आयौ, सो जिणरै ऊपर उणरी दिस्टी[7] पड़ै सो तुरत ही मर जाय। सिकंदर हकीमा नूं इणरौ इलाज पूछियौ। पण इणरौ इलाज कोई नही जाणं। आखिर स्तालवीस पुराणा विचार कर फुरमाइयौ इलाज इणरौ तदवीर कियौ, तिणसूं आ बलाय खलक सूं दूर होवै। उण कही—अेक आरसी इसी मोटी आवै जिण पाछै आदमी छिप सकै। इसी आरसी आई जणां उणनू गाडा री सुगनी रै आगै बाध ऊ जिनावर थौ जठी नूं गाडौ हलायौ। गाडौ नजीक गयौ तौ ऊ जिनावर आदमी री बास[8] पाय साम्हौ देखणं लागियौ, सो उणरी दिस्टी पहला आरसी में आपरी सकल[9] ऊपर पडी सो तुरत गिर कर मुवौ। आ खवर जद सिकदर सुणी तौ ऊ इचरज मे होय[10] हकीम सूं कारण पूछियौ। हकीम कही—हे बादसाह ! औ जिनावर प्रभू री कुदरत सूं धुआ अर बदबोय[11] रै कारण घणा बरसा धरती रै भीतर रहियौ। ऊ हमार धरती ऊपर आयौ छै। इणरै आख में जहर कातिल[12] छै सो जिणरै ऊपर दिस्टी इणरी पड़ै ऊ निस्चै[13] मुरदौ होय पडे। सो हू आरसी ले जाय उणरै साम्है की सो आपरी सकल पर दिस्टी पड़ता ही आप मुवौ[14]। उणरी नजर रौ जहर उणही नूं व्यापियौ[15]। सिकदर

---

[1]जिसकी घातक दृष्टि हो [2]अत्यत निर्बल [3]निश्चित [4]निर्बल स्वभाव [5]मूर्खता का सार है [6]पहिले के [7]दृष्टि [8]गध [9]शक्ल [10]आश्चर्य मे होकर [11]बदबू [12]मारने वाला [13]निश्चय [14]मर गया [15]व्याप्त हुआ।

हकीम नूं सलांमती कही। इसौ ही हाल ग्रदेखा मिनख रौ छैं। जे उणरी बुराई उणनूं ही रजू होय छै। जिण तरह ग्राग नूं लकड़ी नही मिळै तौ ग्रापोग्राप ही खाक होय।

दूजा, वे लायक बादसाहा रै नही छैं जे वखील मसक छैं। क्यूं ? जे सूम[1] खलक रौ फटकारियौ छै। ज्यूं दातारी सगळा ग्रौगुणा रौ ढाकण छै[2] त्यूं सूमड़ापणौ[3] सगळा गुणां रौ ढाकण छै। इण वास्तै बादसाह वखील नूं पास न राखै। राखिया सू भूंडौ होय छै[4]। बादसाह ऊमरलेख रैनायव ग्रेक सूम थौ। ग्रेक वार ठंड ज्यादा पडी। मेवौ लाभियौ[5] सो मोल ले राखियौ। खरच री किफायत कीवी। ग्रेक दिन ऊमर गोठ कीवी। तिणमे वडी वडी ठौड़ा रा एलची[6] ग्राया। तमाम वस्तुवां जीमणं री ठौड़ ऊपर तयार थी। ग्रेक मेवौ पण कम दीसै थौ। सो ऊमर उण दरोगा नू फुरमाई—जाय मेवौ घणौ लाव। दरोगौ गयौ, पण थोडोसौ मेवौ ले ग्रायौ। ऊमर नूं ग्रा वात भूडी दीसी[7]। फेर फुरमाई—जा मेवौ ग्रौर लाव। उण कही—मेवौ देवै नही, छिपायौ छै। फेर ताकीद सूं हुकम कियौ—जाय नै घणौ मेवौ लेय ग्राव। ऊमर नूं ग्रा वात खरी भूडी जे निजर ग्राई तौ उण नायव नूं ग्रलाहिदौ कर दियौ।

तीजा, वै कोई जिका बादसाहा री वदगी लायक नही छै। सो मिनख कमीणा[8], छोटी हिम्मत व सिफळा होय छै। बादसाहां री हिम्मत वडी होणी चाहीजै। तिणसूं कमीणा, कम हिम्मत, सिफळा मिनख उणरी खिदमत मे सोभा[9] नही देवै। सिफळा, वखील ग्रर मसक खरा ही भूडा मिनख होय छै। वखील उणनूं कहै छै—जे किणी नूं दान देवै नही, ग्राप ही सुख पायौ चाहै। मसक उणनूं कहै छै—जे न ग्राप खा सकै न बीजै नूं खवाय सकै। सफळौ उणनूं कहै छै—जे न ग्राप ही खाय न दूजै नूं खवावै न किणी दूसरै नूं खवावणं[10] ही देवै। ग्रेक बादसाह घणौ दातार थौ। सो ग्रेक दिन ग्रापरै किणी नजीकी[11] नूं कही—जे म्हारौ मन चाहै छै, दस लाख दिरम[12] सोनै री ग्रेक नूं वखसू। तूं काई कहै छै ? ऊ कही—माल घणौ छै। बादसाह कही—ग्राधौ देऊं। ऊ कही—माल घणौ। फेर बादसाह तीसरौ, चौथौ, पाचवौ हिस्सौ देणं री कही—

---

[1]कजूस [2]ढकने वाली है [3]कजूसी [4]बुरा फल निकलता है [5]मिला
[6]राजदूत [7]बुरी मालूम हुई [8]कमीने [9]शोभा [10]खिलवाने
[11]सम्पर्क मे रहने वाला [12]सिक्का विशेष।

पण ऊ कहै थौ—ओही[1] माल घणौ। आखिर बादसाह अेक लाख दीनार री कही। ऊ कही—अेक लाख ही सौ जायगां[2] हजार होसी। तौ बादसाह फुरमाई—रे अभागिया! हूं औ तोनूं ही देणौ चाहूं छूं पण तूं कमनसीब छै। तौ ऊ मरद कही—इव दस लाख ही देणी चाहीजै। पातसाह कही—तू सिफळौ छै। तैं म्हारी दानत[3] कम करी, आपरौ नसीब कमती कियौ। अब जे सौ हजार दिरम ही तूं घणी कहै थौ[4] सो जाय लेयलै। पण आगै फेर ही कदै म्हारै साम्ही इसी सिफळाई मता करजै।

चौथा, चाकर हजूरी वे बादसाहा रै लायक नही जे चावत करै[5]। पाप चावत रौ घणौ करडौ छै। प्रभू आप कही छै—हे मिनखां! माहोमाहे[6] चावत मत करौ। इणरौ पाप भाई रै मास खाणै बराबर छै। अठा ताईं ताकीद छै—जाणजै चावत लटा दाईं[7] छै सौ मुरदा री खाणहार[8] होय छै। जिका नूं मिनखाचारौ[9] राखणौ होय तिकौ मुरदा खाणी लटा नूं छोड भाजै। अेक महापुरख नूं सुपन[10] हुवौ। सुपन मे देवबाणी सुणी—प्रभात ऊठ, फलाणै बन में जा, प्रथम वसत देखै सो खा जाय। दूजी नूं छिपाय दै। तीजी नूं जतना राख[11]। चौथी नूं निरास मत भेजै। पाचवी सूं परौ भाज। ऊ महापुरख प्रभात रै समै ऊठियौ, सो उणनूं जिण बन री आग्या थी उठी नूं गयौ। उठै इण प्रथम अेक मोटौ पहाड दीठौ सो उणनूं देख महापुरख हैरान थौ—जे औ क्यूं कर खायौ जाय? पण प्रभू रौ हुकम थौ, तिणरौ काईं इलाज नही, तीसूं नजीक में गयौ। तौ पहाड घट कर अेक कवळ हुवौ[12]। महापुरख उणनूं खाधौ सो घणौ मीठौ सुवाद लागियौ। उठा सूं महाप्रभू नूं याद कर आगै गयौ। देखै तौ अेक सोना री थाळी मारग मे पडी छै। इण सोची—मोनू आग्या छिपावणै री[13] छै। सो खाडौ खोद छिपाय उण ऊपर माटी नाख हालियौ[14] फेर फिर नै देखी तौ थाळी बारै ही पडी छै। पाछौ आय फेर गाडी। आगै जाय देखी पण बारै ही पडी छै। फेर आय गाडी। फेर देखी पण उवा छिपी नही। तौ महापुरख बिचारी—जे मैं तौ आग्या माफक बार बार छिपाई। यूं कहनै

---

[1]यह भी [2]जगह पर [3]दान देने की शक्ति [4]अधिक बताता था [5]चुगली करें [6]परस्पर [7]लटों की तरह [8]खाने वाली [9]मनुष्यता [10]स्वप्न [11]यत्न करके रख [12]अेक कौर जितना हो गया [13]छिपाने को [14]चला।

आगो हालियो। हालै थो[1] जणा अेक थकियोड़ो[2] इणरै नेड़ो आय कही—मोनूं बचाय, म्हारो वैरी छै सो पाछै आवै छै। सो इण उणनूं वगल में छिपाय लीनूं। इतरा में अेक वाघ आयो। ऊ कही—म्हारी सिकार सौप, हूं घणो भूखो छूं, मोनूं निरास मता करै[3]। महापुरख विचारी—प्रभू री आग्या सूं इणनूं छिपायो छै। पण इणनू निरास नही जाणं देऊं, सो छुरै सूं सायळ[4] रो मास काट उणनूं खुवायो[5]। फेर महापुरख आगै गयो जद उण अेक मुरदार[6] दीठो सो सड़ गयो, वास आवै थी तिणसूं औ परो भाज गयो।

इतरा में रात पड़ी तो इण महापुरख प्रभू सूं वीणती कीवी—मोनूं जिण भांत आग्या थी सो कीवी, पण इणरी हिकमत में नही जाणी। तो इणनूं आवाज इण भात आई—ऊ मोटो पहाड़ जे पास जाणै पर कवळ हुवो सो क्रोध छै। अोघ दीसणं[7] मे घणो पहाड ज्यू मोटो दीसै पण गिट जावै तो मिठास व स्वाद घणो। दूजो, सोनै री थाळी, सो दांन अहसान वडापणो छै। तूं चाहै जितरो छिपा पण ऊ तो छिपै नही, जाहिर होवै हीज। तीजो, जो थारी सरण में कोई आवै उणनूं बचायजै[8]। जिण अमानत री तोनूं अमीनत होवै तिणमे तफावत[9] चोरी मतना करजे। चोथो, कोई आस कर आवै जिका नू पाछो निरास मत फेरजे, वणै सो उणरी आस पूरण करजै। पाचवों, ऊ सिड़ियोड़ी[10] मुरदार चावत छै तिणमू हर वार दूर भाजजै। चावत सू भला करमा रो फळ दूर होवै छै। तिणसू चावत भूलनै ही नही करणी। वादसाहा नू चाहीजै आपरी सोहवत नू मैल चावत रा अर भूठ रा सू पवित्र कर राखै। ज्यूं चावत करणो हराम होय छै त्यू ही उणरो सुणणो ही पाप जाणजै। पाप चाहत रो मुणिया सूं किया वरावर होय छै।

पाचवों, उवै मिनख वादसाहा री खिदमत लायक नही छै। जे हक नूं नही पिछाणै[11] उवै हरामखोर कपटी छै। जिका धणी रो हक नही पिछाणै उवै स्वामीधरम नूं छोड ऊधो विचारै। इसा भूडा लोग सदा सगळा नू दुस्मण जिसा लागै छै। पियार[12] संघ अोपरा[13] सू दूर छै। इणरो भाग[14] दौलत कदै थिर न रहै। मग्रतसद खलीफै कही—जिको जीभ हक कहणै मे दुरस्त नहीं

[1]चल रहा था [2]थका हुआ पुरुष [3]निराश मत करना [4]जाघ [5]खिलाया [6]लाश [7]दिखन [8]बचाना [9]विलब [10]सड़ी हुई [11]पहिचाने [12]प्यार [13]धजनबी [14]भाग्य।

तिको तरवार सूं काटै, स्वामीधरमी हक सूं नांमी मोटा करै। धणी रा भूंडा किया व कहियां सूं तौ निस्चय भूंडौ होय।

छठौ, भूठबोलौ मिथ्यावादी छै। सो भूठ किणी रै आगै आछी नहीं छै। भूठौ मिनख बादसाहा रै आगै बेआबरू होय। मजलस फजल वजीर री में दोय आदमी था। अेक रौ नाम नसर अर अेक रौ साकब। सो दोना बीच हासी[1] मजाक में रीस चढी, हाथमपाई हुई। नासर रै हाथ सूं साकब री पाघ गिर पड़ी। साकब नूं इब रीस घणी चढ़ी। तौ वजीर कही—इतरौ क्रोध माही क्यूं जे हुवौ, सदा ख्याल मे पड़ै छै[2]। साकब कही—क्यूंकर रीस मे न होऊं। म्हारी आबरू थाहरी मजलिस मे पड़ी[3]। फजल वजीर कही—आ बात सहल ही जाण रीस मता करै। आबरू तौ थारी मो आगै उणही दिन सूं गई जे तै खेंच'र कही—म्हारी मोनूं ही।

सातवौ, बादसाहा री हजूर लायक ऊ नही जे घणबोलौ होय[4]। किण वास्तै? जे धणो बोलौ होय तिणरा वचन रौ कारण नही रहै। घणा वचना माही भूठ अर निररथक ही घणी होय सकै छै। जे घणौ बोलै उणरै माहिली जांणजै ऊ दीवानौ छै। हजरत ईसा नूं पाड़ोसिया कही—जे था म्हानूं सीख देवौ सो तिणरै माफक काम कर वैकुंठ जावा। सो हजरत आप फुरमाई—वचन हरगिज मत कहौ, भली रै विगंर। तौ पाड़ोसी कही—आ तौ मोसर न होय। हजरत कही—घणी कहणै सूं मन री जोत[5] घटै छै। तूं जो घणौ बोलै छै तौ सरफौ सोना रौ करै छै। जिको समय देख कर नही कहै उणसूं तौ अणबोलौ ही आछौ रहै[6]। सारी कहणी मिनख री भली नहीं छै।

अेक वार तीन बादसाह नोसेरवा कन्है भेळा हुवा। अेक तौ कैसर रूम रौ। दूजौ साकाव चीण रौ। तीजौ राय हिंद रौ। नोसेरवा फुरमाई—इसौ मिळाप[7] कोई समय सू होय छै, आसान नही छै। आवौ आपा हरअेक वचन कहा, जे बादसाहा रा वचन सब चाहै छै। बादसाह तौ वचना रौ ही होय छै। घणौ पिछतावौ[8] होयसी जे आ सभा बिखर जाय अर आपणा वचना री निसाणी यादगार न रहै। इण पुराणी सराय मे सुभाव जोयनै भला सुभाव रौ भलौ

---

[1] हंसी [2] विचार करता है [3] समाप्त हो गई [4] बहुत बात करता हो
[5] ज्योति [6] न बोलने वाला अच्छा रहता है [7] मिलन [8] पश्चात्ताप।

खरो वचन ही जे यादगार होय छै। इण तीनां इसारत[1] नोसेरवां नूं कही— पहला ग्राप ही जे कहो। नौसेरवा बिचारनै कही—वचना रै नही कहै सूं हरगिज पिछतायो नही छूं। जो वचन कहणो में ग्राया तिणसू सरमिदो[2] छूं। केसर रूम कहणै लागियो—जे क्यू नही कही छै सो संकूं छूं[3]। ग्रर जे क्यू कहियो छै तिण ऊपर कुदरत फिरावणै री नही। नही कही सो तो चाहै जद ही कह सकूं छूं। पण कही ग्रणकही नही हो सकै छै। चीण[4] री खाकान कही—जद तक वचन नही कहूं ऊ जेरदस्त[5] छै ग्रर हूं उणरै ऊपर जोर राखूं छूं। जे वचन कहणो ग्रायो तो हूं जेर जवरदस्त हुवो उण ऊपर हू जोर न कर सकूं छूं। जितरै वचन रो बिचार पड़दा[6] में छै इतरै ग्रकल रो इख्तियार छै। बणाय कर या संभाळनै[7] कह सकै छै ग्रर नही जे चाहै तो राख सकै छै। पण जीभ सूं निकळ वचन वाहर ग्रा जावै तो पाछै मन रो जोर नही चालै।

राय हिंद यू कही—जो वचन कहणै में ग्रावै छै सो धरम सूं मारग रो छै या खता[8] चूक में छै। जो सुद्ध छै तो कहणै वाळो उणरो पाळण[9] करै। ग्रर खता चूक छै तो फायदो नही। दोनूं हाल मे खामोसी भली छै। हकीमा कही छै—भूडा वचन रै कहणै सूं चुप रहणो भलो खरो छै। वचन भलो खरो खामोसी सूं जाण, देखणो खरो भला कामां रो जाण, भूडा कामां सूं ग्राख ढाप[10]। कही छै—होठ वाघ ग्रर ग्राख ढाप, पण भली ठोड़ देखणो ग्रर कहणो।

चाळीसवीं बात

वधारणो तरबीयत[11] चाकर उमराव नै, ग्रदब उणा री। ग्रो वाव[12] दोय भात छै। प्रथम तो तरबीयत कारण वादसाहा नू ग्रापरा वेटा तथा सेवका नू की चाहीजे। पण हकीमा कही छै—भात पहली मे वादसाह उमराव, वजीर ग्रर सेवक चाहीजै। इण वास्तै जे इणरी ग्राग्या माही हालै। देस धरती रा उणरी ग्राग्या मे होय ग्रर घणा मिनख उणरी सेवा में होय। उणनू वाजव छै—निजर

---

[1]इसारा [2]शर्मिदा [3]शका करता हूँ [4]चीन [5]ग्रधीन [6]पर्दा
[7]सभाल कर [8]ग्रपराध [9]पालन [10]ग्रांख बन्द करले [11]संमनस्य
[12]सम्बन्ध।

छोटा-मोटा काम देस रा मे दस्तूर जतन[1] सावधानी सूं करै। साच विचार पर दहसत काम रैयत निवळा[2] रा में पहोचै। देस रा रईस उमराव राजा बादसाह नूं आपरै देस अर रैयत रौ हाल देखणै व सुणणै नूं दोय आख व कान सूं ही वणै नही। घणी आख अर घणा काना री जांण दरकार छै। घणा आदमी सयाणा[3], सावधान, भलै सुभावा रा निरलोभी अर वडी हिम्मत वाळा उणरै चाहीजै[4]। इणरी मदद सूं ऊ साहिब आपरै देस रैयत री सारी बात देखै-सुणै जद अकल सूं जतन उणरौ करै। इण सारा साथ नूं जे राजा बादसाहा रै आंख कांन री गरज सारै[5]। रिआयत की चाहीजै तौ काम आपरा मे अै सगळा कमी नही राखै। ठीक सही हालात देस रा जाहिर करै, वखाण[6] करै तौ उणरौ जतन प्रबध वण आवै।

बादसाह नोसेरवा वडै वुजरची मेहर नूं पूछी—देस रै जाणै, खराब होणै रौ कारण जे होय सो बयान कर कहौ। तरै उणनूं मालम कीवी। देस जाणौ, खराब होणौ तीन वसत मे छै। प्रथम, छिपावणी[7] खवरा बादसाह सू। दूजौ, बधावणी मिनखां नीची निजर रा मे। तीजौ, अन्याय अमालां रा में। नोसेरवा कही—बयान कर कहौ। तरै कही—जद सहर देस रैयत री खबर बादसाहा सू छानी[8] रहै तौ मित्र सत्रुवा सू बेपरवाह रहै तौ हर कोई चाहै सो करै। जद धणी बेखबरदारी होय तौ भात भात रा उत्पात हर तरफ सूं माथौ उठावै[9] अर देस उत्पात फिसाद मे जाय। मिनख ओछा कमीणा[10] नीचा विचार रा वधारै[11] तौ उवै छोटी हिम्मत अर लालच सूं माल भेळौ करणै ऊपर इच्छा करै। लालच रै कारण मोटा मिनखा रौ कुरब[12] नही करै। भला मिनखा री इज्जत उतारै तौ मन ससार रौ इणरै कारण सुभावा सूं दोहरौ दुखी होवै। दुरासीस देय तौ उणरौ अर धणी रौ बुरौ होय, राज जावै। कही छै—कमोणा नूं बधाया दौलत नू धक्कौ छै। सूमडौ[13] बधै तौ दौलत घटणै में होय। अर अमाल जद रैयत ऊपर अन्याय करै तौ मनसा इणरी खेती, घर, हाट, कुवा, बणवाणै[14] सू बीखरै तौ बादसाहा री ओपत[15] कम होय, तौ लस्कर[16] नूं

---

[1]यत्न [2]निर्बल [3]सयाने, समझदार [4]चाहिए [5]गर्ज पूरी करते हैं [6]बखान, प्रशसा [7]छिपाना [8]गुप्त [9]उत्पात उठ खडे हो [10]कमीने [11]तरक्की दे [12]इज्जत [13]कंजूस [14]बनवाने [15]आमदनी [16]फौज

रोजगार कठा सूं पहोचें ? जद सिपाही महीनो[1] नही पावें तौ चाकरी सूं माथो फेरें[2]। जो उण समय वैरी ऊपर ग्रावें तौ साथ थोड़ो होवें। इण भात देस हाथ सूं जावें। नोसेरवा हकीम रा वखाण किया ग्रर सीख उणरी सोना रा ग्राखरा[3] सूं लिखी।

वादसाहत रा महल रैं चार थाभा[4] छैं। जे उणमें ग्रेक ही नही होय तौ काम तमाम खातिर ख्वाहिस नही होय। प्रथम तौ ग्रमीर उमराव जिका सीमा देस री रा जतन करैं ग्रर वैरिया री बुराई नूं वादसाह वा रैयत सूं ग्रळगी राखें। दूजो, वजीर जिको काम वादसाहा रा नूं ग्रर चाकरा रा नूं वणाय सवार देवें। माल नूं ठौड देख खरच करें। तीजो, वादसाहा रैं ग्रागें हाकम जे संसार रैं हाल री खोजना करें, न्याय निवळा[5] नूं जोरावरा[6] कन्है दिरावें, वदमासा नूं दवाय राखें। चौथो, साचो खवरदार जो सदा खबर सहर री देस री व हाल उमराव रैयत रौ जे वादसाह नूं ग्ररज करें।

फेर वादसाहा नूं चाहीजे—तरवार रौ साथ, सिपाही, तोपखाना ग्रर इणा रैं साथ कलम रौ साथ छैं सो वजीर, मुस्तोफो, मुसी, ग्रमाल सू भात तमाम निगाह राखें। इणरी भात ग्रा छैं—सारा नू नजर सू देखें। जिको जिणनूं जरूरत होय, चाह राखें, तिणा रौ इणा सूं फेर न राखें। हरकोई ग्रापरें सोपिया[7] ग्रोहदा रो काम ग्राछी भात कर दिखावें तिणनू निवाजस करें[8]। ग्रर जिको काम में ढील वेपरवाही कर विगाडें तिणनूं पहला सीख देवें[9], समभावें, जो सावधान न होय तौ रीस करें। विसेस ग्रेव ग्रोगुण[10] चाकरा री पैरवी मे न होय। इणा री खुसहाली सू ग्राप खुसी जाहिर करें ग्रर इणा रैं दुख-दरद सू ग्राप दिलगीर[11] होय। हरग्रेक नू तरवीयत[12] जोर मे, मरतवें खासें मे, जतन सूं राखें जिणमें कोई उणा सूं सरीक नही होय। चाकरा वीच वैर-भाव ग्रदेखाई नही ऊपजें। सेवगा रैं माहोमाहे लडाई खरखसो[13] वधें तो सिताव[14] मिटावें। तौ विरोध रौ जोर न हॉय, फिसाद नही वधें। वडा कही छैं—रीत भात देसरी ग्रर राज री मिळी छै। विरोध उमराव ग्रर वजीर सू छैं। जवाव दियौ ऊपर दोय वसत रैं—ग्रेक मया ग्रर ग्रेक कहर। निसाणो

---

[1]महीने की तनख्वाह [2]विरुद्ध मे होते है [3]ग्रक्षरों [4]स्तंभ [5]निर्बल [6]ताकतवर [7]सौंपे हुए [8]इज्जत करे [9]शिक्षा दे [10]ग्रवगुन [11]दुखी [12]उल्लास [13]झगड़ा-टंटा [14]शीघ्र।

कहर री—सदा नजर मया मन सूं बादसाहां री सेवगा रै ऊपर जाहिर होय। कहर, रीस पडै सो जाहिर नही होय। मनगराई नही दीसै, मया सूं माफ करै। मारग हिकमत रौ तरबियत मे ग्रौ छै—जे नरमी, ढील, सुस्ताई सूं काम समझै तौ उण ठौड करड़ाई[1], उतावळ[2] क्रोध न कियौ चाहीजै। रीस करड़ाई री चाह होय तौ उण जायगां नरमाई मत लोप[3], भूंडी मत कहै। किणी घाव नूं फाड़णै री ही दरकार होय तौ मरहम रौ की काम ?

हकीमा फुरमाई छै—जिकौ बादसाह चाहै इणनूं वधारू[4] तिणरी चाल-ढाल के बार[5] परखै। चाल-ढाल परखियां बिगर उण पर वधारण री निजर नही करै। घणी वार देखणै में ग्राई छै—नालायक नूं बधारिया पाछै उणरा सुभाव[6] भूडा हुवा छै। सो देख फेर जरूर ही उणनूं नजर सूं नाख्यौ छै[7]। यू वेगौ[8] निवाजणौ[9], वेगौ पटकणौ भार बादसाह रा नूं ज्यान छै। ज्यू वधारिया नूं वेगौ नाखणौ जोग नही त्यू ही वेगी रीस ऊपर मया करणै माही ग्रकल री हळकाई[10] छै। रजावदी ग्रर क्रोध रै बीच चाहीजै—मुद्दता नीसरै तौ बादसाह री दूरदेसी[11] व सपगाई जाहर होय। कही छै—जद बादसाह किणी नूं बधार वडौ करै तौ उणनूं उणही नजर नही देखै। क्यू ? जे माल मुल्क चलण पायौ, उणनूं पहलै पायै[12] न पायजै। उणनूं फेर पहलै पायै न ले जाय सकै। जो चाहै—उणनूं तोड़ छोटौ करू तौ सुस्ताई सूं विचार इण काम में करै जद ही खलल न होय। उतावळ मे पूरी खलल होय। उतावळा ग्रेतराजी किया मरणौ-मारणौ विचारै।

नोसेरवा बुजरची महर सूं कही—बता, वधारणै लायक कुण छै ? ग्रर कही—किणनू तरबीयत जे कियौ चाहीजै ? तौ कही छै—जिकौ कुलीन होय, उत्तम गुणवान होय, भला सुभावा होय ग्रर साचो धीरजवान होय। ग्रेक मरद जकीना मे वडा घराणा सू, पखा वडा[13], सुभावा भलौ थौ। तिण रूम री ग्रेक स्त्री खरीद कीवी—उत्तरा री जोवण वाळी। जिकौ उणनू घर घाली[14]। तिणसू वेटौ ग्रेक हुवौ। ग्रेक दिन हकीम जकीना रो सभा में वैठौ थौ, इतरै[15]

---

[1]कठोरता [2]शीघ्रता [3]शालीनता मत छोड [4]तरक्की दूं [5]कई बार [6]स्वभाव [7]नजर से गिराया है [8]शीघ्र [9]इज्जत देना [10]हल्कापन [11]दूरदर्शिता [12]ओहदा [13]बड़े पक्ष वाला [14]घर में रखी [15]इतने मे।

बेटो आयो। मरद उणनूं कांम फुरमाइयो, सो उवो बेटो तुरत ऊठ हालियो। पण कितराक पग जाय फेर सभा मे आय बेठियो। सो देख सभा रौ साथ अचरज मे हुवौ[1] अर बतळावण लागियौ—जे पहला कही मानणें रौ[2] अर पाछै नही मांनणें में कारण काईं हुवौ? हकीम हंसियो अर कही—बाप रै गुण कही मांनी, मां रै गुण कही पाछै आयो, दोना री प्रक्रत जाहिर हुई। बेटो मां अर बाप जिसौ होय। बीच बुराई व सील में यूं ही जाणजे। हकीम फरदोसी कही—*जिण रोंख*[3] *री ओपत*[4] *सारी छै तिणनूं बेंकुठ रै बाग मे रोपीजे।* बेंकुंठ में अम्रत री नदी रौ पाणी सहत दूध सूं पायजे। आखर जद रोख फळ देवै तौ उसा ही खारा फळ लागे। कही छै—जीव निवळा नूं पाळणौ[5] आवरू आपरी ही खोवणं नूं छै। बीच तरबीयत सेवगा री मे सारा ही जणा उम्मीदवार रहै छै। दोय जणा नूं अेक काम देवै तौ उणमें सरकत प्रकटै, काम नही सुधरै।

दोय तीन नुकता[6] तफसील[7] सूं लिखजे। सारा सूं पहला तरबीयत बेटा री छै। जखीरै तलमलूक मे लिखी छै—बेटौ प्रभू री अमानत छै। मायता[8] कन्है प्रभू इण अमानत रौ हक पूछसी। आ अमानत आरसी छै, जिणमें सूरत तमाम नुक्स री अर पूरणता री प्रकट दीसै छै, तिणसूं उणनूं जिसा सिखायसै[9] उसा गुण प्रक्टसै[10]। पछै बेटा री तरबीयत मे जरूर ही जे हठ करणौ वाजिब छै। आछा गुण सीखै, कुबुध सूं टळै[11]। प्रथम नाम आछौ देवणौ। नाम नामाफिक देवै तौ ओवै जितरै पछतावौ[12] ही रहै। धाय, निरोग, भला सुभाव, सीळवत कीधी चाहीजे। दूध पावणौ प्रक्रत फेरणौ छै। जद दूध पीय मोटो होय तौ उणरै कन्है आदमी पवित्र धरमात्मा, सदाचारी, भला सुभावा रा राखै। प्रक्रत उणरौ उवे सेवक सहज राखै। प्रकल मे टावरा रौ ख्याल हासी खाण-पीण री चाहना मे छै। सो मध्यम भाव करावै। गुरु धरमात्मा, तपस्वी, सीळवान, साचा नूं सोप। तिको उणनूं धरम सास्त्र भणावै[13] अर सेवा, भजन, *धरम तथा सत्य मारग पहचाण करणे री रीत सिखावै। धरम अरथ* दोनू ही वर्ण इसी विद्या सिखावै। भलो गुरु ऊ छै—जे उणनूं फिसादिया, नीच प्रक्रतिया, भूंडा मिनखा सूं अळगो राखै[14]। अर उत्तम प्रक्रत, भलै सुभाव

---

[1]आश्चर्यचकित हुआ [2]कहा मानने का [3]वृक्ष [4]उपज [5]पालन करना [6]मर्म की बात [7]विस्तार [8]माता-पिता [9]सिखायेगा [10]प्रकट होंगे [11]कुबुद्धि से दूर रहता है [12]पश्चात्ताप [13]पढ़ावे। [14]दूर रखे।

वाळा भला पुरखा सूं मेळ करावै। उणरै आगै सदा सयाणा रा, पिंडतां रा, वीर पुरखा रा, धरमात्मा, सतवादिया रा अर प्रजापाळका रा वखाण[1] करै। तौ उणमें उसा[2] गुण उतपन्न होवै। लोग बेसरमा भूंडा रा औगुण[3] कहै तौ इणरी प्रक्रत उणसूं मिळणौ नही बिचारै। जद समझणौ होय तरै मरद हिम्मतवर परीक्षा जाणणै वाळा जिण बादसाहा री खिदमत कीवी होय तिणरै पास राखै। सो उणनू जाणै-आणै[4] ऊठणै-बैठणै री अदब सिखावै। उण वात सूं निसाणी अदब, सरम, वडी हिम्मत री जाहिर होय।

जद जवान होय तौ टणका[5] सिपाही, हथियारां रा उस्ताद, काम दीठा[6] नूं आग्या करै। तिका सस्त्र-विद्या, घोडा री सवारी व वख्तर पहरणै री विध तथा लड़ाइयां रा कायदा जिका बादसाहां नू जाणिया चाहीजै[7] सो उणनू सिखावै। जद खरौ मोटौ[8] होय तौ महापुरखां, फकीरा रा दरसणा नू लेय जावै। तौ उणा री निजर सूं फायदौ घणौ होय। महापुरखा री क्रपा रौ कारण पूरौ छै।

उमराव थाभा दौलत व बुनियाद देस री छै। सो तरबीयत इणां री इण विध सूं हुई चाहीजै—इणा रा कायदा कारण में तफावत[9] नही होय। इणा रौ मुल्की माली काम मे पूछणौ होय[10] तमाम काम ससार रा में इणा नू दखल देणौ, कोई काम इणा री सलाह बिचार बिगर न होय। जिकौ वचन भलाई देस माल री मे अरज करै सो मजूर करणौ, मानणौ। इणा ताल्लुक काम छै सो ग्रेलची[11] सिपाही चाकरा रौ तिणमे कारण मया राखै।

विसेस वाव ग्रेलची रा मे, जिकी जीभ वादसाहा री छै अर हाल, समझ, वादसाहा रौ तौर[12] ग्रेलची उणरा सूं मालम होय। तौ पाछै ग्रेलची चाहीजै—मरद, हकीम, वचन कहणौ, फूठरौ[13], दातार, वडी हिम्मत रौ राखणहार[14] होय तौ पाणी मेलणै वाळा रौ घटावै नही[15]। जिण किणी कन्है ग्रेलची नू भेजै सो मुनासब उणरै भेजै। ज्यूं फुरमाइयौ छै—ग्रेलची गरमी माता कन्है भेजै सो मातौ भेजै ग्रर सैणा[16] कन्है सैणौ भेजै।

---

[1]प्रशंसा [2]वैसे ही [3]अवगुण [4]जाने-आने [5]श्रेष्ठ, बड़ा
[6]काम के जानकार [7]जानने चाहिए [8]पूरा जवान [9]फरक
[10]सलाह ली जाय [11]राजदूत [12]तरीका [13]सुन्दर
[14]बड़ी हिम्मत रखने वाला [15]भेजने वाले की इज्जत न कमी नही आने देगा [16]सीधा।

महलव जवारह नू भजायो[1] तरै माल वसत घणी लुटी आई। सो अेलची मोलक नाम वडा वादसाह हजाज कन्है भेज्यौ। हजाज कही—महलव नूं क्योकर छोडियो थौ। अेलची कही—मित्र उणरा सुखी था अर वैरी उणरा ख्वार। वादसाह पूछी—कृपा उणरी सिपाहियां ऊपर किसी छै? अेलची कही—कृपा जसी मायता री बेटा ऊपर। वादसाह कही—हाल उणरा बेटा रौ किसोक[2] छै? अेलची कही—जीव रौ उणा नूं डर छै। वादसाह कही—सुभाव में किसोक छै? अेलची कही—इणा रै माल री गिणतकार[3] नही छै। वादसाह पूछी—अकल पिंडताई मे किसाक छै? अेलची कही—दायरा गोळ दाई तिण रौ माथौ अर पग नही लाभ सकीजै। हजाज साह कही—इण मरद बचन नूं हद पूरणताई[4] पर पहोचायौ। तिण सू महलव नू म्हारा मन मे भार अर आख म्हारी में समझहाळो[5] हुवौ। अदव अेलची री अर अकल उणरी सू परीक्षा कीवी—ऊपरा अकल अदव भेजणवाळा री[6]। तिणसू अेलची समझणौ, पिंडत, सभाचतुर, पवित्र, कुलीन, रूपवत अर दातार भेजीजै।

पण हमें तरवीयत काम सिपाहिया रौ सारा सूं जरूरी छै। तिणा सूं चार वस्तुवा होय। प्रथम, जोर अर धाक[7] वादसाह री। दूजौ, मारणौ वैरिया रौ। तीजा, नचीताई रैयत नू। चौथा, मेटणौ[8] चोर वटमारा रौ। इणा नू चार सरत कीवी चाहीजै। प्रथम, वादसाह रा हुकम में रहै। विनां आग्या काम नही करै। दूजा, वादसाह सू एक मन अर अेक जीव रहै। तीजा, माहौमाहे समेळा[9] रहै। चौथा, लडाई रै समय माटीपणौ[10], वीरता कर दिखावै। वादसाह पण इणरै साथ चार वरताव करै। प्रथम, इणा नू हथियार अर वस्तर भला सू सातरा राखै[11]। दूजा, मरतवौ[12] जणां जणां रौ जांणै, उणनू उणरै मरतबै राखै। तीजा, भला टणका मरदा नू वधावै, वतळावै[13], भली तरवीयत करै, मोटी मया करै। चौथा, वैरी नू, देस नू फतह किया पाछै लूटियोड़ो[14] माल आवै तिणमे सू इणा नूं देवै, इणा री हिम्मत वढावै।

कवादसाह हकीमा नू पूछी—लस्कर सू क्यू कर जीवाई करू? हकीमा कही—समै-समै ऊपर खबर सोच इणा रौ करणौ। जिण भात माळी वाग रौ

---

[1]भगाया [2]कैसा [3]गिनती [4]पूर्णता [5] समझ वाला [6]भजने वाले की [7]दबदबा [8]मिटाना [9]परस्पर मिल कर रहें [10]मर्दानगी [11]सज-धज कर रखे [12]पद [13]बातचीत करे [14]लूटा हुआ।

घणी निगाह हाल वाग री पर करै छै—जिकौ घास काम नही ग्रावै छै ग्रर जो दूजा रूखा[1] रौ खैंचै छै उणनूं काट परौ करै छै। जिणमें नफौ होय तिणनूं राखै छै व तरबीयत करै छै। इण भात सिपाहिया मे जे इसा होय तिणसूं कुछ गरज न सरै[2], रोगी होय, निवळौ होय, वा कम हिम्मत होय इसा नूं लस्कर सूं परौ करणौ[3], रोजगार नही देवणौ। काम रा टणका मनगरा मरद ही राखणा चाहीजै। कवादसाह पूछी—रोजगार इणां नूं किण भात देवणौ छै? हकीमां कही—मध्यम भाव री राह इणा नूं रोजगार दीजै। क्यूं? जे इणा नूं रोजगार घणौ[4] दिया बेपरवाही होयसै। चाकरी में ग्राळस[5] करै। इणा ऊपर कठणाई कीजै तौ सै ही विखर जावै[6] ग्रर दूजा सूं जाय मिळै। हकीम नजीमी कही छै—सिपाहिया नूं हद माफक देवै, घणौ मत देय। जे घणौ पेट भरै तौ कचाई करै, कमी रहै तौ भूखा, उघाड़ा, खाली हाथ रहै। सिपाही जिका घणी सूं राजी न होय तिका नही राखै।

देसरी हद्‌रा जतन ग्रर वजीर ग्रै देस रा, माल रा ग्रर खजाना रा वणाव छै[7]। बादसाहा रौ काम विना वजीर ठीक होतौ तौ मूसा प्रभू मूं ग्रापरा कवीला रौ वजीर नही चाहतौ। तौ मालम हुवौ छै—वजीर कारण सहठाई[8] नीव बादसाहत री छै। देसा रौ काम सवारणै वाळौ छै[9]। उवौ ग्राछै भलै उत्तम सुभावा होय तौ बादसाहा नूं सोभा ग्रोपमा भारी छै। तरबीयत इणा री ग्रा छै—बादसाह री मया व वतळावण[10] में सारा ऊपर मोटौ होय तरै ऊ छोटा मोटा री निजर मे मोटौ दीसै।

वचन इणा रौ मानणौ। हुकम इणा रौ भरोसा मे होय। कोई काम देस रौ बिना सलाह इणा री नही करणौ। बुद्धि-बळ रै तदबीर री सलाह सूं देस रै कामा मे पूरौ नफौ जाणजै। क्यो? जे काम कलम सूं सवारिया जावै सो तरवार सूं किही भात बण नही ग्रावै। जठै कलम पहोच सकै उठै तरवार नही पहोच सकै छै।

ग्रेक दिन उमराव ग्रर वजीर रै बीच ग्रागै-वासै[11] कहावत जे हुई। उमराव कही—हू साहिब तरवार रौ ग्रर तू साहिब कलम रौ। देस तरवार

---

[1]वृक्षो का [2]कुछ काम नही निकलता [3]दूर हटाना [4]ग्रधिक [5]ग्रालस्य [6]सभी दूर हट जाएंगे [7]बनाने वाले हैं, शोभा [8]मजबूती [9]समुचित ढग से कार्य पूर्ण करने वाला है [10]बोलचाल व्यवहार [11]ग्रागे-पीछे।

सूं ले सकीजै[1] छै, कलम सूं नही। वजीर कही—कांम जे कलम सूं सूधौ होवै[2] सो तरवार सूं नही होवै। अै कहावतां वादसाह तलक पहोंची। उण दोनां नूं हजूर बुलवाया अर वजीर नूं कही—जे कलम वाळा लोग तरवार रै धणी रा नौकर छै, तूं कलम नूं ऊची किण भात[3] कहै छै? वजीर अरज करी—हे वादसाह! तरवार वैरिया रै काम आवै, मित्रां रै काम नही आवै। पण कलम तौ भलै समय मित्रा रै काम आवै अर भूंडै समय वैरिया रै ही जे काम आवै। साथ तरवार रा नूं हौंम हरामखोरी देस लेवण री ऊपजै। पर कलम वाळां[4] सूं हरगिज इसी क्दे नही होवै। सिपाहियत खजानौ खाली करै छै पण कलम वाळा खजानौ भरै छै। ठौड़ खरच री खरी प्यारी जमा सूं होय छै।

तरबीयत नजीकिया[5] री आ छै—जे हरकिणी[6] नूं काम खास सौंपै तिणमें कोई दूजौ दखल करणै नही पावै। चाकरी री कदर सारा री जाणै, जिण माफक उणसूं मया करै। हजूरिया नै इसा पण मनगरा नही करै[7] कै चाहै जिको चाहै सो कह सकै। जो इणा माहिलौ[8] उवै ठौड़ वचन कहै तौ नही सुणै जितरै कोई पूरौ अमांन नही होय, के वार[9] परखियोडौ नही होय उतरै भरोसौ नही कियौ चाहीजै। भेद गूढ आपरौ उणनू नही कहियौ चाहीजै। फेर वादसाह नू चाहीजै—जो सेवका रै माहोमाहे क्रोध रीस होय अर कोई कुछ कहै सुणै तौ मानै नही। उणा नू विरोध वैर-भाव सू मना कियौ चाहीजै। इणा रौ मेळ काम सवारणै मे विसेस दखल जे राखै छै। कही छै—सेवक मारा जे वादसाह रा अेकमतै होय[10] तौ काम देस माल ख्जानै रौ ठीक होय। जो कपट प्रपच मकर[11] माहो-माहे करै तौ बुनियाद सारै कामा री, विगर मदार होवै।

चाकर मोल रिपिया रा लिया, धणिया रै होड[12] गैर हाथ पग सरीर रा खड तमाम री ठौड करै छै। ज्यू किणी नू आपरै हाथ रौ काम दस्तगत विगर करणै नूं सौंपै तिकौ हाथ री ठौड छै। किणी नूं कहै—तू फलाणै काम म्हारी तरफ सूं जाया कर, तिकौ पगा री ठौड छै। किणी नू कहै—तूं फलाणौ

---

[1]लिया जा सकता है [2]पूर्ण होता है [3]किस तरह [4]वालों [5]पास में रहने वाले [6]हर किसी [7]इतना सिर पर नहीं चढ़ावे [8]इनमे से [9]कितनो ही बार [10]एक इरादे पर [11]मक्कारी [12]कठिन कार्य।

काम देखवौ कर[1] सो आंख री ठौड़ छै। बीजा[2] ही इणी भात बाकी सरीर रा खंडा रा नायब जाणणा। सो इण वदा रौ प्रभू सूं सुक्र कियौ चाहीजै। इणा ऊपर क्रपा-मया कीनी चाहीजै। इणा नूं खिदमत में राखै तौ दिलगीरी[3] पैदा नही होवै। इणा ऊपर क्रपा-मया बादसाह करै तौ बदगी आपरी आछी करै। आळस[4] न करै। धणी नूं चाहीजै—दावै[5] तिण चूक सूं गुलामा नूं मारै किण वास्तै ? कै वदौ उण कांम मे सरत स्वामीधरमी कर दिखावै। तद आपनूं उणसूं जुदौ न जाणै, आपनूं आपरौ नही जाणै। हरामी खोटै रा बादसाह आगै बखाण करै तौ परख हुवा सरमिदौ होय। अेक जणौ भूंठौ नायब बादसाह सजर रा कन्है आयौ। उणरी जुलफ चौड़ी अर थोड़ौ सो कपड़ौ मका रौ लायौ सो कह्यौ—हूं फलाणै सैयदा रा गाम रौ सैयद छूं। अेम[6] मकै गयौ थौ सो बादसाह रै नामै सूं हज गुजारी। बादसाह री अर उमरावां री मका री हजूर में दुआ की छै। जो थे बादसाह कन्है लेय जावौ तौ थाहरौ किरावर[7] मानूं। मोनूं निवाजस होवै। सो उवौ नायब बिगर ठीक कियां[8] बादसाह नूं कह्यौ—अेक सैयद हाजी वडा घर रौ वडौ आदमी आयौ छै। जद बादसाह उणनू हजूर बुलाइयौ। बादसाह वाहपसाव कियौ, नेड़ै बैठायौ। बादसाह पूछौ—कठा रा छौ ? सैयद कह्यौ—सहर सफाहा। बादसाह फुरमाई—कद मकै गया था ? तद कह्यौ—अेस रै बरस। ईस्वर री इच्छा सू सफाहां रौ अेलची[9] सभा मे आयौ थौ। ऊ उठै ही मौजूद थौ, तिण नाम सफाहा सहर रौ सुणियौ अर उणनू दीठौ। तरै बादसाह सू अरज कीवी—हजरत हूं इणनू पहचाणू छू[10], औ सैयद नही छै। मालजादौ उण देस रौ छै। उठा रा मालजादा इसा ही केस राखै छै। अेस इणनू विलायत में दीठौ—ईद कुरबानी रै दिन नीम मागणै माहरै घर आयौ थौ। बादसाह अे वचन सुण घणा वेराजी हुवा अर उण नायब साम्हो देग कह्यौ—भलौ सैयद हाजी म्हासू मिळाइयौ। ऊ नायब सरमिदौ होय सभा सू बारै गयौ। पाछै तमाम ऊमर भर साम्है नही आयौ।

अदब समभाया आछौ न होय तरै सलाह आ छै—उणनू वेगौ मार, तौ दूजा वदा उणा री सगत सू खराब न होय। उणरा खोटा सुभाव दूसरा नूं

---

[1]देखता रहे [2]दूसरे [3]दुःख [4]आलस्य [5]मन में धारे [6]इस वर्ष
[7]उपकार [8]बिना पूरी बात जान [9]राजदूत [10]पहिचानता हूँ।

न करै। संगत फिसादी कुलखणिया[1] री भलां नूं ही खराव करै। जो गुलाम साहव आपरा रौ अवगुण, विना दस्तूर कहै, वादसाह अगाड़ी जाहिर करै तौ उणनू मना करणौ। जिण भात सियासत मुल्तांन महमूद गाजी सू मजकूर[2] छै—वादसाह निमाज जातौ थौ। गुलांम तुरकी मारग वादसाह रा पर थौ। तिण वादसाह नूं सलांम कीवी। वादसाह कृपा कर पूछी—थारी चाहना होय सो कह। उण कही—हे वादसाह! मो वदा नूं तुरकिस्तान सूं लायौ, सो मारग मे कहतौ थौ—तोनूं वादसाह कन्है लेय जाऊ छूं तिणसूं हूं राजी थकियौ[3] आवं थौ। जद इण सहर मे आयौ तरै स्वाजे हसन मोनू देख हजार दीनार वेई[4] मोल लीन्हौ। उण दिन पाछै मोनू घर में छिपायौ राखै छै। अवार[5] समय पायौ तौ हजूर कन्है आयौ। गुलाम तौ आपरी अरज कीवी, आपनू इव इख्तियार छै। वादसाह फुरमाइयौ तरै गुलाम नू अदव घणी कीवी अर किणी नू सौपियौ जे हसन कन्है ले जाय अर कहजै—जे गुलाम हजार दीनारा रौ लेय छै तौ सौ दीनार मू दरवान क्यू राखै नही, जिकौ गुलाम नू वाहर घर सू निकळणै नही देवै। अेक खवास[6] कही—गुलाम नू धणी अदव कराई। तौ वादसाह कही—जो औ हसन रौ नही होवतौ तौ फुरमावतौ—जे दोय टुकडा करौ जो गुलाम नू मोकळ मेलै। जिकौ गुलाम धणी सू वेराजी होय सो धणी रौ गिलौ[7] करै। तौ काम धणी अर गुलाम दोना रौ विगड़ै।

भात दूजी इण वाव में आदाव साथ रा सू मोटा हुवा छै सो उमराव, वजीर, पिंडत, खवास, पडदार, मुत्सद्दी तमाम गुमास्ता, तालकदार छै सो जाणिया चाहीजे। जिका काम वादसाह रा मे आरभ करै सो चाहीजै उणरा सुभाव इसा दस्तूर में होय, तिणसू नेकनामी वादसाह री रौ कारण होय, देस वसणै री वात होय, आ वात उण समय वण आवै—रियायत चार तरफ री आपरै जोग जाणै। प्रथम, प्रभू री तरफ विचारै। दूजो, वादसाह री तरफ रौ विचार। तीजो, आपरी तरफ रौ विचार। चौथौ, तमाम रैयत री तरफ रौ विचार।

तिणमें प्रभू री तरफ री पाच सरत[8] छै। प्रथम, उणरी कृपा री सुक्र-गुजारी करै सो प्रभू-कृपा होय जद दौलत वधै। दूजी, रीत वदगी, भजन,

---

[1]खराब लक्षण वाले [2]कही हुई [3]खुशी-खुशी [4]बदले म [5]अभी
[6]पास में रहने वाला नौकर [7]निंदा [8]शर्त।

स्मरण विसेस[1] करै। बादसाह री सेवा सू पहलां वंदगी प्रभू री जाणजे तौ सारा मे प्यारौ कवूल होवै[2]। अवूमनसूर वजीर बादसाह तगरल रौ मरद सयाणौ अर पूरौ थौ। तिणरी रीत थी—प्रभात नमाज पढतौ, पछै दोय घडी ताईं[3] जप करतौ। पाछै बादसाह कन्है आवतौ। अेक दिन जरूरी काम सू बादसाह जल्दी उतावळौ बुलवायौ सो तेड़ा[4] दोय तीन ऊपरा-ऊपरी आइया। पण ऊ जप छोड ऊठियौ नही। बैरिया समय पाय बादसाह कन्है गिलौ कियौ। उणरी भूडी कही कै घमड घणौ राखै छै। बादसाह सलामत रै हुकम नूं गिणै नही[5] छै। इसी-इसी वाता कही जे बादसाह बेराजी[6] उणसूं हुवौ। बादसाह नू रीस चढी। वजीर जप कर चुकियौ तरै हजूर मे आवियौ। बादसाह रीस कर कही—देर कर आणं री काई कारण छै? वजीर अरज करी—हे बादसाह! हूं वदौ प्रभू रौ छूं अर चाकर थारौ छूं। जितरै वदगी सू फारिग नही होऊ उतरै चाकरी मे नही आ सकू छूं। तौ बादसाह उणनू वखाणियौ[7]। कही—तौन् यू ही चाहीजै। तीजो, रजामदी प्रभू री रै ऊपर रजा बादसाह री आगै राखै। जो प्रभू वंदा सूं राजी होवै तौ दूजा रै बुरी चाहवा कोई खतरौ नही छै। जो प्रभू पनाह देवै किणी रै ऊपर प्रभू री रीस होवै तौ सारां री मया सू कुछ नफौ नही। चौथौ, प्रभू रौ डर करणौ[8], बादसाह सूं अधिक। वडा कही छै—जो प्रभू सूं डरै छै उणसूं सगळा[9] डरै। अर जे प्रभू रौ डर नही करै उणसूं कोई नही डरै।

पाचवौ, आस[10] प्रभू री घणी राखजै। जो कुछ ही देवै छै सो ऊही देवै छै। उम्मीद उणरी करणी— जिका घरसूं कदे कोई आसामुखी[11] पाछौ न फिरै।

पण रिआयत तरफ बादसाह री पच्चीस सरत छै। प्रथम, नरमी दीनता सू खिदमत करै। क्यू? जे बादसाहा री हिम्मत वडी छै। दूजी, आप सौ[12] किणी नू नही जाणै। इण वास्तै—जे प्रभू री मया सूं पाट[13] जे पायौ छै। प्रभू री कृपा सू, मया सू नायब होवै छै। तिणसूं सारा वदा मे आपनूं वडो जाणै जो खिदमत सलक सू कराई चाहै अर आपरो वडप्पण चाहै। ज्यौ बादसाहो भारी त्यू ही अवगुण ज्यादा। तिणसू इणा री रजामदी आ छै—मिनख आप

---

[1]विशेष [2]सभी लोगों का प्रेम-पात्र बने [3]तक [4]बुलाने के लिए [5]मानता नहीं [6]नाराज [7]प्रशंसा की [8]भय मानना [9]सभी [10]आशा [11]आशा रखने वाला [12]अपने जैसा [13]राज्य-सिंहासन।

री गरीबी भूख इणा सूं अरज करै। भारी खमाई[1], सख्त कसालो[2] खेचणो[3], धीरज करणो। क्यूं ? जे खिदमत बादसाहा री में कसालो दुख भेळो[4] छै। बडां कही छै—सेवा बादसाहा री मे मिनखां रै बीच आराम अर सुख जीव दोहरो छै। तीजो, जो विचारै अर करै सो चाहीजै कै जिणमे ममलत[5] बादसाहां री देख करै। दुनियां निमत अर आखरत निमत विसेस अत रो भलो होय सो करै। चौथो, आछा मारग नरमी समझावण[6] रा अर अन्याय रा अवगुण कहै, न्याय रा वखाण[7] करै। जिण भात मसलत जाणै तिण भात न्याय रा वखाण करै, अन्याय सूं मना करै। जो कोई बादसाह रै अन्याय सूं राजी होय तो पाप में सरीक होय। अेक सरस आखरां रो खुसनसीब घणो थो। दौलतमद उणरै खता री नकल करै था। सो अेक दिन वजीर कन्है आयो, जद लोगा इणरी कलमतरामी[8] री तारीफ कीवी तो वजीर कही—अेक कलम बणाय दे। उण कलम घणी आछी भात बणाय दीवी। वजीर आखर[9] लिखिया सो घणा अव्वल आखर आविया तो उणनूं वजीर हजार दीनार रोकडी दिया पण ऊ फेर पाछो आय वजीर नूं कही—हूं अेक चतराई कलम मे भूलियो छूं सो हुकम होय तो दुरस्त करूं। वजीर कही—थारै मन आ काईं आई ? उण अरज कीवी—हू थारै गयो नरै मोनू आ वात याद आई। कही छै—दरगाह प्रभू री में अन्याइया नूं उणरै यारा मुद्दा[10] दुख होयमै। हूं इण वास्तै डरियो—जे था इण कलम सूं अन्याय लिखो तो लिखणै री घणी मूं हू सरीक उण अन्याय रो होऊ। प्रभू रा क्रोध मे पडूं।

पाचवी, बादसाह जिणनूं दान देणै ऊपर राखै सो इसी करै जे दान उणरो सारा नूं पहोचै, ज्यू सूरज री जोत[11], मेह री छाट, सारी जायगा बराबर चमकै, बरसै। अेक बडा नूं पूछी—दान री भली भात किसी छै ? उण फुरमाई—दान सरवत चाहीजै, विसेस हसनमुखी थकियो[12] देवै, किरावर[13] हळकाई कह नही देवै, आपही उणरी मनुहार कर देवै—जे थे म्हानूं फुरमायो, कृपा म्हामूं को। मवान बेटो जायद रो बडो दातार थो। छोटा मोटा नूं देतो तरै हसतो थको देतो। सो अेक मित्र नूं किणी पूछियो—मेह दाता बरमणो घणो या मवान दाता घणो। जवाब मिळियो—दातारी दान रो मवान रो घणो

---

[1]सहनशीलता [2]अत्यधिक कष्ट [3]बरदास्त करना [4]शामिल [5]सलाह
[6]समझाने [7]प्रशंसा [8]कलम को छील कर तैयार करना [9]अक्षर
[10]दोस्तो सहित [11]ज्योति, प्रकाश [12]हंसमुख हो कर [13]अहसान।

खरी छै, वादळ सूं ज्यादा घणी छै। पूछी—किण भात छै ? कही, इण भात छै—वादळ देवै छै सो सही पण गरमी थकियौ[1] देवै छै, तपिया पाछै देवै छै। मवान री ज्यूं हंसतौ थकियौ नही देवै। छठी, जितरै पूरौ भरोसौ नही होय, पूरौ परखियौ नही होय[2] उतरै बादसाह रै आगै उणरा बखाण नही करै। नही तौ परख हुवा सरमिंदौ होय। सातवी, जाणै जिकौ ही बादसाह चाहै छै—घोडौ, वसत, चाकर, वानौ[3] वगेरा आपरै वास्तै नही राखै। दवाय अरज कर नजर करै। आठवी, बादसाह इणसू वचन फुरमावै तरै तन, मन, आख, जीव अकल सूं सुणै। दूजी ओर आख चित नही चलावै। किणी दूजां सूं बात नही करै। जो बादसाह घणा अभिमानी होवै सो वात फुरमावै जणा चित दूसरी जायगा देखै तौ उण ऊपर नाराजी पकड़ै[4]। कदाचित उण समय जाहिर नही करै तौ मन मे कुमया[5] राखै, तीसूं भय ऊपजै। नवी, बीच सभा माहो-माहे कांनाफूसी नही करै। बादसाह क्यूं[6] फुरमावै अर ऊ न जाणै न सुणै तौ भरम ऊपजै। भरोसा भूडा ऊपजै[7]। विसेस आ छै—मन मे इणसू कुमया करै। बादसाहा रै इण वात रौ विसेस होवै, सही तौ किणी भूडा वैरिया, घणी निसा कीवी होय। जे फलाणा रौ मन थासूं भूडौ छै। स्वामीधरमी मे थासूं दुरस्त नही छै अर आपरै मारणै मे छै। पाछै बादसाह देखै दोय जणा काना वाता करै छै तौ इण वार चुगल रा वचन साचा लागै। तद उवै दोनूं वलाय मे पड़ै[8]।

दसवी, बादसाह जद ओर सूं कुछ पूछै तौ इणनूं हळकाई नही करणी चाहीजै। जिणनूं पूछै सो ही जवाब कहसै[9]। किण वास्तै ? दूजा री पूछ मे आप बोलणौ, कहणौ, हळकाई उणरी निसा[10] होवै। अेक जर्ण हकीम नूं पूछी—जो हू बादसाह री सभा मे होऊ अर बादसाह मो विगर ओरा सूं पूछै तौ जोग छै काई जे हू उत्तर देऊ ? तौ कही—ना उत्तर मता देवै। ऊ जवाब रौ हक उण ही सू जे छै कै जिणनू पूछियौ छै। फेर अेक वजर[11] ओर इण वाव[12] मे छै। जो पैला नू पूछता तू बीच मे बोलै छै तरै बादसाह कहै—तोनूं नही पूछू छू तौ बताय उणनू के जवाब देयसै[13] ? इण वात रौ सरमिंदगी

---

[1]गर्मी होने पर [2]परीक्षा न की हो [3]पहनाव [4]उससे नाराज होवे [5]नाराजगी [6]कुछ [7]भ्रम पैदा हो [8]बुरी स्थिति मे आ जावें [9]कहेगा [10]प्रकट [11]वजिर, भय [12]संबंध [13]क्या जवाब देगा।

स्वीकारसै[1] । अर थारै साथ सूं पूछै जद भी तूं उत्तर मत देवै। क्यूं ? जे दूजा सगळा थारा वैरी होसैं[2] । तूं तो विसेस ढील कर । ग्रै कहै तरै तूं गुण अर वचना रो ग्रवगुण जाण । पाछै जिको तूं जाणै सो भलो उणरा वचना सूं छै सो अरज कर नहीतर[3] चुप रहै ।

ग्यारहवी, ग्रा चाहिजै—जद तलक वादसाह पूछै नही तद तलक तूं चुप रहै। अर जद कुछ पूछै तद वचन किफायत वा सक्षेप सूं कहै अर ग्रबोलो[4] रहै। जो वादसाह चाहै तो वयान री चाहना कर वचन वधता कहै[5] । जो वादसाह किणी वस्तु री खवर न दै तो खोजना मुतलक उण वस्तु री मत कर। ग्रा बारहवी जाण । किण वास्तै ? जे कहणो ही जोग होवतो तो धणी ही कहता। तो उणरै जाणणै रो तलास कारण कुमया रो[6] छै। जिणनूं घर में जाणै री ग्राग्या नही उणनूं दरवान सूं ललपत करणै सूं की काम छै ? तेरहवी, वादसाह जे थोडी घणी वसत देवै सो पाछी नही फेरणी[7] । जो थोडी छै तो उणनूं ही घणी जाणै । ना कहणो, ना लेणो—ग्रपमान करणो वादसाह री रीभ[8] रो छै। ग्रो ग्राकल रो मन ना जाण । धणी जे कृपा कर देवै छै सो ही लेलै ।

चौदहवी, ग्रमानत मे रहै। चोरी रा गुण सूं प्यारी प्रीत रो मिनख ही स्वार[9] होवै । मामू खलीफै फुरमाई—हूं मिनख इतवारी ग्रमीन नूं दोस्त राखूं छूं । जे कोई सिफळो ग्रर चोर होय तो वैरी मानूं छूं, चाहै वडो ग्रर वडी हिम्मत रो ही क्यो न होय । किण वास्तै ? जे ग्रमानत निसाणी[10] धरम री छै, चोरी निसाणी पाप री छै। पनरवी, जो वादसाह सूं पावै उण पर सतोस राख राजो रहै। गुणी मिनख घणी वाछना नही करै । हिरस[11] सूं सदा निरास रहै। सोळवी, हजूर री परिपूठ वादसाहा रा वखाण, उणरा परवाडा[12] सदा कहै । किणी नूं कोई वचन सुणै ग्रर ऊ बेग्रदवी वादसाह री रो होवै तो उणनूं दवाय समभाय मना करै। जो ऊ नही मानै तो रीस कर कहै। फेर ही नही मानै तो उणरो सगत नूं तरक[13] करै। उसा मिनख सूं वात ही न करजै। सतरवी, वादसाह जिको काम सोपै तिण पर मुस्तैद[14] रहै, वेपरवाही मत करै। सदा हाजर रहै। जद धणी याद करै तुरत पहोचै। ग्रठारवी, वाद-

---

[1]स्वीकार करेगा [2]वैरी होंगे [3]नही तो [4]चुप [5]विस्तार से कह [6]नाराजगी से [7]वापिस नही लौटानी [8]इनायत [9]ग्रपमानित [10]निशानी [11]भय [12]ग्रच्छे कार्यों की गाथा [13]त्याग देना [14]तत्पर ।

साह रै प्यार व राजीपणै रौ भरोसौ मतना करजै। आपरी घणी वदगी कियां रौ आसंगौ[1] नही राखै। बादसाह नूं दौलत व राजपाट रौ गुमान छै सो चाकरी नूं भूलै। कदे बादसाह सूं आ मत कहजै कै हूं फलाणौ काम कियौ तिणरौ हक छै। नित नवी चाकरी मे मन लाव। आग्या पालण सूं पाछली चाकरी नूं ताजी कर। उणरै आगै अरज बिसात नवी सूं नवी राख। बादसाह पूरा गुणा नूं थोड़ासा औगुण[2] पर भूल जावै छै, बडी अंतराजी करै। किणी री सेवा नही गिण। क्यूं ? जे अै तौ आपनूं सेवा लेणै वाळा[3] गिणै छै।

उन्नीसवी, अरज रौ समयौ[4] देख अरज करै। समय पर अरज किया ही कबूल करै। बीसवी, जो बादसाह उणनूं प्यार[5] करै तौ चाहीजै आगै साथ मानीतौ छै। कदीम[6] सूं वदगी कीवी छै तिणसूं आगै हो जे आप नही होवै। औ कारण कमअक्ली, आछाई, हळकाई री परख देवै छै। जो तूं उणसूं आपरो इधकाई[7] चाहे छै, सेवा घणी आगै कीवी छै तिणरौ गुण बादसाह न गमावै। ऊ उणसूं इधकाई चाहै, तरै बादसाह उणरौ पख झालै[8] तरै औ हारै, सरमिंदो होय। इक्कीसवी, बादसाह री नाराजगी सूं मन दुखी न करै। उणरी कुमया सस्ती, मन राजी थकियौ[9] कबूल करै। मोटा छै, जे भूंडा कहै, गाळ काढै[10] सो मया कर जाणै, माथा ऊपर हुवा ज्यूं जोवै। अंतराजी कुमया मे पडै तौ किणी रै आगै धणी रौ गिलो[11] नही करै। मन में मैल नही जे आणै[12]। चूक आपरी ही जे ठहरावै, आ बाईसवी छै।

तेईसवी, जिण ऊपर बादसाह वेराजी होवै उणा सूं अळगौ[13] रहै, उणसूं मेळ न करै। जितरै बादसाह री रीस उणसूं मिटै, मया री निजर दिखाई पडै, उतरै उणसू अळगा रहिया रौ, वजर माफी रौ करावै तौ राजी होवै। चौईसवी, बादसाह सदा राजी होय सो करै। आ वात चार गुणा सूं वण आवै। प्रथम तौ बादसाह जो कहै सो साच गिणै, चाहे धरम पथ सूं विरोध होय। दूसरौ, बादसाह रा विचार व अक्कल रा वखाण करै। तीसरो, उणरी भलाई परवाड़ा जाहिर करै। चौथो, बुराई उणरी बराबर ढाक, कठै ही कहै नही।

पच्चीसवी, गूढ छिपावणौ[14] छै। औ तमाम अदवा अर सूरता रौ तंत

---

[1] साहस [2] अवगुण [3] सेवा कराने वाले [4] समय, मौका [5] माननीय [6] पीढ़ियों से [7] श्रेष्ठता [8] पक्ष लेता है [9] मन को खुश करके [10] गाली निकाले [11] शिकायत [12] मन में बुरा विचार न लावे [13] दूर [14] गूढ़ बात का छिपाना।

जाणणौ चाहीजे। वादसाहा री गूढ[1] छिपाणं मे घणौ जतन करणौ। मारग ततव जतन इण राह री यूं छै—हाल परतख[2] वादसाह री जे चाकर सगळा जाणं छै सो ग्राप मोंहडा[3] सूं नही कहै। तौ छिपाव गूढ़ राज रौ कहावै। गूढ छिपावणौ[4] उणसूं ही ग्रासांन होय। वादमाह जद इणरै गुणा री खवर पावै ग्रर फेर कदै कोई गूढ फूटै तौ इण ऊपर न ग्रावै। कळंक[5] न लागै। किण वास्तै ? विगर कहियौ हाल परतख[6] सूं, ग्यांन सूं मालम कर सकीजै छै। वाजे नूं समझ पड़े इण समय जिकौ भरोसा रौ ग्रादमी होय तिकौ सारां माथै कळंक ग्रावै, ग्रभरोसौ उपजै। पाछै जिणरौ ग्रौ सुभाव पहलां ही जाहिर हुवौ छै कै ग्रौ गूढ़ नही कहै सो इण कळंक सूं वचै छै, जो प्रभू वलाय सूं राखै।

किणी री ग्रोझरी निवळी होय[7] तिण वखता[8] गूढ री भार खमियौ नही जाय। कहदै सो मारियौ जाय। हकीमा कही—मसलत री कहणै वाळौ जो माथौ चाहीजे तौ गूढ छिपावै। ग्रेक मोटा वादसाह दाना[9] हकीमा सूं सीख मागी। तौ हकीमा फुरमाई—हे वादसाह ! तमाम सीख इण वचन मे छै— प्रभू रा हुकम री ताजीम माथा ऊपर राखणी। वणै जिको दान ग्रहसान पूरौ करणौ। वादसाह फेर पूछी—राजदण्ड व सियासत री कहौ ? हकीम कहणै लागिया—मिनख मारणै री रीस मत करै। तीन जणा नूं मारणौ ग्रधरम नही छै। ग्रेक तौ जवरौ वैरी जो थारौ देस ही लेणौ चाहै। दूजौ, धरती ग्रर माल रौ चोर। तीमरौ, उवौ चाकर जे थारौ गूढ प्रकासित करै।

ग्रेक वादसाह थौ। उण ग्रापरै नजीकी[10] ग्रेक चाकर नूं फुरमाई—हू तोनूं ग्रेक वात कहू छू, तूं उणनूं जाम ही जाहिर मता करजै। म्हारौ ग्रेक भाई मोनूं मारणै नूं करै छै, घात विचारियौ छै[11]। तूं होमियार खवरदार रहै। हूं समय पाय पहला उणनूं मारस्यूं। इण हरामखोर समय पाय वादसाह रै भाई नूं ग्रा खवर दीवी। तरै ऊ सावधान हुवौ। थोडा दिन पाछै वादसाह ग्राप ही काळ कियौ[12]। भाई ग्राय मालिक हुवौ। ऊ पहला उण हरामखोर नूं *गरदन मारणै[13] नूं हुकम कियौ। इण ग्ररज करी - म्हारी तकमीर[14] ही*

---

[1]सार [2]प्रत्यक्ष [3]मुंह [4]छिपाना [5]वसक [6]प्रत्यक्ष [7]पेट में वात रखने की ताकत न हो [8]समय [9]बूढ़ा [10]समीप का [11]घात करने की ठानी है [12]मृत्यु को प्राप्त हुग्रा [13]फांसी देने का [14]गल्ती।

नही । ऊ हुकम कियौ—तूं मोनूं पहला गूढ़ प्रकास कियौ । वादसाह थारौ भरोसौ करैं थौ । तूं उणसूं विस्वासघात कियौ । फेर कदै समय पाय म्हारै ही साथ तूं यूंही करसै । इण वास्तै मारै बिगर नही छोडस्यू । मोनूं इब थांरो किसौ भरोसौ छै ? इतरी कह उणनूं मरवाय दीन्हौ । वूढ़ा सूं पूछी—छुटकारै रौ कारण कांई छै ? हकीमां कही—गूढ छिपावणौ ।

पण आपरै तरफ रा जतन री साल सरत छै, सो जतन सावधांनी सूं किया चाहीजै । प्रथम, न लै न दै तौ दुनिया मे बदनाम—निकारण[1] नही होय अर सरमिंदगी न होय । दूजा, होय सकै जितरै भूडाई[2] मिटाणै री करै, सगळा रै साथ भली करै । तीजा, वडी हिम्मत रौ होय , सगळां नूं हिम्मत माफक भरोसौ होय । जिकारो वडी हिम्मत होय सो माल रौ लालच कर आपनूं ख्वार नही करै । *किण वास्तै ? जे माल अर मुरवत दोनूं हो नही रहै अर आप* ख्वारी मे होय । चौथा, न तौ आपरै ऊपर करडी भालै[3] , न मिनखा ऊपर पटकै । अेक मोटौ पुरख कही—जे अजब कमवखत ऊ छै जिकौ वास्तै रजा-मदी मिनख री रै आपनूं क्रोध प्रभू रा मे पकड़ावै । वादसाह री रजामदी रै वास्तै कितरा ही अन्याव आपरै माथा ऊपर लेय अर आपनूं नरकगामी करै । पांचवौं, कदर चलण रै इख्तियार री जाणै अर मोल पहोच[4] री जांणै । मौत रै पहलां ही इसी करै जिणसू भलौ वात जस री उणसूं यादगार रहै । छठा, चलण मरतवा रै भरोसै मगरूर नही होय । क्यो ? जे समय दगावाज दौलत रौ वैरी छै । दौलत व सपत अथिर[5] पायं जाण । सातवा, वण आवै तौ मरदा सूं भली कर । *फायदौ मया चलण वादसाह री रौ औ छै—जे छोटा नूं दान* अहसान रौ फायदौ ही पहुचावै । साच जाणजे, जो दूसरा रो भलौ कर सो आपरो ही जे भलौ करै छै । अेक वडौ मरद कही—मैं ऊमर भर किणी सूं भली न करी । तौ चाकर पूछी—आप नितका इतरी इनाम देवौ छौ, जीमण करावौ छौ[6] अर फेर कहौ छौ म्हैं किणी सू भली नही करी तिणरौ अरथ तौ फुरमावौ । तरै फुरमाई—मैं साच कही छै, प्रभू फुरमाइयौ छै—जिण भलाई करी सो आपनू भलाई कीवी, तौ गुण भलाई रौ आपरा जीव नूं छै । तौ मैं आपनू भलौ कीधी छै पण भूडी यूं हो जे छै, जे कोई ही भूडी करसै[7] सो

---

[1]व्यर्थ ही [2]बुराई [3]कठिन परिस्थिति को अपने ऊपर आने दे [4]हिम्मत
[5]अस्थिर [6]खाना खिलाते हो [7]बुरा कार्य करेगा ।

आपरै जीव नूं छै। उणरौ फळ[1] थांहरा जीव नूं छै सो लागसै। पण रिआयत पक्ष रैयत रा में जाणियौ चाहीजै—गरज चलण दौलत सूं नही छै। रजामंदी वादसाह री नूं उणरा सेवणं री ज्यूं छै।

पछै रिआयत री तरह दोय छै। प्रथम, रैयत री चौकी घणौ जतन करै[2]। मदत अहसांन सू इसी करै जे अे काम आपरौ नही छोडै। आपरै गाव सू दूजै गाव न जाय। दूजां, बुराई अन्याय रौ इणसूं अळग[3] राखै। वडा आदमिया कही छै—रैयत छाळी[4] दाईं छै, अर वादसाह उण छाळियां रौ घणौ छै। जद धणी अेक गवाळ[5] नूं छाळी सौंपी छै तौ ल्याळी[6] सू बचावै। घणा जतन सूं वादसाह नूं पहोचावै। इसी न करै जो रैयत रा हाल सू वेखवर होवै तौ अन्याई रैयत ऊपर चाहै सो करै। अे वचन भेळा थम दौलत रां रा कहिया।

इब दोय तीन नुकता[7] अदव, उमराव, वजीर, नवीसंदा, हजूरियां रा लिखीजै छै। उमराव नूं चाहीजै कायदा राखै। प्रथम तौ प्रभू री आग्या मानै, प्रभू री तरफ देखतौ रहै, थारै मनमांन्या कारज सधै। अर आप तौ लोगां ऊपर हुमक चलावै पण खुद नही मानै तौ खरावी पहुंचै। दूजां, हक दौलत रौ छै तौ चाहीजै स्वांमीधरम नही छोडै। धणी सू भूठ रौ मारग नही झालै। हरामखोरी सू फळ भूडा होय छै अर आगै पूरी अंतराजी प्रभू री होय। तिण सू दौलत पायां रौ हक राखणौ। वादसाह री आग्या कदे लोपणी नही[8]। कही छै—निसांणी मरदमी री आ छै—जो धणी सू आपनू ज्यान पहोचै तौ उण आगै नफो पायौ तिणमें न भूलै। तरै सुक्र दौलत रौ कियौ कहीजै।

अेक साहिब रै अेक गुलाम सयाणौ थौ सौ अेक दिन ऊ मरद गुलाम समेत फालेज में तमासै गयौ। सो काकडी अेक फाडनै गुलाम नूं दीवी। गुलाम घणी चाह सू खावणै लागियौ[9]। पण धणी नूं ही चाह खावणै री हुई सो थोड़ी सी लेय चाखी[10] सो खारी घणी लागी? तद गुलाम नू कही— हे गुलाम! तू इसी घणी खारी काकडी इतरी चाह सू क्यों खावै थौ? तौ गुलाम अरज करी—हे साहिब! आपरै हाथ सू हु घणौ चीकणौ मीठौ खाधौ[11] छं। तौ इव अेक खारी काकडो रै टूक सू क्यूंकर मोहडौ[12] फेरूं। वादसाह नू आ

---

[1]फल [2]जनता की रक्षा के लिए बहुत यत्न करे [3]दूर [4]बकरी [5]ग्वाला [6]भेड़िया [7]मर्म की बातें [8]उल्लंघन नही करना [9]खाने लगा [10]चखी [11]खाया [12]मुंह।

बात घणी भली मालम हुई तौ कही—तू हक नियामत रौ निरवाह कियौ छै, मैं तोनू गुलांमी सू छोडियौ। इतरी कहि गुलामी रौ कागद फाड़नै उणनू घणौ माल दियौ। तीजा, चाहीजै बादसाह सू माल नही जे मागै। जागीर लेवै उठै ही पैदा कर गुजर करै। पण बादसाह सू कदै ही माल नही मागै। माल पियारो[1] हर किणी नू छै। जिकौ जिणरै हिस्सै रौ लै उणसूं बैर जे वधै। चौथां, माल जागीर रौ पइसौ बादसाहा रा कांम नूं खरचे अर आपरा जोव रा हज नूं। पाचवां, डर करै सरीखाई[2] करणै सू। बैठक-ऊठक, पोसाक, असवारी तरह बादसाहा री जुदी छै सो न करै। अर जे करै तौ बेअदबी छै। तिणसू मरणात[3] भय मे पड़ै छै। छठां, जिकौ काम बादसाह सूं होय सो जाम विरोध सरीर न होय तौ तारीफ करै।

सारी अकल जाणै जिकौ ही दुनिया मे छै। तिकी दोय भात छै—अेक भली, अेक बुरी। तौ पछै भली बादसाह किया करै छै जो आ मसलत न होय? पछै बुद्धिवळ हकीमा रा सू निसा करै। सातवा, बादसाह नूं फिकर[4] वधै जे कहै सो उणनूं न सुहावै। पण मोंहडा-मोहडै बखाणै, अपमान उणरै वचन रौ नही करै, नही कहै। जाणियौ चाहीजै[5]—धणी छै, जे कहै सो सिर माथै ऊपर। आठवा, आपरै पायै[6] कुरब रै ऊपर मगरूर नही होय। कारण करण बादसाह रै सूं आपरी हद नही लोपै[7]। बडा कही छै—जो बादसाह तोनूं भाई कहै तौ तूं उणनूं प्रभू जाणजै। अर जे बेटौ कर कहै तौ तूं आपनूं उण रौ गुलाम जाणजै। ऊ कारण बधारै[8] त्यूं-त्यूं तूं बदगी बधार, विनय धणी सूं घणी करजै। जाणौ चाहीजै—अमीर जिणरौ चलण घणौ छै, काम कोई होय जावै तिकौ बादसाह री बराबरी रौ आग्या करणै, सजा देण मे तौ अलबत्ता बादसाह नू भूडौ लागै। जो हमार नही कहै तौ मन मे उणरौ मैल राखै। तिणसू बादसाहा री रीत आपनू नही करणी चाहीजै। भाई सुल्तान महमूद गाजी रै गुलाम सू चूक मोटौ हुई[9], सो टेराय[10] अर लाकड़िया मारियौ। गुलाम बादसाह नू फरियाद करी तरै बादसाह फुरमाइयौ जद नगारा निसाण नोबत तमाम असबाब बादसाहत रौ भाई रै घरा लेय गया। औ हाल देख भाई तुरत बादसाह रै कन्है आयौ अर घणी दीनता सूं माथौ धरती पर लगायौ

---

[1]प्यारा [2]बराबरी [3]मरने तक [4]फिक्र [5]जानना चाहिए [6]ओहदा [7]सीमा नही लाघे [8]इज्जत बढावे [9]बहुत बडी गलती हुई [10]लटका कर।

ग्रर कही—मोसूं काई चूक पडी सो ग्राज ग्राप नोवत म्हारे घर भेजी। तो वादसाह कही—जे वादसाही हक म्हारो छै तो टेरणो, लाकड़ी मारणो गुलाम री तोनूं किण वास्तै चाहीजे ? हाल तकसीर[1] री ग्ररज पहोचती तो हूं ग्रो न्याव करतो। तो ग्रन्याय चाकर सूं नही होय, धणी सूं चाकर नूं जोर पहोंचै। प्रभू ग्रापरा वदा मोनूं सौपिया छै सो मोनूं उणरो जवाव कियो चाहीजे ग्रर तोनूं नही। पाछै धणी ग्ररजा सूं चूक भाई री माफ कीवी।

नवमो, सिपाहिया री काम सूंप[2] उमरावा मे छै। तो चाहीजे, ग्रमीर वादसाह इणा ऊपर राखै, जे सदा साथ सांतरो[3] ताजो रहै। काई जाणीजे[4] कदा[5] किण तरफ सूं उत्पात ऊठै। जो वादसाह माल भेळो[6] करै ग्रर ऊ मिनख भेळा नही करै तो जरूरत री वेळा पछतावसी[7] ग्रर हारै। किण वास्तै ? कही छै—माल सूं भला मरद भेळा होय, ग्रर देस री सीमा मरदा सूं रहै। नवी, फतह करै दावै तिणसूं देस मरदा विगर नही। माल दियां विगर मरद रहै नही।

ग्रेक वादसाह ग्रेक ग्रमीर सू पूछी—जे मोनू कजिया[8] माल रा ग्रर साथ रा मे हैरानी छै। जो माल भेळो करूं तो साथ वीखरै छै ग्रर साथ भेळो करूं तो माल वीखरै छै। जणा ग्रमीर ग्ररज कीवी—माल ही भेळो कियो चाहीजे। वादसाह पूछी—तूं निसा राखै छै ? ग्रमीर ग्ररज कीवी—हां राखूं छूं। हमार इण ठोड कोई मांखी नही छै। फुरमाइयो—जे सहत रो पियालो भर लावै। सो तुरत सहत रो वासण[9] ग्रावियो तो घणी माखी ग्राय भेळी हुई। ग्रमीर ग्ररज कीवी—ग्रा निसा मैं ग्ररज कीवो तिणरी छै। वादसाह उणरी सलाह वखाणी[10]। पाछै ग्रो ही वचन वीजा ग्रमीर नू कहियो। उण ग्ररज कीवी—साथ भेळो करो। सिपाही ग्रापसू ग्रलगा[11] मतां करो। चाहीजै जिण समय चाहीजै जिण तरह रो साथ भेळो नही होय सकै छै। वादसाह पूछी—तूं इण वचन री निसा राखै छै ? उण ग्ररज कीवी—राखूं छूं। ग्राज साझ रा ग्ररज करस्यूं। रात पडी जणा ग्ररज कीवी—सहत रो वरतन ग्रावै। सो तुरत वरतन भर ग्राइयो। उठै मेलियो पण माखी ग्रेक न ग्राई। इण हाय जोड ग्ररज कीवी—जे यूं ही समय पर माल छता[12] मिनख नही ग्रावै छै। ग्रमीर कही—

---

[1]गुनाह [2]सौंप [3]बढ़िया [4]क्या पता [5]कब [6]शामिल [7]पछतावेगा
[8]झगड़ा [9]बर्तन [10]प्रशंसा की [11]अलग [12]माल होते हुए भी।

ग्रेक वात ग्रौर राखूं छूं । वादसाह फुरमाई—कहौ । तौ ग्रमीर ग्ररज कीवी— मिस्र देस रौ वादसाह माल भेळौ[1] करै थौ । सिपाही री खवर नही लेवतौ ग्रर माल री संदूखां[2] भरतौ, घणा जतन सूं राखतौ । ग्रर सांम रौ धणी साथ भेळौ करै थौ, इणमूं लड़णै रै वास्तै । ग्रा खवर ग्रमीर मिस्र नूं ग्रेक उमराव ग्ररज कीवी । सांम रौ धणी साथ भेळौ करै छै सो थांरै ऊपर ग्रावसै[3] । इण कही—म्हारौ साथ थैली मांही छै ग्रर संदूखां रै मांही छै, चाहूं जद ही ग्रावै । इतरा में सांम रौ धणी दौड़ कीवी । सो मिस्र रै धणी सूं जीतियौ ग्रर उणरै माल री संदूखां ग्राप लीनी । ग्रमीर वादसाह नूं ग्ररज कीवी—माल री ज्यूं मरद राखतौ तौ विपत[4] न पड़ती ।

दसवा, सलाहगीर वादसाह चारूं तरफां जासूस मेल्ह खवर मंगावै । जठी नूं फिसाद देखै उठी नूं जापतौ[5] करै । साहिव वेटौ ग्रावाद फकरदोला दिलमी रौ थौ । घणी समय सिराज मे वैठतौ । सो ग्रेक वार तीन दिन तक दरवार मे नही गयो, चौथै दिन गयो । तौ फकरदोलै फुरमाइयौ—तीन दिन नही ग्रावणै रौ काई कारण ? साहिव कही—परसौं म्हारौ जासूस खता री तरफ ग्रावियौ । तिण कही—खान खता रौ खता री तरफ सूं ग्रायौ, फरासखानौ देख उमराव सूं वात कीवी । सो तीन दिन सूं हूं उण चिंता में थौ—जे कांई[6] वात कीवी ? साथ देखै थौ—उणरै मारण रौ मोल रौ, उणरा विचार इलाज जोवै थौ । ग्राज कासिद[7] ग्रेक ग्रौर ग्रायौ छै । तिणसूं जाणियौ उण वादसाह साथ ग्रापरौ सरहद ऊपर मेलियौ । सो उठी री तरफ सूं खातिर जमा कर[8] इव हुजूर ग्राइयौ छूं । उमरावां नूं वादसाहा रा कांमां री इतरी खवरदारी चाहीजै । सवाल ग्रर सोच राखियौ चाहीजै । ग्यारहवा, वात भूखां री, फकीरां री, फरियादिया रो कोई नही पहुंचाय सकै छै । प्रधान ग्रर दीवाण रै डर सूं रैयत री खवर वादसाह तलक नही पहोच सकै छै । ऊ किसोक[9] छै ? ज्यू ग्राछा पाणी रा दह[10] रै माही मगरमच्छ रहतौ होवै तिणरै डर सूं पियाना लोग ग्रळगा[11] ही जे जावै । जो ग्रखतियार चलण होय तौ इणी मूध पकड़णी जे कोई ग्रापरौ दुख कहै तो उणनू सुखी करणौ ।

---

[1]शामिल [2]सदूकों [3]तुम्हारे ऊपर चढ़ाई करेगा [4]विपत्ति [5]जाब्ता
[6]क्या [7]पत्रवाहक [8]सारी व्यवस्था कर [9]कैसा [10]गड्ढा
[11]दूर ।

वाग्हवा, निवळा[1] लोगा सूं इसो सलूक करै जे उणरो भलो होय। प्रभू कही छै—जे गरीवा रा हाल पर दया करसै उणां रै ऊपर हूं पूरी महर राखस्यूं[2]। वडा कही छै—जेरदस्ता नूं वखसौ[3] तौ प्रभू जवरदस्त छै, ऊ थांका[4] मनोरथ पूरा तुरत करसै। पण ग्रादाव रीत वंदगी री वजीरां री ज्यादा उमरावा सूं छै। किण वास्तै ? जे इण ऊपर मिनखा री ग्रदेखाई घणी छै, ग्रर ग्रदेखा उणरा घणा सेवक वादसाह रा छै। विसेस जिका मिनख मुनसव ग्रोपत[5] में उणसूं सरीक छै तिका सदा उवा ठौड लेण में छै। दगा प्रपच वणाय उणनू पाडण री वाट जोवता[6] रहै छै। तिणसूं उणनूं कोई जतन सांच ग्रर थोडा लालच विना नही छै। चाहीजै वजीरत काम में कठै ही चूकै नही। तौ दुसमण ग्रागळी सूं वताय न सकै। वुजरची महर नू पूछी—वजीरात रै लायक कुण छै ? तौ कही—ऊ कोई छै जिणनू चार, तीन, दोय, ग्रेक, होय। कहो—वयान कर कहौ। तौ कही—ग्रेक उण चारां मे वदगी सावधानी जिण सूं ग्रंत ग्राद काम रौ जाणै। दूजा, जाग्रताई जे ग्रापनू समै पहला मरणांत ठौड में नही नाखै। तीजा, मनगराई छातीफ्रलै[7] कामा में। चौथां, दातार होय, वडी हीमत होय। तीन में ग्रेक ग्रा छै—जद किणी सेवक नू भलो देखै तौ निवाजस[8] कर वधारै। दूजां, जिको ही उणरो ग्राग्या सू सिरकसी करै[9] तिणा नू चूंहटी भरै। तीजौ, विपत थका समै रा नू त्यार भारीखमो[10] रहै। दोय मे ग्रेक ग्रा छै—तरफ वादसाह री रियायत रा जतन करै ग्रर रैयत रा जतना सूं पण वेपरवाही न करै। ग्रेक वात ग्रा छै—किणी काम मे तरफ प्रभू री सूं वेखवर नही रहै। प्रभू नू भूलै नही। वडा कहो छै—जिण वादसाह सूं प्रभू राजी होय, तिणनूं वजीर साचो सयाणो भलै सुभावा रो सावधांन देवै। वादसाह कोई कायदो न्याय रो चूकै तौ ऊ याद जणा नूं देवै। जो प्रभू वादसाह सूं वेराजी होय तो उणनू वजीर मूंडी करतूत रो चोर, भूंठो ग्रर ग्राळसी देवै, वेमुध देवै। तीसूं धणी न्याय री रीत चूकै तौ ऊ याद न कराय सकै। तौ पाछै जिको वजीर साचो पवित्र व उत्तम सुभावा रो छै सो वादसाह रो भीडो[11] छै।

सवारणा काम कायदा न्याय ग्रर दान ग्रहसान रा। उन्नीस कायदा वताइया

---

[1]निर्वल [2]महरबानी रखूंगा [3]माफ करो [4]तुम्हारे [5]ग्रामदनी [6]ग्रपदस्थ करने का मौका देखते रहते हैं [7]हिम्मतवर [8]इज्जत [9]ग्रवज्ञा [10]दृढ [11]सहायक।

छै। प्रथम तौ प्रभू री तरफ री जतन। आ वात सारा ऊपर छै। किण वास्तै? जद किणी प्रभू री तरफ जतना सूं राखो सो पण आपरा हाल रो जतन राखसो। दूजां, मसावत सूं बरावरी कांम गे राखै। बादसाह रा, सिपाहिया रा, रंयत रा कांम में पक्ष किण रौ नही राखै तौ न्याव होय। तीजा, जिण काम री आरभ करै तिणरा अंत मे नजर कर देखै। विगाड़ उणमें होय तिको सोच करै। चौथां, कायदा रीत भली राखै सो उवा[1] भलाई उणनूं आडी आवै[2]। जिसा खारा मीठा रोंख[3] वावै उसा ही फळ चाखै। जो तूं बादसाह रौ छै, अर तूं चाहै छै, सदा रहै, इज्जत मांन थारौ छै, तौ सबै में इसी रीत कर तिका प्रभू अर संसार बखाण करै[4], कबूल करै। पाचवा, किफायत आपरी अकल सूं जाहिर करै। तमाम कांम मे वजीर री भली किफायत दौलत री वाधणी। सो बणावण में लिखणै सूं घणी छै।

अजददोलौ अबूअली हसरमी जिको वजीर आपस मे आवयोयेरी रौ थौ तिणसूं वेराजी होय इण कन्है आदमी भेजियौ, तरवार उघाड़ी[5] सो तिणनूं कही—आ तरवार उण आगै राख। अेलची आय तरवार काढ़ आगै मेल्ही, कुछ न कहियौ। तरै उण वजीर कलम अेक उण आगै नांखी अर कही—औ थारौ जवाब छै। पाछै अजद रा काम नूं लागियौ। सो आप कागद लिख सारा उमरावा नूं उणसूं फिराय अर अजद नूं पकड़ाइयौ, कैद कियौ। उणरौ तमाम देस आपरै घणी रा देस रै भेळौ कियौ[6]। छठा, जो बादसाह विचार विचारै तिणमे मसलत[7] मालकां री न होय तौ चाहीजै उण काम सूं राजी नही होय। पण सभा मे उणनूं मानै, वखाणै, सभा मे उणरा औगुण[8] न कहै। बादसाह नदी दाई[9] छै, सो पहाड़ सूं नीची उतरै। जिणनूं कोई चाहै, समचै[10], अठी लै जावै तौ पाणी रै धक्कै सूं बहि जावै अर मरणात मे पड़ै। जो पहला वहणै देवै अर जतना सू आहिसता अेक तरफ उणरी माटी काटा सूं ऊंची करै तौ दूजी तरफ ले जाय सकसै[11]। इण ही भात विचार बादसाह रा मे विगाड़ होय तौ नरमाई सूं बुद्धिबळ कर समभावै-बुभावै। पण धणी नूं धाक सूं मनाइया न मानै। विसेस नरमी सू उण विचार मे औगुण होय, सो अरज कर समभाय

---

[1]वह [2]काम आवे [3]वृक्ष [4]प्रशंसा करे [5]निकाली, नगी की [6]शामिल किया [7]सलाह [8]अवगुन [9]नदी की तरह है [10]चाहते ही [11]ले जा सकेगा।

ग्रागो कढावै। भली वेळा[1] समय देख ग्राछी ग्रोठी[2] वातां कहै ग्रर ग्रेकात मे ऊ विचार वुझावै[3]। सातवां, मुनसव, दौलत, पद ग्रापरा सूं ग्रंध न होय। क्यो ? प्रकत वादसाह री कठै पाणी, कठै ग्राग रौ सो सुभाव राखै छै।

दौलत रै विपत लागी छै। ग्रेक वडा वजीर हिंदुस्थान रा सूं कही—ग्रापरै वास्तै क्यो घर वणावै नही ? उण कही—म्हारै दोय घर सहर में छै। ग्रेक दीवाणखानौ, जिण समै वहाल होऊ। ग्रेक वदतखानौ, जिण समै उतारौ होय। जिण वात रौ किसौ लाड[4] दुख ग्रर दौलत रौ, जिका ग्राख रा टमकारामे[5] दुख रहै न दौलत। ग्राठवा, होय सकै जितरै भलाई ग्रहसान गुण मिनखा ऊपर करै। समय नूं हाथ सूं जावता पहला ही करै। नवा, ग्रासा[6] पूरण मनसा[7] निरासियां ग्रासामुखिया री में पक्ष घणी करै। क्यूंकै नफो सेवा वादसाहा री रौ मागणै वाळा री मनसा पूरणै मे छै। मोमनी नै ग्रला रै वेटै हुसेनसाह कही—ग्रेक मिनख रौ काम काढणौ मोनूं घणौ प्यारौ लागै छै। सत्तर वरस रा गोसा वैठणै सूं दांना या क्ही छै—किलराग्रेक वरस वादसाह रौ पागड़ौ[8] दाव ग्रसवार करतौ सो थारी गरज ग्रा थी—काम मिनखा रौ काढ भलाई करूं। घणा ग्रोलिया हकीमा ग्रौ नफौ मोटौ जाण खिजमत[9] वादसाहा री कीनी छै। सेख कवीर ग्रेक वार सतरै वार वादसाह ग्रजद दौला कन्है ग्राइया ग्रेक गरीव रै काम नूं। सो काम न हुवौ। दिन रै ग्रखीर[10] ग्रजददौला कही—हे सेख ! तूं ग्रजव मिनख छै, इतरौ फिरियौ पण थारौ काम सुधरियौ नही, ग्रर फेर भी तूं ग्रावै ही छै, थाकियौ पण रहियौ नही। सेख कही—हे वादसाह ! म्हारौ काम तौ सुधरियौ। क्यूंकै तिणमे म्हारी नियत प्रभू री रजा री थी सो हूं जाणूं छूं कै प्रभू म्हारै ग्रावणै-जावणै पर मोनूं राजी छै। पण काम थाहरौ सुधारियौ नही। क्यू ? जे उण विचारै रा काम मे ताकीद कर नही काढियौ, भूरै नूं निरास कियौ। तैं ग्रा नही जाणी—जिनरै दौलत-काम भूखा दूवळा[11] रा नही सवारै[12] उतरै दणरा काम नही सुधरै। ग्रजद-दौला खवरदार होय सेख रा वखाण किया ग्रर तमाम काम सेख रै कहै माफक किया।

---

[1]समय [2]दुबारा [3]विचार करावे [4]प्रेम [5]पलक झपकन में
[6]माशा [7]मशा [8]रकाब [9]खिदमत, चाकरी [10]दिन ढलने पर
[11]दुर्बल [12]पूर्ण नहीं करे।

दसवां, बादसाह नूं दान-पुण्य ऊपर ही राखीजें, जिण भात उणरो पुण्य सारा नूं पहोंचे। कह्यो छे—वजीर ग्रतावक रो उणरे माल रो पुण्य घणो करतो सो ग्रा खबर बादसाह नूं पहोंची—जे वजीर माल घणो[1] खरचे छे। तरे ग्रतावक मुस्तोफी नूं कह्यो—हमें ग्रोर चोठी किणी नूं मत देवे। जे दीवी तो हाथ कटाय देस्यूं। दूजे दिन वजीर सूं ग्रेक ग्रतीत कुछ मागियो। तो वजीर मुस्तोफी नूं कह्यो—जे फला ठोड़ चोठी लिखदे। मुस्तोफी लिखणे में ढील करे थो। वजीर कह्यो—काई ढील करे छै? हाथ रे कटणे सूं डरे छै नें मोमूं न डरे छै, फासी घात[2] टेर मारू[3] छूं। ग्रा खबर ग्रतावकसाह नूं पहोंची। तरे वजीर नूं बुलाय पूछी—मुस्तोफी नूं क्यूं टेरतो थो? वजीर कह्यो—हूं चाहतो थो सदापरदा[4] दौलत थारो नूं मेख तीसूं बाधतो थो, सेहठो करूं, ऊ न करण दे, सो नही टेरणे लायक छै? ग्रतावक राजी होय वजीर रो कारण बधारियो[5]। तवारीख मे मजकूर छै—बादसाह मलकसाह नूं कोई कह्यो—वजीर नजामल मुलक मोटी ग्रामद पिटता, नेक मरदा, गोसे नसीना, ग्रेकात बैठणे वाळा नूं देवे छै, तिणसूं थानूं कुछ नफो नही छै। इतरा माल सूं ग्रेक पक्की फौज राख सकीजे छै[6]। बादसाह ग्रो वचन वजीर नूं बुलाय कहियो। वजीर कह्यो—उण पईसा सूं लस्कर दीन रो राख सकीजे। जिका वैरिया नूं ग्रेक गज लाबी तरवार सूं ग्रर तीर जिका तीन सौ कदम जाय तिणसू दूर तोसू करे। हूं थारे वास्ते ग्रो लस्कर राखूं छूं तिका साझ सू प्रभात ताई प्रभू री दरगाह वारे ऊभा छै। थारे वास्ते बीणती करे छै, हाथा सूं थारी मनसा मागे छै[7] ग्रर तरवार हिम्मत री बादळा[8] नूं पहुचावै छै। तीर निसास[9] रो सात ढाल ग्राकास री सूं परे काढै छै। ग्रर लस्कर, तूं म्हें सारा इणारे ही ग्रासरे[10] ऊपर छा। मलकसाह कह्यो—साबास, तूं वळे[11] ग्रो लस्कर घणो राख।

ग्यारहवा, कदर काम री जाणे तिणसूं नफो लेवे। काम सवारण ग्रर मित्र बधारण मे किणी नूं दुख न पहुचावे। नहीतर[12] जिण समै काम उतरे तरे पछतावा सरमिंदगी रै कुछ नही रहै। ग्रेक बडो ग्रादमी कामरे उतरिया

---

[1]ग्रधिक [2]फासी डाल कर [3]लटका कर मार दूगा [4]हमेशा [5]इज्जत बढाई [6]रखी जा सकती है [7]तेरी इच्छा-पूर्ति के लिए प्रार्थना करते हैं [8]बादल [9]निश्वास [10]सहारे पर [11]ग्रौर भी [12]वरना।

रै पाछै रोज रोवै थो। तौ हजूरिया कही—आ जोग नही छै। थां उतरिया रोवौ छौ। उण कही—हू काम उतरिया न् नही रोऊ छूं। हूं साच जाणूं छूं कांम तौ विगर उतारा रा रै छै नही। औ रोवणो[1] तौ म्हारौ इण वास्तै छै—जे किणी सूं भली की छै तौ सोचूं छूं कै किणी सूं भूंडी नही करणी थो। बारहवा, भीड़ ससारी मिनखा री आवणै-जावणै सूं दुख नही पावै। इणा सूं मिळता आस नही चाढै[2]। साच जाणजे—मिनख तौ चलण[3] रा चाकर ही छै। चलण छै तौ कोई आवै जावै छै, नहीतर कोई आवै ना जावै। तेरहवा, मित्र सांचा, भला, खरा छै, सोना रै वडै ढेर सूं। चौदहवा, अमाल[4] जालम, चोरटा सूं गाफिल नही रहै। खोजना इणा रै करतूत री करतौ रहै। अन्याइया नूं रैयत रै ऊपर जोर न पकडावै। जे किणी अमाल री चोरी री अनीत[5] सुणै तौ उणनूं परौ कर[6] दूजा नू डरावै। *अन्याइया नूं सजा देवणै री जरा ही ढील नही करै।* पन्द्रहवा, अमाल सू सोक[7] नही लवै। किण वास्तै कै जितरै कोई सोक दूजा सूं नही लेवै, तीसू और सोक लेवण वाळो जवून[8] होय छै। अर वजीर री जवूनी, निवळाई जोग न छै।

सोळहवा, अदेखा मकर वैरी या चुगली चुगला री सूं खवर पावै तौ इसी धारै जे उणरै मन मे कुछ डर परवाह नही छै। वादसाह क्न्है इणा सूं क्रोध जाहिर नही करै। जो करै तौ जो वचन उणरौ ठहरै, जो माहोमाहे सवाल-जवाव, वोला-चाली पडै तरै जवाव भार नरमी[9] सू देवै। हळकाई, ओछाई नही कहै। सदा जीत तरफ नरमी भरखमा[10] री छै। सतरहवा, वादसाह नू इसी दिखावै, नक्स[11] धणी रा मन मे घालै। जे अेक काम भीड पडिया तमाम माल अेक इमारत[12] नू जठै फुरमावस्या[13] तठै खरचसै[14]। इणरा *माल नूं धणी आपरौ गिणै। लालच नही करै। अठारहवा, किणी नू अमन* देवै तिणनू पूरौ विचारनै दै। वारवार परखिया विगर भरोसौ नही करै।

उन्नीसवा, जिण काम रै पैसणो[15] ही आसान होय अर निसरणो दोहरौ होय सो आरभ नही करै। जिण काम मे पैसणो छै उणरौ पहला निकाळ[16]

---

[1]रोना [2]रहोगी नहीं चढ़ावे [3]जिसकी चलती हो [4]नौकर [5]अनीति, अन्याय [6]दूर हटा [7]रिश्वत [8]दूषित [9]शालीनता [10]सहनशील [11]नक्श, चेष्टा [12]इशारा [13]कहने [14]खर्च करेगा [15]प्रवेश करना [16]निकलने का रास्ता।

देखजै। कलम री साथ—मुंसो, नवीसंदा, इणां तालक कागद लिखणा, श्रोपमा जुगत लिखणी छै। सो श्रै चाहीजै श्रमीन मोटा खेट रा पूरा भरोसादार, श्राछी प्रकृत, तत्खण समभणा व विद्या सूं खबरदार होय। हकीम श्ररस्तू पूछियौ तरै कही—मुसी पूरौ मोहडा रौ चाहीजै। श्रेक बादसाह दूजै बादसाह नूं लिखी—जणा तूं म्हारै ऊपर श्रावसै तठा पहलां हूं थारै ऊपर श्रावस्यूं श्रर मारस्यूं[1]। सारा वजीर उमराव जवा में चुप रहिया, जे काईं जवाब लिखायौ जावै। बादसाह रै श्रेक मुसी थौ सो घणौ पिंडत श्रर श्राकल[2] थौ। तिण कही—हूं इसौ जवाब लिखूं छूं जे सगळा नूं[3] पसंद श्रावै। पाछै लिखियौ—हूं श्रर तूं पत्थर व काच रै सीसा दाईं छा, सो जाण—चाहै पत्थर सीसा ऊपर पड़ौ या सीसौ पत्थर ऊपर पडौ, सीसा रौ नास हर भात छै। इण जवाब सूं सगळा खुम हुवा।

साथ श्रमाला रौ छै सो तालुक वजीरा रै छै। सो श्रमाल भलौ भला सुभावा रौ होवै। खुदगरज लालची न होवै। नोसेरवा फुरमाई छै—श्रामल दानतदार होवै। कुरीत वाळौ[4] नही होवै। लोगा सूं श्रजोग[5] बात न करै। तीसूं बादसाह री बदनामी न होवै श्रर श्राप ही बदनाम न कहावै। श्रेक वजीर श्रेक परगनै ऊपर श्रमाल नूं मेलियौ। तिण उठा सूं वजीर नूं लिखी—जे फलाणौ काम करौ तौ माल घणौ पैंदा होवै। वजीर जबाब में पाछी लिखी—चुगली री बात म्हां श्रागै खोटी छै। जीभ चुगला री गूगो छै, हाथ छोटा छै। तूं पाच दिन काम मे छै, तिणमें इसी मता करै जे कारण श्रपजस[6] श्रर फट-कार श्रापरी रौ होवै। दूजां चाहीजै—इसौ विचार नही करै जे बादसाह श्रर वजीर मोसूं राजी छै। ऊ तौ तरफ रैयत री सूं श्रळग[7] नही छै। श्रमाल बादसाह कन्है श्रावियौ तौ कैद कर दण्ड दीन्हौ। पाछै फेर फुरमाइयौ—उठै फेर जावौ, डेढ साल गुदस्ता रा लावौ। ऊ श्रमाल हैरान हुवौ। श्रेक सेख सूं सलाह पूछी। सेख श्रा फुरमाई—कबूल कर, डरै मत। पण श्रैस रै बरस[8] रीत श्राछी राखजै, कुनीतिया परी उपाडजै[9], रैयत री रजामदी पैंदा करजै, श्रतीता नूं रोजीना खत दीजै, फेर श्रावजै। तोनू कुछ कसालौ[10] होयसै तौ थारै बदळै हू

---

[1]मारूंगा [2]अक्लवान [3]सभी को [4]बुरे रास्ते पर चलने वाला
[5]अयोग्य [6]अपयश [7]दूर [8]इस वर्ष [9]उखाड देना, दूर करना
[10]कष्ट।

जवाब करस्यूं । ग्रमाल फेर उठै ही गयौ । जिण भांत सेख फुरमाई थी तिण भात भलाई बाद कीवी, फेर ग्राइयौ । तरै पूरी दम दीनार थी उणरी ग्रेक दीनार लाइयौ । तौ वादसाह मया कीवी । ग्रमाल हकीकत सारी सेख सू कही । गयै बरस घणी किफायत कीवी, माल घणौ लायौ, तीसू दुख पायौ । ग्रैस माल कम लाइयौ ग्रर घणी मया पायी । सेख कही—उण वार कितरा हजार मिनख थारै वैरी था तिणसू ऊ फळ मिळियौ[1] ?

हजूरी कदीमी तिका हजूर री सभा में वडा छै । इणा री कारण इज्जत कीवी चाहीजै । इणा री सरल ग्रा छै—जिकी वादसाह नू सुहावै न सुहावै सो जाणै । ग्रर उण मामूल[2] माफक करै जे वादसाह नू सुहावै । हजूरी वादसाह रा नू नही भावै, सुहावै उवा नही करै । वदगी सेवा वादसाह री मे कोई वसत नफादार जीव रा सुख छोडणै सू नही छै । जद ग्रा साच होय तरै वात सभा में वादसाह सू राजी होय जसी कहै । ग्रापरी रजामदी त्याग करै । वादसाह सलामत रा बोलवाला चाहै तरै भलौ उणरौ होवै जो वादसाह मे कोई चूक होय तौ कठै ही प्रकास न करै ग्रर जतना सू छुडावै[3] । वोल मे, वचन में वादसाह री भलाई करणी चाहीजै । भूडी चूक गळती ग्रापरी बतावै पण ग्रसगा सू वाद-विवाद न करै । धणी रै काम मे हुकम तन मन सू राखियौ चाहीजै तौ कुसळ रहसै[4], ग्रा वात जाणणी ।

ग्रेक वादसाह रै ग्रेक चाकर घणौ ही रूपवत थौ । सो वादसाह ग्रेक हजूरी नू कही—इणरी भली सूरत छै । हजूरी ग्ररज कीवी—हा साहिब ! घणौ फूटरौ[5] छै । वादसाह फुरमाई—तू इणसू मित्रताई राखै छै ? इण ग्ररज कीवी—नही । वादसाह फुरमाई—किण वास्तै ? हजूरी ग्ररज कीवी—जिकौ वादसाहत सू प्यार राखै छै तिणसू ही हू प्यार राखू छू । पण जिण किणी नू वादसाह दोस्त राखै तौ म्हारी काई हद उणसू दोस्ती राखू । वादसाह नू ग्रदाव[6] उणरी घणी ही पसद ग्राई । उणरौ पायौ वधारियौ[7] । ग्रदव मोटी वसत छै । जिणमे ग्रदव छै सो वडो छै । छोटी जात होवै तौ ग्रदव सेती[8] ऊ मोटौ छै । बोलणै-चालणै में ग्रदव प्रथम सू पूरौ ही राखणौ चाहीजै ।

इण भांति किताब लिख पूरी कर वादसाहजादे नू दुग्रा दीवी । नाम

---

[1] फल मिला [2] मालानिवत [3] छुडवाने का प्रयत्न करे [4] कुशलता-पूर्वक रहेगा [5] सुदर [6] अदव [7] ओहदा बढ़ाया [8] अदव के कारण ।

अखलाक-अल-मोहसनी दियौ छै। तिण मे वरस ग्रंथ रौ नीसरै छै। सो मो सग्रामसिंघ, फारसी री तौ वडी जोड़ थी पण पाधरी भासा मे आछी बाता, आछी सीखा लिख ग्रंथ वणाय नाम नीति प्रकास दियौ छै। इणरै वाचिया-सुणिया में घणौ नफौ छै।

प्राकृत भाषा नीति प्रकास समाप्त

परिशिष्ट

विवेचनात्मक निबंध

राजस्थानी भाषा में अनुवाद की परम्परा

[श्री अगरचन्द नाहटा]

साहित्य, मानव जीवन का एक बहुत बड़ा अनुभव-स्रोत है। जब से मनुष्य ने अनुभव-सागर में गोते लगा कर कुछ ऐसे विचार या तथ्य प्राप्त किए जो अपने जीवन के साथ-साथ दूसरों के जीवन के लिए भी उपयोगी सिद्ध हुए उन विचारों या उन तथ्यों को किसी भी भाषा रूपी धागे से पिरो कर उसे एक माला का रूप दे दिया जिसे कंठ या हृदय में धारण करने से मनुष्य की शोभा और महत्व में बहुत बड़ी अभिवृद्धि हुई। अपने हित के साथ-साथ दूसरों के हित के लिए उस काव्य-रचना का सृजन हुआ, इसलिए उसे 'साहित्य' की संज्ञा प्राप्त हुई। विचारकों ने साहित्य शब्द की अनेकों व्याख्याएँ की हैं एवं काव्यादि ग्रंथों के लक्षण बांधे हैं। इस तरह साहित्य-शास्त्र एक स्वतन्त्र ग्रन्थ या विषय बन गया। पर उसकी मूल चेतना स्वपरहित ही में सन्निहित है। जिस से लोक का अहित होता है, वास्तव में चाहे वह कितना ही सुन्दर लगे, शब्दालंकार की छटा से परिपूर्ण हो, चमत्कृति पैदा कर सके पर मेरी दृष्टि में वह साहित्य नहीं है। साहित्य तो अमृत और रसायन जैसा है जिससे भौतिक शरीर न रहने पर भी मनुष्य अमर बन जाता है। इसलिए विष रूप अकल्याणकर साहित्य को साहित्य की संज्ञा देना उचित नहीं लगता। कल्याण की कामना से ही उसका सृजन हो, जिसका परिणाम भी कल्याणकारक हो, वही सच्चा साहित्य है।

साहित्य का सृजन कब से प्रारम्भ हुआ और आदि साहित्यकार कौन था? इसकी खोज मानव की उत्पत्ति और विकास की खोज जैसा ही जटिल कार्य है। प्राचीन काल में मनुष्य की स्मृति बहुत थी, अतः मौखिक परम्परा से ही लाखों-करोड़ों वर्षों तक भारतीय ज्ञान-विज्ञान की धारा गुरु शिष्य परम्परा से प्रवाहित होती रही है, वह अनुसन्धान का विषय हो ही नहीं सकती। वर्तमान में जो सब से प्राचीन ग्रंथ वेद माने जाते हैं, वे भी कई हजार वर्षों तक मौखिक रूप में ही पठन-पाठन के विषय रहे हैं और उनके काल के विषय में अनेकों मत हैं। उनका मूल रूप क्या था, और उनमें कब कब क्या परिवर्तन हुआ, इसका भी पता लगाना आज सम्भव नहीं है। यद्यपि रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों के मूल पाठ के अनुसन्धान का प्रयत्न विद्वान् लोग अपने-अपने ढंग से कर रहे हैं पर वह भी कहाँ तक संतोषप्रद

होगा, विचारणीय है। जो ग्रंथ सैकडो या हजारो वर्षों तक लिखे नही गये, उनके मूल पाठ का निर्धारण करना वास्तव मे ही एक जटिल कार्य है।

भारत मे अनेक तरह की भाषाएँ और लिपियां हजारो वर्षों पहले भी प्रचलित थी, जिनका उल्लेख प्राचीन जैनआगमो, बौद्ध-पिटको और वैदिक साहित्य मे मिलता है। पर उन भाषाओ और लिपियो का निर्मित व लिखित साहित्य आज प्राप्त नही है। जिन प्राचीन लिपियो और भाषाओ के नाम उन ग्रथो मे मिलते है, उनका स्वरूप क्या था, परस्पर मे क्या अतर था, इसको जानने के साधन भी अब प्राप्त नही हैं। शिलालेख, जो किसी भी भाषा और लिपि के स्वरूप को जानने के सबसे प्रामाणिक साधन है, वे भी अधिक प्राचीन नही मिलते। यह तो एक बहुत ही सौभाग्य की बात समझनी चाहिए कि अन्वेषण एव इतिहास-प्रेमी पाश्चात्य विद्वानो ने घोर परिश्रम करके अनेको स्थानो की खुदाई करके भारतीय प्राचीन सस्कृति को प्रकट करने वाले महत्वपूर्ण साधन ढूंढ निकाले और प्राचीन शिलालेखो की लिपियों को पढ डाला। यद्यपि इस कार्य मे भारतीय विद्वानो की भी महत्वपूर्ण देन है, पर इस कार्य को प्रारम्भ करने मे पाश्चात्य विद्वान् ही अग्रणी हैं।

प्राचीन ग्रन्थो मे उनमे पहले के जिन ग्रथो का उल्लेख मिलता है वे प्राचीनतम ग्रन्थ अधिकाश लुप्त हो गए है। अतः हमारे ज्ञान-विज्ञान की प्राचीन परम्परा कितनी प्राचीन और किस रूप मे थी, यह ठीक से बतलाना सभव नही रहा। फिर भी उन उल्लेखो से दो बाते स्पष्ट हैं कि हमारी परम्परा बहुत प्राचीन थी और हम अपना बहुत सा प्राचीन साहित्य खो चुके हैं। एक-एक विषय के कितने-कितने ग्रंथ रचे गए थे, यह तो उन ग्रंथकारो के नामादि से, जो प्राप्त ग्रथो मे मिलते हैं, स्पष्ट है और उनमे हमारी प्राचीन साहित्य-समृद्धि का कुछ आभास मिल जाता है।

प्राचीन भारतीय साहित्य, सस्कृत, पाली, प्राकृत और तमिल आदि भाषाओं मे मिलता है। उनमे से दक्षिण भारत की भाषाओ मे तो इतना परिवर्तन नही हुआ जितना कि उत्तर भारत की भाषाओ मे। यह तथ्य उपलब्ध साहित्य से स्पष्ट है। राजनैतिक उथल-पुथल भी उत्तर भारत मे ही ज्यादा हुई है। उतर भारत की प्राचीन उपरोक्त तीनों भाषाओ मे से प्राकृत और सस्कृत मे तो दो तीन हजार वर्षों से बराबर ग्रन्थ लिखे जाते रहे हैं पर जनभाषा के रूप मे ये दोनो भाषाएँ साहित्यिको से प्रतिष्ठित नही रही। प्राकृत का स्थान अपभ्र श ने ले लिया और अपभ्र श से उत्तर भारत की प्राय. सभी प्रान्तीय भाषाएँ विकसित हुईं। एक-एक भाषा की कई बोलियां हैं। इस तरह उत्तर भारत मे छोटी-बडी अनेको भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलित है और प्रत्यक भाषा का अपना-अपना साहित्य है। दक्षिण भारत मे प्रधानतया ४ भाषाएँ हैं जब कि उतर भारत की १४ प्रान्तीय भाषाएँ तो राष्ट्रीय सरकार द्वारा ही स्वीकृत हैं। वैसे और भी कई भाषाएँ ऐसी हैं जो अपने स्वतन्त्र अस्तित्व एव महत्त्व के कारण स्वीकृत होनी चाहिएँ। इनमे से सिन्धी को तो स्वीकार कर लिया गया है पर राजस्थानी अभी तक उपेक्षित ही है।

अपभ्र श से निकली हुई उत्तर भारत की प्रातीय भाषाओ मे राजस्थानी बहुत प्राचीन और सपन्न भाषा है। इस भाषा का क्षेत्र राजस्थान तक ही सीमित नही रहा है पर मध्य-

काल में राजस्थान के अतिरिक्त मालवा, गुजरात, सौराष्ट्र जितने व्यापक प्रदेश में जिस एक सी ही भाषा का प्रचार था उसे विद्वानों ने 'प्राचीन राजस्थानी', 'प्राचीन गुजराती' एवं 'मरु-गुर्जर' के नाम से संबोधित किया है। राजस्थान में इस भाषा का प्राचीन नाम 'मरु-भाषा' था क्योंकि राजस्थान विभिन्न राज्यों में बँटा हुआ था और उनमें सब में बड़ा प्रदेश 'मरु' या मारवाड के नाम से प्रसिद्ध था। अपभ्रंश की सबसे अधिक विरासत राजस्थानी भाषा को मिली है। हजारों देशी शब्दों एवं साहित्य प्रकारों की परम्परा में यह स्पष्ट है। गत ८०० वर्षों से तो इस भाषा में निरन्तर साहित्य-सृजन होता रहा है। जैन विद्वानों की कृपा से राजस्थानी का प्राचीन साहित्य भी बहुत अधिक सुरक्षित रह गया। हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में 'आदि काल' की हिन्दी रचनाएँ इनी-गिनी ही मिलती हैं और उनमें भी बहुत सी तो राजस्थानी की ही हैं जब कि इसी आदिकाल की राजस्थानी रचनाएँ सैकड़ों की संख्या में प्राप्त हैं। डा० हरिशंकर 'हरीश' ने 'आदिकालीन हिन्दी जैन साहित्य' शोध प्रबन्ध लिखा है उससे यह भलि भाँति स्पष्ट है।

मौलिक साहित्य के समान ही अनुवाद या टीका-टिप्पणी की भी बहुत उपयोगिता है। अन्य भाषाओं में जो महत्त्व के और उपयोगी ग्रंथ होते हैं उनका अनुवाद अपनी भाषा में किए बिना जनसाधारण उससे लाभ नहीं उठा पाता और कठिन ग्रन्थों की टीका टिप्पणी नहीं लिखी जाने पर उनका भाव समझने में कठिनता होती है। इसलिए अनुवाद और टीकाओं का भी विशेष महत्त्व है। इसी बात को ध्यान में रख कर भाषान्तर करने और टीका लिखने की परम्परा बहुत प्राचीन समय से चली आ रही है। प्राकृत, संस्कृत और अपभ्रंश आदि भाषाएँ जब जन-भाषायें न रह कर साहित्यिक ही रह गईं, तब उन भाषाओं के ग्रन्थों को समझना कठिन हो गया। पर, उन भाषाओं में बहुत ही उपयोगी और महत्त्व के ग्रन्थ लिखे गए थे, अतः उनका भाषान्तर किया जाना आवश्यक हो गया। कुछ महापुरुषों की वाणी के रूप में भी उन ग्रंथों के प्रति जनता की बड़ी श्रद्धा रही है। इसलिए उनका समझना तो अत्यावश्यक था ही, वैसे परवर्ती साहित्य के व आदि स्रोत और प्रेरक ग्रंथ रहे हैं। राजस्थानी भाषा में प्राकृत-संस्कृत ग्रन्थों के अनुवाद बहुत अधिक संख्या में हुए और प्राकृत-संस्कृत के अतिरिक्त हिन्दी और राजस्थानी ग्रंथों पर भी राजस्थानी भाषा में टीकाएँ खूब लिखी गई हैं। प्रस्तुत लेख में उन सबकी जानकारी देना तो संभव नहीं है, पर यहाँ थोड़ी सी झाँकी अवश्य कराई जायेगी जिससे राजस्थानी में अनुदित साहित्य भी कितना विशाल और समृद्ध है— इसका कुछ परिचय पाठकों को मिल सके।

राजस्थानी अनुवादों की विविध शैलियाँ हैं और उनके कई नाम हैं। जैन ग्रंथों या जैन विद्वानों के किए हुए राजस्थानी अनुवाद और टीकाओं को प्रधानतया 'टब्बा', 'बालावबोध' और 'वार्तिक' के नाम से ही संबोधित किया गया है। 'टब्बा' संक्षिप्त शब्दानुवाद का द्योतक है। हस्तलिखित प्रतियों में मूल पाठ बड़े अक्षरों में प्रति के बीच में उपयुक्त जगह छोड़ कर ही लिखा जाता है और उस पाठ के ऊपर उसका शब्दार्थ राजस्थानी में लिख दिया जाता था। ऐसी सैकड़ों प्रतियाँ मिलती हैं। इसे टब्बा शैली कहते हैं। कुछ प्रतियाँ जिसे 'त्रिपाठ' कहते हैं, उनमें मूल पाठ की कई पंक्तियाँ पत्र के बीच में बड़े अक्षर में लिखी जाती और ऊपर

और नीचे उससे छोटे अक्षरो मे उस पाठ का विवेचन लिख दिया जाता था। इसी तरह पच-पाठ वाली प्रतियो मे पूरे पत्र के बीच मे मूल पाठ और चारो ओर हासियो मे उसकी टीका या शब्दार्थ लिख दिया जाता है। यह तो हुई 'टब्बे' लिखने की शैली की बात।

'बालावबोध' टब्बे से कुछ विस्तृत विवेचन का नाम है। बालक भी सरलता से समझ सकें इस तरह की टीका को 'बालावबोध' कहा गया है। बालावबोध लिखने की उपरोक्त शैलियो के अतिरिक्त यह भी शैली रही है कि मूल-ग्रन्थ की एक गाथा या गाथा का थोडा-सा पद लिख कर उसके बाद (उसका शब्दार्थ ही नही पर) आवश्यक विस्तृत विवेचन लिख दिया जाता है। उसमे मूल पाठ अलग से बडे अक्षरो मे लिख कर मूल और विवेचन दोनो एक ही से अक्षरो मे सीधे रूप मे लिख दिया जाता है। उसे 'सूड' भी कहते हैं। कुछ बालावबोध मे मूल ग्रन्थ मे जिन प्रसगो या कथाओ की सक्षिप्त सूचना रहती है—उन प्रसगो का अन्य ग्रन्थो के आधार से विशेष स्पष्टीकरण किया जाता है और कथाएँ देदी जाती हैं। इसलिए कई बालावबोध मूल ग्रथ से दस-बीस गुने भी हो जाते हैं। 'वार्तिक' राजस्थानी भाषा मे अधिक नही मिलते; जो थोडे से मिलते हैं उन्हे अन्य लेखको ने 'टब्बे' और 'बालावबोध' की सज्ञा भी देदी है। क्योकि ये दो गद्य टीका के प्रकार ही अधिक प्रसिद्ध थे। जैनेतर लेखको के रचे हुए अनुवाद इतने अधिक नही मिलते। 'टब्बा' सज्ञा का उनमे प्रचार ही नही रहा, पर 'बालावबोध' का प्रचार उनकी रचनाओ मे भी पाया जाता है। वैसे तो अनुवाद गद्य और पद्य दोनो प्रकार के मिलते हैं पर पद्यानुवाद मे कवियो ने अधिक स्वतन्त्रता से काम लिया है। इसलिए वे एक तरह से मौलिक ग्रन्थ के रूप मे ही प्रसिद्ध हो गए। प्रस्तुत लेख मे पद्यानुवादो की चर्चा नही कर के केवल गद्यानुवादो पर ही सक्षिप्त प्रकाश डाला जायगा।

अनुवाद अनेक प्रकार के पाये जाते हैं जिनमे शब्दानुवाद, छायानुवाद प्रधान रूप से उल्लेखनीय हैं। विस्तृत विवेचन तो टीकाओ की सज्ञा पालेते हैं। पर कई अनुवादो मे ऐसा भी किया मिलता है अत उन्हे भी अनुवाद मे ही ले लिया है। मूल ग्रथकार ने अपने ही ग्रथ पर टीका या विवेचन लिखा हो तो उसे 'स्वोपज्ञ वृत्ति या टीका' कहते हैं। जैन ग्रथकारो की ऐसी भी कई राजस्थानी टीकाएँ प्राप्त हैं। उनमे से कुछ तो प्राकृत सस्कृत और कुछ राजस्थानी भाषा के काव्यो की टीकाएँ है। टीकाओ की शैली भी अनेक प्रकार की मिलती है। कुछ मे सक्षेप मे भावो को प्रकट करने वाली है, तो किन्ही का झुकाव शब्दार्थ की ओर अधिक है और कइयो को विस्तृत विवेचन करना अभीष्ट था।

राजस्थानी भाषा मे अनुवाद की परम्परा १४वी शताब्दी मे प्रारम्भ हो जाती है। उस समय की जो ३–४ गद्य रचनाएँ[1] प्राप्त हैं व भावानुवाद के रूप मे हैं। 'प्राचीन गुर्जर गद्य सदर्भ' मे वे प्रकाशित हो चुकी हैं। 'टब्बा' और 'बालावबोध' १५वी शताब्दी से मिलने लगते हैं। 'टब्बे' की सबसे प्राचीन उपलब्ध प्रति स० १५१३ की लिखी हुई हमारे सग्रह मे है और 'बालावबोध' सबसे पहला खरतरगच्छाचार्य तरुणप्रभ सूरि रचित स० १४११ का है जो 'षडावश्यक बालावबोध' के नाम से प्रसिद्ध है। जैन धर्म मे साधु और श्रावकों के लिए ६ नित्य कर्म या दिनकृत्य माने गए हैं—१ सामायिक, २ चतुर्विंशतिजिनस्तव, ३ गुरु-

१ नवकार व्याख्यान सं० १३५८ गद्य सार्ध नमस्कार, सं० १३५६, अतिचार, सं० १३६६

वन्दन, ४ प्रतिक्रमण, ५ कायोत्सर्ग और ६ प्रत्याख्यान। इन छः आवश्यकों सबधी सूत्र एव विधि का निरूपण करने वाला उपर्युक्त 'षडावश्यक' ग्रथ है। आचार्य तरुणप्रभ सूरि ने इसके 'बालावबोध' विवेचन मे प्रासगिक कथाओ को भी जोड दिया है। इसलिए तत्कालीन गद्य का यह एक सुन्दर उदाहरण है। उसके बाद तो सैकडो बालावबोध और टब्बे लिखे गए जिनका परिमाण लाखो श्लोको का है। सबसे बडा 'बालावबोध' जैनागम 'भगवती सूत्र' का है जिसका परिमाण करीब एक लाख श्लोकों तक का है। वैसे ५–१० या २० हजार श्लोको तक के और भी बहुत से बालावबोध प्राप्त हैं। कई कई ग्रथो के तो २–४ या ५–१० तक टब्बे या बालावबोध भिन्न भिन्न लेखको के बनाए हुए प्राप्त होते हैं। बहुत से टब्बे और बालावबोधों के रचयिताओ के नाम नही मिलते, अतः एक ही ग्रथ के जो कई टब्बे और बालावबोध मिलते हैं उनको परस्पर मे मिलाए बिना ठीक निर्णय नही हो पाता कि वे भिन्न-भिन्न लेखकों के रचे हुए हैं या एक ही की कई प्रतिलिपियाँ हैं। जैनेतर लेखको के बनाए हुए २–३ बालावबोध १५वी शताब्दी के भी मिलते हैं पर अधिकतर १७वी शताब्दी और उसके बाद के ही हैं।

राजस्थानी मे भाषान्तर या अनुवाद विविध विषयो के ग्रथों के प्राप्त हैं। जीवनोपयोगी सभी विषयो के अच्छे ग्रथो के अनुवाद हैं। इससे जनसाधारण का बडा उपकार हुआ है। उनके बिना उन ग्रथो को समझने की इच्छा रहने पर भी समझ सकना उनके लिए सभव नही था। प्राकृत, सस्कृत भाषाओ को जानने वाले तो थोडे से विद्वान ही होते हैं अतः अधिकाश जनता अपनी भाषा म रचे हुए ग्रन्थों को ही पढ कर लाभ उठा सकती है।

जैन विद्वानो ने इस दिशा मे बहुत बडा कार्य किया है। प्राकृत भाषा के प्राचीन जैन आगमो मे से प्रायः सभी के टब्बे शब्दानुवाद और बालावबोध विवेचन उन्होंने राजस्थानी में लिख डाले। सस्कृत के भी बहुत से उपयोगी ग्रथो के टब्बे या बालावबोध उनके लिखे हुए मिलते हैं। जैनेतर ग्रन्थो के भी टब्बे और बालावबोध उन्होने काफी सख्या में बनाए और जैनेतर अनुवादो की बहुत सी प्रतिलिपियाँ कर के अपने ज्ञान-भडारों में रक्खी है। केवल हमारे अभय-जैन-ग्रन्थालय में ही जैन विद्वानो के बनाये हुए करीब २५० ग्रथो के टब्बे एव बालावबोध मिलते हैं। उनमें स बहुतो की तो दस-बीस प्रतियाँ हमारे सग्रह में हैं। इस तरह प्रतियो की सख्या तो १००० स भी अधिक हो जायगी। एक एक ग्रथ के ४–५ भिन्न भिन्न टब्बे और बालावबोध भी हमारे सग्रह मे है। नीचे उनकी सूची दी जा रही है जिससे राजस्थानी का *अनुवादित व टीका-साहित्य कितना है और उसमें जैन विद्वानो की कितनी बडी देन है,* इसका पाठको को परिचय स्वयं मिल जायगा। नीचे दी जाने वाली सूची मे सभव है कुछ टब्बे और बालावबोधो की भाषा राजस्थानी-गुजराती मिश्रित और कुछ की गुजराती भी हो सकती है। वास्तव मे उन सबको देखे बिना इनकी भाषा का सही निर्णय नही किया जा सकता पर अधिकाश तो राजस्थानी भाषा के ही हैं। १६वी शताब्दी के प्रारभ तक राजस्थान और गुजरात की भाषा एक ही थी और पीछे की भाषा मे भी अधिक अतर नहीं है क्योकि जैन विद्वान दोनों प्रान्तों मे धर्म-प्रचार के लिए समान रूप से विचरते रहे हैं। अतः राजस्थानी मे गुजराती का प्रचार व सम्मिश्रण पाया जाना स्वाभाविक है। जिन व्यक्तियो के लाभ के

लिए टब्बे या बालावबोधो की रचना की गई। वे व्यक्ति भी दोनो प्रान्तो के थे इसलिए उक्त दोनो प्रान्तो वाले समान रूप से समझ सके, वैसी ही भाषा मे उनका रचा जाना अभीष्ट एवं आवश्यक था। अब हमारे सग्रह मे जिन जिन ग्रंथो के टब्बे और बालावबोध मिलते हैं उनकी सूची हमारे यहाँ से जिस विषय-क्रम से बनी हुई है उसी क्रम से नीचे दी जा रही है—सब से पहले अग, उपाग, छेद, मूल, सूत्रो एवं पयन्नो की सूची आयेगी। उसके बाद प्रकरण, चरित्र, फिर व्याकरण, काव्य, नीति, गणित, ज्योतिष, वैद्यक, कामशास्त्र, शकुन, सामुद्रिक, स्वरोदय, पुराण, स्तोत्र आदि विषयो के ग्रथो के नाम आयेगे। जैन लेखको की रचनाओ के कुछ जैनेतर अनुवादो का भी विवरण दिया जायगा। ढूढाडी भाषा मे बालावबोध और वचनिका दिगबर विद्वानों की अधिक मिलती हैं। उनकी प्रतियाँ जयपुर आदि के दिगबर भडारो मे प्राप्त हैं।

अभय जैन-ग्रन्थालय मे राजस्थानी अनुवाद व टीका-ग्रथ—

१ आचाराग वार्तिक—पार्श्वचंद्र सूरि
२ ,, टब्बा
३ ,, बालावबोध
४ सूयगडाग टब्बा
५ ,, वार्तिक
६ स्थानाग टब्बा
७ समवायाग ,, मेघराज
८ ,, बालावबोध
९ भगवती टब्बा उत्तमविजय
१० ,, बालावबोध
,, (गागेय भागा) बाला पद्मविजय
११ ज्ञाता धर्म कथा टब्बा
१२ उपासक दशा ,, हर्ष वल्लभ
१३ अन्तगड दशाग ,,
१४ अनुत्तरोपातिक ,,
१५ प्रश्न व्याकरण ,,
१६ विपाक ,,
१७ ऊववाई ,,
१८ रायपसेणी टब्बा मेघराज
१९ जीवाभिगम ,,
२० ,, ,, जीवविजय
२१ पन्नवणा ,, विनयविमल
२२ निर्यावलिका ,,
२३ बृहत्कल्प ,,
२४ व्यवहार सूत्र ,,
२५ दशा श्रुत स्कंध ,,
२६ दशवैकालिक ,, रायचदसूरि
२७ ,, वार्तिक
२८ उत्तराध्ययन टब्बा आजिचद्र
२९ ,, बा०
३० नन्दीसूत्र टब्बा
३१ ,, बाला०
३२ अनुयोगद्वार ,,
३३ कल्पसूत्र टब्बा बा० हेमविमल
३४ ,, ,, मेरुविजय
३५ ,, ,, कनकसोम
३६ ,, ,, शिवनिधान
३७ ,, ,, क्वकसूरि शि०
३८ ,, ,, ज्ञाननिधान
३९ ,, ,, समयराज
४० ,, ,, पदमलाभ
४१ षडावश्यक बा० तरुणप्रभ
४२ ,, ,, समयसुन्दर
४३ ,, ,, हेमहस
४४ ,, ,, जिनविजय
४५ ,, ,, सोमतिलक
४६ प्रतिक्रमण बालावबोध

४७ श्रावक प्रतिक्रमण टब्बा
४८ ,, ,, बाला०
४९ यति प्रतिक्रमण ,,
५० ,, ,, टब्बा
५१ चौसरण पयन्ना ,, सर्वेगदेव
५२ ,, बाला०
५३ सस्तारक टब्बा
५४ ,, बाला०
५५ तन्दुलवयालिय ,, पार्श्वचंद्रसूरि
५६ सशक्तनियुक्ति टब्बा
प्रकरण—
५७ जीव विचार टब्बा
५८ ,, ,, बाला०
५९ नव तत्व टब्बा
६० ,, ,, बाला० उत्तमसागर
६१ ,, ,, ,, हर्षवर्धन
६२ ,, ,, ,, पद्मचंद्र शिष्य
६३ दंडक टब्बा
६४ ,, बाला० देवचंद्र
६५ दडकादि टब्बा हितधीर
६६ सग्रहणी ,,
६७ ,, बाला० दयासिंह
६८ क्षेत्र समास टब्बा
६९ ,, ,, बाला०
७० जम्बूदीप सग्रहणी टब्बा
७१ कर्मग्रंथ बालावबोध जीवविजय
७२ ,, ,, मतिचद्र
७३ ,, ,, जयसाम
७४ उपदेशमाला टब्बा
७५ ,, बाला०
७६ शीलोपदेशमाला टब्बा
७७ ,, बाला० मेरुमुन्दर
७८ पुष्पमाला टब्बा
७९ ,, बाला० मेरुमुन्दर
८० भाष्यत्रय टब्बा
८१ ,, बाला०
८२ सिंदूरप्रकर टब्बा
८३ ,, बाला०
८४ गौतमपृच्छा ,, सोमदेव शि०
८५ ,, ,, शिवसुदर
८६ गौतमकुलक टब्बा
८७ ,, बाला०
८८ पिंड विशुद्धि ,, सोमसुदर शिष्य
८९ ऋषिमडल टब्बा
९० विवेक विलास ,,
९१ ,, ,, बाला०
९२ षष्टिशतक टब्बा
९३ ,, बाला०
९४ सबोधसत्तरी टब्बा
९५ ,, बाला०
९६ सबोध कुलक टब्बा
९७ गणधर सार्ध शतक टब्बा
९८ इंद्रिय पराजय टब्बा
९९ वैराग्य शतक ,,
१०० उपदेश रत्नकोश टब्बा
१०१ ,, ,, बाला०
१०२ सम्यक्त्व स्तव ,, चारित्रसिंह
१०३ ,, कुलकट टब्बा
१०४ ,, ,, बाला०
१०५ ,, पच्चीसी ,,
१०६ दानादिकुलक बाला०
१०७ शीलकुलक टब्बा
१०८ स'हयम्मि कुलक ,, समयप्रमोद
१०९ आदिनाथ देशनाशतक टब्बा
११० प्रश्नोत्तर सार्धशतक ,,
१११ ,, ,, बाला०
११२ पुण्य कुलक टब्बा
११३ ,, बाला०
११४ दर्शन शुद्धि कुलक टब्बा
११५ सिद्धि दण्डिका टब्बा
११६ प्रवचनसारोद्धार बाला०
११७ तत्वार्थ सूत्र टब्बा

११८ लोकनालि टब्बा
११९ ,, बाला० नयविलास
१२० ,, वार्तिक
१२१ सघस्वरूप कुलक टब्बा
१२२ अतिचार टब्बा
१२३ प्रश्नोत्तर रत्नमाला टब्बा जिनराजसूरि
१२४ ,, , बाला०
१२५ आचारोपदेश टब्बा
१२६ विचाररत्न ,,
१२७ ,, बा० देवचद्र
१२८ श्राद्धविधि प्रकरण टब्बा
१२९ दर्शन सत्तरी ,,
१३० विशेष शतक भाषा आणदवल्लभ
१३१ प्रज्ञाप्रकाश टब्बा
१३२ सज्जन चितवल्लभ टब्बा
१३३ द्रव्यसग्रह टब्बा
१३४ ,, बाला० हसराज
१३५ पच्चीस क्रिया टब्बा
१३६ समाधितत्र बाला०
१३७ प्रवचनसार ,, हेमराज
१३८ साधुनियम कुलक टब्बा
१३९ पर्यतारावना ,,
१४० ,, बाला०
१४१ इक्कीसठाणा प्रकरण टब्बा
१४२ यति आराधना भाषा

चरित—

१४३ शातिनाथ चरित्र टब्बा
१४४ जबू चरित्र टब्बा
१४५ ,, पयन्ना टब्बा
१४६ ,, चरित्र भाषा
१४७ सौभाग्य पचमी कथा टब्बा
१४८ मौन एकादशी टब्बा धीरविजय
१४९ ,, बाला०
१५० अष्ट प्रकारी कथा टब्बा
१५१ त्रिषष्ठि शलाका चरित्र टब्बा रामविजय
१५२ दान कल्पद्रुम टब्बा
१५३ शत्रुजय माहात्म्य टब्बा
१५४ श्रीपाल चरित्र ,,
१५५ ,, ,, भाषा देवमुनि
१५६ सम्यक्त्व कौमुदी टब्बा
१५७ मुनिपति चरित्र बाला०
१५८ सीता चरित्र भाषा
१५९ हरिवश पुराण बाला०
१६० भुवनभानु चरित्र भाषा
१६१ नवकार बाला०
१६२ अष्टान्हिका व्याख्यान टब्बा
१६३ दीवाली कल्प टब्बा
१६४ दीवाली कल्प भाषा
१६५ कालक कथा टब्बा
१६६ ,, बा० कल्याण तिलक

व्याकरण-राजनीति—

१६७ सारस्वत व्याकरण टब्बा
१६८ ,, पचसधि टब्बा
१६९ ,, ,, बाला०
१७० रसिकप्रिया ,, कुशलधीर
१७१ शतकत्रय बाला० लक्ष्मीवल्लभ
१७२ , ,, रूपचद
१७३ ,, ,, अभयकुशल
१७४ वृद्धचाणक्य नीति टब्बा
१७५ लघु चाणक्य नीति ,,

गणित ज्योतिष—

१७६ गणित पचवीसी बाला०
१७७ नारचद ज्योतिष टब्बा
१७८ ,, बाला०
१७९ भुवनदीपक टब्बा
१८० ,, ,, बाला०
१८१ चमत्कार चिंतामणि टब्बा
१८२ ज्योतिष रत्नमाला बाला०

१८३ मुहूर्त मुक्तावलि टब्बा
१८४ लघुजातक वार्तिक मतिसागर
१८५ लघुजातक बाला०
१८६ विवाह वृन्दावन बाला०
१८७ विवाह पटल ,, अमर
१८८ ,, ,, टब्बा
१८९ शीघ्रबोध ,,
१९० ,, ,, बाला०
१९१ षटपंचासिका टब्बा
१९२ ,, ,, बाला०
१९३ प्रश्नाशकुन विधि टब्बा
१९४ बालविवेकिनी टब्बा
१९५ बारह भाव ,,
१९६ भड्डली बाला०

वैद्यक—

१९७ माधवनिदान टब्बा
१९८ योगशतक ,,
१९९ सन्निपातकलिका टब्बा
२०० नाडी परीक्षा ,,
२०१ योग चिंतामणि टब्बा
२०२ ,, ,, बाला०
२०३ कालज्ञान टब्बा
२०४ कोकसार भाषा
२०५ शकुन रत्नावली भाषा
२०६ सामुद्रिक ,,
२०७ स्वरोदय सार्थ
२०८ विष्णुसहस्रनाम भाषा
२०९ पद्मपुराण बाला०
२१० गरुडपुराण भाषा
२११ सप्तश्लोकी गीता सार्थ
२१२ मुक्तावलि टब्बा

व्रत कथाएँ—

२१३ कृष्णरुकमणी वेलि टब्बा
२१४ ,, ,, बाला०
२१५ भक्तामर स्तोत्र टब्बा हरसचन्द्र
२१६ ,, बा० सुभवर्धन
२१७ ,, ,, मेरुसुन्दर
२१८ कल्याणमंदिर टब्बा जिनरंग सूरि
२१९ ,, बाला०
२२० कल्याणमंदिर टब्बा जिनचद्र सूरि
२२१ भक्तामर टब्बा गुणविनय
२२२ जयतिहुअण टब्बा
२२३ ,, बाला०
२२४ महावीर स्तोत्र टब्बा
२२५ जिनपचक चरित्र स्तव टब्बा
२२६ महावीर चरित्र स्तव टब्बा विमलरत्न
२२७ भावारि वारण स्तोत्र टब्बा
२२८ ,, ,, बाला०

जैनेतर—

२२९ पचाख्यान वार्तिक
२३० वैताल पच्चीसी भाषा
२३१ सिंघासण बत्तीसी ,,
२३२ सूवा बहुतरी ,,
२३३ पाडव चरित्र वार्ता
२३४ रागरागणी ग्रंथ बाला०
२३५ रत्नपरीक्षा बाला०
२३६ नखशिख (केशव) बाला०
२३७ भागवत दशम स्कंध भाषा
२३८ महाभारत भाषा
२३९ गूढार्थ टब्बा
२४० मेघमाला बाला०

राजस्थानी जैन गद्यानुवादों का विवरण 'जैन गुर्जर कवियो, भाग ३' के अन्त में लिखा गया है। 'प्राचीन गुजराती गद्य सदर्भ' में उपदेशमाला और योग-शास्त्र बालावबोध की कुछ कथाएँ भी प्रकाशित हुई हैं। उपदेशमाला का एक बालावबोध लन्दन में प्रकाशित हो चुका है। षष्टिशतक के तीन बालावबोध डा० भोगीलाल साडेसरा द्वारा सपादित बड़ोदा से

प्रकाशित हुए हैं। वैसे 'भीमसी माणक' आदि जैन ग्रंथ-प्रकाशको ने कई ग्रथो के बालावबोध प्रकाशित किए हैं पर उन्होने उसमें प्राचीन भाषा को समझ मे कठिन जान कर उसे आधुनिक गुजराती का रूप दे दिया है।

राजस्थानी ग्रथो के ५–७ ग्रन्थालय बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। हमारे सग्रहालय में हजारो राजस्थानी रचनाएँ हैं ही। इसी तरह अनूप सस्कृत लाइब्रेरी, बीकानेर, में भी राजस्थानी ग्रथो का बहुत ही महत्वपूर्ण सग्रह है। उनकी एक सूची जो प्रकाशित हो चुकी है उसके अतिरिक्त वहाँ के हिन्दी ग्रन्थो की सूची जो अभी अप्रकाशित है, (यद्यपि छपी हुई बहुत वर्षो से प्रेस में ही पड़ी है) उसमें भी कुछ राजस्थानी रचनाएँ हैं और सस्कृत ग्रंथो के जो ४ सूची ग्रथ प्रकाशित हुए हैं उनमे भी कुछ राजस्थानी भाषा टीकाग्रो वाले ग्रथ सम्मिलित हैं। यहाँ उक्त लाइब्रेरी के राजस्थानी अनुवाद व टीका ग्रन्थो की सूची दी जा रही है—

१ गीतगोविन्द टीका
२ मेघदूत टीका
३ कृष्ण रुकमणी री बेलि ढूढाडी टीका
४ शाति पर्व कथा री याददाश्त
५ मार्कण्डेय पुराण ,,
६ रामचरित्र (अध्यात्म रामायण-भाषान्तर)
७ नासिकेतोपाख्यान
८ गरुड पुराण टीका
९ भागवत-दशम स्कध
१० विविध व्रत कथाएँ
११ चाणक्य नीति टब्बा
१२ एकादशी माहात्म्य
१३ एकादशी री कथावा
१४ कर्म-विपाक
१५ कृष्ण ध्यान टीका
१६ विष्णु सहस्रनाम टीका
१७ नायिका भेद टीका
१८ कोक-शास्त्र भाषा
१९ योगचिन्तामणि टब्बा
२० पालकाप्य-गज शास्त्र टब्बा
२१ अश्वचिकित्सा टीका
२२ डक-भड्डली सटीक
२३ ज्योतिष रत्नमाला बाला० (महाराजा रायसिंह)
२४ सामुद्रिक टीका
२५ सग्रह-रत्न टीका
२६ गोरक्षशत टीका
२७ हठप्रदीपिका ,,
२८ गीता ,,
२९ विवाह-पद्धति अर्थ (अमर)
३० रतिरहस्य टीका
३१ रत्न-परीक्षा ,,
३२ रत्न-समुच्चय ,,
३३ अनुभव-सार ,,
३४ आसवाधिकार टीका
३५ औषधिकल्प टीका
३६ चिकित्सा सार-रत्न भूषण टीका
३७ नाना चिकित्सा सग्रह
३८ बाल चिकित्सा टीका
३९ योगशत ,,
४० वैद्यक ग्रथ ,,
४१ सार सग्रह
४२ अर्ध काड
४३ अहिवलय चक्र
४४ काक शकुन
४५ खड खाद्य (कोष्ठक)
४६ गढचक्र विधि (कोटचक्रफलम्)
४७ ज्योतिष सार, नारचद्र
४८ पचाग निर्माण विधि ग्रहण कलादि

४९ बालबोध, मुजदित्य
५० भावचक्रकरण विधि
५१ भुवन दीपक, पद्मप्रभ सूरि
५२ रसदीक्षानरचक्रकोट चक्रादि
५३ लग्न स्पष्टीकरण (लग्नानयन)
५४ लघु जातक, वराह मिहिर
५५ वर्ष विचार
५६ वृष्टि लक्षण (ग्रहिचक्र, मेघचक्र)
५७ ,,
५८ शकुन
५९ शकुनावलि
६० शल्यविचार
६१ षट्पचासिका
६२ शब्दनस्कार

हिन्दी विभाग में—

६३ नीति शास्त्र, टीका. रसिकराम
(अनूपसिंह चरित)

राजस्थानी ग्रथो का एक महत्वपूर्ण सग्रह राजस्थान प्राच्य-विद्या-प्रतिष्ठान, जोधपुर मे है और उसकी सूची दो भागो मे प्रकाशित हो चुकी है। वैसे सरस्वती भंडार, उदयपुर, एशियाटिक सोसायटी, कलकत्ता, इडिया ऑफिस लाइब्रेरी, लदन, बगाल हिन्दी मडल, कलकत्ता, और राजस्थानी रिसर्च सोसायटी, कलकत्ता, लीमडी जैन ज्ञान भडार आदि ग्रन्थालयो के राजस्थानी ग्रन्थो की सूचा प्रकाशित हो चुकी है। लख-विस्तार-भय से उनमे जो राजस्थानी अनुवाद व टीका ग्रथ हैं उनकी सूचियाँ नही दी जा रही हैं।

राजस्थानी मे अनुवादो की परम्परा अभी भी बहुत अच्छे रूप में चालू है। पचासों ग्रन्थो के गद्य-पद्यानुवाद इधर ३०-४० वर्षो मे हुए हैं। उनका विवरण मैने 'लोक सम्पर्क' मे प्रकाशित अपने लेख मे करीब ३ वर्ष पहले प्रकाशित किया था। एक-एक ग्रथ के अनेको गद्य-पद्यानुवाद हुए हैं। उनके सबध मे भी मेरे कुछ लेख प्रकाशित हुए हैं जैसे—गीता के राजस्थानी गद्य-पद्यानुवाद १५ के करीब हो चुके हैं। उनके सबध म 'अजन्ता' मे एक लेख प्रकाशित किया गया था और उसके बाद कुछ और भी अनुवादों का पता चला है। भर्तृहरि शतक और पचतन्त्र क राजस्थाना अनुवादो के सबध मे 'मरुवाणी' मे हाल ही मे मेरे लेख प्रकाशित हुए हैं।

बीकानेर के महाराज अनूपसिहजी बहुत बड़े साहित्य-प्रेमी थे। उनकी आज्ञा मे सस्कृत और हिन्दी के अनेको ग्रथ रचे गए हैं। जब वे राजकुमार ही थे तभी से उनको राजस्थानी साहित्य मे बडा प्रेम था। अनेक चारणादि कवि उनके आश्रय मे रहते थे और महात्मा एवं ब्राह्मण ग्रथों की प्रतिलिपि करने के लिए नियुक्त थे। उस समय उन्होंने वैताल पच्चीसी, सिंहासन बत्तीसी और सुवा-बहुत्तरी के राजस्थानी अनुवाद देवीदान नाइता से करवाए थे, जिनका परिचय मैं 'सयुक्त राजस्थान' म प्रकाशित करा चुका हूँ।

अखलाक-अन-मोहसनी नामक एक फारसी ग्रथ का राजस्थानी अनुवाद सग्रामसिंह मुहणोत ने 'नीति प्रकास' के नाम स किया है। उसकी एक हस्तलिखित प्रति कई वर्ष पूर्व स्वर्गीय कविराज मुरारदानजी चारण क सग्रह मे देखी थी और उसका विवरण मैंने भी मरुवाणी मे प्रकाशित किया था। अभी यह जान कर हर्ष हुआ कि राजस्थानी शोध-सस्थान, जोधपुर इस महत्त्वपूर्ण ग्रथ को 'परम्परा' के विशेषांक मे प्रकाशित कर रहा है। वास्तव मे इस सस्थान ने थोड़े ही वर्षों मे राजस्थानी साहित्य की बहुत ही अच्छी सेवा की है और भविष्य मे भी उस

से बड़ी आशाएँ हैं। श्री नारायणसिंह भाटी का अनुरोध रहा कि मैं नीति प्रकाश के अनुवाद-विशेषांक में राजस्थानी-अनुवाद-परम्परा के संबंध में एक लेख दू। अतः अवकाश की कमी होने पर भी उनके अनुरोध की रक्षा प्रस्तुत लेख द्वारा की गई है।

नीति प्रकास की भाषागत विशेषताएँ

[श्री सीताराम लाळस]

प्रत्येक भाषा के विकास मे अनुवादो का बहुत महत्व होता है। स्थानीय जनता को अन्य देशो की उपयोगी बातो से परिचित कराने के लिए अनुवाद सबसे अधिक महत्वपूर्ण साधन है। हमारी प्रान्तीय भाषाओ मे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदि भाषाओ के कई ग्रन्थो के अनुवाद किये गये हैं और प्रान्तीय भाषाओ के भी अनुवाद अथवा रूपान्तर एक दूसरी भाषा में होते रहे हैं। अंग्रेजी आदि योरोपीय भाषाओं से अनुवाद तो आधुनिक समय मे होने लगे हैं पर इसके पहले मुगल काल मे अरबी फारसी के ग्रंथो का उल्था अथवा रूपान्तर स्थानीय भाषाओं में काफी परिमाण मे हुआ है। राजस्थानी भाषा मे इस प्रकार के कुछ प्रयत्न मिलते हैं। नीतिप्रकास उनमे मे एक है। यह मूल ग्रंथ अखलाक-ऐ-मोहसनी, जो कि फारसी भाषा मे लिखा गया था, का अनुवाद है—जिसे लेखक ने अपनी सुविधानुसार संक्षिप्त भी कर दिया है।

इस अनुवाद की भाषागत विशेषताओं पर विचार करने से पता चलेगा कि अनुवाद कहाँ तक सफल हो पाया है।

यह अनुवाद १६वीं शताब्दी के प्रारंभ मे किया गया है। अत उस काल की राजस्थानी भाषा का अनुमान हमें इस ग्रन्थ की भाषा से लगता है। इसमे प्रयुक्त राजस्थानी भाषा सरल एवम् प्रवाहयुक्त है।

अनुवादक ने अंत तक प्रसाद गुण का निर्वाह किया है। कुछ अरबी फारसी के प्रयोगों को छोड दें तो भाषा अधिक प्रयत्नसाध्य अथवा दुरूह नहीं प्रतीत होती जैसी कि रतनसिंह महेशदासोत की वचनिका अथवा सूरज प्रकास आदि कुछ ग्रंथो मे मिलती है। राजस्थानी भाषा मे परिचित साधारण पाठक भी इसे समझ सकता है। कहीं-कहीं तो भाषा मे बड़ा ही सुन्दर प्रवाह और बारीक बातों को खूबी के साथ समझाने की शक्ति स्पष्ट जाहिर होती है।

मुहावरों का प्रयोग भी अनुवादक ने स्वत भाषा के प्रवाह मे यथा स्थान बड़ी सहजता के साथ किया है। ध्यान से पढ़ने पर इसमे सैकड़ों मुहावरे मिल सकते हैं जिनसे भाषा मे गति आ गई है और अर्थ-गौरव की प्रतीष्ठा हुई है। कुछ एक मुहावरों का प्रयोग तो बहुत ही सुन्दर हुआ है। जैसे—

मरद नैं धोरज सारी बाता मू भलो छै, तिणसू 'ग्ररथ सधै' ।[1]
जिण काम नू ग्राग्या करै तिणनू 'पूरणता नू पहुचावै' ।[2]
कहणै मे ग्रावै तिण वचन रै विरुद्ध 'चाल न चालै' ।[3]
दोहरा, दूबळा, निरासा ऊपर दया कर उणरी मनसा पूरण करै' ।[4]
देम मे 'जीव जोखै' छै जद ग्रापरो सायो रैयत माथा सू ग्रळगो होय ।[5]
घणी 'खातिर की' कुछ 'पाछ नही राखी' ।[6]
थाहरी दीनता रा कारण सू सावधानी रो 'पल्लो पकडियो' ।[7]
ग्रविस्वास री हद् करणी 'लोक बिचारणी' ।[8]

कही-कही तो एक ही वाक्य मे कई मुहावरो का प्रयोग हुग्रा है—

ग्रागै 'वडा करणी' री नीयत करी चाहीजै, भागण पडै तो पाछै इलाज करणो ।[9]
'राह बाधणी' 'डेरा मजाणा' 'कोट गढ सजाणा' 'ग्राछी ठौड़ बाकी ग्रागै पाछै देय उतरणो' 'मोरचा बाध लडणो' ।[10]
'चाल ढाल परखिया' विगर उण पर वधारण री 'निजर नही करै' ।[11]
रिणी रा 'ग्रोभरी निवळी' होय तिण वखता गूढ री भार 'खमियो नही जाय' ।[12]

इस प्रकार के मुहावरो के ग्रतिरिक्त कितने ही स्थलो पर भाषा का ग्रनूठा प्रयोग किया गया है, जिसमे बडी बात को भी सक्षिप्त सूत्र रूप मे स्वाभाविक ढग से व्यक्त कर दिया गया है। इससे राजस्थानी भाषा पर ग्रनुवादक के ग्रधिकार का पता चलता है। इस प्रकार की शैली का प्रयोग लेखक तभी कर सकता है जब कि वह केवल ग्रपनी भाषा पर ही ग्रधिकार न रखता हो वरन् ग्रन्य भाषा मे लिखी हुई बात को भी गहराई के साथ समझ गया हो। इस ग्रथ मे कई इस प्रकार के स्थल है जिनको स्मृति मे ग्रासानी से रखा जा सकता है। यथा:—

मो कोई मवद सू चुगला रा चित मे खात पडी ।[13]
धीरज कूची सुमहाली री छै ।[14]
होणहार नू तीर जाणियो चाहीजै ।[15]
मरम धरम नै रोसडा री डाहळो छै ।[16]
ग्रठै बैठियां ग्रागलो मुवारै तिको करणो भलो बात छै ।[17]
वादसाहा नू मपणाई पुस्ती छै ।[18]
ग्रदालतां न्याय नू ग्रदल गहणो रहजै ।[19]
जिरो चाहै प्रभु उणरो मुल्क मोटो करै तो उवै ममै रा दिहता नू मोटा करै ।[20]
गुनाह जे घणो वडो छै पण वडपण माफ करणै वाळै री उणसू ही घणो बडो छै ।[21]

---

१ पृ० २५। २ पृ० ३५। ३ पृ० ३५। ४ पृ० ३६। ५ पृ० ३७। ६ पृ० ६७। ७ पृ० ६७। ८ पृ० ८८। ९ पृ० ८८। १० पृ० ८६। ११ पृ० १४०। १२ पृ० १५३। १३ पृ० १७। १४ पृ० २५। १५ पृ० २७। १६ पृ० २७। १७ पृ० ३२। १८ पृ० ३५। १९ पृ० ३७। २० पृ० ३६। २१ पृ० ४५।

क्रोध जिणरा हाथ सू कंद छै ऊ मरद हकीम छै, जिणमे नरमी नही सो भूत बघेरो छै।[1]
मीठा बोल्या हाथी कान पकड़िया आवै।[2]
भलाई दोसती पैला ऊपर छै पण अत आपनू छै।[3]
आप भूंडा होयजे पण भला सू प्यार सगत कीजै।[4]
ऊमर बीजळी रै झबकै दाई जाय छै।[5]
मिनख रो जम थिर जीवण छै।[6]
जिमा खारा मीठा रोख वावै उसा ही फळ चावै।[7]

कहीं-कहीं उपमा और रूपक आदि के माध्यम से अच्छी अभिव्यक्ति बन पड़ी है जिसे पढ़ने से तथ्य की गहराई तक पैठने का अवसर मिलता है।

उदाहरण—

ज्यूं कोई भोजन लूण रै बिगर स्वाद न होय त्यू भलौ सुभाव नरमी रै बिगर सोहै नही।[8]

रैयत छाळी वाई छै अर बादसाह उण छाळियां रो धणी छै। जद धणी एक गवाळ नू छाळी सौंपी छै तो त्याळी नू बचावै।[9]

इस प्रकार के कई अलङ्कृत वाक्यों का प्रयोग इस ग्रंथ मे देखने को मिलेगा। कहीं-कहीं विशेष प्रकार के मिश्रित वाक्यो का प्रयोग भी मिलता है। यह शायद मूल ग्रंथ की वाक्य-रचना के प्रभाव के कारण है। यथा—

आप करता छो, समरथ छो—प्रजा रा दुख दूर करणै नू, आपणी कुदरत दिखावणै नू।[10]

मुस्लिम सस्कृति के प्रभाव के कारण राजस्थानी भाषा म अरबी फारसी के शब्दो का आगमन हुआ है और वे इस भाषा मे घुल-मिल गये हैं। पर इस ग्रंथ में इस प्रकार के शब्द कुछ अधिक आये हैं क्योंकि मूल ग्रंथ फारसी भाषा का था और अनुवादक ने अनुवाद की सहूलियत के लिये उन्ह कुछ हेर-फेर के साथ यथा स्थान अपना लिया है। जैसे—

मुबारकबादी, सुकर, अदब, कजिया, सरियत, अेमाल, मजकूर, नुकता, किवार, सुजायत, गैरत, फिरासत दिलगीरी, जेरदस्त, खानाजगी, फजीलत, दोजख, तहकीक, तफा, मरतबो स्वार, खिदमत, अलची, खता तरबीयत, जागात, बाव, तफसील, तक-सीर आदि।

यह सब कुछ होते हुए भी अनुवादक ने ठेट राजस्थानी के शब्दो का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग किया है जिससे अनुवाद म सजीवता आ गई है। कुछ शब्द तो ऐसे हैं जिनमे राज-स्थानी सस्कृति की विशेषता झलकती है। जैसे—

मोळूप, माहोमाहे, मया, जतन, भालणो, ताई, राजस, गपगाई, निरगाई, पायो, रिप, जिवाई, करड़ो, डावड़ो, डावड़ो, मनगराई, सभागियो, बखांण, बूत, साग, गेंध,

---

[1] पृ० ८८। [2] पृ० ५१। [3] पृ० १२। [4] पृ० ५५। [5] पृ० १०६। [6] १५ पृ० १०६। [7] पृ० १६०। [8] पृ० ८८। [9] पृ० १५५। [10] पृ० २०।

रूंखडो, जूझार, माटीपणो, सीख, सिरोपाव, बखतावर, खाटरो, मुळकिया, ग्रडकाई, सूमड़ापरा, भूंडो, ग्रमोलक, उछेरणो, जीमरा, मायत, ग्रगोतर, सोस, मिनखाचारो, भुजाई, चूक, तंत, गळगळो, उवारणा, लखरा, टराकाई, ग्रारसी, ग्रोपरो, फूटरो, बतळावरा, पाट, सासता ग्रादि ।

ग्रतः ऊपर के विवेचन से यह स्पष्ट है कि ग्रनुवादक दोनो ही भाषाग्रो का ग्रच्छा जानकार था ग्रौर उसने राजस्थानी भाषा मे इस ग्रंथ को प्रस्तुत कर एक महत्वपूर्ण कार्य किया है ।

बोध-कथा—स्वरूप और उद्भव

[डॉ० कन्हैयालाल सहल]

नीति-प्रतिपादक पशु-पक्षी-कथाओं को सामान्यत बोध-कथाओं (Fables) के नाम से अभिहित किया जाता है। इनमे पशु-पक्षी मानव पात्रों की भांति व्यवहार करते हैं। मनो-रजन और बोध दोनों का एकत्र समावेश इस प्रकार की कथाओं मे देखा जाता है; फिर भी बोध इन कथाओं का सार-तत्त्व होता है, इसीलिए बोध-कथाओं के रूप मे ये अपने नाम को सार्थक करती हैं।

लोकवार्ता-शास्त्र के विशेषज्ञों की मान्यता है कि सबसे पहले भारतवर्ष मे ही बोध-कथाओं का उद्भव हुआ होगा। भारत के आदिम निवासियों का प्रकृति से साहचर्य जगत्प्रसिद्ध है। इतना ही नहीं, हमारे देश के इतिहास मे जो बड़े-बड़े दो प्राचीन युग बीत चुके हैं—वैदिक युग और बौद्ध युग—इन दोनों युगों को वन ही ने धात्री के रूप म धारण किया है। केवल वैदिक ऋषियों ने ही नहीं, भगवान बुद्ध और महावीर ने भी कितने ही आम्र-वनों और कितने ही वेणु-वनों मे अपने उपदेशों की वर्षा की है—राजप्रासाद में वे समाये ही नहीं, वनों ने ही उन्हें अपने हृदय से लगाया था।[1] इसलिए कोई आश्चर्य की बात नहीं, यदि भारतीय लोक-कथाओं म पशु-पक्षियों को इतना महत्वपूर्ण स्थान मिला हो।

विण्टरनिज के मतानुसार बोध-कथाएँ, जो लोगों मे प्रचलित रही होंगी और वैदिक साहित्य मे भी किसी रूप मे जिनकी झांकी देखने को मिलती है, पहले-पहल ईसा की तीसरी शताब्दी पूर्व जातकों के रूप म प्रकट हुई, जिसका प्रमाण भरहुत और सांची के शिलालेखों मे मिल जाता है। इसके अतिरिक्त पतजलि न अपने महाभाष्य म 'काकतालीयवत' जैसे समा-सान शब्दों पर विचार किया है जिससे हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि बोध-कथाओं का अस्तित्व ईसा की दूसरी शती मे भी पूर्व रहा होगा।

कहा जाता है कि भारत म उद्भूत होकर ही बोध-कथाएँ विश्व के अन्य देशों म फैली होंगी। बेनफी ने बतलाया है कि अनुवादों के माध्यम से सभी प्रकार की लोक-कथाएँ भारत

---

१. द्रष्टव्य—तपोवन (रवीन्द्रनाथ ठाकुर) पृ० ३६२, विशाल भारत अप्रैल १६३६।

मे यूरप पहुँची। प्रारभिक वर्षो मे यहूदियो ने, जो भारत और यूरप के बीच व्यापार किया करते थे, इन बोध-कथाओ को यूरप तक पहुँचाने मे बड़ा योग दिया।

बोध-कथाओ के क्षेत्र मे ईसप का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। किंवदन्ती यह भी है कि सुकरात जब कैद मे था, तब उसने ईसप की कथाओ को पद्यात्मक रूप देना प्रारम्भ किया था। इस आधार पर कुछ इतिहासकारो ने ईसप का समय ईसा की छठी शताब्दी पूर्व माना है किन्तु कुछ आधुनिक समीक्षक तो ईसप का अस्तित्व तक स्वीकार नही करते। ईसप के अस्तित्व को स्वीकार न करना भी एक प्रकार के अतिवाद का ही आश्रय लेना होगा। हा, यह सभव है कि ईसप की कृति लिखित रूप मे न आई हो अथवा लुप्त हो गई हो।[1]

ईसप की कथाओ का पहला सकलन १५वी शताब्दी मे प्रकाशित हुआ किन्तु जातक की कथाएँ उससे पहले ही यूरप की यात्रा कर चुकी थी।

महाभारत मे स्थान-स्थान पर बहुत सी बोध-कथाओ का उल्लेख मिलता है। शाति-पर्व तो उपदेश-कथाओ का आगार ही समझिये। इनमे अनेक कथाएँ वास्तविक अर्थ मे बोध-कथाएँ (Fables) गृध्र-गोमायु-सवाद, कपोत-व्याध तथा कर्ण-पर्व मे प्राप्त हस-काकीयोपाख्यान उदाहरण के रूप में रखी जा सकती हैं।

ऊपर बेनफी आदि के मतो को उद्धृत करके यह सिद्ध करने का प्रयत्न किया गया है कि बोध-कथाएँ भारत से यात्रा करते हुए विश्व के अन्य देशो मे पहुँची किन्तु कीथ जैसे कुछ विद्वानो ने इस विषय मे भिन्न मत प्रकट किया है। उन्ही के शब्दो मे "There are identical fables in East and West, Greece and India. Somehold Greece and others India to be the source of all; others again favour India, but admit that some fables must have come from Greece The truth probably is that the fable as a type did not arise exclusively either in India or in Greece, but that it came into being independently in each country, and that an interchange of individual fables between Greece and India took place when communication between the two countries arose"

उक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि कीथ इस बात को मान कर चले हैं कि ग्रीस और भारत दोनो देशो मे बोध कथाओ का स्वतन्त्र रूप स उद्भव हुआ है और आगे चल कर जब दोनो देशो मे यातायात होने लगा तो बोध-कथाओ का भी आदान-प्रदान प्रारम्भ हुआ।

जो भी हो, इतना तो कीथ ने भी स्वीकार किया है कि जितना कथा-साहित्य भारत मे प्रसूत हुआ उतना विश्व के अन्य किसी भी देश मे नही। दूसरी बात यह है कि पुनर्जन्म-

---

१ Fable and its origin (Prof P N. Kawthekar) Journal of Scindia Oriental Institute, Vol II, p 16

सिद्धान्त मे व्यापक विश्वास के कारण भारत बोध-कथाग्रो के लिए ही उपयुक्त क्षेत्र रहा क्योंकि इससे पशु-पक्षी भी कथाग्रो के नायक बनने मे समर्थ हो गये ।[१]

जहाँ तक मैं समझता हूँ, प्रारम्भ मे बोध-कथाएँ (Fables) भी मनोरंजन ग्रथवा 'कथा-कथा के लिए' के रूप मे हो रही होगी; ग्रागे चल कर मामारिक ज्ञान के शिक्षण की दृष्टि से उनका प्रयोग होने लगा होगा। राजस्थान मे भी पशु-पक्षियो से सम्बन्ध रखने वाली ऐमी कथाएँ मिल जाती हैं जिनमें प्रत्यक्ष रूप मे बोध-दृष्टि उभर कर सामने नही ग्राती। उदाहरण के लिए निम्नलिखित कथा को लीजिये—

"एक लोमडी किसी जलाशय पर पानी पीने गई। गीदड को वहाँ बैठे देख कर बोली—'शृगाल मामा, मुझे पानी पीन की इजाजत दो।' शृगाल ने कहा—'पहले मुझे एक माखी सुनाग्रो, फिर निर्भय होकर पानी पी सकती हो।' लोमडी ने शृगाल की प्रशंसा में कहा—

रूपे की तेरी चूतरी, मोने ढाळी है।
काना मे तेरै गोखरू, जाणे राजा बैठयो है।

ग्रर्थात् तुम्हारा चबूतरा चाँदी का बना हुग्रा है, जिस पर मोना ढाल दिया गया है। तुम्हारे कानो मे गोखरू हैं जिनमे तुम ऐमे जान पडते हो मानो कोई राजा बैठा हुग्रा हो।

इस उत्प्रेक्षा को सुन कर गीदड बहुत प्रसन्न हुग्रा। जब भर पेट पानी पीकर लोमडी चलने लगी तो गीदड ने उसे दूसरी साखी सुनाने के लिए कहा। लोमडी को शरारत सूझी ग्रौर बोल उठी—

माटी की तेरी चूतरी, गोबर ढाळी है।
कानां म तेरै खूसडा, जाणे ढेढ बैठयो है।

ग्रर्थात् मिट्टी का तेरा चबूतरा है जिस पर गोबर बिखरा हुग्रा है। कानो मे फटे-पुराने जूते हैं जिनसे तुम चमार लगते हो।

गीदड यह सुन कर बडा रुष्ट हुग्रा। लोमडी भगी ग्रौर गीदड उसके पीछे-पीछे चला। लोमडी एक बाँस के पेड पर चढ गई। तब गीदड ने कहा— *गादड मारी पालखी, मे' पड क्यां हालसो।*'

---

१ India presents a soil particularly favourable to the invention of fables, animal stories and fairy tales. For here we find the belief in transmigration, which effaces the difference between the human and the animal worlds, and which thus renders it quite natural for animals to be the heroes of stories. Consequently no other country has produced so extensive a literature of stories as India —A. B. Keith.

चालाक लोमड़ी ने गीदड को चकमा देने की सोची। उसने कहा—'ओ मामा! काळी कामळ कुत्ता घणा, बै कुण आवै च्यार जणा' अर्थात् देखो मामा! वे कौन चार चले आ रहे है—काली कबल ओढे हैं, साथ मे बहुत से शिकारी कुत्ते हैं।

गीदड लोमडी की भभकी मे आ गया और डर कर भग गया। इस प्रकार लोमडी की उक्ति सफल हो गई।"

ऊपर की लोक-कथा गीदड और लोमडी से सबद्ध होने के कारण पशु-कथा ही कही जायगी। इस कथा का सबध यथार्थ जीवन के स्वाभाविक क्रिया-कलापो से है जिनमे बोध की कोई प्रत्यक्ष पद्धति दृष्टिगोचर नही होता।

ईसप की बोध-कथाओ मे बोध-पद्धति स्पष्ट है। ईसप की कथाओ से मिलती-जुलती कुछ राजस्थानी कथाएँ लीजिये—

१. "एक चीटी पानी मे बही जा रही थी। एक चिडिया ने उसकी सहायता के उद्देश्य से लकडी का एक टुकडा पानी मे डाल दिया और चीटी उसके जा लगी जिससे उसके प्राण बच गये। एक दिन एक चिडीमार आया जिसने चिडिया को जाल मे फँसाने की सोची। चीटी ने मौका देख कर चिडीमार को काट खाया। इतने मे चिडिया उड गई।"

सच है, उपकार का फल अच्छा होता है।

२. "एक ब्राह्मण किसी नाग को दूध पिलाया करता था। नाग एक अशर्फी रोज ले आया करता था। एक दिन ब्राह्मण तीर्थ-यात्रा के लिए गया। उसके पुत्र ने पीछे से सोचा—यदि यह नाग मर जाय तो सारा धन मुझे एक साथ मिल जाय। यह सोच कर उसने नाग के मस्तक पर लाठी मार दी। इतने मे ब्राह्मण भी लौट आया और नाग देवता की स्तुति करने लगा जिस पर नाग ने उत्तर दिया—

चित्त फटे जिण मीत सू , जुडे न कोट उपाव।
तनै पुत्र को दुख है, मनै सीस को घाव॥"

सच है, मित्रता जब एक बार टूट जाती है तो फिर जुडती नही।

३. "एक मोटे कुत्ते से भेडिये ने पूछा—'तुम्हारे इतने मोटे होने का क्या रहस्य है?' कुत्ते ने उत्तर दिया—'मेरा मालिक मुझे खुराक अच्छी देता है, चलो तुम्हे भी नौकर रखवा दूँ।'

कुत्ते ने कहा—'रात को मेरा मालिक मुझे खोल देता है। मैं घर के अन्दर उसके सामान की रखवाली करता हूँ। दिन मे वह मुझे बाँध देता है ताकि मैं किसी का नुकसान न कर सकूँ।'

भेडिये ने उत्तर दिया—'यह नौकरी तुम्हे ही मुबारक हो। इस प्रकार बन्धन मे रह कर मुझे अच्छी खुराक नही चाहिए।'"

सच है, बन्धन बुरी बला है।

ऊपर उद्धृत की हुई तीनो कथाओं से स्पष्ट है कि उपदेश या नीति-शिक्षा (Moral) बोध-कथाओ (Fables) का प्राण है। Encyclopaedia Britannica मे बोध-कथा के संबंध में यथार्थ ही कहा गया है—

> 'The fable is composed of two parts—body and soul. The body is the story, the soul the morality.'

बोध-कथाओ मे पशु-पक्षी मुख्य अभिनेता होते हैं और वे उसी प्रकार बर्ताव-व्यवहार करते हैं जिस प्रकार मनुष्य करते हैं।

ऊपर के विवेचन के आधार पर बोध-कथा के संबंध मे हम निम्नलिखित निष्कर्षों पर पहुँच सकते हैं—

१. बोध-कथा पशु-पक्षियो आदि से सबद्ध होती है।
२. इसका प्रमुख उद्देश्य शिक्षा देना होता है।
३. बोध-कथा मे मानव और पशु-पक्षियो मे व्यवहारगत कोई दूरी नहीं दिखाई देती।
४. अन्य लोक-कथाओ की भाँति बोध-कथाओ मे भी मनोरजन की मात्रा कम नही रहती।

बोध-कथाओं की दृष्टि से राजस्थान काफी समृद्ध है। अभी बोध-कथाओ का वैज्ञानिक अध्ययन हमारे देश मे उतना नही हुआ है जितना होना चाहिए। आशा है, विद्वानो का ध्यान इस ओर आकृष्ट होगा।

जातक कथाओं का लौकिक आधार

[श्री मनोहर शर्मा]

जातक कथाएँ हमारा अनमोल धन हैं। इनमे भगवान बुद्धदेव के पूर्व जन्मो की कहानियाँ दी गई हैं। इस अवस्था मे उनको 'बोधिसत्व' नाम दिया गया है। बोधिसत्व की महिमा डॉ॰ वासुदेवशरण अग्रवाल ने इस प्रकार प्रकट की है—'दान, शील, क्षान्ति या करुणा, वीर्य या पराक्रम, ध्यान या चित्त की अविचल स्थिति, प्रज्ञा या मन और बुद्धि की ब्राह्मी स्थिति, इस प्रकार के ये चरित्र-गुण लोक मे आदर्श के रूप मे प्रतिष्ठित हुए। जो व्यक्ति इन गुणों की सविशेष साधना करता है वह बोधिसत्व है। प्रत्येक व्यक्ति को बोधिसत्व बनने का अधिकार है। इनके अतिरिक्त और भी जितने भी चरित्र के गुण हैं वे सब पारमिताओं के अन्तर्गत आते हैं। पारमिता का सीधा-सादा अर्थ है—किसी प्रकार की पूर्णता। इन पारमिताओं के आदर्श से लोकमानस सच्चे रूप मे उद्वेलित हुआ। इनकी व्याख्या के लिए सैकड़ो दृष्टान्तो की रचना हुई। मनुष्य के जीवन मे सिवाय इन गुणो के और मूल्यवान तत्व है क्या ? जहाँ किसी भी प्रकार का गुणोत्कर्ष हो, वहीं बोधिचित्त (ज्ञानयुक्त मन) का अंश समझना चाहिए।'[1]

कोई भी उपदेश कथा के रूप मे दिए जाने से विशेष प्रभावशाली होता है और वह स्मरण भी काफी लम्बे समय तक रहता है। इस विषय म लोक कथाओं की महिमा बड़ी ऊँची है। विद्वान लोग अपने उपदेशो मे उनका सदा से प्रयोग करते आए हैं। लोक-मानस को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने के लिए उनको सँवार सजा कर भी प्रस्तुत किया गया है। ऐसा किए जाने स उनका वातावरण बदल जाता है और उनमे कुछ परिवर्तन आ जाता है। अपने मूल रूप मे जातक कथाएँ भी लोक कथाएँ ही हैं। उनको सतर्कता कुशलतापूर्वक जातक कथाओं के रूप मे सँवारा सजाया गया है। जैन विद्वानों न भी अपने कथा-ग्रंथो म ऐसा ही किया है। डॉ॰ हर्टेल न बौद्ध और जैन कथाओ की तुलना करते हुए कुछ महत्वपूर्ण तथ्य प्रकट किए हैं जो इस प्रकार है—

---

१. कला और संस्कृति, पृष्ठ १३०–१३१।

१—जातको की कहानियाँ प्रायः अभिप्राय के अनुसार 'लोक-प्रचलित कथा' का विकृत रूप है, जब कि जैन कहानियो मे कथा का रूप ज्यो का त्यो है, केवल अंत में उपदेश भर जैनमत का है। जैन कथाओ मे उपदेश कहानी के ढाँचे में नही बल्कि उसके विश्लेषण में होता है जिसे 'केवलित्' अत मे कहता है। जैन कथाकार उस कहानी के नायक तथा अन्य पात्रो के नैतिक अनैतिक किन्तु स्वाभाविक जीवन-क्रम में कोई हस्तक्षेप नही करता।

२—जातको मे हर जगह 'बुद्ध' स्वय उपस्थित हो जाते हैं जब कि जैन कथाओ मे हर जगह 'महावीर' नही आते।

३—जातक कहानियाँ अतीत से सबद्ध होती है जब जैन कहानियो का सबध वर्तमान से भी होता है।

४—इसलिए लोक कथाओ के यथार्थ रूप के सरक्षण तथा जन-जीवन के विभिन्न वर्गो के यथार्थ चित्रण के कारण जैन कथाओ का बहुत बडा महत्व है[1]।

जातक कथाओ के लौकिक आधार का विषय इतना विस्तृत है कि इस पर एक विशाल ग्रथ तैयार हो सकता है। यहाँ पर इस सबध मे कुछ चुने हुए उदाहरण प्रस्तुत किए गए हैं। इन उदाहरणो मे राजस्थानी लोक कथाओ का प्रयोग किया गया है जो मूल रूप मे भारतीय लोक-कथाएँ है और खोज करने पर ये अथवा इनके परिवर्तित रूप भारत के अन्य प्रदेशो मे भी प्राप्त हो सकते हैं। समय पाकर लोक कथाओ का भी रूप बदलता रहता है और एक ही लोक कथा के एक ही प्रदेश मे विविध रूप प्रचलित हो जाते है। ऐसी स्थिति मे यह नही कहा जा सकता है कि जातक कथाओ की रचना के समय उनकी आधारभूत लोक-कथाओ का रूप कैसा और क्या रहा होगा। यही कारण है कि कई जातक कथाएँ लोक कथाओ से बहुत कुछ मिलती हैं जब कि कई ऐसी हैं जिनमे लोक कथा की झलक-सी दृष्टिगोचर होती है। फिर भी यह तुलना बडी रोचक लगती है।

लोक कथाओ को जातक कथाओ के रूप मे प्रस्तुत किए जाने की प्रक्रिया मे एक परिवर्तन विशेष रूप से सामने आता है और वह है उनका धार्मिक वातावरण। इस परिवर्तन के पीछे एक उद्देश्य है जिसमे लोकोपकार की निर्मल भावना भरी हुई है। 'नाम सिद्धि' जातक की कथा मे बोधिसत्व तक्षशिला मे आचार्य के रूप मे शिष्यो को मत्र पढ़ाते हैं। उनके एक शिष्य का नाम 'पापक' है जो इस नाम को अमागलिक समझ कर आचार्य से बदलवाना चाहता है। आचार्य उसे आदेश देते हैं कि वह स्वयं घूम-फिर कर अपनी इच्छानुसार कोई मांगलिक नाम चुन लेवे। तदनुसार वह आश्रम से निकल कर भ्रमण करने लगता है। एक जगह वह 'जीवक' नाम वाले व्यक्ति को मरा हुआ देखता है। दूसरी जगह वह 'धनपाली' नामक दासी को पीटे जाते हुए देखता है। अत मे वह 'पथक' नाम वाले व्यक्ति को मार्ग भूला हुआ पाता है। इस से उसको अपने नाम की अमागलिकता जरा भी बुरी प्रतीत नही होती और वह लौट कर आचार्य के आश्रम मे आ जाता है। यह कथानक भारत के लगभग सभी प्रदेशो मे विविध रूपों मे लोक-प्रचलित है। यह नाम कही 'लहटूरा' है, कही 'ठनठनलाल' है और कही

१ हिन्दी के विकास मे अपभ्रंश का योग, पृष्ठ १६६–२००।

'तुम्बक्तूरा' है। ऐसी स्थिति में यह सहज ही संभावना की जा सकती है कि जातक कथा की रचना के समय यह नाम कुछ और भी विचित्र सा रहा होगा और धार्मिक वातावरण उपस्थित करने के लिए ग्राचार्य के शिष्य को 'पापक' कहा गया है।

आगे जो उदाहरण दिए गए हैं उनका विषय की विविधता को ध्यान में रख कर चुनाव किया गया है परन्तु विस्तार-भय के कारण उनको यथा सभव सक्षिप्त करना पड़ा है।

१—स्वर्णमृग

निग्रोधमृग जातक में सुनहरे हरिण के सम्बन्ध में अत्यंत मार्मिक कहानी दी गई है जिसका सक्षिप्त रूप इस प्रकार है।—

किसी वन में एक स्वर्णमृग अपने झुंड के पांच सौ हरिणों के साथ रहता था। उसका नाम निग्रोधमृग था। उससे थोड़ी दूर एक अन्य स्वर्णमृग अपने इतने ही बड़े झुड के साथ रहता था, जिसका नाम शाखामृग था। उस प्रदेश का राजा मास का बड़ा प्रेमी था। प्रति दिन वह जनपद के लोगों को इकट्ठा करके शिकार के लिए जाता और इसमें लोगों को अपने काम में बड़ा हर्ज होता। ऐसी स्थिति मे लोगो ने चतुराई से दोनो स्वर्णमृग के झुडों को एक उद्यान में लाकर बद कर दिया जिससे कि राजा वहां से इच्छानुसार शिकार करले और उनको अपने काम मे हानि न हो।

अब राजा उद्यान मे शिकार के लिए जाने लगा। इससे अनेक हरिण घायल हो जाते थे, अत निग्रोधमृग ने शाखामृग से सलाह करके यह निर्णय किया कि प्रतिदिन बारी-बारी से उनके झुडो मे से एक मृग राजा के लिए अपने आप चला जावे। राजा ने दोनो स्वर्णमृगो को अभयदान दिया और उनका शिकार का क्रम बन्द हो गया।

एक दिन एक गर्भवती मृगी की बारी आई जो शाखामृग की टोली की थी। उसने अपने सरदार से निवेदन किया कि उसकी बारी में किसी दूसरे हरिण को भेज दिया जावे क्योंकि उसके साथ दो जीव नष्ट होंगे। शाखामृग ने उसकी प्रार्थना अस्वीकार करदी। फिर उसने निग्रोधमृग के पास पहुँच कर इसी प्रकार निवेदन किया। निग्रोधमृग किसी दूसरे हरिण को न भेज कर स्वयं उसकी बारी मे अपना जीवन दान करने के लिए चला गया। रसोइये ने अभय-प्राप्त मृग को आया हुआ देख कर राजा को वहां बुलाया। राजा स्वर्णमृग से पूरा वृत्तान्त सुन कर अत्यत प्रभावित हुआ और उसने गर्भवती मृगी को अभय दिया। इसी प्रसग मे निग्रोधमृग ने राजा से समस्त पशुओ, पक्षियो एव जानवरो के लिए भी अभय वचन ले लिया और कुछ समय उद्यान में रह कर सभी मृग वन में चले गए।

जिस हरिणी की बारी आई थी, समय पाकर उसने शिशु को जन्म दिया। शिशु कुछ बड़ा होकर शाखामृग के पास जाने लगा तो उसकी माता ने उसे समझाते हुआ कहा—

निग्रोधमेव सेवेय्य न साखमुप संवसे।
निग्रोधस्मि मत सेय्यो यञ्चे साखस्मि जीवितं॥"

[हे पुत्र, निग्रोधमृग के पास जाना। कभी शाखामृग के पास न जाना। शाखामृग के आश्रय मे रह कर जीने का अपेक्षा निग्रोधमृग के आश्रय मे रह कर मरना ज्यादा अच्छा है।]

इस कथा का निग्रोधमृग बोधिसत्व के रूप में चित्रित किया गया है। वह परोपकार एवं त्याग की प्रतिमा है। उसकी परम उदात्त भावना से प्रभावित होकर घोर हिंसक राजा सर्वथा अहिंसक बन गया। बोधिसत्व का यह आदर्श लोक-कल्याण की भावना से ओतप्रोत है।

राजस्थान में हरिण संबंधी एक लोक कथा प्रचलित है। संभव है कि उसके किसी प्राचीन रूप को आधार मान कर निग्रोधमृग जातक की रचना हुई है। राजस्थानी लोक कथा का संक्षिप्त रूप इस प्रकार है—

"किसी नगर के पास एक बीड (जंगल) था जिसमें अनेक प्रकार के जानवर रहते थे। नगर का राजा शिकार का बड़ा ही प्रेमी था। वह प्रति दिन अपने आदमियों को लेकर 'बीड' में जाता और शिकार खेलता। इससे कई जानवर मारे जाते और कई घायल हो जाते। जानवरों को बड़ी पीड़ा होती। इसलिए 'बीड' के सब जानवरों ने मिल कर एक बार निर्णय किया कि प्रति दिन एक जानवर अपनी बारी के अनुसार राजा के यहाँ स्वयं चला जावे जिससे कि उनको हर रोज विपत्ति का सामना न करना पड़े और राजा की भी इच्छा पूरी हो जाय। राजा ने जानवरों के इस निर्णय को मान लिया और प्रति दिन एक जानवर स्वयं उसके 'रसोवड़े' (रसोई) के लिए जाने लगा।

एक दिन एक 'खोड़े' (लंगड़े) हरिण की बारी आई। वह धीरे-धीरे चला जा रहा था। इतने में ही वर्षा प्रारम्भ हुई और वह एक झाड़ी के नीचे ठहर गया। उसी समय वर्षा से बचने के लिए एक हरिणी भी उसी झाड़ी के नीचे आई। उसने वहाँ हरिण को देखा। वह 'रुत' पर थी (गर्भाधान करने के समय में थी)। हरिणी ने हरिण से विवाह करने के लिए निवेदन किया। हरिण ने उत्तर दिया कि प्रथम तो वह 'खोड़ा' है, दूसरे वह अपनी बारी में राजा के 'रसोवड़े' के लिए जा रहा है, अतः उसके सामने विवाह का प्रश्न ही पैदा नहीं हो सकता। हरिणी ने उसे समझाते हुए कहा कि 'सुख तो घड़ी को ही चोखो' (सुख तो घड़ी भर के लिए मिले वह भी ठीक ही है)। खैर, हरिण ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और वर्षा बंद न होने तक वह 'जोड़ी' वहीं ठहरी रही।

थोड़ी देर बाद वर्षा बंद हुई और हरिण अपनी बारी के अनुसार आगे बढ़ा। हरिणी ने भी अपने पति का अनुगमन किया। आज की बारी में निश्चित स्थान पर एक की जगह दो जानवर पहुँचे। हरिणी ने वधिक से कहा कि 'रसोवड़े' के लिए उसके पति के स्थान पर उसे स्वीकार किया जावे। इस पर हरिण ने उसे रोकते हुए कहा—'मैं तो मरूं मेरी आई, तू क्यूं मरे पराई जाई।' परन्तु हरिणी नहीं मानी और उनके विवाह की सूचना राजा के पास पहुँचाई गई। राजा स्वयं वहाँ आया और उसने उन दोनों से पूरा वृत्तान्त सुन कर उन्हें जीवन दान दिया। हरिण-हरिणी इतने से सन्तुष्ट नहीं हुए तो राजा ने उस बीड़ के सभी जानवरों को अभय दान दे दिया। तदनन्तर वे दोनों सानंद बीड़ में लौट आए और सब जानवरों को यह शुभ संवाद सुना दिया गया।

इस लोक कथा के दो वाक्य 'सुख तो घड़ी को ही चोखो' और 'मैं तो मरूं मेरी आई, तू क्यूं मरे पराई जाई' राजस्थान में कहावतों के रूप में प्रचलित हैं जो इस कहानी को

प्रभावोत्पादकता एव साथ ही जनप्रियता भली-भाँति प्रकट करते हैं। राजस्थानी लोक कथा एव निग्रोध जातक दोनो ही सिंह और शशक सबंधी उस सुप्रसिद्ध कहानी का स्मरण करवाते हैं जिसमें शशक ने सिंह को कुए के पानी मे अपनी ही परछाही दिखला कर उसके अदर गिरवा दिया और इस प्रकार वन के जीवो को भयमुक्त किया। इस कहानी में बुद्धि का चमत्कार दिखलाया गया है और यह एक शिक्षाप्रद नीति कथा है। राजस्थानी लोक कथा मे दाम्पत्य प्रेम की महिमा प्रकट की गई है परन्तु फिर भी यह निग्रोध जातक से काफी अश मे मिलती है और इन दोनो मे जो अन्तर है वह ऊपर से मिलाया हुआ सा प्रतीत होता है। यह अन्तर मूल कहानी में बौद्ध वातावरण प्रस्तुत करने के लिए किया गया है। स्वर्णमृग की कल्पना अनूठी है। स्वर्णमृग के प्रसग ने रामकथा को भी एक विशेष मोड़ दिया है। जातक कथा मे एक साथ दो स्वर्णमृग हैं। बुद्धदेव के सामने देवदत्त की हीनता दिखलाने के लिए जातक कथा मे ऐसा किया गया है अन्यथा इस कथा का मूल उद्देश्य 'शाखामृग' की उपस्थिति के बिना भी सिद्ध हो सकता था।

२—नीत गैल बरकत

राजस्थान मे एक कहावत प्रचलित है—'नीत गैल बरकत' अर्थात् नीयत के अनुसार बरकत होती है। इस कहावत की कहानी इस प्रकार कही जाती है—

"किसी समय एक राजा शिकार खेलते हुए मार्ग भूल कर अपने साथियो से भटक गया। वह इधर-उधर काफी घूमा परन्तु उसे मार्ग नही मिला। अत मे वह एक गन्ने के खेत मे पहुँचा। उसे प्यास सता रही थी। उसने खेत की रखवाली करने वाली बुढ़िया से जल मागा। बुढ़िया ने उसे साधारण आदमी समझ कर दयावश एक गन्ना प्यास बुझाने के लिए दिया। राजा इस गन्ने से तृप्त हो गया। यह असाधारण रूप से मीठा और रसभरा था। राजा ने बुढ़िया से पूछा कि उसके खेत का लगान कितना है ? बुढ़िया ने अब भी उसे नही पहिचाना और लगान की रकम बतला दी। राजा वहाँ से चल पडा। चलते चलते उसने निश्चय किया कि वह उस खेत का लगान जरूर बढ़ायेगा जिसकी उपज इतनी मधुर तथा लाभदायक है।

राजा कुछ आगे चला। अब उसे रास्ता मिल गया। उसे वहीं से लौट कर राजधानी के लिए आना पड़ा। बुढ़िया के खेत पर फिर आया। अबकी बार भी राजा ने प्यास मिटाने के लिए गन्ना मागा और उसे दे दिया गया। यह गन्ना न तो उतना मीठा था और न उसमे उतना रस ही था। राजा ने यह बात बुढ़िया से कही। उसने उत्तर दिया कि खेत के गन्ने तो सभी समान है परन्तु अब राजा की नीयत बदल गई होगी। इसी से गन्नें की मधुरता तथा रस की मात्रा कम हो सकती है। इतना सुनते ही राजा गम्भीर हो गया। बुढ़िया ने सही बात कही है। राजा ने खेत का लगान बढ़ाने का विचार छोड़ दिया और वहाँ से चल कर अपनी राजधानी म आ गया। अब वह बुढ़िया की शिक्षा के अनुसार काम करता था। उसका राज्य सब प्रकार से फूलने-फलने लगा।"

स्व० चन्द्रधरजी गुलेरी ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका, भाग ३, पृष्ठ १०६ पर इसी विषय पर टिप्पणी लिखते हुए प्रबंध चिंतामणि ग्रंथ की एक कहानी दी है जो सार रूप मे इस प्रकार है—

"एक बार राजा भोज अपने एक मित्र को साथ लेकर गुप्त वेश मे रात के समय नगर मे निकला। वे दोनो एक वेश्या के घर पर पहुँचे। राजा को प्यास लग रही थी, अतः जल माँगा गया। वेश्या गई और कुछ देर लगा कर एक पात्र मे गन्ने का रस लेकर लौटी। इस समय उसके बदन पर खिन्नता झलक रही थी। राजा के मित्र ने उससे खेद का कारण पूछा तो उसने प्रकट किया कि पहिले एक गन्ने के रस से एक घडा और एक वाहटिका (वाटकी) भर जाते थे मगर अब यहाँ के राजा का मन प्रजा के विरुद्ध हो गया प्रतीत होता है और यही कारण है कि इतनी देर मे गन्ने के रस से केवल एक बाहटिका ही भरी है। राजा सब सुन रहा था। उसने वेश्या के कथन की सत्यता अनुभव की। उस समय एक बनिया शिव-मंदिर मे नाटक करवा रहा था और राजा ने मन मे विचार किया था कि उसे लूटा जावे। वेश्या ने बडी गहरी बात कहदी। राजा वहाँ से चल कर अपने महल मे आ गया।

राजा ने रात के समय कोई बुरा विचार मन मे नही आने दिया और दिन मे भी प्रजा का भला ही करता रहा। आज रात को वह फिर गुप्त वेश मे उसी वेश्या के घर गया और पीने के लिए जल माँगा। वेश्या थोडी ही देर मे गन्ने का रस लेकर प्रसन्नतापूर्वक लौटी। आज उससे प्रसन्नता का कारण पूछा गया तो उसने प्रकट किया कि राजा का मन प्रजा के हित-चिन्तन मे प्रवृत्त हो गया प्रतीत होता है क्योकि थोडी-सी देर मे गन्ने से काफी रस निकल आया है। राजा प्रसन्न होकर वेश्या के घर से लौट आया।"

इसी टिप्पणी मे स्व० मुशी देवीप्रसादजी द्वारा गुलेरीजी को भेजी गई एक अन्य कहानी भी छपी है। उन्होने इस विषय मे जहागीर बादशाह की तुजक की एक कहानी दी है, जिसका सार इस प्रकार है—

"गर्मी का समय था। एक बादशाह एक बाग में पहुँचा और वहाँ के बूढे बागवान से उसने अनार का रस लाने के लिए कहा। बागवान ने अपनी लडकी को रस लाने के लिए इशारा किया और थोडी ही देर में वह अनार के रस का एक प्याला लेकर लौट आई। बादशाह ने रस पीया और बूढे से उस बाग के लगान के सम्बन्ध मे पूछताछ की। बूढे ने उत्तर दिया कि बाग का लगान नही लगता, वह तो सिर्फ खेत का लगता है। इतना सुन कर बादशाह ने अपने मन मे निश्चय किया कि वह बागो पर भी लगान लगा कर अपने खजाने की आमदनी बढावेगा। इसके बाद बादशाह ने फिर एक प्याला अनार का रस मँगवाया। बागवान ने फिर अपनी लडकी की ओर इशारा किया और वह कुछ देर लगा कर रस लाई। इस पर बादशाह ने पूछा कि इस बार देर भी लगी और रस भी कम आया है। इसका क्या कारण है? लडकी ने प्रकट किया कि पहली बार तो एक अनार के रस से ही प्याला भर गया था और इस बार तो पाच-छे अनार निचोडने पर भी थोडा हो रस निकला है। इस पर बादशाह चकित हो गया। बढे बागवान ने प्रकट किया कि बादशाहो की नीयत से बरकत होती है। तुम बादशाह मालूम होते हो। पहिले तुम्हारी नीयत अच्छी थी। अब वह अच्छी

नहीं रही, अतः रस कम निकला है। इतना सुन कर बादशाह गंभीर हो गया और उसने बूढ़े के कथन की सत्यता अनुभव की। फिर उसने बागों पर लगान लगाने का विचार मन से हटा दिया और एक प्याला अनार का रस और माँगा। इस बार लड़की जल्दी ही रस का प्याला भर कर ले आई। इसे देख कर बादशाह ने बागवान के कथन को सर्वथा प्रमाणित मान लिया और नेकनीयत से शासन-कार्य चलाने का संकल्प करके बाग से लौट आया।"

यह कथानक अत्यंत प्राचीन है। जातकों में भी यही कहानी प्राप्त है। राजोवाद जातक में एक राजा वन में जाता है। वहां उसे एक साधु मधुर फल खाने को देता है और प्रकट करता है कि उन फलों की मधुरता का कारण राजा का धर्माचरण है। राजा अपना भेद बताये बिना ही राजधानी में लौट आता है और धर्माचरण में प्रवृत्त होता है। इसके बाद वह फिर वन में साधु के पास जाता है। साधु उसे फल देता है परन्तु अब वह खारा लगता है। इस पर राजा अपना रूप प्रकट करता है और सारतत्व हृदयगम करके धर्माचरण में लीन होता है।

जातक कथा की गाथाएँ इस प्रकार हैं—

गवच तरमानानं जिह्मं गच्छति पुङ्गवो।
सब्बा गावी जिह्मं यन्ति नेते जिह्मं गते सति॥ १
एवमेव मनुस्सेसु यो होति सेट्ठसम्मतो।
सोचे अधम्मं चरति पगेव इतरा पजा।
सब्ब रट्ठ दुक्खं सेति राजा चे होति अधम्मिको॥ २
गव च तरमानान उजु गच्छति पुङ्गवो।
सब्बा गावी उजु यन्ति नेत्ते उजगते सति॥ ३
एवमेव मनुस्सेसु यो होति सेट्ठसम्मतो।
सो चेपि धम्म चरति पगेव इतरा पजा।
सब्ब रट्ठ सुखं सेति राजा चे होति धम्मिको॥ ४

इस कहानी में मानव समाज की उन्नति का स्थिर तत्व समाया हुआ है। शासन-सूत्र धारण करने वाले अधिकारियों के आचरण के अनुसार ही कोई राष्ट्र उन्नत अथवा अवनत होता है। महर्षि वेदव्यास ने यही तत्व इस प्रकार प्रकट किया है—

कालो वा कारण राज्ञो, राजा वा काल कारणम्।
इति ते संशयो मा, भूद्राजा कालस्य कारणम्॥
(महाभारत, शा प. ६९/६)

३–अंधा पारखी

किसी नगर में एक अंधा आदमी भटकता हुआ आ पहुँचा परन्तु यहाँ भी उसे कोई आश्रय नहीं मिला। उसे एक सईस ने देखा और दया करके उसे राजा की घुड़साल में घोड़ों की लीद उठाने के काम पर रखवा दिया। इस काम के लिए अंधे को कोई वेतन नहीं मिलता था। उसे सुबह और शाम खाने के लिए बाजरे की दो रोटियाँ दी जाती थीं। यही उसका वेतन था।

कुछ दिनों के बाद उस नगर में घोड़ों का सौदागर आया और वहाँ के राजा ने उसका एक घोड़ा विशेष रूप से पसंद किया। उस घोड़े का मोल बीस हजार रुपये ठहराया गया और राजा यह धन-राशि घोड़े के बदले में देने के लिए तैयार हो गया। यह खबर उस अंधे के भी कानों में पड़ी तो उसने सईस से कहा कि उसे भी उस घोड़े की जाँच करने का मौका दिया जाना चाहिए। परन्तु उसकी बात हँसी में उड़ादी गई। अंधे ने यही बात अन्य लोगों के सामने भी प्रकट की। अंत में राजा ने उसे घोड़े की जाँच करने के लिए बुलवा लिया। अंधे ने घोड़े के शरीर पर अपना हाथ फिरा कर कहा कि यह घोड़ा तो सौ रुपए का भी नहीं है। उसे तो चने की भीगी हुई दाल खिला कर मोटा कर दिया गया है। इतना सुनते ही राजा का ध्यान भी अंधे की बात पर जमा और सौदागर को सही चीज प्रकट करने के लिए दबाया गया। उसने कहा कि अंधा ठीक कहता है और उसे क्षमा किया जावे। सौदागर अपने घोड़े लेकर उस नगर से चला गया। राजा ने अंधे का वेतन पूछा तो वही चीज बतला दी गई। इस पर राजा ने आदेश दिया कि उसे प्रति दिन दो मुट्ठी भुगड़े (भुने हुए चने) और दिये जावें। यही उसका इनाम था।

कुछ दिनों के बाद उस नगर के राजकुमार की सगाई की चर्चा चली और उसकी होने वाली वधू का देखन के लिए राजपुरोहित तथा मंत्री आदि लोग भेजे जाने वाले थे। राजकुमार ने प्रस्ताव किया कि उनके साथ उस अंधे को भी भेजा जाय जिसने घोड़े की जाँच की थी। पहिले तो उसकी बात टाल दी गई परन्तु अंत में वह अड़ गया तो अंधे को भी जाने के लिए मना लिया गया और वे लोग चल पड़े।

अमुक नगर में पहुँचने पर यथा समय उन्हें राजकुमारी दिखला दी गई। उस समय वहीं वह अंधा भी बैठा था। सब ने अपने नगर में लौट कर राजकुमारी की अत्यन्त सराहना की। अंत में राजकुमार ने उस अंधे को एकांत में बुला कर उसकी राय पूछी। अंधे ने निवेदन किया कि वह राजकुमारी उनके योग्य नहीं है क्योंकि वह नाई की संतान है। राजकुमार ने पूछ ताछ से इस बात का पता लगवाया तो अंधे का कथन सत्य प्रमाणित हुआ। यह संबंध नहीं हो सका और अब वह अंधा राजकुमार के पास रख लिया गया।

एक दिन राजकुमार ने अंधे से उसके ज्ञान के बारे में चर्चा की। अंधे ने निवेदन किया कि उसके पास कोई विशेष ज्ञान नहीं है। किसी भी बात पर ध्यान देने से उसकी तह तक पहुँचा जा सकता है। उसने घोड़े की जाँच उसके शरीर पर हाथ फिरा कर की थी। इसी प्रकार उसने राजकुमारी की जाँच भी उसके [illegible] से की था। वह दातन करती हुई इसके [illegible] थी। इसी से उसने अनुमान लगा लिया। इसके बाद अंधे ने निवेदन किया कि उसे आदेश दिया जाय तो वह और भी कुछ बतला सकता है। राजकुमार ने [illegible] किया [illegible] अंधे ने कहा कि यहाँ का राजा अमुक की संतान है जिसने घोड़े की जाँच करने पर दो मुट्ठी चने की देन दी। परन्तु यह राजकुमार अपने पिता को [illegible] मानता है [illegible]। राजकुमार ने अंधे की इस बात की भी जाँच [illegible] तो वह सही निकली। [illegible] राजकुमार ठीक [illegible] [illegible]।"

इस लोक कथा के साथ मिलान करने के लिए 'सुप्पारक जातक' की कहानी संक्षिप्त रूप मे प्रस्तुत की जाती है—

"भरूकच्छ नगर में सूर्पारककुमार नौका द्वारा समुद्र पार के देशो के साथ व्यापार करने वाले समाज के मुखिया थे। वे पण्डित एवं ज्ञानवान थे। किसी समय लवण जल से उनकी दोनों आँखें चली गईं और वे निर्यामक कार्य छोड कर राजा की सेवा में आ गये। राजा ने उनको वस्तुओं का मूल्य-निर्धारण करने का काम दिया।

एक बार लोग राजा के पास मगलहस्ती के रूप में बेचने के लिए एक हाथी लाये। राजा ने वह हाथी सूर्पारककुमार के पास जाँच करने के लिए भेजा। उन्होंने हाथी को हाथ से टटोल कर देखा और फिर उसका दोष प्रकट कर दिया जो सच्चा निकला। इस पर राजा ने प्रसन्न होकर उनको आठ कर्षापण प्रदान किये। इसी प्रकार उन्होने बारी-बारी से मगल-अश्व, मगल-रथ, एव बहुमूल्य कम्बल की जाँच करके उन सबके दोष प्रकट कर दिये और उनका कथन सत्य सिद्ध हुआ। प्रत्येक जाँच की सत्यता से प्रसन्न होकर राजा ने उनको आठ कर्षापण ही दिये। इससे उन्होने सोचा कि इस राजा का देना तो एक नाई के देने के समान है, अतः यह नाई की सतान हो सकता है। तदनन्तर उन्होंने राजा की सेवा छोडदी और अपने नगर में ही लौट आये।

इस समय कुछ व्यापारी नौका तैयार करके समुद्र पार व्यापार के लिए जाने को तैयार थे। उन्होंने अनुरोध करके सूर्पारककुमार को ही अन्धा होने पर भी नाव का प्रधान बनाया और उनको साथ लेकर समुद्र-यात्रा के लिए चल पडे। आगे एक विशेष समुद्र आया। व्यापारियों ने सूर्पारककुमार को इसका हाल सुनाया जिससे उन्होंने बतला दिया कि वह क्षुरमाली समुद्र है। परन्तु उस समुद्र से हीरा उत्पन्न होता था, अतः डर था कि उसका गुण प्रकट कर दिया जायेगा तो व्यापारी इतना बोझ नाव में भर लेंगे कि वह डूब जायेगी। सूर्पारककुमार ने कम कीमत की कुछ वस्तुऐं समुद्र मे डाल दी और जाल द्वारा हीरे नाव में डलवा लिए। इसी प्रकार आगे चल कर अग्निमाली, दधिमाली, कुशमाली एव नलमाली समुद्रो मे से उन्होंने क्रमशः सोना, चाँदी, नीलमणि एवं वैदूर्य प्राप्त किये।

अंत मे उनकी नौका 'वडवामुख' समुद्र मे जा फँसी और सब लोग घबरा गये क्योंकि यह समुद्र अत्यत भयकर था। अब सूर्पारककुमार ने 'सत्यक्रिया' के द्वारा उस समुद्र मे से नौका को निकाला और सकुशल घर लौट आये। उन्होंने व्यापारियो को साथ मे लाये हुए रत्न बाँट कर दे दिये और जीवन भर दान-पुण्य करके अंत मे वे देवलोक को गये।"

राजस्थानी लोक कथा एव जातक कथा दोनो के प्रधान पात्र अधे हैं तथा प्रज्ञावान हैं। वे वस्तुओं की जाँच करने मे बड़े कुशल हैं। लोक कथा का नायक तीन बार जाँच करता है और जातक कथा में जाँच के कई अवसर आते हैं। दोनो कथाओं के नायकों को राजा के यहाँ से उचित सम्मान नही मिलता। लोक कथा का नायक उसे भड़भूजा मानता है और जातक कथा मे उसे नाई बतलाया जाता है। लोक कथा मे अधे पारखी के गुणों की कद्र राजकुमार करता है। जातक कथा मे उसके स्थान पर समुद्र पार जाने वाले व्यापारी लोग है। इस प्रकार ये दोनों कथाऐं मूल रूप मे अभिन्न हैं; फिर भी लोक कथा के अधे मे और जातक कथा

के नायक मे सामाजिक दृष्टि से बडा अन्तर है। पहला दर-दर भटकता है और आश्रयहीन है, जब कि दूसरा व्यापारी समाज का मुखिया है। परन्तु इस अंतर का कारण है। उसे बोधिसत्व के रूप मे प्रकट किया गया है, अत: तदनुसार ही उसका वातावरण चित्रित किया जाना आवश्यक था। ऐसा किये जाने से कथा मे प्रभावोत्पादक की विशेष वृद्धि हुई है, जैसा कि बोधिसत्व सत्यक्रिया से प्रकट होता है—

यतो सरामि अत्तान यतो पत्तोस्मि विञ्जुतं।
नाभिजानामि सचिच्च एकपाणम्हि हिंसितं।
एतेन सच्चवज्जेन सोत्थि नावा निवत्ततू ति॥

४–मरता की किसी नोबत घुरें

राजस्थान मे एक कहावत प्रचलित है—'मरता की किसी नोबत घुरें' अर्थात् मरते समय कोई नोबत थोडे ही बजती है ? इस कहावत की कहानी नीचे दी जाती है—

"किसी मदिर मे एक साधु रहता था, जिसके अनेक शिष्य थे। साधु पुण्यशील था। वह अपने शिष्यो को कई बार समझा कर कहा करता था कि जब वह शरीर छोडेगा तो मदिर मे पडी हुई नोबत किसी के बजाये बिना अपने आप ही बजने लग जाएगी।

कालातर मे साधु बीमार पडा और मर गया परन्तु नोबत नही बजी। अब उसके शरीर का क्या किया जावे ? शिष्यो ने मिल कर निश्चय किया कि गुरुजी का शरीर तेल की कढाई मे डाल कर छोड दिया जावे और नोबत बजने की प्रतीक्षा की जावे क्योकि उनका आदेश ऐसा ही था। वह कभी टल नही सकता। ऐसा ही किया गया। साधु का शरीर तेल म डाल कर छोड दिया गया और शिष्य वही पहरा देने लगे।

कुछ समय बाद उधर एक अन्य साधु आ निकला। उसने मदिर मे प्रवेश किया और वहा का वृत्तात उसके सामने आया। यह साधु भी पुण्यशील था। उसने सोचा कि मरने वाले साधु के कथन म सत्यता अवश्य है। उसने इधर-उधर नजर दौडाई तो देखा कि मदिर के पास ही एक झाडी खडी है जिसका एक बेर अत्यन्त आकर्षक है। साधु ने उस बेर को झाडी से अलग किया और फिर उस फल को तोडा। उसमे एक कीडा पडा हुआ था। यही उस मन्दिर का साधु था। मरते समय साधु का मन इस बेर के फल पर चला गया था, अतः वह मुक्त नही हुआ और उसम कीडा बन गया। आगन्तुक साधु ने उस कीडे की ओर देखा और उसे नीचे डाला। इधर कीडे ने प्राण त्याग किया और उधर अपने आप ही मन्दिर की नोबत जोर से बज उठी। गुरुजी का कथन सत्य सिद्ध हुआ। उनका दाह-संस्कार कर दिया गया।"

इस साधु कथा के साथ 'अस्सक जातक' की कहानी की तुलना करनी चाहिए जिसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है—

"प्राचीन समय मे काशी राष्ट्र के 'पोतली' नामक नगर म 'अस्सक' नाम का राजा राज्य करता था। उसकी पटरानी का नाम 'उब्बरी' था, जो अत्यन्त रूपवती थी। राजा उस से बहुत प्रेम करता था। समय पाकर रानी की मृत्यु हो गई। इससे राजा शोकाभिभूत हो

गया और उसने मोहवश रानी का दाह-संस्कार न करवा कर उसे तेल की कढ़ाई में डलवा दिया और उसको अपने पलंग के नीचे रखवा लिया। आत्मीय-जनों ने राजा को बहुत ही समझाया परन्तु उसने किसी की बात नहीं मानी और इस प्रकार सात दिन निकल गये।

उस समय बोधिसत्व हिमवन्त प्रदेश में विचरण करते थे। उन्होंने दिव्य चक्षु से 'अस्सक' राजा का वृत्तान्त ज्ञात किया और आकाश मार्ग से उड़ कर राजा के बाग में जा उतरे। वहाँ से उन्होंने राजा को खबर करवाई कि वे उसको रानी का नया जन्म-स्थान बतला सकते हैं और उसके साथ बातचीत भी करवा सकते हैं। मृतक रानी के प्रेम में पागल राजा तत्काल उनके पास बाग में आ पहुँचा। बोधिसत्व ने उसे समझाया कि रानी अपने रूप के ही गर्व में रही और उसने कोई *पुण्य कर्म नहीं किया। इस समय वह उसी बाग में* गोबर के कीड़े की योनि में है। राजा इस पर विश्वास करने के लिए तैयार नहीं था। इतने में ही गोबर के दो पिंड उधर लुढ़कते हुए आये। बोधिसत्व ने राजा से कहा कि उब्बरी रानी गोबर के कीड़े के पीछे पीछे चली आ रही है। इसके बाद उब्बरी रानी के मुँह से उसका पूर्व जन्म का वृत्तान्त एवं वर्तमान जन्म का हाल प्रकट करवा दिया गया। अंत में वह बोली कि राजा अस्सक से अब उसका कोई सम्बंध नहीं है। इस समय तो वह राजा को मार कर उसके रक्त से अपने कीड़े के पैर धोने के लिए भी तैयार है। इतना सुनकर राजा को ज्ञान आया। उसने उब्बरी के मृतक शरीर को हटवाया और दूसरी पटरानी बनाकर धर्मपूर्वक राज्य करने लगा।"

साधारण तौर पर देखने से ये दोनों कथाएँ अलग-अलग विदित होती हैं परन्तु इनकी मूल-वेदना समान ही है। लोक कथा में साधु और उसके शिष्य हैं। जातक कथा में उनके स्थान पर रानी और राजा हैं। एक कथा में गुरु-शिष्य का संबंध है और दूसरी में पति-पत्नी का संबंध है। लोक कथा के शिष्य मोहग्रस्त नहीं हैं परन्तु वे अपने गुरुजी के वचन पर दृढ़ हैं। मृतक की देह दोनों कथाओं में ही सुरक्षित रखवाई जाती है। इसी प्रकार दोनों ही कथाओं में कीड़े की चर्चा है। लोक कथा का नवागन्तुक साधु ही जातक कथा में बोधिसत्व के रूप में प्रकट हुआ है। इन दोनों में कोई असमानता नहीं है। जातक कथा में उसके गुणों को प्रसंगानुसार विशेष रूप में प्रदर्शित किया गया है जैसा कि उसे बोधिसत्व के रूप में चित्रित किये जाने के लिए आवश्यक भी था। लोक कथा में जीव की मृत्यु के समय की भावना पर जोर दिया गया है और जातक कथा में सांसारिक सम्बन्धों की अनित्यता पर प्रकाश डाला गया है, परन्तु मूल रूप में ये दोनों एक ही हैं।

५-धन की गर्मी

जब कोई छोटा आदमी बड़ी-बड़ी बातें बनाता है और उसके पीछे कोई परोक्ष ताकत रहती है तो राजस्थान में ऐसे प्रसंग पर एक कहावत का प्रयोग किया जाता है— ढेढ़ाणी के बोलें है, चरू बोलें है' अर्थात् चमार की स्त्री क्या बोल रही है, धन से भरा हुआ बर्तन बोल रहा है। इस कहावत की कहानी इस प्रकार कही जाती है—

"*किसी गाँव के ठाकुर की ठकुरानी और वहीं के चमार की स्त्री एक ही गाँव से विवाही आई थीं।* एक दिन चमार की स्त्री किसी काम से गढ़ में गई। वहाँ ठकुरानी ने उसे दया

तो पहचान लिया कि यह तो उसके पीहर के गांव की ही लड़की है। उसके हृदय मे पीहर का मोह जाग उठा और उसने चमारी को अपनी दासी भेज कर डयोढ़ी मे बुलवाया तथा कुशल-वृत्तान्त पूछा। इससे चमारी फूली न समाई। आज गांव की ठकुरानी से उसने बातचीत करली और उसने प्रेम प्रकट किया। उसके आनन्द का कोई पार न था। वह बड़े ही गर्व के साथ अपने घर आई।

कुछ दिनो बाद चमारी फिर गढ मे गई और उसने अपनी उपस्थिति का संवाद भीतर महल में भिजवाया। ठकुरानी को फिर पीहर की याद आई और उसने चमारी को डयोढ़ी मे बुलवा लिया। चमारी डयोढ़ी मे खड़ी हो गई और ठकुरानी भीतर बैठ गई। चमारी से फिर कुशल-वार्ता पूछी गई। उसने उत्तर दिया कि और तो उसे कोई कष्ट नहीं है मगर एक बात की उसे तकलीफ जरूर है। वह बात यही थी कि उसके लड़के ने हठ कर रखा था कि वह भी राजा के पुत्रों के समान ही कपड़े पहिनेगा। मगर चमारी के घर में ऐसे वस्त्र कहाँ थे? यह समस्या सुन कर ठकुरानी पहिले तो कुछ मुस्कराई, फिर उसने अपने पुत्रों के छोड़े हुए वस्त्र मँगवा कर चमारी को दे दिये। चमारी अत्यंत प्रसन्नतापूर्वक उन्हे लेकर घर आ गई।

कुछ दिनो के बाद चमारी फिर गढ़ मे गई। इस बार वह स्वयं डयोढी मे जाकर बैठ गई और भीतर खबर करवाई। ठकुरानी खबर सुन.कर वहीं आ गई और एक पीढ़े पर बैठ गई। फिर कुशल समाचार पूछा गया। इस बार चमारी ने प्रकट किया कि उसका लड़का राजकुमारों जैसे गहने पहिनने के लिए हठ पकड़े हुए है। ठकुरानी यह हाल सुन कर कुछ हँसी परन्तु उसने अपने यहाँ से एक दो जेवर मंगवा कर चमारी को दे दिये। चमारी गहने लेकर आनन्द के साथ अपने घर लौट आई।

कुछ दिनो बाद चमारी फिर गढ मे गई। इस बार वह डयोढ़ी मे जाकर वहाँ एक पीढ़े पर बैठ गई और अपने आने की खबर भीतर भिजवाई। ठकुरानी आई। उसके सामने एक दूसरे पीढ़े पर बैठ गई। फिर कुशल-वार्ता प्रारम्भ हुई। इस बार चमारी ने एक विकट समस्या सुनाई। वह बोली कि उसका लड़का जिद्द किए हुए है कि वह तो गाँव के ठाकुर की बेटी से ब्याह करेगा। इतना सुनते ही ठकुरानी चुप हो गयी और तत्काल वहाँ से उठ कर भीतर चली गई। कुछ समय बाद चमारी भी उठ कर अपने घर आ गई। थोड़े दिनो बाद वह फिर गढ़ मे गई और ठकुरानी से उसी स्थान पर मिली। उसने फिर संबंध करने की बात प्रकट की। ठकुरानी को इस बार बड़ा क्रोध आया और वह उठ कर महल मे चली गई। चमारी भी अपने घर लौट आई।

आज ठकुरानी का क्रोध नहीं मिटा। उसने सारा समाचार ठाकुर के सामने प्रकट किया। उसे भी बड़ा क्रोध आया, परन्तु वह समझदार था, अत शांत रहा और ठकुरानी को धीरज दिया। कुछ समय बाद ठाकुर उस जगह आया जहाँ चमारी बैठ कर बातचीत किया करती थी। ठाकुर ने उस स्थान को खुदवाया तो वहाँ सोने की मोहरों से भरा हुआ पात्र निकला। उस पात्र को डयोढ़ी मे एक जगह रखवा दिया गया और ठकुरानी को वहाँ बुलवाया गया। ठाकुर ने उसे दिखलाते हुए अपनी पत्नी से कहा—'देखणो के बाले हो, दा

चरू बोलें हीं'। सब रहस्य ठकुरानी के समझ मे आ गया। चरू भीतर खजाने मे भिजवा दी गई और ड्योढ़ी को फिर से ठीक करवा दिया गया।

अगले दिन ठकुरानी ने चमारी को दासी भेज कर गढ में बुलवाया और उसी स्थान पर विठाया जहाँ वह पहिले बातचीत करने के समय बैठा करती थी। ठकुरानी ने चमारी से कहा कि उस दिन उसने सम्बन्ध करने की जो बात कही थी वह पक्की हो गई है और वह इसके लिए तैयार है। इतना सुनते ही चमारी घबराई और उसने हाथ जोड कर निवेदन किया कि उसके मुंह से ऐसी बात निकल ही नही सकती। वह तो ठकुरानी के पैरो की जूतियों की भी बराबरी नही कर सकती। ऐसा सुन कर ठकुरानी ने और भी पक्का विश्वास कर लिया कि असल मे तो जो कुछ पहिले उस चमारी ने कहा था वह सब उस धन-पात्र के प्रभाव से ही कहा गया था।"

इस लोक कथा मे धन की गर्मी का प्रभाव प्रकट किया गया है। पचतंत्र की एक कथा का चूहा अपने धन की ताकत से काफी ऊँचा उछलता है परन्तु जब उसका बिल खोद कर धन निकाल लिया जाता है तो वह अशक्त हो जाता है। वह धन चूहे का अपना था अत यह कथा उससे मेल नही खाती। एतदर्थ 'नन्द जातक' की कहानी द्रष्टव्य है। उसमे एक सेठ मरते समय काफी धन जोड कर जाता है। उसका लडका छोटा है। यह सारा धन एक जगह गाड दिया जाता है और वह स्थान एक पक्के स्वामिभक्त सेवक को बतला दिया जाता है। जब सेठ का लडका बडा होता है तो सेवक उसे उस स्थान पर ले जाता है जहाँ धन गडा हुआ है। वहाँ पहुँचते ही सेवक बुरी तरह बकना आरम्भ कर देता है। सेठ का लडका इस व्यवहार से चकित होता है। वह स्थान छोडने पर सेवक प्रकृतिस्थ हो जाता है, ऐसा कई बार होता है। जब कभी सेवक उस स्थान पर जाता है वह बकता रहता है। अत मे सेठ का लडका समझ जाता है और उस स्थान पर खुदाई करवाता है तो उसे काफी धन प्राप्त होता है। इसी धन के प्रभाव से सेवक का दिमाग गर्म हो जाया करता था। जातक कथा की गाथा इस प्रकार है

मञ्ञे सोवण्णयोरासि सोवण्णमाला च नन्दको।
यत्थ दासो आमजातो ठितो थुल्लानि गज्जति॥

ध्यान रखना चाहिए कि जातक कथा के सेवक को जमीन में गडे हुए धन का परिचय है, अत उसका बडबडाना किसी अश मे स्वाभाविक ठहराया जा सकता है। परन्तु राजस्थानी लोक कथा की चमारी का तो इसका भान भी नही कि ड्योढ़ी मे उसके बैठने के स्थान के नीचे धन-पात्र गडा हुआ है। फिर भी वह विचित्र व्यवहार करने लगती है। यह इस कहानी के प्रभाव का और भी अधिक बढ़ाने की दृष्टि से हुआ है। राजस्थानी लोक कथा मे यहाँ का वातावरण स्वाभाविक रूप मे प्रकट हुआ है, परन्तु इसका मूलतत्व जातक कथा से भिन्न नहीं है, यहाँ तक कि इसकी कहावत भी किसी अश मे प्राचीन गाथा से मेल खाती है।

राजस्थानी-लोक-विश्वास के अनुसार अलग-अलग स्थानों की धरती का अलग-अलग प्रभाव माना जाता है। किसी जगह धरती का ऐसा प्रभाव रहता है कि वहाँ पैदा होने

वाला व्यक्ति स्वभाव से बिलकुल कायर होने पर भी आश्चर्यजनक रूप से शौर्य प्रदर्शन करता है और किसी जगह की धरती के प्रभाव से नामी वीर भी कायरता को धारण कर लेता है। धरती के ऐसे प्रभाव के पीछे स्थानीय जनश्रुति भी रहती है। इस लोक कथा के मूल मे किसी अश मे वह तत्व भी काम कर रहा है।

६—लेणा एक न देणा दोय

राजस्थानी कहावत 'लेणा एक न देणा दोय' की कहानी इस प्रकार कही जाती है।—

"नदी के किनारे एक वन था। एक कठियारा वहाँ लकडी काटने के लिए जाया करता था। यही उसकी आजीविका थी। कठियारा प्रात काल वन मे जाता और दोपहर का भोजन साथ ले जाता। दोपहर का अपना काम करके वह नदी के किनारे बैठ कर भोजन करता और उसका बचा हुआ अश वही डाल देता। वहाँ एक मेढक रहता था। वह बचे हुए भोजन को खाकर प्रसन्न होता। इस प्रकार उन दोनो मे मित्र-भाव हो गया।

एक बार मेढक ने अपने मन मे सोचा—तेरा मित्र कठियारा तुझे प्रति दिन भोजन करवाता है। इसलिए तेरी तरफ से भी उसको कुछ भेंट मिलनी चाहिए। ऐसा सोच कर वह पानी में गया और वहाँ से एक अमूल्य मोती तलाश कर के लाया। यह मोती उसने कठियारे को मित्र की निशानी के रूप मे भेंट किया। कठियारा उस मोती को लेकर अपने घर आ गया। घर आकर उसने विचार किया कि वह मोती उसके लिए शोभाजनक नही है। यदि उसे नगर के राजा को भेंट कर दिया जाये तो उसे राजा की कृपा प्राप्त हो सकती है जिससे उसे लाभ होने की पूरी सभावना है। इस निश्चय के अनुसार कठियारे ने वह मोती अगले दिन राजा को भेंट कर दिया। राजा मोती को पाकर बडा प्रसन्न हुआ।

राजा ने वह मोती अपनी रानी को दिया, परन्तु वह तो एक ही था। रानी ने कर्ण-भूषण बनवाने के लिए उसी आकार का दूसरा मोती और चाहा। इस पर कठियारे को बुलवाया गया और रानी की इच्छा उसे बतलादी गई। कठियारे के पास दूसरा मोती कहाँ था? उसने मोती के आने का वृत्तान्त राजा को कह सुनाया। कठियारे को समझाया गया कि वह दूसरा मोती भी अपने मेढक मित्र से ही प्राप्त करे।

अगले दिन कठियारा वन मे गया। समय पर उसने भोजन किया। मेढक वहाँ आया। आज कठियारा उदास था। मेढक ने उसकी उदासी का कारण पूछा तो उसने सब कुछ प्रकट कर दिया। उसकी बात सुन कर मेढक को बडा खेद हुआ कि वह कठियारा अपने मित्र की निशानी भी अपने पास नहीं रख सका और अब वह दूसरा मोती और मागता है, अतः यह मित्र बनाने योग्य नहीं है। इससे तो पहले दिया हुआ मोती भी वापिस लेना चाहिए। मेढक बोला— मित्र, मेरे लिए दूसरा मोती लाना कठिन नहीं है परन्तु जल मे अगणित मोती पडे हैं। रानी के कर्णभूषण के लिए समान आकार के दो मोती चाहिएं। मुझे पहिले वाला मोती लाकर दिया जाय तो मैं उसकी जोडी का दूसरा मोती भी देख कर ला सकता हूँ। कठियारे को मेढक का कथन सत्य प्रतीत हुआ। उसने अगले दिन राजा से यही बात कह दी। पहिला मोती रानी के पास से मंगवा कर कठियारे को दे दिया गया। वह उसे

लेकर अगले दिन वन मे गया। समय पर उसका मित्र मेढक पानी मे से निकल कर उसके पास आया। उसे मोती सौंप दिया गया। मोती को लेकर मेढक पानी में डुबकी लगा गया।

काफी समय बीत चला मगर मेढक लौट कर नही आया। कठियारा नदी के किनारे साझ पडे तक प्रतीक्षा मे बैठा रहा। अत मे मेढक ऊपर आया और नदी-जल में से ही कठियारे से बोला—'आखर राम करै सो होय, लखा एक न देखा दोय।'

इस लोक कथा के विविध रूपान्तर हैं। एक रूपान्तर मे यह कथा नदी के किनारे रहने वाले सर्प और मेढक के बारे मे कही जाती है। एक दिन सर्प मेढक को पकड लेता है और वह कीमती रत्न लाकर देने का वचन देकर उसकी पकड से बचता है। तदनुसार मेढक रत्न लाकर सर्प को देता है और उसकी स्त्री उसी की जोडी का दूसरा रत्न और पाने के लिए हठ करती है। फिर ऊपर दिए गए तरीके से ही मेढक उस रत्न को वापिस प्राप्त कर लेता है। इस कथा के अन्य रूपान्तर मे एक कछुआ एक तलैया मे रहता है। जब वहां का पानी सूख जाता है तो कछुए को अन्य जानवर आ घेरते हैं और वह प्राण बचाने की चेष्टा करता है।

इसी समय उधर से एक हस उडता हुआ निकलता है और वह कछुए पर दया करता है। हस उसे अपने पजो से पकड कर उठा लेता है और समुद्र के किनारे लाकर छोड देता है। कछुआ अब पूर्णतया सुरक्षित है। वह अपने प्राण-रक्षक हस को कहता है कि जब कभी उस पर विपत्ति पड तो उसे याद किया जावे। इतने मे ही एक बहेलिया हस पर जाल डाल देता है। कछुए के सामने उपकार का बदला चुकाने का अवसर इतनी जल्दी आ गया। वह बहेलिये से कहता है—अरे, इस हस को छोड। इसे बेच कर तुझे क्या मिलेगा। मैं तुझे अभी समुद्र मे से अनमोल रत्न लाकर देता हूँ जिससे तू जन्म भर सुख मे रह सकेगा। इतना कह कर वह समुद्र मे डुबकी लगा जाता है और शीघ्र ही एक रत्न लाकर बहेलिये को देता है। बहेलिया रत्न लेकर लोभ करता है और कहता है—मुझे इस प्रकार के दो रत्न देगा तब हस को छोड़ूगा।' कछुआ उत्तर देता है—मेरे लिए दूसरा रत्न लाना क्या कठिन है! तू इस हस को छोड और यह रत्न मुझे दे जिससे कि इसी के समान खोज कर दूसरा रत्न और ले आऊ। बहेलिया मूर्खतावश उसकी बात मे आ जाता है। वह हस को छोड देता है और रत्न कछुए को दे देता है। हस उड जाता है और कछुआ पानी मे चला जाता है। बहेलिया उसके आने की प्रतीक्षा करता है। कुछ देर बाद कछुआ पानी के ऊपर आकर कहता है—लेखा एक न देखा दोय। अब बहेलिया अपनी मूर्खता पर पछताता है और घर चला जाता है।"

इस लोक कथा के प्रथम रूपान्तर को ध्यान मे रखते हुए मणिकंठ' जातक की कहानी पर विचार करना उचित है जो संक्षिप्त रूप मे इस प्रकार है—

"बोधिसत्व ने एक अत्यत धनी कुल मे जन्म लिया। उनके एक छोटा भाई और भी था। जब वे बडे हुए तो उन दोनो को ही वैराग्य हो गया और वे गगा-तट पर अलग-अलग कुटिया बना कर रहने लगे। एक दिन मणिकठ नामक नाग गगा मे से निकला और ब्रह्मचारी के रूप मे छोटे भाई की कुटिया मे पहुँचा। तपस्वी का उससे प्रेम हो गया और वह नियम से

प्रति दिन आने लगा। परन्तु जब वह लौट कर गंगा मे जाता तो नाग रूप धारण करके तपस्वी से लिपटता और फन फैला कर प्रेम प्रकट करता। यह स्थिति बडी भयप्रद थी। इससे वह धीरे-धीरे कृश होने लगा और अत में अत्यंत दुर्बल हो गया।

एक दिन बड़े भाई ने तपस्वी की दुर्बलता का कारण पूछा तो उसने सब कुछ साफ-साफ प्रकट कर दिया। बडे भाई ने उसे उपाय बतलाते हुए कहा—कल जब नाग आवे तो उसके बैठने से पहिले ही उससे मणि मांगना, वह अपने आप चला जायेगा। अगले दिन कुटिया के द्वार पर उससे मणि मांगना, वह फिर चला जायेगा। इसके बाद गंगा तट पर जाकर उससे जल मे से निकलते ही मणि मांगना जिससे वह जल से बाहर ही नही आयेगा। छोटे भाई ने आगे तीन दिन तक इसी प्रकार नाग से मणि मांगी। वह मणि न देकर अपने आप ही लौट गया और फिर कभी उसके आश्रम मे न आने को कह गया। इस प्रकार तपस्वी का उस भयकर मित्र से पिंड छूटा। अब वह स्वस्थ और प्रसन्न था। बडे भाई ने उसे समझाया—अति याचना करने वाले के प्रति प्रेम नही रहता। रत्नो से भरे-पूरे नाग-भवन मे रहने वाले नागो को भी याचना अच्छी नही लगती।"

लोक कथा और जातक कथा आपस मे बहुत ही कम मिलती हैं। लोक कथा के दूसरे और तीसरे रूपान्तरो मे तो क्रमशः मेढक और कछुए की चालाकी प्रकट होती है परन्तु प्रथम रूपान्तर मे मेढक कठियारे का मित्र है और वह प्रेम-भेंट के रूप मे उसे मोती देता है। जब कठियारा किसी कारणवश दूसरा मोती और मांगता है तो वह चतुराई से पहला मोती भी वापिस ले लेता है और फिर कभी लौट कर नही आता। कठियारे के हृदय मे लोभ नही है। उसकी याचना के पीछे राजा का दबाव है परन्तु फिर भी उसके मित्र जलचर को उसका मांगना सहन नही होता। उस समय लोक कथा का कठियारा और मेढक जातक कथा के तपस्वी एव नाग का स्मरण करवा देते है।

७—चोरी का धन

वेदब्भ जातक की कथा सक्षिप्त रूप मे इस प्रकार है—

"किसी गाँव मे एक ब्राह्मण रहता था जो वैदर्भ मत्र का ज्ञाता था। नक्षत्र योग होने पर इस मन्त्र के द्वारा आकाश से सप्तरत्नो की वर्षा करवाई जा सकती थी। उस समय बोधिसत्व उस ब्राह्मण के पास शिष्य के रूप मे अध्ययन कर रहे थे।

एक बार वह ब्राह्मण अपने शिष्य को साथ लेकर चेदि राज्य मे गया। मार्ग मे उनको पाच सौ चोरो ने पकड लिया। उन्होने गुरु को अपने पास रख लिया और शिष्य को धन लाने के लिए घर भेज दिया। बोधिसत्व ने जाते समय अपने गुरु को समझाया कि नक्षत्र योग आने वाला है परन्तु कैसा भी कष्ट उठा कर आकाश से रत्न न बरसाये जावे और वे जल्दी ही लौट आयेंगे। चोरो ने गुरु को रस्सा से जकड कर एक जगह डाल दिया। ब्राह्मण के लिए यह यातना असह्य हो उठी। उसने नक्षत्र योग के आते ही आकाश से रत्नो की वर्षा करवा कर चोरो को सतुष्ट कर दिया और मुक्ति पाई।

चोर धन को लेकर आगे चले तो ब्राह्मण भी उनके साथ हो लिया। आगे दूसरे पाच सौ चोर मिले। जब उन्होने धन मांगा तो पहिले वाले चोरो ने ब्राह्मण का गुण प्रकट करके

उसे उनके हवाले कर दिया और स्वय आगे बढ गये। चोरो ने ब्राह्मण से धन माँगा तो उनको कहा गया कि नक्षत्र योग तो पूरे एक साल बाद आयेगा, तब रत्नो की वर्षा करवाई जा सकती है। इसके पहिले कोई उपाय नही है। इस बात पर चोर क्रोधित हुये और ब्राह्मण के तलवार से दो टुकडे कर दिये। तदनन्तर वे आगे जाने वाले चोरो के पीछे दौड़े और उन हजार चोरो मे परस्पर युद्ध हुआ जिसमे दो को छोड करके सभी कट मरे। बचे हुए दोनो चोरो ने धन को उठा लिया और आपस मे बाँट लने का निश्चय किया। तदनुसार वे आगे बढे। अत मे चोर धन के पास बैठा और दूसरा भात पकाने के लिए गया। उन दोनो के मन मे कपट आया। एक ने भात मे विष मिला दिया और दूसरे ने पहिले पर अचानक तलवार से हमला कर दिया। उसकी मृत्यु के बाद वह स्वय विषपूर्ण भात खाते ही मर गया। सारा धन धरा ही रह गया।

बोधिसत्व लौट कर आए तो उन्होने बारी बारी से सारा काण्ड देख कर समझ लिया और मृतको का यथोचित सस्कार करके धन अपने साथ ले आये। उन्होने धन का पुण्य-कार्यो मे प्रयोग किया और अत मे देवलोक को प्राप्त हुए।

इस कथा के दो विभाग किये जा सकते हैं। पूर्वार्द्ध में गुरु की मृत्यु होती है और उत्तरार्द्ध इसके आगे का भाग है। दो चोरो के कपट-व्यवहार की कहानी तो लोकप्रसिद्ध है ही। इस कथा के पूर्वार्द्ध के लिए निम्न राजस्थानी लोक कथा द्रष्टव्य है—

"अपने चेले के साथ भ्रमण करता हुआ एक साधु किसी नगर मे आया। उन्होने एक धर्मशाला मे ठहराव किया। वे भगवान का भजन करते परन्तु भीख माँग कर नही लाते थे। गुरु के पास ऐसी विद्या थी जिससे वह तावे का सोना बना सकता था। यथासमय गुरु थोडे मे तावे का सोना बना लेता और उसी मे वे अपना भरण-पोषण कर लेते। धीरे-धीरे यह खबर नगर मे फैली और अत मे वहाँ के बादशाह के कानो म भी पहुँची। बादशाह ने उन दोनो को अपने सामने बुलवाया और सोना प्राप्त करन का साधन पूछा। गुरु ने स्पष्ट कह दिया कि वह ताम्बे का सोना बनान की विद्या जानता है और अपनी आवश्यकता के अनुसार सोना बना कर अपना और शिष्य का काम चलाता है। बादशाह न इसका प्रमाण मांगा। गुरु तैयार हो गया। बादशाह ने ताम्बे की एक मस्जिद बनवाई और साधु ने उसे अपने प्रयाग से सोने की बनादी। इस पर साधु स सोना बनान की विधि पूछी गई तो उसने कहा—

पेलैं को नोसादर, मर पेलैं को वो।
तामैं को सहूजत, सानैं की हा॥

'वह' चीज क्या थी—इसको साधु ने प्रकट करन स अस्वीकार किया। इस पर शाह ने उन दोनो को कैद मे डाल दिया और भय दिखला कर विधि मालूम करने की चेष्टा की। परन्तु किसी भी हालत मे उसे सफलता नही मिली। अत मे उसे क्रोध आया और गुरु के सामने ही विधि न बतलाने के कारण उसके चले की हत्या करदी गई। फिर भी साधु ने कुछ प्रकट नही किया। उसे कैद म बन्द कर दिया गया।

रात पडने पर बादशाह ने एक निर्धन व्यक्ति का रूप धारण किया और वह साधु की कोठरी के सामने पहुँचा। साधु चुपचाप वहाँ पडा हुआ था। निर्धन व्यक्ति ने उसको

बाहर से ही प्रणाम किया और अपनी गरीबी के कष्टों का रोना रोया। साधु ने उसको दया-पूर्वक ताम्बे का सोना बनाने की विधि बतलादी और घर जाने की आज्ञा दी। अब बादशाह ने अपना रूप प्रकट करके पूछा कि क्या कारण है जो चेले के मारे जाने पर भी विधि प्रकट नहीं की गई, वह उसे आसानी से बतलादी गई ? साधु ने उत्तर दिया—विद्या नम्रता से प्राप्त की जा सकती है। उसे कोई भी बलपूर्वक प्राप्त नहीं कर सकता। यदि यही नम्रता वह पहिले ही दिखलाता तो उसे सोना बनाने की विधि बतलाई जा सकती थी। बादशाह को आज ज्ञान प्राप्त करने का रहस्य प्राप्त हुआ और उसका स्वभाव सर्वथा बदल गया। उसने पैर पकड़ कर साधु से क्षमायाचना की।"

इस लोक कथा के समान ही जातक कथा में भी गुरु शिष्य हैं। जातक कथा के गुरु के पास वेदर्भ-मंत्र है और लोक कथा का गुरु ताम्बे को सोने में बदल देने की विधि का ज्ञाता है। लोक कथा में आगे चल कर शिष्य मारा जाता है परन्तु जातक कथा में गुरु की हत्या होती है। इसका कारण यह है कि शिष्य बोधिसत्व के रूप में प्रकट हुआ है। लोक कथा में चोरों का स्थान बादशाह ने ले रखा है, जिससे इसमें मुस्लिम रंगत झलकने लगी है। इसका उद्देश्य विद्या प्राप्त करने का सहज रहस्य समझाना है। जब कि जातक कथा में अनुचित रूप से धन प्राप्त करने का सहज रहस्य समझना है; जब कि जातक कथा में अनुचित रूप से धन प्राप्त करने का फल प्रकट किया गया है। उसकी गाथा में भी यही तत्व सामने आता है—

अनुपावेन यो अत्थ इच्छति सो विहञ्ञति।
चेता हनिसु वेदब्भ सब्बे ब्यसनमज्झगू 'ति॥

८—जाति स्वभाव

कलण्डुक जातक में एक सेठ की दासी का लड़का भाग कर किसी सुदूर नगर में चला जाता है वहाँ वह अपने को सेठ-परिवार का व्यक्ति प्रकट करता है और कुछ समय बाद व्यापार से सम्पत्तिशाली बन जाता है। इस पर एक अन्य सेठ उसके साथ अपनी पुत्री का विवाह कर देता है। जब नया सेठ अपनी पत्नी के साथ जल-विहार करता है तो मिथ्या ही गर्व से भर उसके मुँह पर पानी के कुल्ले करने लगता है। इससे उसकी पत्नी बड़ी खिन्न होती है। इसी समय उसके पहिले वाले घर से एक तोता उसकी खोज करता हुआ वहाँ आ पहुँचता है और बेचारी स्त्री की खिन्नावस्था देखता है। तोता उस नये सेठ को उसकी सही स्थिति बतलाते हुए यह गाथा कहता है —

ते देसा तानि वत्थूनि अहञ्च वनगोचरो।
अनुविच्च खो तं गण्हेय्यु पिव खीरं कलण्डुक॥

इसी प्रसंग में एक राजस्थानी लोक कथा द्रष्टव्य है जिसका संक्षिप्त रूप इस प्रकार है—

एक राजा के कोई पुत्र न था, अतः वह बड़ा उदास रहता था। उसने पुत्र-प्राप्ति हेतु अनेक उपाय किये मगर वह सफल नहीं हो सका। अन्त में मंत्री की सलाह से पुत्रवान होने का एक नया उपाय सोचा गया। रानी के गर्भवती होने की खबर फैला कर उसे महल के अन्दर तहखाने में छिपा दिया गया। अब उससे कोई नहीं मिल सकता था।

धीरे-धीरे समय निकलने लगा। नौ मास पूरे होने पर दूर देश के किसी गाव से एक बालक अत्यंत विश्वस्त सेवक द्वारा मँगवा लिया गया और नगर मे राजा के पुत्र होने की घोषणा करदी गई। इस बालक का नाम 'तीतर' था और यह 'किशोर' नामक एक भंगी की सतान था, जिससे इसे खरीदा गया था।

जब राजकुमार तीन साल का हुआ तो वही नाटक फिर रचा गया और उसी भगी का 'मोर' नामक बालक मँगवा कर उसे भी राजकुमार बना दिया गया, जिसमे कि प्रजा में किसी प्रकार का सदेह न रहे और सब लोग विश्वास कर लेवें कि रानी के सतान होने लग गई है।

कालातर में दोनो राजकुमार विवाह योग्य हुए और उनका बडे ठाट से अन्य राज्य की राजकुमारियो के साथ विवाह कर दिया गया। राजकुमारो को शिकार का बडा चाव था। जब वे जगल मे जाते तो अपनी पत्नियो से अपनी नथ ऊँची करने के लिए कहते। उनको ऐसा करना पडता और राजकुमार धनुष मे बाण छोड कर उसे नथ मे से निकालते। यह स्थिति बडी भयकर थी परन्तु बेचारी स्त्रियो को सब सहना पडता। हर समय मुँह मे बाण चुभने का भय बना रहता था। यह क्रम कई दिन तक चलता रहा। अत मे उन्होंने अपने पीहर सारा हाल कह कर पत्र भेजा। पत्र के पहुँचते ही राजा का पुरोहित राजकुमारियो की दशा देखने के लिए भेजा गया। जब वह राजकुमारियो से मिलने के लिए महल में आया तो उनकी नथ मे बाण निकाला जा रहा था। यह पुरोहित उन राजकुमारो के जन्म की स्थिति का पता लगा चुका था परन्तु विवाह हो चुका था, अत कुछ भी प्रकट नहीं करता था। आज उससे नहीं रहा गया और उसने राजकुमारो को फटकारते हुए कहा—

बाड पछाड़ै पीपली, जा तळ बसै किसोरा।
जात जणावै आप की, तीतरिया अर मोरा॥

इतना सुनते ही दोनो राजकुमार ठडे पड गए क्योंकि वे स्वयं अपना इतिहास जान चुके थे। अब उन्होंने नथ मे बाण निकालना बन्द कर दिया।"

६–त्रिया चरित्र

राध जातक की कथा का सक्षिप्त रूप इस प्रकार है—

"प्राचीन काल मे बोधिसत्व ने एक बार शुक योनि मे जन्म ग्रहण किया। उस समय उनका नाम 'राध' था। उनके एक छोटा भाई 'प्रोष्टपाद' था। एक बहेलिए ने उन दोनों को बचपन में ही पकड कर एक ब्राह्मण के हाथ बेच दिया। उसने उनका अपनी सतान की तरह पालन-पोषण किया।

ब्राह्मण की स्त्री दुश्चरित्रा थी। एक बार वह किसी काम से बाहर जाने लगा तो उसने दोनों सुग्गों को अपनी स्त्री की देख-भाल करते रहने के लिए कहा। जब ब्राह्मण चला गया तो उसकी स्त्री निश्चित हो गई और उसके घर अनेक पुरुष आने लगे। सुग्गे सब कुछ देख रहे थे। प्रोष्टपाद ने अपने भाई राध से कहा कि उस अनैतिक कार्य को रोका जावे। परन्तु राध चुप रहा तो उसने ब्राह्मणी को समझाया कि वह पाप-कर्म मे प्रवृत्त न होवे। उसने सुग्गे

की बात स्वीकार करली और उसे बड़े प्रेम से अपने पास बुलाया। वह भुलावे में आ गया। जब वह पास आ गया तो ब्राह्मणी ने पकड़ कर उसका गला दबा दिया और चूल्हे में डाल दिया। राध सब कुछ देखता रहा। कुछ समय बाद ब्राह्मण लौट कर आया और उसने सुग्गे से पीछे का हाल पूछा तो उसने यह गाथा कही—

न खो पनेत सुभण गिर सच्चूपसहितं।
समेय पोट्ठपादो व मुम्मुरे उपकूळितो॥"

जातक कथा की तुलना के लिए निम्न लोक कथा द्रष्टव्य है—

"किसी नगर में एक बनिया रहता था। उसके पास एक सुग्गा और एक मैना थे, जो बड़े समझदार थे। बनिया उनको बड़ा प्यार करता था। उसकी स्त्री का चरित्र खराब था। एक बार बनिये को कार्यवश कहीं बाहर जाना था। जब वह जाने लगा तो उसने अपने सुग्गे और मैना को समझाया कि वे पीछे से घर की पूरी देखभाल करें और उनकी मालकिन पर भी नजर रखें। इसके बाद बनिया बाहर चला गया।

बनिये की स्त्री ने अब अपने आप को पूर्ण स्वतंत्र समझा और वह बहाना करके रात के समय घर से बाहर जाने लगी। उसने प्रकट किया कि उसके पीहर में लड़के का विवाह निश्चित हुआ है, अतः उसके लिए प्रति दिन रात के समय वहाँ के गीतों में शामिल होना जरूरी है। दोनों पक्षियों ने उसका अभिप्राय समझ लिया परन्तु सुग्गा चुप रहा। मैना ने उसका प्रतिवाद किया। इस पर बनिये की स्त्री क्रोधित हुई और उसने पिंजरे में से मैना को निकाल कर उसका गला दबा दिया। वह मर गई और खिड़की के बाहर फेंकदी गई। इसके बाद वह स्त्री अपनी इच्छा के अनुसार कार्य करने लगी। सुग्गा सब कुछ देख कर चुप रहा

एक दिन सुग्गे ने अपनी मालकिन से प्रार्थना की कि वह रातदिन पिंजरे में पड़ा रहता है, अतः उसके डैने जकड़ गए हैं। उसे एक बार पिंजरे से बाहर निकाल दिया जावे तो वह कुछ घूम फिर कर ठीक हो जावे। मालकिन ने उस पर दया की और उसे बाहर निकाल दिया। सुग्गा उड़ कर पास ही एक नीम पर जा बैठा। अब वह वापिस क्यों आने लगा?

कुछ दिनों बाद बनिया आया। घर में न सुग्गा था और न मैना ही थी। उसे कह दिया गया कि उनको बिल्ली ने मार डाला। बनिया अपने घर की छत पर गया तो वहाँ नीम पर सुग्गा बैठा था। बनिये ने उससे अपनी यात्रा के समय में पीछे से घर का हाल पूछा। सुग्गे बोला

रावठै रातीजगा भुवा बिना क्यू होय।
जै सूवा साची कवै, तो मैना हाळी होय॥

इस पर बनिये ने पूरा हाल पूछा तो उसे सब कुछ कह दिया गया। बनिया चुप रह गया और सुग्गा वहाँ से उड़ कर वन में चला गया।

जहाँ जातक कथा में ब्राह्मण है, वहाँ लोक कथा में बनिया है। इसी प्रकार जातक कथा में दो सुग्गे हैं और इस लोक कथा में सुग्गे के साथ मैना है। अन्य सब बातों में ये कथाएँ समान ही है।

ऊपर जातक कथाओ से मिलने वाली कुछ चुनी हुई लोक कथाएँ उदाहरण[1] के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। नही कहा जा सकता कि जातक कथाओ की रचना के समय उनकी आधारभूत लोक कथाओ का रूप क्या रहा होगा, परन्तु यह निश्चित है कि उनमे लोक-जीवन के जो स्वाभाविक चित्र थे वे इस प्रक्रिया मे किसी न किसी अश मे परिवर्तित एवं अस्पष्ट अवश्य हुए हैं। फिर भी इसमे कोई सदेह नही कि एक लोक कथा को सँवार सजा कर जातक कथा जैसी गौरवमयी वस्तु के रूप मे प्रस्तुत करना उच्च कोटि की साहित्यिक सफलता है। जिन विद्वानो के प्रयत्न से यह लोकोपकारी कथा-साहित्य सकलित हुआ है उनकी प्रज्ञा सदैव अभिनन्दनीय रहेगी।

---

१. इस विषय मे शोध-पत्रिका, भाग ७, अक ४ मे प्रकाशित लेखक के 'राजस्थानी लोक-कथाओं की प्राचीनता' शीर्षक निबध मे कुछ और उदाहरण भी द्रष्टव्य हैं।

उद्देश्य व नियम

१- राजस्थानी साहित्य, भाषा, कला व संस्कृति का वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करना पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है।

२- परम्परा का प्रत्येक अंक प्राय: विशेषांक होता है, इसलिए विषयानुकूल सामग्री को ही स्थान मिल सकेगा।

३- लेखो मे व्यक्त विचारो का उत्तरदायित्व उनके लेखकों पर होगा।

४- लेखक को, सम्बन्धित अंक के साथ, अपने निबन्ध की पच्चीस अनमुद्रित प्रतियाँ भेंट की जावेगी।

५- समालोचना के लिए पुस्तक की दो प्रतियाँ आना आवश्यक है। केवल शोध संबंधी महत्त्वपूर्ण प्रकाशनों की समालोचना ही संभव हो सकेगी।

परम्परा की प्रचारात्मक सामग्री, उसके नियम तथा व्यवस्था-सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए पत्र-व्यवहार निम्न पते से करें—

व्यवस्थापक · **परम्परा**

राजस्थानी शोध-संस्थान, चौपासनी

जोधपुर [राजस्थान]